हमारे अन्य प्रसिद्ध एकाकी-सग्रह

विविध

इतिहास के स्वर पच्चीस एकाकी	डॉ० रामकुमार वर्मा	२० ००
आहें और मुस्कान सत्रह एकाकी	विमला रैना	२५ ००
प्रतिनिधि रगमचीय एकाकी बाईस एकाकी	स० श्रीकृष्ण लल्ला	१५ ००
विपकन्या (सचित्र)	गोविन्द वल्लभ पत	४ ००
भगवान मनु तथा अन्य एकाकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२ ५०
आनन्द का राजपथ	सीताचरण दीक्षित	२ २५
आदिम युग और अन्य नाटक	उदयशकर भट्ट	४ ००
पर्दे के पीछे	,,	३ ००
कालिदास	,,	२ ००
जवानी और छ एकाकी	,,	२ ५०
समस्या का अन्त	,,	३ ००
धूमशिखा	,,	२ ५०
दस बजे रात	विष्णु प्रभाकर	४ ००
रेलगाडी के डिब्बे	अरुण	२ ००
दृष्टि का दोप	पथ्वीनाथ शर्मा	४ ००
आज का ताजा अखबार	कणाद ऋषि भटनागर	३ ००
आग, राख और रोशनी	रेवतीसरन शर्मा	२ ००
चट्टान का फूल	मोहन चोपडा	२ ५०
रक्त-सगम	दिनेश खरे	२ ५०
ओ सपूत भारती (काव्यरूपक)	वीरकुमार 'अधीर'	३ ००

हास्य एकाकी

रग और रूप	सिद्धनाथ कुमार	२ ००
हाथी के दाँत	जयनाथ 'नलिन	३ ००
अटची केस	राजेन्द्रकुमार शर्मा	२ ००
पर्दा उठने से पहले	,,	२ ००
कालिख और लाली	,,	२ ००
बिना बुलाए पच	देवराज 'दिनेश'	३ ००
सफर के साथी	कणाद ऋषि भटनागर	२ ००
दिमाग का बीमा	एन० आर० टण्डन	२ ५०
खामी की फाँसी	शलेश मटियानी	२ ००
मेरे इक्कीस हास्य एकाकी	स्वदेश कुमार	४ ००

आत्माराम एड सस, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

साथी हाथ बढ़ाना

(एकाकी सग्रह)

लेखिका

डॉ० सोमा वीरा

1971

आत्माराम एड सस

दिल्ली नई दिल्ली चडीगट जयपुर लखनऊ

SATHI HATH BADHANA

by
Dr Soma Vira M A, Ph D

Price Rs 10 00

प्रकाशक
रामलाल पुरी संचालक—
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट दिल्ली 6

शाखाएँ
हौज खास नई दिल्ली
धमानी मार्केट जयपुर
17 अशोक मार्ग लखनऊ
विश्वविद्यालय क्षेत्र चण्डीगढ़

प्रकाशकीय

साथी हाथ बढाना' डॉ० सोमावीरा का नवीनतम एकाकी सग्रह है। इसमे उनके अत्यन्त सशक्त ग्यारह लोकप्रिय एकाकी सग्रहीत हैं। आपके हाथा म, यह सग्रह सौपकर, हम अत्यन्त हर्ष होता है।

डॉ० सोमावीरा के लेखन की एक विशेषता है और वह है, नारी के अन्तमन को सवथा नूतन रूप म उभार पाने का उनका आडम्बरहीन सक्षम प्रयास। 'धारा और किनारे', 'यमुना के तीर', 'हीरक हार' और साथी हाथ बढाना' इस सग्रह के ऐसे ही पुष्प हैं, जो कि डा० सोमावीरा के उपर्युक्त गुण के अच्छे परिचायक हैं।

'मान मदन' कृष्ण जन्म की पृष्ठभूमि को लेकर रचा गया एकाकी है और 'आहुति की कथा वस्तु महाकवि बाण के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हर्षचरित मे वर्णित राज्यश्री और सम्राट हर्षवर्धन के जीवन की एक छोटी सी घटना पर आधारित है।

साथी हाथ बढाना' मे पाठक के हृदय को सहज ढग से गुदगुदाने वाले एकाकी भी सग्रहीत है—'सबकी छुट्टी' और 'निन्यानवे का चक्कर' इसी कोटि के एकाकी कहे जा सकते हैं। 'सबकी छुट्टी' मे छुट्टी के दिन, पारिवारिक व्यस्तताओ के बीच रह रहकर मच पडने वाली हाय-तौबा का सफल चित्रण हुआ है और 'निन्यानवे का चक्कर के माध्यम से लेखिका ने उस समाज पर तीखा व्यग्य किया है, जहा धन की 'फिजूलखर्ची' एक आम बात होती है।

'काली परछाइयाँ' और 'आचल का छोर' एकाकी भी सफल बन

पडे हैं।

नारी एक होकर भी अनेक रूपा मे अपने जीवन को गति प्रदान करती है। मा के रूप मे अपनी सन्तान के प्रति, वहिन के रूप मे अपने भाई-बहिनो के प्रति एव पत्नी के रूप मे अपन पति के प्रति वह पूण उत्तरदायी है। सम्बन्धो के सन्दभ म प्रत्यक की इच्छाओ प्रसन्नताआ का एक साथ निर्वाह कर पाना ही उसकी महानता है—'माँ, बहिन और पत्नी' एक ऐसा ही सफल एकाकी है।

विस्तार भय से, अन्त म—'साथी हाथ बढाना' म सकलित सभी एकाकी, अपने अपने कथा शिल्प, भाषा शैली, चुस्त सवाद और कुशल मच निर्देशन की कसौटी पर एकदम खरे उतरते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ये सभी एकाकी मच पर अभिनीत किये जाने पर निश्चय ही लोकप्रिय सिद्ध होगे।

क्रम

1	धारा और किनारे	1
2	सबकी छुट्टी	25
3	हीरक हार	45
4	मा, बहन और पत्नी	73
5	काली परछाइया	91
6	मान मदन	117
7	यमुना के तीर	131
8	निन्यानवे का चक्कर	155
9	आचल का छोर	191
10	आहुति	225
11	साथी, हाथ बढाना	255

पात्र परिचय

कमल

सप्तवर्षीय बालक हठीला और नटखट, पिता की एकमात्र सन्तान होने के कारण, उसको विशेष रूप से प्रिय है। सदा पिता के सग रहने, सोने, खाने व खेलने के कारण, पिता का वियोग उसे सह्य नही होता। उसके कही चल जाने पर, वह उसको दिन-रात याद किया करता है। परन्तु इस बार न जाने क्या, उसके मन म न जाने कैसा अव्यक्त सा भय समा गया है, कि वह सोते साते भी भयावन सपने देख-देखकर जाग उठता है।

निशा

कमल की मा सभ्य, सुसस्कृत, एम० ए० पास। आयु लगभग सत्ता ईस वष है। इकहरी, सुडौल देह, सुन्दर वस्त्राभूषण पहनने की शौकीन है। अत्यन्त आधुनिक होते हुए भी उसके मानस म प्राचीनता की छाप, अथात पुरुष के सहारे खड़े होने की भावना है। उसने प्रेम विवाह किया था। आज भी उसके मन मे पति के प्रति असीम अनुराग है। फिर भी आज उसका मन डावा-डोल है। वह समझ नही पाती कि पति या पुत्र, किस की रक्षा के लिए, वह किस की बलि दे द।

प्रताप

कमल का पिता इस नगर का धनी मानी युवक। आयु लगभग तीस वष। वह कौन है कहाँ का रहनेवाला ह, यह कोई नही जानता। उसके हँसमुख, विनोदी स्वभाव के कारण सभी प्रथम दृष्टि म उसके प्रति आकर्षित हो जाते है। पत्नी से उसे असीम प्रेम है फिर भी वह प्राय दिनो हफ्ता के लिए घर छोडकर गायब हो जाता है उसका व्यापार ही कुछ ऐसा है।

बालक

वह साधारण मध्यवर्गीय घराने की सन्तान है। माता से उसने राणा

प्रताप और शिवाजीकी कहानिया सुनी है। विद्यालय मे अध्यापकों से सच्चाई और सदाचार का उच्च पाठ सीखा है। उसके निर्भीक मन मे साहस और शौय कूट-कूटकर भरा है। आयु उसकी लगभग ग्यारह वष है।

नारी

बालक की माता साधारण मध्यवर्गीय घराने की कुशल व चतुर गहिणी है। बात करने का ढग उसे भली भाति आता ह। विद्या उसने अधिक नही पाई, फिर भी उस मे अपनी रक्षा स्वय कर सकने की सामथ्य है भयानक से भयानक परिस्थितिमे भी वह धैय नही खोती, न पुरुष के सहारे की कामना ही करती है। उसका कोमल हृदय दया व ममता का स्रोत है, जो पल भर मे ही पिघलकर पानी बन जाता है। उसकी आयु लगभग तीस वष है।

कान्स्टेबिल

अपन काय मे कुशल, चतुर, निर्भीक व निडर है। उसे अपन कतव्य का ज्ञान है और उस पूण करने के लिए वह सदा सनद्ध रहता है। दिन या रात की परवाह किय बिना, सदानागरिकों की रक्षा के लिए समुद्यत, वह योग्य, सजग प्रहरी है।

[इन पात्रों के जीवन की ये घटनाएँ, चन्दा-तारा की चमकीली अधियारी मे, प्रताप के दुमजिले मकान के ऊपरी शयन कक्ष म, तथा किसी सदगृहस्थ के शयन कक्ष म अपनी झलक दिखा जाती ह।]

धारा और किनारे

स्थान गली के दुमंज़िले मकान का ऊपरी शयनकक्ष।
समय अधरात्रि।

[तेज हवा, बादलों की गरज और बिजली की कड़क, पलंग पर सोया शिशु और जागती एकाकिनी नारी।]

निशा (हौले-हौले) कितनी घनी कालिमा, कसी घनीभूत अँधियारी—फिर भी मेरे मन के अँधियारे के आगे कितनी हीन, कितनी तुच्छ क्यों न हो इस कालिमा म भी उज्ज्वलता है। इस अधियारे म भी प्रकाश की किरणे है अगणित तारा की ज्योतिमय ज्वाला, इस चौथ के चन्दा को भी लजाती है फिर पूनो आयेगी फिर पूण चन्द्र उदय होगा फिर धरती गायेगी, बसन्त रास रचायेगा दूर किसी अमराई म कोयल कूक उठेगी उसके मधुर स्वर मे अपनी सुध-बुध बिसरा जगती विभोर हो उठेगी परन्तु मैं केवल मैं ही ? हाँ केवल मैं। चन्द्र को आकठ ग्रसकर भी राहु पुन मुक्त कर देता है, किन्तु मेरी मुक्ति का कोई उपाय नही। मरा जीवन राहु मुझे सदा-सवदा के लिए ग्रस चुका है। बस ! केवल मृत्यु ही शेष है मृत्यु केवल मृत्यु विश्व की समस्त योजनाएँ, सारे काय इसी गति स चलते रहेग बढते रहगे एक मेरे न होन स कही कुछ अन्तर न पडेगा तनिक भी नही तो ता फिर (आह भरते हुए), फिर भी इस जग की ममता त्यागना कितना कठिन है कितना दुष्कर

असाध्य कितना क्लेश कितनी पीडा कितनी व्यथा है इस जीवन म

[एकाएक चीख मारकर कमल रो उठता है।]

निशा (चौंककर, व्यग्र भाव से)—कमल मेरे शिशु, मेरे लाल ! क्या है मेरे चाँद ?

कमल (रुदन भरी वाणी) पापा पापा छोड दो, छोड दो कहाँ ले जा रहे हो मेरे पापा को छोड दो छोड दो।

निशा कहाँ कमल ? कुछ भी तो नही, सो जा शिशु, सो जा लाल।

कमल (अधीरतापूर्वक) मा माँ, वह देखो माँ ! सिपाही मेरे पापा को पकडे लिए जा रहे ह। छुडा लो मा। उन्हें छुडा लो।

निशा (शान्त भाव से) मेरे नन्हे, मेरे लाल क्या घबरा रहा है तू ! देख न। मैं तो बैठी हूँ तेरे पास। कमल, आखें खोल मेरे लाल।

कमल (सिसककर) मैंने सपना देखा मा !

निशा (भूली सी खोयी सी) सपना, मैं भी कभी सपने देखा करती थी। डर गया तू ? बावरा कही का। सो जा लाल। भूल जा तू भी अपने सपने को।

कमल नही मा, नहीं, नही। कैसे भूलू मैं ? लडके भी तो कहते थे तेरे पापा डाकू हैं, हत्यारे है। माँ क्या यह सच है ?

निशा सब झूठ है मेरे नन्हे, सब झूठ है। कितनी बार तो समझा चुकी हूँ मैं तुझे, तेरे पिता तो व्यापार करते थे। उन्होंने कभी नही सताया किसी को।

कमल सपने मे मैंने देखा मा कि सिपाही मेरे पापा को पकडे

लिये जा रहे हैं, उनके हाथा म रस्सी बँधी है। छाटे छोटे बच्चे ताली बजाते बजाते उनके पीछे-पीछे दौड रह हैं।

निशा स्वप्न कभी सच नही होत शिशु उन पर ध्यान नही दना चाहिए।

कमल लडके कहत थे —मेरे पापा जेल म बन्द है। बताओ माँ मेरे पापा कहाँ है ? बताओ न। मैं उनसे पूछूगा क्या वे सच म चार है ? बोलो माँ बोलो न। तुम बालती क्या नही। चुपके-चुपके रोती हो ? मा !

निशा कैसा हठी लडका है। कहा तो कि तेरे पापा विलायत गये थे, व्यापार करन। राह मे जहाज डूब गया। दुर्भाग्य हमारा कि वे भी न रहे। काश (रोती है।)

कमल तू तो फिर रोने लगी ! क्या यह सच है ?

निशा और नही तो क्या ? मैंन कभी झूठ बाला है तुमसे ? अब सो जा। मैं तुझे लोरी सुनाती हूँ।

कमल नही माँ कहानी।

निशा अच्छा सुन। एक दिन नटखट कान्हा न क्या किया। छीके पर से सारा माखन लूट लिया। यशोदा मया ने देखा, तो रस्मी ले चली मोहन के हाथ बाधने। मा का आते देख नटखट नागर भाला मुख बना बोल उठा

मया, मैं नही माखन खाया

भोर भई ग्वालन के सग मधुवन मोहिं पठायो

मैया मैं नही माखन खायो। (गुनगुनाती है)

निशा मा गया कितना हठी है! परन्तु इसका भी क्या दोष ? यह तो साते साते सपना देखता है। मैंन तो जागत-जागते सपना देखा था। कितना सुन्दर था वह सपना कितने मनमोहक थे वे बीते दिन

[सगीत के स्वर म नारी-पुरुष की सम्मिलित

खिलखिलाहट उभर आती है।]

निशा श श-चुप! इतना हँसना अच्छा नही होता!

प्रताप वेगगामी झरने घुमड़ते मेघ, कलोल करती नदियाँ इनका प्रवाह रुक सका है कभी?

निशा नही तो। क्या?

प्रताप हमारा यह आमोद भी ऐसा ही चिर नूतन है निशे, यह कभी न ।

निशा हटो, यह क्या, बात, अधूरी ही छोड मेरा मुख क्या बन्द कर दिया जी।

प्रताप वह देखो उस अधखिली कली को छोड, यह भौंरा तुम्हारे खिले मुख की ओर उड चला था न, इसीसे ।

निशा हटो, जाओ बडे नटखट हो तुम!

[दोनो की हँसी पष्ठ-सगीत म डूब जाती है]

निशा मेरे लाल, तू धरती पर इतना बडा सौभाग्य लेकर नही आया कि माता पिता की स्नेहच्छाया मे पल सके। आज की रात, नही केवल तीन घण्टे और, मैं तेरा यह भोला मुख निहार सकूँगी। तुझे प्यार कर सकूगी। तुझे फिर फिर सवेरे की ट्रेन से ही गगाराम आ पहुँचेगा। तू उसे खब पहचानता है। कितनी बार उसे घोडा बनाकर उसकी पीठ पर सवारी गाठी है तूने। तुझे लेकर तीन बजे की ट्रेन से ही लौट जायेगा वह। तुझे उसके हाथ सौपते मुझे कोई भय नही। तनिक भी झिझक नही। उसने तो तेरी माँ को भी गोद खिलाया है, शिशु! मा को लिखा था मैंने कि मैं लम्बी यात्रा पर जा रही हूँ। तुझे सग नही ले जाना चाहती। परन्तु उन्हे नही मालूम व नही जानती कि ट्रेन म तेरा पैर पडते ही मेरी यह यात्रा समाप्त हो जायेगी। कितनी कठिन किन्तु

कितनी सरल यात्रा जीवन का क्लेश, पीडा और व्यथा की टेढी तिरछी पगडडिया को पीछे छोडते, मजिल की गोद मे, जहा जीवन मृत्यु के आगे घुटने टेक देता है। उसी मजिल को लक्ष्य बाधकर मैं जा रही हूँ, निशु यह पिस्तौल इसकी एक ही गोली नही आत्म हत्या नही नही, किन्तु जीवन की यह असह्य पीडा ठीक ही तो है। इस पिस्तौल की एक ही गोली, मेरी इस अपूर्व यात्रा के लिए पाथेय बनेगी।

[दो क्षण मौन, खिडकी पर कुछ आहट, प्रताप धम्म से कक्ष मे आ कूदता है। निशा एकदम चीख उठती है।]

प्रताप (हौले से) डरो मत मैं हूँ, तुम्हारा प्रताप अरे तुम्हारे हाथ म पिस्तौल !

निशा तुम ! नही, नही, यह कैसे सम्भव है !

प्रताप (धीमे से हँसकर) मैं ही हूँ निशा चार वर्ष के लिए कठिन कारावास दडित अपराधी का एकाएक आ जाना आश्चर्यजनक अवश्य है, परन्तु असम्भव कदापि नही। बस प्रभु की दया रहे और मेरे साथी बने रहे। जेल की दीवारें अलघ्य नही।

निशा तो क्या तुम जेल से भाग कर आये हो ?

प्रताप हाँ निशा तुम्हारे लिए मैं तुम्हे ।

निशा (क्रुद्ध हो) मेरा नाम न लो, जब तुमने चालीस हजार का गबन किया, चालबाजी से किसी निरपराध को फसा, स्वय बेदाग बच निकले, तब मैं कहाँ थी ? पाप के उस धन से व्यापार प्रारम्भ कर तुम धनवान तो बने परन्तु तुमने सब कुछ मेरे माता पिता से मुझसे छिपाया। मुझ से छल किया। और तुम्हारे छल को

प्रेम समझ, मैं तुम्हारी हो गई। तुमसे विवाह ।

प्रताप यह सब किसने कहा तुमसे, यह झूठ है, निशि।

निशा झूठ! उफ! निशा आज वह पहले वाली भोली निशा नही जो तुम्हारे झूठ को भी सच समझ ले। बैंक मे अटूट धन रहते हुए भी, कितने डाके डलवाये तुमने? कितने निरीह बालकों को अनाथ बना डाला? यही तो था न तुम्हारा व्यापार, जिसके लिए तुम्ह दूर-दूर जाना पडता था क्या यह सब झूठ है? बोलो! बोलो! तुमने यह सब क्यो किया प्रताप? किसलिए? ऐसा क्या लोभ था कि (रोती है)

प्रताप निशा! होश की बातें करो।

निशा होश मे ही हूँ प्रताप। दुःख तो केवल इतना है कि पहले ही होश क्यो नही आया। कटघरे मे तुम्हे खडा देखने से पूर्व, पुलिस की शहादतें सुनने से पहले ही, मैं क्या न समझ सकी, कि मनुष्य के रूप मे तुम कितने बड़े निशाचर हो।

प्रताप (कुछ हँसकर) तुम सच ही कुछ पगला गई हो निशि। क्या तुम नही जानती कि निरपराध मनुष्य भी कभी-कभी ऐसे चक्कर मे फँस जाता है कि उसे जेल की हवा खानी पड जाती है।

निशा (व्यंग्य से) तो तुम निरापराध हो?

प्रताप (अधीर स्वर म) क्या तुम्ह मुझ पर विश्वास नही? न हो, पर एक न एक दिन मैं तुम्हे विश्वास दिला ही दूगा। किन्तु निशि, अब समय नही। चलो, मेरे साथ भाग चलो। मैं तुम्ह लेने आया हूँ।

निशा नही नही मैं तुम्हारे साथ कही नही जा सकती।

प्रताप पगल

पुलिस मेरे शरीर पर अपना अधिकार जमा लेने को पागल हो उठी है। कुछ थोडा बहुत सामान साथ लेकर कुछ दिन के लिये कहीं जा छिपने मे ही कल्याण है।

निशा यह तुम्हारा भ्रम है प्रताप। मेरा कल्याण इसी मे है कि अभी पुलिस स्टेशन टेलीफोन कर तुम्हे पकडवा दू।

प्रताप निशि निशि लगता है अकस्मात मुझे देख तुम कुछ घबरा गई हो। तुम नही जानती कि तुम क्या कह रही हो!

निशा तुम गलत समझे हो प्रताप। तुम जेल से भागकर आये हो। मुझे अभी पुलिस को बुलाना ही होगा।

प्रताप (क्रोध मे) निशा! नारी जाति के लिये कलक हो तुम। युग युग तक ललनाएं तुम्हारे नाम पर थूकेंगी। अपने निर्दोष पति को सूली पर लटकवाना? यही है तुम्हारा चरित्र, तुम्हारा आदर्श?

निशा (कम्पित स्वर मे) मेरे आदर्श की बात न पूछो। मैं तो केवल एक शापित दुर्दशाग्रस्त अभागिन नारी हूँ। मैं कौन हूँ तुम्हे बचाने या न बचाने वाली किसी दिन तुम्हे ।

प्रताप निशि मेरी प्रेयसी सुनो।

निशा किसी दिन तुम्हे फाँसी पर लटकना ही होगा जिससे कि तुम सधवाओ की माग का सिन्दूर न लूट सको। जिससे तुम निरीह बालको को अनाथ न बना सको। जिससे कि अज्ञानी, अनुभवहीन नवयुवको को अपना अन्ध अनुयायी बना ।

प्रताप निशा निशा मेरी निशा क्या हो गया है तुम्हे! क्या तुम प्रताप को भूल गई हो? अपने प्रेमी प्रताप को, जो अपने हाथो तुम्हारे जूडे मे रजनी गन्धा के फूल सजा

दिया करता था। जिसकी बाँहों म बल, तुमने अनेको वार स्वग सुख को भी ठुकरा देने की कामना प्रगट की थी। जो तुम्हारा पति है, तुम्हारे पुत्र का पिता।

निशा वस वस प्रताप बस करो। इसी अभिशाप का तो मैं भल नही पाती। इसी के कारण इसी के कारण तो ।

प्रताप (विस्मय से) क्या ?

निशा कुछ नही प्रताप कुछ नही क्योकि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ, तुम्हारे पुत्र की माँ हूँ इसीलिए आज इतना अवसर देती हूँ तुम्ह कि जहा जी चाहे भाग कर अपना यह मुख छिपा लो।

प्रताप (हतबुद्धि हो) निशे !

निशा (अनुनय भरे स्वर मे) तुम सच मानो प्रताप। इसी मे हमारा सबका कल्याण है। क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा बेटा चार का बेटा कहलाये ? कि वह दुनिया मे कही मुख न दिखा सके अपना ? कि उस नन्हे से बालक के सम्पूण जीवन की आकाक्षाएँ, इस अभिशाप तले दब, कुचल कर रह जायें। बोलो प्रताप ?

प्रताप (क्रोध से) हूँ ! तो यह है मेरा दुश्मन ? इसके कारण तुम मुझे इतनी जली-कटी सुना रही हो ? मेरा साथ देने से अस्वीकार कर रही हो ? हूँ किन्तु यदि यह मर जाये तब ?

निशा छि प्रताप अपने ही पुत्र के विषय मे इतने कटु अपशब्द ! मरें उसके दुश्मन। भगवान उसकी रक्षा करे। उसका बाल भी बाँका न हो कभी।

प्रताप (व्यग्य से) अपने को तुम बहुत बुद्धिमती समझती हो न ? बहुत चतुर ? किन्तु वास्तव म तुम बडी नादान

हो, निरी नादान। तुम नही जानती कि इसके जीवन का अन्त अभी हो सकता है। अभी, इसी क्षण तुम्हारी इसी पिस्तौल से।

निशा नही नही, ठहरो, सुनो, तुम ऐसा कदापि नही कर सकते।

प्रताप हट जाओ छोड दो मेरा हाथ।

[गोली चलने की ध्वनि। निशा की चीख। दूर कही पुलिस की सीटी]

निशा (फूट-फूटकर रोते हुए) कमल कमल मेरे शिशु हाय मेरे लाल! मेरे प्राण! हाय! यह तुमने क्या किया प्रताप? अपने ही माणिक को, अपने ही रक्त से निर्मित इस काया को तुमने यू खडे खडे गोली मार दी? इस निममता से उस अबोध का वध कर डाला? क्या किया था उसने तुम्हारा? तुम इतने अधम हो इतने पशु (रोती है)

प्रताप (उसे झकझोर कर) उठो, खडी हो झूठ मूठ का यह प्रलाप तुम्हे शोभा नही देता। बोलो। अब भी तुम मेरे सग चलने को तैयार हो या नही?

निशा (सिसकते हुए) तुम अभी तक खडे हो! तुम्हारा यह हाथ कटकर नही गिर गया। यह छत तुम्हारे सिर पर नही गिर पडी। तुम्हारे पैरो तले से धरती खिसक नही गइ। तुम !

प्रताप यह रुदन बन्द करो निशा बन्द करो पागल न बनो। भारतीय नारी के कर्तव्य क्या तुम भूल गई? पति मे ही पुत्र है? क्या यह अब भी नही समझ सकी? मेरा आदेश मानना तुम्हारा कर्तव्य है निशि क्या यह भी मुझे ही स्मरण दिलाना होगा।

निशा तुम्हारा आदेश मेरा कर्तव्य भारतीय नारी हा हा-हा तुम ठीक कहते हो प्रताप ! भारतीय ललना पति के शव के सग, चिता मे हँसते-हँसते जल मरती थी। मैंने जीवित पति के सग भी नही जलना चाहा ? इसीलिए यह अमानुषिक दड ? भारतीय नारी जीवित लपटें देह को झुलसायें, किन्तु मुख से उफ तक न निकले महान् आदश हा हा हा

प्रताप (क्रुद्ध हो) निशा निशा !

निशा सुन रही हूँ, सुन रही हूँ। मैं बहरी नही हूँ। प्रताप। मैं चलूगी। मैं चलूगी तुम्हारे साथ। परन्तु इतना समय तो दो मुझे कि इस अभागे का शव धरती की गोद म छिपा सकू।

प्रताप ठहरो निशा, सुनो।

निशा नही ठहरने का अवकाश नही। सुनने का समय नही। चलने को तैयारी करनी है न ? उससे पहले ही नही तो ब द मकान मे से दुग ध उडेगी, तो पडोसिया को स देह होगा। ठहरो तुम इसी कमरे मे। मैं नीचे बाग मे गड्ढा खोद आऊँ।

प्रताप निशि,निशि, एक बार उस देख तो लो निशि, गोली ।

निशा उसकी छाती को पार कर गईहै। मैं जाती हूँ। कमरे म ताला लगाये जाती हूँ। बाहर से, जिससे कि यदि पुलिस आ भी जाये तो तुम्हे पा न सके। खिडकी भी ब द कर लो। आधी-रात कक्ष आलोकित देख कही

प्रताप गोली उसके पैर की ओर गई होगी, ठहरो, किसी डाक्टर को ।

निशा आज तक दुनिया को धोखा देते आये हो। आज यह कहकर अपने को भी धोखा मत दो। तुम स्वय नही

जानते कि आज तुमने कितना बड़ा अनथ कर डाला है ! कि आज तुमने अपने स्वय निर्मित इस खिलौने को कैसी निर्दयता से कुचल डाला है।

प्रताप तब क्या वास्तव म ही वास्तव म ही ।

निशा (रोकर) हा प्रताप, हा ! अब भी सोचो। अब भी सम्भलो। जो पीडा आज मेरे हृदय को मथ रही है, वह तुमने कितनी निस्सहाय माओ को दी है। जो व्यथा आज तुम्हारे हृदय म तडप रही है तुम्हारे कारण वह कितने अभागे पिताओ को सहनी पडी है (रोती है)।

प्रताप मार दिया ? मैंने मार दिया ? अपने ही पुत्र को ? यह कैसे सम्भव हो सका ? और मेरा हाथ तनिक भी नही काँपा ? मेरा हृदय तनिक भी नही झिझका। तब क्या मैं सच ही इतना नृशस हो उठा हूँ ? क्या मेरे मन म लेशमात्र भी करुणा शेष नही रही ? नही नहीं यह झूठ है सब झूठ है केवल निशा का डराने के लिये केवल उससे अपनी बात मनवाने के लिए ही मेरी महत्त्वाकाक्षाओ के आगे इस नन्ही सी जान का क्या यही मूल्य था नही नही किन्तु कोई भी महान काय कभी किसी बलिदान के बिना पूरा नही हो पाता। मेरी सत्ता मेरी सामथ्य दिन दिन बढती ही जायेगी। बडे-से बडे शक्तिशाली मेरा नाम सुनते ही थर थर काँप उठेंगे। मेरे अतुलित धन वभव के सम्मुख बडे-बडे धन कुबेरो के कोष भी नगण्य लगेंगे। किन्तु मेरी अभिलाषायें आज मन्द सी क्या पडने लगी है मेरा विश्वास क्या डोल उठा है मेरे कदम क्या लड-खडाने लगे हैं आज मैं मुझे ।

निशा चुप चुप। नीचे सडक पर यह कैसा शोर हो रहा है।

कैसा आतक सा व्याप गया है य !

प्रताप मेरे मन मे इस से भी अधिक आतक है। इस से भी अधिक कालाहल। निशा, निशा तुम ठीक कह रही थी। तुम सच कह रही थी। प्रताप तुम्हारा पति, शिशु कमल का पिता कभी का मर चुका है। आज जीवित है केवल एक डाकू केवल एक हत्यारा।

निशा श-श चुप। नीचे कोई द्वार खटखटा रहा है। वह पुलिस की सीटी थी न? तुम तुम इस खिडकी से कूदकर भाग जाओ, जाओ कही ऐसा न हो कि पुलिस

प्रताप पुलिस पुलिस पुलिस आ गई भाग जाऊँ?? हा। हा यही ठीक रहेगा। अच्छा मैं चला

[खिडकी से कूद पडता है। द्वार पर खट-खट]

निशा चले गये! नही जानती मैंने ठीक किया या नही, नही समझ पाती हू ईश! मुझे प्रेरणा दो, शक्ति दो, मुझे बल दो कि मैं इस दु ख का झेल सकू। कि कितनी ही विपत्ति क्या न पडे, मैं अपना पथ न भूल सकू। ईश प्रभु, परमेश्वर हे मगलमय जगदीश्वर

[द्वार पर खट खट]

कास्टेबिल दरवाजा खोलिय।

निशा (क्रोध से) क्या सरकार आप लोगो को इसी काम के पैसे देती है कि आधी रात लोगो को परेशान करें? सोने भी न दें किसी को?

कास्टेबिल क्षमा कीजिए बहन जी, हमारे एक साथी ने प्रताप नामक नामी डाकू को, आपकी इसी खिडकी पर चढते ।

निशा नही, नही, यहाँ कोई नही आया।

कास्टेबिल पुलिस की आखें सहज म धोखा नही खा सकती। वह हम बुलाने गया ही था कि पहरे वाले सिपाही ने गोली

चलन की आवाज़ सुनी। वह इधर से ही आई थी। निश्चय ही वह इसी मकान म कहीं ।

निशा गोली चलने की आवाज़ हाँ हाँ वह तो मैंने भी सुनी थी। वह उधर से आइ थी पिछवाडे से उन ग्वाला की बस्ती स।

कान्स्टेबिल ओह ! ठीक है, वह उन गरीबा को धमका कर शरण माँग रहा होगा, चला जल्दी ।

अनेक स्वर चलो जल्दी। चला जल्दी ।

[जात जना की खटपट। द्वार ब द करने की ध्वनि]

निशा कमल तू चला गया लाल ! अब कौन मुझे मा कहकर पुकारेगा ! कौन मरा आँचल पकड धूलि म लोटेगा किस को मैं है ! इसकी तो श्वास अभी चल रही है यह अभी जीवित है—यह यह

कमल (कराहकर) माँ पा पा आ ये माँ !

निशा ओह कमल ओह मैं अभी डाक्टर का फोन करती हूँ। तू शायद अभी बच जाये। मैं अभी डाक्टर को बुलाती हूँ। अपन प्राण देकर भी मैं तुझे बचाऊँगी कमल तरी रक्षा के लिए डाक्टर डाक्टर।

[सगीत द्वारा दश्य परिवतन, निस्तब्ध शू यता म चौकीदार की आवाज़ गूज उठती है—जागते रहो—होशियार]

प्रताप भटकते-भटकते पाच रातें बीत गईं पाँच दिन कहीं भी शान्ति नही कमल का वह मुख, निशा का रुदन नही नही भावुक बनने से काम न चलेगा, आज मुझे कुछ काम करना ही होगा।

चौकीदार जागते रहो होशियार खबरदार जागते रहो।

प्रताप (हँसकर) बेईमान, जानता है मालिक घर म नही। फिर भी आराम स खटिया पर पडा है ? कम्बल मे मुख लपट, दुनिया को जगा रहा है ! अच्छा, ता हाँ यही खिडकी ठीक रहेगी घुस जाऊँ अब देर करना ठीक नही चोरी करना भी कितना सरल है उफ ! इन अमीरो को फालतू सामान जोडने मे न जान क्या आनन्द आता है ? यहाँ राह खाजना भी ।

[किसी वस्तु से टकराने का शब्द]

नारी (भयभीत स्वर म) कौन है, कौन है उधर ?

प्रताप खबरदार, जा पलग स पर उतारा, या मुख से एक शब्द भी निकाला।

बालक माँ, क्या पापा आ गए। (डर कर) यह कौन है मा ?

प्रताप ताली मेरे हवाले करो, और बताओ तिजौरी कहा है ?

नारी मुझे नही मालूम, न मेरे पास ताली है।

प्रताप तुम झूठ बोलती हो।

नारी यह सच है।

प्रताप मुझे धोखा नही दे सकती तुम ! शीघ्र बोलो, वरना देख रही हो यह पिस्तौल ?

नारी मेरा विश्वास करो तुम डाकू ही सही, परन्तु तुम भारतीय हो, भारतीय परम्परा से परिचित। हमारे देश के पुरुष स्त्रियो को, कभी कुछ नही बताते। निश्चय ही तुम जानत हो कि हमारी परम्परा के अनुसार ।

प्रताप ए औरत मुझ बाता म भुलाने की कोशिश न कर, वरना सच कहता हूँ, इसी पिस्तौल से तेरे इस बालक का सिर भुट्टे सा उडा दूगा।

नारी जो बात मुझे ज्ञात नही उसका उत्तर मैं कैस द सकती हू ?

प्रताप यह मैं कुछ नही जानता, धन या बेटा बोलो तुम्हे क्या चाहिए ? बोलो, जल्दी बोलो धन या बेटा, दोनो म से एक वस्तु जल्दी बोलो, वरना।

बालक वरना तुम क्या करोगे ?

प्रताप तुझे गोली मार दूगा।

बालक मुझे हा, हा हा है इतनी हिम्मत ?

नारी श ग। चुप रह। डाकू के मुख लगना ठीक नही।

बालक तुम चुप रहो मा, बहुत देखे है ऐसे डाकू !

प्रताप ए लडके, जबान सँभालकर नही तो

बालक अरे हटो मैं सब जानता हूँ चले है हमी पर रोब गाठने।

प्रताप क्या जानते हो ?

बालक कि चोर से बढकर बुजदिल दुनिया मे और कोई नही होता। मारोगे ? लो मारकर देखो आओ मारो चला दो पिस्तौल।

प्रताप लडके हट जा सामने से। नही तो मैं कहता हूँ ।

बालक हाहा, हा, खुल गई न पोल। मैं तो पहले ही जानता था, हमारे मास्टरजी उस दिन कहते थे - जिसम इतना भी साहस नही कि दिन की रोशनी म दुनिया को अपना मुख दिखा सके, चार जना म मिल-जुलकर अपना पेट भरने लायक चार पस कमा सके, उससे बढकर बुज-दिल नीच पापी और कौन होगा ?

नारी तू चुप रहेगा या मार खायगा अब मेरे हाथ से।

प्रताप नही, तुम्हारे हाथ से नही, यह मेरे हाथ से मरेगा।

नारी दया करो, बालक के वचना पर ध्यान न दो, यह अबोध है नादान है जो कुछ किसी से सुन लिया वही तोते की तरह रट डाला है इसने। इसे क्षमा करो। अपने

वालक की भूल भी तुम क्षमा करते होगे कभी इस निरपराध का

प्रताप अपना बालक ! निरपराध हाँ, कमल निरपराध था, निर्दोष, तुम निशा यह लडका उफ नही, नही, यह झूठ है सब झूठ है। मुझे धन चाहिये, केवल धन बोलो कहा है ?

नारी मेरे पास कुछ नही है ?

प्रताप (क्रुद्ध स्वर म) झूठ बोलने का प्रयत्न न करो, एक झूठ दूसरे झूठ को प्रश्रय देता। (खोया खोया सा) एक झूठ के कारण ही आज मेरी यह दशा है, नही तो मैं इतना बुरा नही था। तुम्हारे बेटे को मार मैं और पाप कमाऊँ इससे अच्छा है कि

बालक पाप से इतना डरते हो तो यह पाप कर्म करते क्या हो मिस्टर ?

प्रताप क्या करता हू तो यह पाप कर्म है मैं बुजदिल हूँ नही नही मैं इतना नराधम हूँ कि मैंने अपने ही बेटे को किन्तु आज आज मेरे हाथ क्या काप रहे हैं मेरा विश्वास क्या डोल रहा है मेरे कदम क्या लडखडाने लगे हैं कौन मेरा गला पकड मुझे ऐसा किसी दिन और भी हुआ था किसी दिन हाँ, उस दिन मैंने मैंने अपने हाथो (जबान लडखडाती है, वह गिर पडता है।)

नारी अरे ! यह तो मूर्च्छित हो गया। बेटा, तनिक डाक्टर को फोन तो कर।

बालक भूल रही हो माँ हम पुलिस को फोन करना है।

नारी नही बेटा, डाक्टर का यह रोगी है।

बालक परन्तु माँ यह डाकू है।

नारी ठीक है, परन्तु यदि यह मर गया, तो पुलिस इसके मृत शरीर का क्या करेगी ? बोल ?

बालक माँ !

नारी जा उठ, देर न कर

[संगीत द्वारा दृश्य परिवतन चिड़िया की चहचहाहट बछड़ा का शोर]

निशा अरे, भोर हो गई ! क्या मैं सो गई थी ? सपना देख रही थी, उफ, कितना भयकर सपना ! अपन हाथो मैंने पति-पुत्र का वध कर डाला कर डालू यही कर डालू इस विभीषिका से त्राण पाने के लिए इस बार जब वे आयें तब ? हा नियति ! कैसा क्रूर खेल है यह तेरा ! मैं डाकू की पत्नी हूँ। यह भोला शिशु डाकू की सन्तान है। जब यह सोता है, इसका पिता दुनिया के घर लूटता घूमता है। किसी न किसी दिन उसे फासी किन्तु तरु टूट जाए तो क्या शाखा हरी रह सकती है किनारा टूट जाए तब भी क्या नदी की धारा नारी तो मानो बहती धारा है। पुत्र जिसका केवल एक किनारा है तब तब क्या करूँ विधाता, मेरा पथ सरल कर दो। मगलमय प्रभु (रोती है)

[नीचे से दूध वाला पुकारता है— अजी दूध ले लो जी !']

निशा अरे ! मैं भी कैसी पगली हूँ। भोर हो गई, दूध वाला आ गया। कमल सोकर उठता होगा अभी और मैं बैठी रो रही हूँ ? सपन को यथाथ म चित्रित करने के प्रयास म, यथाथ को भी भूली जा रही हूँ। सपना कल्पना है और जीवन वास्तविकता, कल्पना कथा-कहानी तक ही सीमित रहे। वास्तव म यथाथ का ही

आश्रय लेना होगा ठोकर खा जो उठ न सके, कठि नाइयो से घबरा मुख मोड लेना चाहे, वह कायर है। मैं पराजिता हूँ, किन्तु कायर नही ।

[सहसा चीख मार कमल रो उठता है।]

कमल पापा पापा छोड दो, छोड दो, कहाँ ले जा रहे हो मेरे पापा को, छोड दो छोड दो ।

निशा कमल कमल , मेरे शिशु मेरे चाद, आज तुझे हो क्या गया है मेरे लाल ? क्या बार-बार चौक चौककर जाग उठता है।

कमल मा, मा, मैंने सपना देखा माँ, सिपाही मेरे पापा को पकडकर ले गये। सचमुच ही ले गये माँ।

निशा कमल ! मेरे बेटे, आखें खाल, देख भोर हो गई। इस समय सब सिपाही अपने-अपने बेटा को नीद से जगा रहे हागे। उन्हे नाश्ता करा रहे होगे।

कमल तुम झूठ बोलती हो मा, तुम झूठ बोल रही हो, वे सडक पर जा रहे है। सुन नही रही हो, उनके जूतो की आवाज ? मैं छुडाऊँगा, मैं छुडाऊँगा, अपने पापा को मैं छुडाऊँगा।

निशा कैसा पगला है तू। दुनिया का राह चलना भी बन्द करेगा क्या, रे ? वह कोई दूध वाला होगा या अखबार वाला ?

[द्वार पर खटखटाहट]

कमल कौन है वे जरूर सिपाही हैं—दरवाजा खोलो न माँ।

प्रताप निशि, निशि, द्वार खोलो मैं आ गया निशे !

निशा यह स्वर यह वाणी नही, नही यह मेरा भ्रम है यह कैसे सम्भव है।

प्रताप द्वार खोलो निशा, आज तुम्हारे हाथों मृत्यु पाने, मैं तुम्हारे द्वार पर लौट आया हूँ।

कमल अरे! यह तो मेरे पापा हैं, माँ, माँ, उठो दरवाजा खोलो न, माँ, क्या जागते जागते सो रही हो उठो माँ, दरवाजा खोलो न, उठो ।

निशा दरवाजा नहीं-नहीं मैं न खोलूँगी, उन्होंने तो मार ही डाला था भगवान ने ही रक्षा की तब अँधेरा था अब उजाले में गोली चलाने पर नहीं ।

कमल (खीझकर) न जाने क्या कह रही हो? मत खोलो तुम मैं खोल देता हूँ। स्टूल पर चढ़कर ।

निशा (चीखकर) कमल ठहर, कमल।

[द्वार खुलने का शब्द।]

प्रताप कौन कमल कमल तू कमल ही है न मेरा कमल गगन में खिलते उस बालारुण सा तेजोमय कमल मेरा नन्हा (रोता है)

कमल अरे! तुम रोते हो। क्या चोट लगी है? कहाँ चोट लगी है पापा!

प्रताप (हास रुदन भरे स्वर में) हाँ चोट लगी थी, परन्तु तुम्हारी माँ नहीं चाहती कि मेरी चोट ठीक हो जाय। देखो, मुझे देखकर भी कुछ न कहा। चुपचाप खिड़की के बाहर ताक रही है।

निशा मैं क्या कहूँ काश इस डूबती निशा के संग-संग मेरे दुर्भाग्य की कालिमा भी डूब जाय आज, भोर की इन नवीन किरणों के संग तुम्हारे जीवन का भी नया अध्याय प्रारम्भ हो मेरे प्रताप।

[द्वार पर प्रहार, कांस्टेबिल के तीखे शब्द]

कांस्टेबिल दरवाजा फौरन खोल दो, नहीं हम तोड़ डालेंगे।

निशा पुलिस भाग जाओ प्रताप। पिछवाड़े वाले कमरे की खिड़की से, उधर ग्वालों की बस्ती में जल्दी उठो, उठो उठो न

प्रताप घबराने की क्या बात है ? पुलिस आ रही है तो आने दो आगे बढ उसका स्वागत करो निशे, डाकू को पुलिस को सौंप देना ही प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

निशा यू मेरे मुख पर तमाचा न मारो प्रताप। मैं विनती करती हू, म तुम्हारे पैरा पडती हूँ—तुम भाग जाओ, भाग जाओ यहा से हैं। यह क्या ? किधर जा रहे हो तुम ? उफ चटखनी मत खोलो न खोलो मेरी विनती मान लो।

प्रताप छोड दो निशा, मैंने पाप किया उसका दड मुझे भोगना ही होगा। आ कान्स्टेबिल, लो ये मेरे दोनो हाथ, पहना दो हथकडिया।

[हथकडिया खनझना उठती हैं।]

कमल (चीखकर) पापा !

निशा नही कान्स्टेबिल, छोड दो इन्हे। ये निरपराध है, निर्दोष ह ये।

कान्स्टेबिल मा की आखो म पुत्र और पत्नी की आखो म पति सदा निरपराध ही रहता है देवी जी, हमारे कटु कर्तव्य मे बाधा न डालिए।

कमल पापा तुम कहा जा रहे हो पापा ? ओ सिपाही, मेरे पापा को न ले जाओ। मेरे पापा चले जायेंगे तो कौन मुझे कहानी सुनायेगा किसकी पीठ का मैं घोडा बना कर खेलूगा कौन मुझे अपनी गोदी म (रोता है।)

निशा मैंने अपने हाथो आज तुम्हे कारागार मे धकेल दिया

मेरे कारण ।

प्रताप सोच न करो निशे, डाकू प्रताप को नहीं विदा दो केवल एक पति को, एक पिता को विदा मेरे नन्हे, आ एक प्यार दे ।

कमल पापा ? न जाओ पापा एक घूसा मारो। ये चारो सिपाही चित हो जाएँगे। डरपोक न बनो पापा।

प्रताप निशि, एक बार हँस दो, हँसते-हँसते मुझे विदा दो। जिससे कल्पना मे मैं देख सकूँ कि दु ख-सन्ताप रूपी झझा झकारे झेलकर भी, तुम मेरे लौटने की प्रतीक्षा मे ही निर्भीक, दृढ, अचल अटल भाव से ।

निशा जाओ मेरी कल्पना मे ही बस कर रहो तुम और तुम्हारी कला इस नन्हे शिशु के सहारे मैं दु खपूर्ण इस अवधि के य दिन पार कर जाऊँ, जैसे सरिता की निर्मल धारा, अपने दोनो दृढ किनारो के सहारे ।

[रोती है।]

कान्स्टेबिल चलिये हजरत, बहुत हो चुका। या अब घसीटकर ले चलना पडेगा ?

प्रताप विदा, निशि। विदा मेरे नन्हे, मुझे भूल न जाना।

कमल पापा, न जाओ, न जाओ पापा ।

निशा विदा विदा (रोती है।)

कमल तुम सब डरपोक हो, कायर हो, क्यो तुमने उन्हे जाने दिया। बोलो माँ बोलो न ।

निशा सुना है धूलि मे लिपटे हीरे को खराद पर चढाना ही पडता है।

सव की छुट्टी

पात्र

शीला	गहस्वामिनी
हरीश	शीला का पति
सतीश	शीला का देवर
ऊषा	शीला की बेटी
सुनील	शीला का छोटा पुत्र
भोला	शीला का नौकर

धोबी, उदघोषक, आदि

पात्र-परिचय

शीला

विवाह के उपरान्त एक बी० ए० पास किशोरी की क्या दशा हो जाती है इसका वह सुन्दर नमूना है। नून-तेल लकड़ी के चक्कर में उसका होम साइंस और इकनोमिक्स का ज्ञान व्यर्थ हो गया है। कालेज में वह कितना ही बन-सँवर क्या न रहती हो, किन्तु अब उसे बाल सँवारने तक का अव काश नहीं मिल पाता। घने घुंघराले बालों को उँगली पर लपेट ढीला सा जूड़ा बना लेती है। घर के काम में साड़ी की शिकन खराब हो जाती है, उस ओर उसका ध्यान नहीं जा पाता। घर का अधिकतर काम उसे अपने ही हाथ से करने का शौक है, अतः दिन भर कामों से फुरसत नहीं मिलती। हफ्ते के छः दिन वह छुट्टी का दिन आने की आशा में बिता देती है, किन्तु छुट्टी के दिन ।

हरीश

एक स्थानीय फर्म में एसिस्टैन्ट मैनेजर है। दिन भर काम में व्यस्त रहता है फिर भी कालेज जीवन के शौक अभी छूट नहीं है। अपने समय में वह अपने कालेज की क्रिकेट टीम का कैप्टन था। आज भी क्रिकेट का समाचार सुन वह खाना-सोना भी भूल जाता है। वैसे भोजन के प्रति विशेष कर मिष्ठान के प्रति उसे विशेष रुचि है। उसकी सन्तान यदि उसका रौब नहीं मानती, तो यह दोष उसका नहीं, उसके बाल हठीले स्वभाव का है जो बच्चों को धमकाकर स्वयं ही हँस पड़ता है। नित्य व्यस्त रहता है अतः छुट्टी के दिन वह सब काम आराम से करना चाहता है।

सतीश

हरीश का छोटाभाई अभी कालेज में पढ़ रहा है। सिनेमा का और घूमने फिरने का कुछ विशेष शौकीन है। भाई की सन्तान से उसे विशेष स्नेह है। भाभी से वह मन-ही-मन कुछ डरता है। पढ़ने के अतिरिक्त उसे

और कुछ काम नहीं, फिर भी छुट्टी का दिन माना उस के लिए वरदान बनकर आता है।

ऊषा

शीला की नौ वर्षीया बेटी। चपल, नटखट और चंचल। मा के बार-बार बंधा करने पर भी उसके बाल सदा माथे पर ही बिखरे रहते हैं। रिबन ढीला हो कर खुलने लग जाता है। पिता के धमकाने पर भी वह घर में नग पर ही कूदती रहती है। नित्य स्कूल जाना पडता है अत छुट्टी के दिन अच्छी तरह खेल कर वह उस कमी की पूर्ति कर लेना चाहती है।

सुनील

शीला का सात वर्षीय पुत्र नटखट और शैतान, पढने के प्रति उसे तनिक भी रुचि नहीं, किन्तु कोई जबदस्ती पढने को बैठा देता है, तो वह पुकार पुकार कर सारे घर को सुना देना चहता है कि वह कितने ध्यान से कितना मन लगाकर पढ रहा है। उसे अभिनय के प्रति विशेष रुचि है। किसी दिन सतीश न कह दिया था कि यदि वह फिल्म में काम करने लगे तो सब बाल-कला- कारो को फीका कर दे उस दिन से वह सदा अभिनय करने का अवसर खोजता रहता है। छुट्टी के दिन सब अपने-अपने खेल में व्यस्त रहते है, किसी को उसे टोकने का अवकाश नही मिल पाता, अत उसे मनमानी करने का यथेष्ट अवसर मिल जाता है।

भोला

सत्ताईस अठाईस वष का सीधा सादा सा युवक है। बोलता बहुत कम है, अपने काम-से-काम रखता है। मालकिन की धमकियाँ सुनने का वह अभ्यस्त हो गया है, फिर भी उसकी मुख मुद्रा से कुछ ऐसा लगता है मानों छुट्टी का दिन आता है तो उसका नित्य-नैति का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। भोला मुख से कुछ नही कहता, किन्तु उस की दृष्टि मानो प्रत्येक से पूछती रहती है कि प्रत्येक काय को वह जितनी चतुराई से करना चाहता है, उसके विषय मे उसे उतनी ही अधिक किया क्या मिलती है।

सब की छुट्टी

स्थान [शीला के घर का आगन, छुट्टी का दिन है। सब लोग देर से सो कर उठे है, अत भाला बिस्तरे लपेट कर चारपाइया उठा रहा है। सामन बरामदा है, जिसके बीच म पडे तख्त पर बैठा सुनील अपना पाठ याद कर रहा है। बरामदे मे दो दरवाजे है, जो अन्दर कमरो मे खुलत है। पश्चिमी दरवाजे से सतीश छोटी मेज लिये हुए आता है और उसे बिजली के बोड के पास रखकर फिर अन्दर लौट जाता है। दोबारा वह रेडियो लिए हुए निकलता है। छुट्टी का दिन है अत शायद बाहर बठकर रेडियो सुनने का प्रोग्राम है। बरामदे के पूर्वी कोने पर खाने की मेज़ रखी है, जिसके इद गिद कुसिया पडी हैं। मेज पर अभी चाय के जूठे प्याले और प्लेट बिखरे पडे है। आगन के दूसरी तरफ दा कोठरिया हैं जिनके द्वार बन्द हैं। तीसरा खुला हुआ है जिसमे से रसोई का कुछ अश दिखाई देता है।

रेडियो का प्लग लगाकर, सतीश भाभी को पुकारत हुए कमरे म घुसता है अन्दर से ऊषा हाथ म कापी किताब सँभाल जल्दी-जल्दी आती है, द्वार पर दोनो टकरा जात हैं, छुट्टी का दिन है न। सब अपनी-अपनी धुन म हैं]

सुनील (जोर-जोर से अपना पाठ याद कर रहा है) अकबर

हुमायू का बेटा था। अकबर हुमायू का बेटा था। वह राजकोट म पैदा हुआ था। वह राजकोट मे पैदा हुआ था। अकबर हुमायू का बेटा था। वह रोजकोट मे

सतीश (पुकार कर) भाभी, भाभी, मैंने कहा, भाभी सुनती हो।

ऊषा (पुकार कर) चाचा ए चाचा, माँ उधर है रसोई म (धीरे से फुसफुसाकर) चाचा, बोलना नही अभी मा से।

सतीश (धीरे स) क्यो ?

ऊषा (और भी धीरे से) अभी अभी महरी को डाट फटकार कर, रसगुल्ला-सा मुह बना रसोई मे घुसी है। बोलते ही दूध सी उबल पडगी।

सतीश (हँस कर) चल नटखट, हट सामन से।

ऊषा कहा जा रहे हो ?

सतीश देखती नही ? भाभी के पास।

ऊषा जाओ, मेरा क्या ! पछताओगे। फिर न कहना ऊषी पहले से तून बताया क्यो नही ?

सतीश अरी, बावरी, नही गया तो और भी ज्यादा पछताना पडेगा। बहुत जरूरी काम है। हट, जाने दे मुझे जल्दी से।

ऊषा (हल्के से ताली बजाकर) चाचा मा के पास जायँग। नमक मिच की खायँगे। चाचा माँ के पास जायँग। नमक मिच की खायँगे।

[फेड आउट]

सतीश भाभी, भाभी सुनो, आज मगल है।

शीला (चिढकर) तो क्या करूँ ! अपना कपार चढा हनुमान जी के मन्दिर मे ?

सतीश (सिटपिटाकर) नहीं भाभी, बात यह है कि वा असल म तुमने कहा था न 'कि मंगल को' 'नारी-जगत' मे 'बच्चे की शौल' की बुनाई बताई जायगी, मुझे याद दिला देना' सो मैं तुम्हें याद दिलाने ।

शीला हूँ।

सतीश भाभी, मैं जाऊँ ?

शीला अजी जाओ न, किसने कहा तुमसे यहाँ खड़े रहने को।

ऊषा (हौले से) क्यो चाचा ? खाइ न डाँट ?

सतीश (धमका कर) चुप नटखट।

शीला (मीठी आवाज म पुकार कर) भोला अरे ओ भोला, न जाने निगोड़ा कहा जाकर मर जाता है। चल जल्दी ये चाय के बतन साफ कर डाल। फिर दाल बीन लेना झट से। आज खाना जल्दी बनेगा।

भोला जी, सरकार।

शीला और देख यह धनिया साफ कर लेना। चटनी पीसनी होगी। चल फुर्ती से हाथ चला जरा। सतीश मैंने कहा सतीश सुनते हो।

सतीश अभी आया भाभी। हा, क्या कहती हो।

शीला सतीश भय्या, मैने कहा जरा सुनो इधर, उस नौकरी वाली मेरी कापी म देखकर, जरा इस महरी का हिसाब तो चुका दो भैय्या भरपाई मैं इस निखटिया से।

सतीश अच्छा भाभी।

शीला तब तक मैं नहाकर निबट आऊँ। ऊषी अरी-ओ ऊषी। चल तू जरा आलू तो काट तब तक। जब तक मैं नहा कर आऊँ तयार कर रखना। और देख अपनी उँगली न काट लेना। सुनील, बेटा, जरा तू इस नन्हे पप्पी को तो सँभाल ले। मैं नहा आऊँ देखना कहीं य शतान तेरी

नजर बचा, बाल्टी मे छप छप न करने लग।

सुनील छप-छप कैसे करेगा, मा। मैं जो हूँ। चल र, पप्पी, इधर। ऊपी तून सुना नही ? मा ने अभी क्या कहा ?

ऊषा हा, हा, सुना, खूब सुना।

सतीश भोला, दूसरी तारीख से नही, नही महरी महरी महरी हाँ यह रही महरी कौन सी तारीख से ? छब्बीस से, आज है तेईस। कितने दिन हुए—एक, दो, तीन

ऊषा देखो चाचा, सुनी माँ की बात। अभी कह रही थी— ऊपी हरगिज मत पढना तू! अगर फेल हुई ता देखना और जब मैं पढने बैठी तो कहती है—ऊपी, चल, आलू काट।

सतीश तो काट ले न। आलू काटन म क्या लगता है। यह भी क्या महरी का हिसाब करना है, जिस म रुपय आने पाई का हिसाब गिनना पडता है।

ऊषा हाँ जी कहना ऐसा ही आसान है, हाथ म छुरी लेकर काटना पडे, तब पता चले।

सतीश उठ यहाँ से, मुझे जाने दे, आठ रुपय महीन के हिसाब से ८ बटा ३० इज इक्वल टु चार बटा पन्द्रह। ४ बटा पन्द्रह इज इक्वल टु चौसठ बटा पन्द्रह

(चलते-चलते सतीश, हरीश से टकरा जाता है)

हरीश। (गुस्से) बस टकरा गय। देखकर नही चला जाता। सिर फोड दिया मेरा।

सतीश क्षमा करिय भैय्या, मैं जरा जल्दी म था।

हरीश जल्दी ? हुँह! इस घर म कोई आदमी, कोई काम कभी धीरे से तो कर ही नही सकता। आज का अखबार तुमने पढ़ा ?

सतीश जी हा, 'वसन्त' म 'श्री चार सौ बीस' आ गया है। हा आज से ही।

हरीश वस, सिनेमा ! सदा सिनेमा ! मैं कहता हूँ तुझे सिनेमा के सिवा कभी कुछ और भी सूझता है ?

सतीश जी भैंय्या, जी, वो, जी

हरीश क्या जी-जी लगा रखी है ! ले सुन ताजा समाचार प्राइम मिनिस्टर की टीम ने स्थानीय टीम को छ विकेट से हरा दिया।

सतीश अरे ! भाईसाहब, यह खबर तो बहुत पुरानी हो गई, मैं आपको इससे भी ताजी खबर सुनाऊँ।

हरीश हाँ, हा सुना।

सतीश भाभी ने महरी को नौकरी से निकाल दिया।

हरीश ऐ, निकाल दिया ? कब, क्यो, किसलिए ? मैं पूछता हूँ, आखिर उनसे किसने कहा था, उसे निकालने के लिए।

सतीश जरा धीरे बोलिये, भैंय्या, कही भाभी ने सुन लिया तो ।

हरीश लेकिन मैं पूछता हूँ

ऊषा (जल्दी जल्दी) जी, पापा महरी कह रही थी मैं बिना घी की दाल नही खा सकती। मा ने कहा काम करना हो तो सीधे से कर—नखरा बघारने की जरूरत नही। महरी वाली (उईमाँ), हाय मैं, हाय मैं मर गई, (जोर से चीख उठती है।)

हरीश क्या हुआ ऊषी क्या हुआ, अरी तू बोलती क्या नही ?

ऊषा देखिये पापा उँगली कट गई। (रोकर) देखिये पापा कितना खून निकल रहा है, ओ चाचा, आ अम्माँ, मैं तो मर गई री, ओ चाचा, ओ पापा

हरीश पापा की बच्ची, क्या काटन बैठी थी सब्ज़ी ? किसने

कहा था तुझसे काटने को।

ऊषा (सिसककर) अम्मा ने ही तो कहा था। हाय! बडा दद हो रहा है, हाय पापा!

हरीश अम्माँ न कहा था! हर बात मे अपनी टाग अडाती है। मिल गया न शैतानी का मजा? अब रो बैठकर, स्कूल से भी छुट्टी मिली।

ऊषा स्कूल की तो आज छुट्टी है पापा।

हरीश छुट्टी? बस, रोज छुट्टी! आजकल इन स्कूलो मे खाक पढाई होती है। हमारे जमाने म

सतीश आपके ऑफिस की भी तो आज छुट्टी है भया। आ, ऊषी इधर आ। टिंक्चर लगाकर पट्टी बाँध दू।

हरीश (खुश होकर) अरे! हा, मैं तो भूल ही गया था। आज तो आफिस की छुट्टी है। क्या नाम है उसका, कोई भला सा त्यौहार है वह, खैर होगा जाने दो। सतीश, भई मैं कहता हू, आज हम सब की छुट्टी है, आज कोई स्पेशल प्रोग्राम बने।

सतीश जरूर भैया, जरूर। ए ऊषी, हाथ क्यो खींच रही है। सीधी तरह से बैठ ना।

ऊषा दद होता है चाचा।

सतीश जरूर होता होगा, रानी। पर इस दवा से झट से ठीक हो जायेगा। ला तो अपना हाथ। बडी रानी बेटी है, तू तो चाचा की।

ऊषा (सिसककर) देखो न चाचा, सब हमे ही डाँटते हैं! स्कूल मे छुट्टी हुई, यह भी क्या मेरा ही कसूर है? मैं आलू काटने बैठी यह भी क्या मेरा ही कसूर है।

सतीश रोते नहीं ऊषी। पापा ने तो प्यार मे कहा था।

हरीश मैं सोच रहा हूँ, आज क्या स्पेशल प्रोग्राम बन। सतीश,

आज चावल की खीर बने तो क्या रह ।

ऊषा वस, पापा, तुम्हे तो चावल की खीर ही सूझती है। आज छुट्टी है । सिनेमा दिखाने ले चलो न ।

हरीश क्या जमाना आ गया है । जरा जरा से बच्चे, जब देखो, तब सिनमा की धुन ! हम जब इतने बडे थे तो सिनेमा का नाम भी नही जानते थे । मैंने कहा, अजी कहाँ गइ, सुनती हो

[पुकारते पुकारते चला जाता है ।]

सतीश हा, तो मट्री का हिसाब हुआ तीन रुपय पन्द्रह आने सात पाई । भाभी, भाभी, मैंने कहा भाभी, चाबियो का गुच्छा किधर है ?

शीला लो, अब गुच्छा भी न जाने किधर खो गया । ए, भया, जरा अपने भाई साहब के कोट की जब मे से ही दे दो इस समय । मैं दोपहर को ही उनका हिसाब ठीक कर दूगी । न जाने कसी लडकी है यह ऊषी, इससे तो मैं तग आ गई । इससे इतना भी नही होता कि जरा माँ का गुच्छा ही सँभालकर रख दे । मैं जब इतनी बडी थी

हरीश (क्रोध से) हा हाँ, सुना है सबने सुना है। जब तुम इतनी बडी थी तो सारे घर को अपने सिर पर सँभाले घूमती थी । अपनी माँ को कभी किसी काम मे हाथ तक नही लगाने देती थी । पर अब तुम बाहर भी निकलोगी, या गुसलखाने मे घुसी घुसी लैक्चर ही झाडती रहोगी । मैंने कहा—औरो को भी नहाना धोना है ।

शीला एक छुट्टी का दिन तो मिलता है जरा ढग से नहाने के लिए उस दिन भी चैन नही लेन देते । मैं जरा सिर

हरीश — और हां शीला, अब बतन कौन मांजेगा ?
शीला — क्या ? महरी मांजगी ना ?
हरीश — लकिन महरी का ता तुमन आज छुट्टी दे दी है ना ?
शीला — गई निगोडी तो जाने दो ! क्या और कोइ महरी ही नही शहर म ?
हरीश — हागी तो जरूर। लेकिन कौन जान कि वे सवा सेर क ऊपर पुसेरी न होगी। पूरा एक महीना झख मारन क बाद तो इन बगम साहब के दशन नसीब हुए थे।
शीला — (तेजी से) अच्छा, अच्छा, तो आपको इतनी चिन्ता किस बात की है ! आप से ता किसी न नही कहा कुछ करा को !
हरीश — (धीरे स) चिन्ता तो बहुत ह, पर यहां सुननेवाला कौन है ! दूसरी महरी लाने के लिए दिन रात कान तो मरे ही खाए जायेंगे। ये बगम साहब माल के सग सिफ घी ही मांगती है वे मिठाई न मागें, ता हरीश मरा नाम नही।

[फेड आउट]

शीला — भोला, ओ भोला, जरा घडी तो दख क्या बजा है ?
भोला — ग्यारह बजन म दुई मिनट बाकी है, सा ब।
शीला — हाय, राम ! क्या कहा ! ग्यारह बजने वाले है। और अभी सारा काम यू ही पडा है। ला जरा अंगीठी तो सिलगा जल्दी से। गाभी उस पर छौक देना। और फिर मज पर प्लेटें लगा दे। और देख, सबस जाकर एक बार कह आ कि भाजन तयार है।
भोला — अभी कहां तैयार है बीबी जी ! अभी तो बडी अबर ई।
शीला — होन दे। तुझ इससे मतलब। जसा मैं कहूँ वसा कर।

भोला जी सरकार।

शीला (झल्लाकर) अरे ! तू गया नहीं अभी तक ! मिलबट्टे से ही चिपककर बैठे रहना आज, अच्छा ! ज़रा तुझसे चटनी पीसने को क्या कह दिया, मैंने तो अपनी मुसीबत बुला ली।

भोला जी। अभी जाता हूँ, सरकार। बस, यह ला।

शीला बस तो तू आध घंटे से कर रहा है। देख, भोला, तू बोलने बहुत लगा है। इतना बोलना मुझे पसंद नहीं। काम करना है, तो ठीक से कर, वरना चल उठ, अँगीठी सिलगाकर गोभी छौंक दे। और फिर सबसे कह आ कि खाना तैयार है। उठ, अब ज़रा फुर्ती से हाथ चला।

भोला जी, सरकार।

शीला आध घंटा तो सब को मेज़ पर आने में लगता है। यह तो नहीं कि सुनते ही खाने को आ जायें। ना, इधर घूमेंगे उधर घूमेंगे

[बर्तनों की खटपट। शिशु का रुदन]

शीला (पुकार कर) भोला, अरे ओ भोला, देख वह पप्पी रो रहा है। कभी तो तू किसी काम को वक्त पर याद रखा कर। चल, पहले उसे दूध गरम करके दे। छोड़ दे, इस अँगीठी को। मैं क्या कह रही हूँ तुझे सुनाई नहीं देता उठ, पहले दूध गरम कर, शीशी में भर ला।

ऊषा मां, ओ मां, देख यह नीलू नहीं मानता।

सुनील मां, जीजी ने मुझे चपत मारा। मैं भी उसे मारूँगा।

ऊषा तो तूने मेरी चोटी क्यों खींची ?

सुनील आपने मेरी पेंसिल क्यों तोड़ी ?

ऊषा आपने मेरी गुड़िया की टांग क्यों खींची ?

हरीश (चीख कर) क्या आप-आप लगा रखी है ? ए ऊषी, ए सुनील, चलो इधर। कुछ काम भी करने दोगे, या चख बख ही लगाये रहोगे। जब देखो तब लडाई, जब देखो तब झगडा। बच्चे बहुत देखे, पर ऐसे बच्चे कहीं न देखे। दो दिन भी प्यार से मिल-जुल कर नहीं बैठ सकते। मैंने कहा अजी सुनती हो ?

शीला कुछ कहोगे भी। सुन तो रही हूँ।

हरीश ये आई हैं ये।

शीला कौन ?

हरीश अजी व ही। तुम्हारी पीली कोठी वाली सहेली ?

शीला कौन, नन्दिता ? क्या नन्दिता आई है ?

हरीश हा। कह रही है जीजी न मुझे क्रोशिया का झुमके वाला फूल बनाना सिखाने को कहा। था। आज छुट्टी का दिन था, सो सीखन को चली आई।

शीला होगी, छुट्टी मुझे आज फुरसत नहीं है। सुनो जी, ज़रा उससे कह दो, कल किसी वक्त आ जायगी, मैं ज़रूर सिखा दूगी।

हरीश तुम्ही कह दो न। तुम्हारी सहेली है। मैं क्या कहने जाऊँ ?

शीला तुम्ही कह दोगे तो कुछ घिस जाओगे ?

हरीश खूब हो तुम भी। बाहर से बाहर सहेली को विदा कर दोगी तो वह बुरा नहीं मान जायगी ? ठहरो मैं उसे यहीं बुला लाता हूँ। जो कुछ कहना है

शीला अरे सुनो सुनो ठहरो रुको। कहीं ऐसा गजब न कर बैठना।

हरीश क्या ? क्या हुआ ?

शीला देख नहीं रहे हो, सवेर से बाल भी नहीं बनाये है ?

साडी भी कितनी गन्दी हो रही है ? इस भेष मे जाऊँगी उसके सामन ? जाओ जरा कह दो ना उस से ।

हरीश अच्छा, अच्छा जाता हूँ ।

शीला और हा, ठहरो, जरा सुना, मैंने कहा, खाना तैय्यार है ।

हरीश खाना तय्यार है ? अभी मे ? आज तो छुट्टी का दिन है ?

शीला छुट्टी का दिन है, तो क्या हुआ ?

हरीश कुछ हुआ ही नही ? रोज तो नौ बजे खाकर ऑफिस भागना पडता है। एक छुट्टी का दिन मिलता है, सा उस दिन भी तुम चैन से खाने न दो ।

शीला अजी, मैं हरगिज न कहती तुम से । मुझे क्या भला इस बात का ध्यान नही, पर आज वो रेडियो म

हरीश (झल्लाकर) भला तुम्हारा रेडियो का प्रोग्राम हुआ ! मैं आज ही रेडियो वाला को चिट्ठी लिखता हूँ। कोई भला आदमी समय से खाना भी नही खा सकता ।

शीला भले आदमी दोपहर को ढाई बजे भोजन करते होगे । छुट्टी का दिन है । मैं जरा दो मिनट बैठकर रेडियो भी नही सुन सकती ?

[फेड आउट]

शीला सुनील, जरा रेडियो तो खोल दे बेटा ।

सुनील लेकिन ममी अभी तो

शीला अभी ता क्या ? बस, बात बात पर बहस करना आ गया है तुझ से ? मैं कहती हूँ, हमारी घडी दो-चार मिनट सुस्त भी तो हा सकती है ।

सुनील मेरा क्या ! मुझ से कहती तो मैं सुबह ही खालकर रख देता ।

[तेज सगीत]

हरीश — (झल्लाकर) आज शान्ति स भोजन भी न करन देना। भली चटाई की बुनाई हुई !

ऊषा — चटाई की नहीं पापा, ऊनी शाल की।

नीला — और जब आप चौबीस घंटे रेडियो बजाते हैं, तब कुछ नहीं ? एक दिन जरा मैंने खोल लिया तो आफत आ गई !

हरीश — अच्छा बाबा, अच्छा, जो तुम्हारे मन म आय, सो करो।

रेडियो पर — बहनो अभी आपने सुधा मल्ना से मीरा का एक गीत सुना। अब हम आपको एक कहानी सुनवाते हैं— 'इन्सान का धर्म'

शीला — (सन्तोष से) चलो, दस मिनट तो यह प्रोग्राम चलेगा ही। तब तक हमारा भोजन भी निबट जायेगा।

ऊषा — मैं तो खा चुकी माँ।

सुनील — मैं भी।

नीला — चल ऊषी तू जरा रसोई म स फुलके तो ले आ। तब बेचारा भोला जल्दी बना सकेगा। सुनील तू बेटा जरा कागज कलम तो ले आ। क्यों जी, मैं उठ जाऊँ ?

हरीश — जरूर जरूर। तुम्हारे उठे बिना आज खाना भी न मिलेगा।

सुनील — मम्मी, मम्मी देखो मम्मी यह पप्पी दिन पर दिन शैतान होता जा रहा है। तुम इसे कुछ नहीं कहती। मेरी सारी पेंसिल चबा डाली इसने।

नीला — (भल्लाकर) उसे जैसे इस बात की बड़ी भारी अक्ल है ना ? अपनी चीज सभालकर क्यों नहीं रखी तूने ? सतीश भैय्या सुनो जरा अपना पैन दे दो तुम। जरा जल्दी करो। अब शुरू होने ही वाला है।

सतीश अभी लाया भाभी।

रेडियो एना० लीजिये बहन, अब हम आपको बच्चे का एक सुदर शौल बनाना सिखाते है। देखिये गुरु इस तरह कीजियगा—

पहली सलाई—6 सीधे, 7 उलटे, 2 सीधे, 2 उलट, 4 सीधे

दूसरी सलाइ—8 सीधे, 5 उलट, 2

सुनील मम्मी मम्मी धोबी आया है।

शीला चुप कर पाच मिनट को।

रेडियो एना० पाचवी सलाई—4 सीधे 3 उलटे, 2 सीधे, एक

ऊषा मम्मी सुनो महरी कह रही है, अगर तुम उसे आठ के बजाये दस रुपये

शीला मैं कहती हूँ, पाच मिनट का शान्ति करो तुम लोग, जाओ भाग जाओ यहाँ से।

रेडियो एना० आठवी सलाई—4 सीधे, 3 उलटे, 2 सीधे, एक

[शिशु का रुदन]

सुनील (चीखकर) मम्मी, ओ मम्मी, जल्दी से आओ मम्मी, भाग कर। देखो, पप्पी ने अपन मुह पर राख मल ली। उसकी आखा मे घुस गई। जल्दी आओ माँ।

रेडियो एना० यदि आप शौल को और अधिक सुदर बनाना चाह तो

सुनील मा ओ मा

शीला (खट से रेडियो बद कर देती है) उफ! बोलो, सुनाओ, सब कुछ अभी कहा, न करने दो मुझे कुछ काम। ए ऊषी, तू यहाँ खडी खडी क्या कर रही है? तुमसे इतना भी नही होता कि जरा भाई का मुँह ही धो दे।

ऊषा जाती हूँ माँ।

धोबी बीबी जी, कपड़े मिला लीजिये।

शीला (तेजी से) तुम्हें भी आज ही आना था! क्या जी, तुम से कह रखा है न कि इतवार को कपड़े लाया करो?

धोबी बीबी जी, असल में छुट्टी का दिन है, इसीलिये मैंने कहा आज ही कपड़े ले चलूं। आप को छुट्टी होगी।

शीला हाँ हाँ, छुट्टी क्या न होगी। घर में एक मैं ही तो फालतू हूँ। रख जाओ कपड़े। कल आकर ले जाना।

धोबी बड़ी दूर से आना पड़ता है बीबी जी। दस मिनट तो लगेंगे बस। आज ही मिला लीजिये ना।

शीला अच्छा अच्छा, मिला लेती हूँ।

(शिशु का रुदन)

शीला उफ उधर वह रो रहा है। मैंने कहा, अजी सुनते हो। जरा ये धोबी के कपड़े मिला लो। छुट्टी के दिन तो घर का थोड़ा काम करा दिया करो। जाने कहाँ जाकर बैठे हैं ये! मैंने कहा अजी सुनते हो।

हरीश वन हार्ट

सतीश टू स्पेड।

हरीश इस बार काल मेरी ही रहेगी।

सतीश तो कीजिये न हिम्मत। मना कौन करता है।

ऊषा ए पप्पी सीधा बैठ, गधे अब रो रहा है मुँह पर राख मली थी, तब नहीं सूझा था कि यह आँख में भी घुस जायेगी।

शीला मार डालेगी ये उसे। जाऊँ पहले उसका मुँह धो आऊँ।

धोबी बीबी जी, कपड़े।

शीला (झल्लाकर) ठहर जरा, मिला लेती हूँ कपड़े भी।

सुनील (चिल्लाकर) मैं हूँ हनुमान। पवनपुत्र हनुमान। जो एक छलाग म समुद्र को लाघ गया, जिसने सोन की लका को जला कर राख कर दिया। खबरदार, होशियार, जो कोई मेरे सामने आया। मै हूँ पवनपुत्र हनुमान।

ऊषा (खिलखिलाकर) मा मा, जरा देखो ना। सुनील न अपनी क्या दशा बनाई ह। तुम्हारी लिपस्टिक से अपना मुह रग कर और तुम्हार रशमी परादे की लम्बी पूछ लगा कर

शीला हाय-हाय, सुनील यह क्या किया! राम जाने यह छुट्टी का दिन क्यो आ जाता ह! सब को छुट्टी मिलती है, और मरी

पडोसिन बहू, मैंन कहा, अरी बहू किधर गई। ले मैं आ गई। मैने कहा आज जाकर बहू से जम्पर काटना सीख आऊ। छुट्टी का दिन है

(नेपथ्य मे बच्चो की खिलखिलाहट ला, सतीश कॉल तुम्हारी ह बीबी जी वो महरी के मिले जुले स्वर)

हीरक हार

पात्र

च-दा	एक रूपवती नवयुवती
निमल	च-दा का नवयुवक पति
रजनी	च-दा की समवयस्क सहेली
छमिया	च-दा की नौकरानी

आधार

इस एकाकी की रचना, विख्यात कहानी-लेखक मोपासाँ की कहानी 'द डायमड नैक्लेस' के आधार पर की गई है।

पात्र-परिचय

चन्दा

दरिद्र पिता के घर जन्म लेने वाली इस कन्या ने अतुलित रूप-यौवन की निधि पाई है। अपने अन्तरतम मे उसने सुनहले सपनों के अगणित हीरक हार सँजाये थे किन्तु जीवन चक्र ने उसका भाग्य, उसके समवर्गीय युवक के संग बाँध दिया। नये घर मे उसे सब कुछ मिला—पति का स्नेह, सुख तथा आराम, फिर भी क्या वह सुखी रह सकी? नहीं। जिस रूप यौवन के कारण उसकी आकांक्षायें इतनी बढ गई थी, वही सौन्दर्य उन्ही आकांक्षाओं की तृप्ति खोजने के कारण दबकर कुचल गया। किन्तु वह जीवन से नही घबराई। मुसीबतों से घबराकर उसने सिसकियाँ नहीं भरी। अपने चरित्र की दृढता से उन सभी पर विजय पाकर, उसने जीवन के नये क्षेत्र में कदम रखने की तैयारी की।

रजनी

चन्दा की समवयस्क सहेली है। किन्तु उसके व्यवहार म प्रौढता तथा समझदारी की छाप है। वह चन्दा के समान दीन परिस्थितिया म नहीं पली। उसकी सभी आकांक्षायें तुरन्त पूरी की गइ। अभाव किसे कहते है, यह उसे पता नही। किन्तु उसके मन म अपने धन का अभिमान नहीं। अपनी सहेली से उसे वास्तव म सच्चा स्नेह है। भिन्न परिस्थिति होने के कारण, वह उसके कष्टो को समझ नही पाती, फिर भी समवेदना तथा सहायता द्वारा उन्हे दूर करने की पूरी कोशिश करती है।

निर्मल

मध्यवर्गीय घराने का प्रतिभाशाली नवयुवक है। अपनी योग्यता के बल से वह नौकरी पा गया है और उसी म मस्त रहकर जीवन बिता देना चाहता है। वह सीधा-सादा-सा नवयुवक है। उसके शौक भी साधारण-से है। उसके प्रफुल्ल अन्तःकरण म निरन्तर हँसी की अजस्र धारा बहती

रहती है। उसका शुभ्र हृदय स्नेह, ममता तथा समवेदना का अडिग केन्द्र है। अपनी पत्नी के प्रति उसे असीम प्रेम है, और उसके लिए बडे से बडा बलिदान कर देना भी उसके लिए ऐसा ही है, जैसे कोई राह म पडी ककरी को ठोकर मारकर आग बढ जाये।

छमिया

चतुर, कुशल सेविका है। जबान उसकी कुछ तेज अवश्य है, पर यह उसके स्वभाव का दोष नही। दिन रात नये-नय मालिका स अकारण ही घमकी खाने के कारण शायद उसे कुछ अधिक बोलने का अभ्यास पड गया है। उसके हृदय म सेवा तथा ममता के अपूव भाव है। वह अपन कतव्य को पहचानती है, तथा उसे समुचित रूप से पूण करते समय, अपने मालिको के सम्मान को अक्षुण्ण रखना भी उसे आता है।

हीरक हार

(रेडियो बज रहा है।)

चन्दा निर्मल ?

निर्मल हूँ।

चन्दा ऐसे नहीं। पहले यह रेडियो बन्द कर दो, तब सुनो।

निर्मल कानों में तुम्हारी बोली पड़ते ही रेडियो की आवाज़ खुद ही फीकी पड़ जाती है चन्दा। उसमें तुम्हारी मधुर वाणी जैसी मिठास कहाँ !

चन्दा हटो ! तुम बड़े नटखट हो !

निर्मल और तुम बड़ी सीधी हो ?

(दोनों हँस पड़ते हैं।)

चन्दा निर्मल, आज सिनेमा चलो न।

निर्मल नहीं, चन्दा। मुझे तो सिनेमा में बिलकुल मज़ा नहीं आता। वहाँ अँधेरे में तुम्हारा यह खूबसूरत चेहरा

चन्दा हटो फिर वही पुरानी बात ?

निर्मल पुरानी बात कैसे ? अभी तो हमारे विवाह को कुल आठ ही महीने हुए हैं।

चन्दा तब तो तुम्हें मेरी खुशी का और भी ज्यादा खयाल रखना चाहिए।

निर्मल क्या मैं तुम्हारी खुशी का खयाल नहीं रखता चन्दा ?

चन्दा यह मैंने कब कहा ?

निर्मल अभी तो कह रही थी।

चन्दा (हँसकर) बातों में भुलाकर बात उड़ा देना चाहते हो ? नहीं आज तुम्हें सिनेमा चलना ही होगा।

निर्मल बेगम साहिबा हुक्म देंगी तो खादिम को मानना ही

होगा।

चन्दा ओह! निमल! कितन अच्छे हो तुम!

निर्मल मच? अच्छा तो तुम मट स मेज पर चाय लगवाओ। मैं तब तक हाथ मुह धोकर आता हूँ।

चन्दा (पुकारकर) छमिया, अरी ओ छमिया

छमिया (कही दूर से) जी आई मालकिन।

चन्दा देखो चाय लगाओ झटपट। नाश्त म क्या बनाया है?

छमिया जी, मठरी ह। बनाया तो कुछ नही।

चन्दा (खीझकर) क्या नही बनाया। मैंने अडे के सैण्ड-विच बनाने के लिए कहा था न?

छमिया जी दाल भी ता लानी थी और डबल रोटी भी खतम हो गई थी अड के लिए पैसे ही नही बचे।

चन्दा बचते कैसे? जिस चीज के लिए मैं कहूँ, उसके लिए कभी पैस बच सकत हैं? दोनो समय वही खाली चाय और वही

निमल (गुनगुनाते हुए आता है।) हलो, डार्लिग! आ गई चाय? अर! यह क्या? तुम्हारे खूबसूरत गालो पर यह गुस्से की सुर्खी? इन काजल काली आखा मे

चन्दा हटा, हम अच्छा नही लगता।

निमल क्या नही अच्छा लगता? मरी बातें?

चन्दा कसी बात बालते हा! तुम्हारी बाता के सहारे ही तो जिन्दा हूँ। धन नही, दौलत नही, आराम की जिन्दगी बिताने के साधन नही। ऐसे म

निमल पगली! (हँसता है।)

चन्दा (विस्मय से) क्यो? पगली क्यो?

निमल और नही तो क्या! अरी बावरी, सुख चन, धन-दौलत मे नही, मन के सन्तोष मे है। मन म सन्ताप न हो तो

गाने पर सिंहासन पर भी नींद नहीं आती। और मन म म ताप हो तो कांटो के बिछावन पर भी नींद नहीं टूटती।

चन्दा ताता म तुमसे सभी जीत गयी हू, जो आज जीत सकूंगी ?

निमल (हलके हँसकर) मान गई न ? अच्छा तो आओ, चाय पी लें। फिर चलेंगे।

चन्दा आओ बठो बठो न। खडे क्या रह गये ?

निमल ऐसे नहीं। पहले तुम हँस दो। हंसो, एक बार नहीं हँसोगी ?

चन्दा नहीं।

निमल अच्छी बात है। फिर न कहना। देखो वह हँसी तुम्हारे घन घुघराले बालो पर मल रही है। वह देखा, वह धीरे से चल दी। अब वह तुम्हारे माथे पर आ गई आखो म आई वह नाक पर आई वह गालो पर चढी, और

[चन्दा एकदम हँस पडती है। निमल भी हँसता है। उनकी हँसी हलके सगीत मे डूब जाती है। दृश्य परिवतन]

चन्दा छमिया य दोनो चादरे उतारकर लान्ड्री म दे आओ।

छमिया घर पर धोने से ही काम चल जायगा, मालकिन। लान्ड्री का बिल बढ जायगा तो मालिक नाराज होगे।

चन्दा उफ ! तुम और तुम्हारे मालिक ! तुम दोनो को पसे के सिवा कभी कुछ और भी बात सूझती है।

छमिया मालकिन आपको तो किसी नवाब या राजा के बेटे से शादी करनी थी।

चन्दा (क्रोध से) जबान सँभालकर बोल। जानती है मैं

अभी तुम्ह नौकरी स निकाल सकती हू ?

[दरवाज की घटी वजने की आवाज]

छमिया निकाल दीजिये न। इतनी सस्ती नौकरानी दूसरी नही मिलेगी। वह तो मैं ही हूँ जो पटी हुई हूँ। और कोई होती, तो

[घन्टी फिर बजती है।]

चन्दा जा जा, देख, दरवाजा खोल। कोई आया है।

[छमिया जाती है।]

चन्दा क्या नखरे है ! एक काम करेगी, पचास बात बनायेगी। आने दो आज निमल को। अरे ! वाह ! रजनी, तुम? आओ, आओ। आज कैसे रास्ता भूल गइ ?

रजनी तुम्ह तो अपने पतिदेव से छुट्टी ही नही मिलती। मैंने कहा—मैं ही नई नवेली दुलहिन के हाल चाल पूछ आऊँ।

चन्दा चल, हट।

[दोनो हँसती ह।]

रजनी और सुनाओ सखी, क्या हाल चाल ह ?

चन्दा तू ही अच्छी रही, रजनी। मैं तो इस फन्दे म फँसकर पछता रही हूँ।

रजनी क्यो री ! क्या निमल तुझे प्यार नही करता ?

चन्दा नही, यह बात नही। उनका बस चले तो वह मुझ फूलो म छिपाकर बठा दें। पर तू तो जानती है सैक्रेटरियट म मामूली क्लक ह। इतना पैसा कहा जो

रजनी उन्नति करने म समय लगता है, चन्दा। इन्सान अपनी मुट्ठी म दौलत लेकर जन्म नही लेता।

चन्दा लेकिन कुछ लोग जन्म से ही दौलतमन्द होते है। उन्ह

कभी किसी वस्तु की कमी महसूस नही होती।

रजनी — तुझे किस बात की कमी है ? सभी कुछ तो है तेरे पास। अपना एक छोटा-सा घर योग्य-सुशील पति

चन्दा — मुझे तो कालेज के वे दिन याद आते हैं। कितने मजे के दिन थे वो ! बस, पढना, खाना खेलना, और मीठे-मीठे सपने देखना। काश, वे सपने सच हो जाते !

रजनी — तो अभी कौन-सी जिन्दगी बीत गई ? सपने पूरे होने के दिन तो अब आए है।

चन्दा — सोचा करती था—एक आलीशान घर होगा, सुन्दर-सी मोटर होगी, नये कीमती कपडे पहन, हम रोज शाम सवेरे सैर को जाया करेंगे। घर लौटते ही नौकर सेवा मे तैयार खडे मिलेगे। आलीशान डाइनिंग टेबिल पर सोने चाँदी के बरतनो मे, दोस्तो की दावतें दिया करूँगी। लेकिन कहा ! कुछ भी तो नही हुआ ? यह छोटा सा घर यह किराये का फर्नीचर य पुराने पर्दे

रजनी — मन मे इतने ही अरमान थे, तो तू ने किसी दौलतमन्द से विवाह क्यो नही किया ? किसी नवाब या राजा के बेटे से, जो तुझे

चन्दा — (खिन्न हँसी हँसकर) मैं गरीब की बेटी ? मेरी ऐसी किस्मत कहाँ कि कोई रईसजादा मेरी तरफ आख उठाकर देखता।

रजनी — क्यो नही ! यह बला की खूबसूरती, जो तू परियो के दामन से चुरा लाई है, इसके पीछे कौन दीवाना न हो जाता ?

चन्दा — वह सब कहानी किस्सो की बातें है रजनी ! किस्मत ने मुझे 'सिन्डरेला' बनाया लेकिन मेरे लिए किसी राज कुमार का जन्म न दिया। (रोती है।)

रजनी अरे, रे ! तू रोती है ? नादान ! रोने से फूलभरी जिन्दगी मे भी काँटे उठ खडे होते है। आ, चल। हैंगिग गार्डन घूमने चलें। उठ, अब उठती है कि लगाऊँ एक चपत ?

[चन्दा रोते रोते हँस पडती है। हलके सगीत द्वारा दृश्य परिवतन।]

निमल (पुकारते हुए आता है।) चन्दा, चन्दा चन्दा, देखो, आज मैं तुम्हार लिए क्या लाया।

चन्दा क्या है, दिखाओ।

निमल उहू, ऐसे नही दगा। पहले बोलो, बताओ।

चन्दा (अधीर भाव से) दिखा दो, निमल। परेशान न करो।

निमल नही, ऐसी आसानी से नही मिलेगा। पहले

चन्दा न दो तुम। मै छीन लूगी।

निमल अरे ! अरे ! क्या करती हो ? ठहरो, देखो, फट न जाए

चन्दा यह क्या ! सिफ पार्टी का इन्वीटेशन ? हुँह !

निमल (विस्मित हो) फेंक दिया ? तुम्हे जरा भी खुशी नही हुई ? और मैं सोचता आ रहा था कि इसे देखते ही तुम्हारी आँखो म खुशियो के बादल नाच उठेंगे।

चन्दा (खिन्न स्वर मे) बडी भारी खुशी की बात है ना ?

निमल (विस्मय से) खुशी की बात नही है ? चीफ सैक्रेटरी ने पार्टी दी है। बडे सौभाग्य से यह निमत्रण मिल पाता है। कितनी मुश्किल से, कितनी कोशिश से, यह हाथ लग सका था। सोचा था

चन्दा सोचा तो होगा ही। लेकिन यह भी सोचा कि इतनी शानदार पार्टी मे मैं क्या पहनकर जाऊँगी ?

निमल क्यो वह तुम्हारी शादी वाली जरी के तार की साडी

चदा वह ? (अवना से हँसती है।)

निमल मरी समझ म ता इस मौक पर वह बडी शानदार लगेगी।

चदा रहन दा। जाओ। यह निमत्रण अपन किसी मित्र का द आओ। खुश हो जाएगा बचारा।

निमल (आहत स्वर म) तो तुम्ह वह साडी पसन्द नहीं।

चदा जरा ता समझन की कोशिश करा, निमल! वहा बड बड अफसरो की पत्निया आएँगी, एक से एक नये फशन की साडिया पहनकर। वहा उनक बीच मे, मैं वह पुरान ढग की लाल साडी (आखो मे आसू भर आते है।)

निमल अरे! अरे! इतनी सी बात क लिए आँखो मे आसू? एसा ही है तो चलो तुम एक नई साडी खरीद लो न।

चदा नई साडी! उसके लिए पैसा कहा है?

निर्मल पैसा हा जाएगा। तुम्ह मालूम है, इस बप मित्रो के साथ लोनावाला जाने क लिए मैंने कुछ पैसे जमा किये थे। बोलो तुम्ह कितना चाहिए।

चदा परन्तु फिर तुम लोनावाला कैसे जा सकोगे? कितने वर्षों से ता तुम लोगो का प्रोग्राम बन रहा है?

निमल तुम्हार अरमानो के आगे, मरी नाउम्मीदी की कोई कीमत नही। तुम्हारी खुशी म ही मेरी खुशी है चदा। चलो।

चदा ओह! तुम कितन अच्छे हो, निमल!

निमल उठो उठो अब देर न करो।

[हलके सगीत द्वारा दृश्य परिवतन।]

[करुण सगीत]

निमल *चदा, शायद मैं तुम्ह कभी भी न समझ सकूँगा।*

चन्दा क्या ?

निमल सोचा था—नई साडी खरीदने के बाद तो तुम खुश हो जाओगी तुम्हारी इन उदास आँखो में हँसी की चमक आ जाएगी। लेकिन

चन्दा तुम सच कहते हो निमल ! मैं भी खुश होना चाहती हूँ, लेकिन हो नही पाती।

निमल (विस्मित हो) क्यो ?

चन्दा तनिक देखो—यह साडी कितनी सुन्दर है कितनी शानदार, किन्तु इसके संग पहनने के लिए मेरे पास कोई भी आभूषण नही !

निमल (हसकर) बस ! इतनी सी बात ? रजनी तो तुम्हारी सहेली है न ? उसके पास तो अलमारी भर आभूषण होगे।

चन्दा अरे हा ! रजनी ? उसकी तो मुझे याद ही नही थी ! किन्तु क्या उससे कुछ माँगना ठीक होगा ?

निमल क्यो नही ? आखिर वह तुम्हारी बचपन की सहेली है।

चन्दा हा। ठीक है। तुम्हारी बात सच है, निमल। मैं आज ही उसके पास जाऊँगी। कल ही तो पार्टी का दिन है।

निमल हा कल ही पार्टी का दिन है। वहाँ पार्टी में तुम शान से बडे बडे अफसरो के संग अग्रेजी नृत्य करना। पास वाले कमरे में, अकेले बैठ मैं खामोशी से तुम्हे देखता रहूँगा।

चन्दा क्यो, अकेले क्या ! तुम भी नृत्य करना।

निमल नही मुझे और किसी के साथ नृत्य करना पसन्द नही। जब से तुम्हे देखा है और किसी पर मेरी नज़र ही नही ठहरती। कुन्दकली से सलोने ये सुकोमल हाथ, ये गहरी झील-सी आँखे घिरती घटाओ-से ये घने घुँघराले

वाल
चदा (लज्जित स्वर म) हटा कैसी बातें बोलत हो!
निमल (हँसकर) झूठ तो नही कहता।
चदा जाओ बडे आए सच कहन वाले!
[दोनो हसते हैं। हलके सगीत द्वारा दृश्य परिवतन।]
चदा आह! निमल! कितनी शानदार थी पार्टी!
निमल (जम्हाई लकर, थकित स्वर म) थकी नही तुम? सवेरे क चार बजने वाल हैं।
चदा जानते हो तुम्हारे वो चीफ सैक्रेटरी हैं न, वो भी मरा परिचय पूछ रहे थे।
निमल क्यो न पूछते? मामूली इन्सानो के बीच यकायक कोई परियो की रानी पहुँच जाये तो सभी के नेत्र चकाचौंध हो ही जायगे।
चदा जाओ! तुम्ह तो हर समय यही बातें सूझती है।
निर्मल (मुस्कराकर) झठ तो नही कहता?
चदा (लज्जित स्वर म) हटा! बड आय सच कहने वाले।
[दोनो हँसते है।]
निमल (जम्हाई लेकर) ओह! कसी नीद आ रही है! अभी आफिस जान का समय हो जायगा।
चदा और सुनो, कनल रमेश न कहा
निमल अब बातें ही करती रहोगी! सो जाओ। सुबह मुझे काम पर जाना है।
चदा इस कण्ठहार ने तो वास्तव म कमाल ही कर दिया! सभी की निगाह विस्मय और प्रशसा से इसी पर टिकी हुई थी। श्रीमती नटराजन न तो कहा
निमल इधर की रोशनी बन्द कर दो चदा! मेरी आखें तो नींद स बन्द हुई जा रही हैं।

चन्दा निमल ! बहुत थक गये तुम ? अच्छा, मैं झटपट वस्त्र वदलकर आती हूँ। बस एक वार

निमल (गहरी जम्हाई लेकर) फिर एक वार क्या ?

चन्दा एक बार और दपण के सम्मुख खड़े होकर इस कण्ठ-हार की शाभा निरख लू। सिफ एक बार और हाय!
(एकदम चीख उठती है।)

निमल (और अधिक घबराकर) क्या है, चन्दा ? क्या बात हुई ?

चन्दा वह हीरे का कण्ठहार ! वह वह मेरे गले म नही है, निमल।

निमल (और अधिक घबराकर) यह तुम क्या कह रहीहो!

चन्दा (आसू भर स्वर म) देखा देखा, मेरा गला। यह सूना है।

निमल बस ! इतनी सी बात के लिए आँखो म आसू भर लाइ ? देखो तो, कही साडी की सलवटो म उलझ गया होगा। जायेगा कहा !

चन्दा *नही नही, वह कही भी नही है। वह कही गिर गया।* खो गया। हाय ! अब मैं क्या करूँ ! अब मैं रजनी से क्या कहूँगी मैं

निमल घबराओ मत, चन्दा। मैं अभी जाता हूँ।

चन्दा ठहरो, तुम कहाँ जाओगे ?

निमल हटो, चन्दा। छोड दो मुझे।

चन्दा कहाँ जाओगे ? इस अँधियारी भयानक रात म, इस वर्षा और तूफान मे। वह न जाने कहाँ गिरा हागा डाइनिंग रूम मे, डासिंग हाल म, सडक पर, या उस घोडागाडी मे

निमल वह कही भी क्यो न गिरा हा, मैं उसे खोज कर ही

लाऊँगा।

चन्दा (चीखकर) निर्मल

निर्मल धीरज रखो। मैं जा रहा हूँ।

[द्वार खुलने की ध्वनि। आँधी-तूफान का शोर। हल्के संगीत द्वारा दृश्य परिवर्तन]

चन्दा (वेदनाभरे स्वर में) नहीं मिला?

निर्मल (थकित स्वर में) नहीं। घोड़ागाड़ी का नम्बर तुम्हें याद है?

चन्दा (हताश भाव से) नहीं।

निर्मल तिल तिल धरती छान डाली। कहीं भी तो नहीं छोड़ा। उस घोड़ागाड़ी का पता लग जाता तो

चन्दा अब क्या होगा निर्मल?

निर्मल घबराती क्यों हो? अखबारों में विज्ञापन देंगे। पुलिस में खबर करायेंगे। कहीं न कहीं, कुछ न कुछ पता लगेगा ही।

चन्दा और इस बीच यदि रजनी ने उसे वापस माँग लिया तो?

निर्मल तो, उससे कह देना (रुक जाता है।)

चन्दा क्या? क्या कह दूंगी? बोलो निर्मल। मेरी तो साँस मानो रुक रही है।

निर्मल (गम्भीर स्वर में) ऐसा करो। तुम उसे एक पत्र लिख दो कि कण्ठहार का पेन टूट गया है। तुम ने उसे ठीक कराने के लिए सुनार को दिया है। तीन चार दिन में मिल जाएगा तब वापस कर दोगी।

चन्दा लेकिन अगर तीन चार दिन में न मिला, तो?

निर्मल इतनी दूर की बात अभी से सोचने से क्या लाभ है चन्दा!

चन्दा नही, तुम बोलो, बताओ, मुझे विश्वास नही होता कि अब वह मिल सकेगा।

निर्मल (दृढ स्वर म) वह कण्ठहार मिले या न मिले किन्तु तुम्हारी सहेली का कण्ठहार अवश्य मिल जायेगा।

[हलके सगीत द्वारा दृश्य परिवर्तन]

[चाय के प्लेट प्याला की खनकती ध्वनि]

रजनी (अभियोग भरे स्वर म) कितने दिन लगा दिय, चन्दा! इस बीच ऐसा अवसर भी तो आ सकता था कि मुझे इस कण्ठहार की जरूरत पड जाती।

चन्दा हा, सखी। लौटाने म कुछ देर तो अवश्य हो गई। मैं ने तुम्हे लिखा था न, यदि इसका पेच न टूट गया होता तो मैं अगले दिन ही इसे वापस कर जाती।

रजनी कोई बात नही। मैं न तो ऐसे ही कहा। अरे! बातो-बातो म तेरी चाय तो ठडी हो गई! ठहर मैं दूसरा प्याला मँगाती हूँ।

चन्दा नही। अब मै जाऊँगी।

रजनी अरी, बैठ भी। ऐसी भी क्या जल्दी है। अभी मोटर मँगवाती हू। हैंगिग गार्डेन घूमने चलें।

चन्दा नही रजनी, अब जाने दे। मुझे घर पर कुछ काम है।

रजनी घर पर काम है? और तुझे? (हँसती है।) मुझसे भी चालाकी!

चन्दा सच कहती हूँ सखी। मै झूठ नही बोलती।

रजनी चल, हट, रहने दे। आज तक तूने कभी कुछ काम किया है, जो आज करेगी?

चन्दा सच कहती हूँ, आज बडा काम है। मकान बदलना है। सब सामान बाँधना है।

रजनी क्या? क्या और कोई अच्छा मकान मिल गया है?

चदा हाँ खूब हवादार है। पहले वाले से कही अधिक अच्छा है।

रजनी अरी ठहर, यह तो बताती जा। है कहाँ, किस तरफ ?

चदा (घबराये से स्वर मे) ऐसे तुझे पता नही लगा। किसी दिन मैं स्वय आकर तुझे अपने साथ ले जाऊँगी।

रजनी केवल ले ही जायेगी ? नया मकान मिलने की खुशी मे दावत नही खिलायेगी ?

चदा क्या नही, जरूर।

रजनी देख, मैं अभी से कहे देती हूँ मेरे लिये पिस्ते की बर्फी अवश्य बनाना, नही तो

चदा नही तो, तू भूखी ही रह जायेगी ? है ना ?

[दोनो हँसती है।]

चदा अच्छा, सखी, अब मैं जाती हूँ। विदा !

रजनी विदा क्या ? फिर मिलेंगे।

चदा हा, हा सो तो मिलेंगे ही (जाते पगो की ध्वनि)

रजनी भाग गई ? कितना शशव है इसके सुकुमार भोले मन मे ! कितने हीरक-हार सजा रखे है इसने अपने सुनहले स्वप्नो मे ! लगता है, अब उनके सच ही कण्ठ मे झूलने के दिन आये है। अब वास्तव मे उसके दिन फिरे है

[हलके सगीत द्वारा दृश्य-परिवर्तन]

[नल की बहती धारा का स्वर। कपडे धाने की आवाज़ बरतनो की खटपट]

चदा उफ ! घर के ये काम कभी खतम नही होते ! एक से छुट्टी मिली नहीं कि दूसरा सिर पर सवार। काम करते-करते शरीर चकनाचूर हो जाता है हिम्मत जवाब देने लगती है, पर चैन नही मिलता। छमिया के

ऊपर मैं बेकार गुस्सा हुआ करती थी। उस दिन, नौकरी छोडकर जाते समय, बेचारी की आँखो मे आँसू भर आये थ।

[धीरे धीरे बतन धोकर रखती है।]

चन्दा वो दिन भी कितने अच्छे थे! अच्छा खाते थे, साफ पहनते थे। सध्या को इधर-उधर सैर कर आते थे। सैर करना तो दूर, अब तो सास लेने की भी फुरसत नहीं मिलती। बेचारा निमल! दिन रात खून-पसीना एक कर देने पर भी, कर्ज का बोझ शैतान की तरह सिर पर सवार है। और यह सब मेरे कारण से सब कुछ केवल मेरी ही वजह स (धीरे धीरे सिसकती है।)

[कोई द्वार खटखटाता है।]

रजनी उफ! किस्मत तूने हँसने नही दिया अब जी भरकर रोने भी नही देती। देखू, कौन है!

[द्वार खुलने का शब्द]

चन्दा आह! छमिया तू है? आ।

छमिया कहो, मालकिन, कैसी हो?

चन्दा फिर तूने मुझे मालकिन कहा!

छमिया तब और क्या कहूँ? मालकिन तो आप है ही।

चन्दा नही। आज मुझ मे और तुझमे कोई अन्तर नही। पसेने जो दीवार हम दोनो के बीच खडी कर दी थी, वह कभी की टूट चुकी है। अब हम दोनो बराबर हैं।

छमिया नही, मालकिन, मैं तुम्हारी बराबरी कभी नहीं कर सकती। दुख के ये दिन देखत देखते बीत जायेंगे। एक बार फिर तुम मकान बदलोगी। किसी ऊँची कोठी मे

चन्दा यह सब सपने है, छमिया। अब मैंने सपने देखना छोड़ दिया है।

छमिया तुम अपने को धोखा दे रही हो, मालकिन! जब तक इन्सान की साँस जिन्दा रहती है, तब तक वह सपने देखना नहीं छोड़ सकता। जिस दिन सपने देखना छोड़ दोगी उस दिन तुम भी जिन्दा नहीं रह सकोगी।

चन्दा तू सच कहती है, छमिया। आज भी मुझे वह रात याद आती है, कितनी मधुर थी, मेरे जीवन की वह सुनहरी रात, और कितने तूफानों से भर कर निकली उसकी वह अँधियारी भोर! काश! उस रात मैं उस पार्टी में न गई होती (धीरे से रोती है।)

छमिया रोने से क्या होगा, मालकिन? धीरज से काम लो।

चन्दा धीरज की भी एक सीमा होती है, छमिया। धीरज रखते नौ वर्ष बीत गये। नौ लम्बे वर्ष! काश! उस दिन वह कण्ठहार न खोया होता! (धीरे से सिसकती है।)

छमिया मालकिन!

चन्दा छमिया, यदि उस दिन कण्ठहार न खोया होता तो क्या होता?

छमिया क्या होता मालकिन?

चन्दा उस दिन कितने नये लोगों से मेरा परिचय हुआ था! कितने पदाधिकारियों और अफसरों ने मुझे अपने घर आमन्त्रित किया था। मैं उनके घर जाती। अब बड़े लोगों से परिचय होता। निर्मल को कोई ऊँची नौकरी मिल जाती। दौलत से घर भर जाता। हमारी ज़िन्दगी में खुशियाँ बरस पड़ती। किन्तु यह सब कुछ नहीं हुआ। केवल इस कारण कि उस कण्ठहार का पता

शायद ढीला था।

छमिया आगे की बात सोचिये, मालकिन। पीछे की बात सोचने से क्या लाभ है ?

चंदा पीछे की वह एक ही बात आगे की सारी जिन्दगी में काँट बो रही है। सारी बम्बई छान डालने पर, अंत में एक दुकान पर वैसा कण्ठहार मिला भी, तो उसका मूल्य सुनकर हमारे होश उड़ गये चालीस हजार रुपये

छमिया न सोचिये मालकिन !

चंदा निर्मल के पिता कुल पाँच सौ रुपये छोड़ गये थे। मेरे हाथ एकदम खाली थे। बैंक से उधार लिया। मित्रों से कर्ज़ा लिया। किसी से दस, किसी से पन्द्रह, किसी से पाँच। प्रोनोट लिखे। कण्ठहार खरीदकर सहेली को लौटा आई। यह नई जिन्दगी शुरू हुई। यह जिन्दगी जो मौत से भी अधिक भयानक है।

छमिया ऐसा न कहिए मालकिन।

चंदा कैसे न कहूँ, छमिया ! अपने लिए मुझे अफसोस नहीं। अपनी गलती का मुझे उचित दण्ड मिला। लेकिन बेचारा निर्मल ! उसने क्या कसूर किया था जो उसके कमज़ोर कंधों पर यह भयानक भार लद गया। दिन-भर काम में जुटा रहता है। रात भर जाग-जागकर काम करता है शरीर दुबला पड़ गया है, आँखों के नीचे स्याही दौड़ गई है भर पेट खाने को नहीं मिलता फिर भी यह कर्ज का भूत नहीं उतरता। मेरे कारण (रोती है।)

[द्वार पर खटखट होती है।]

चंदा देख तो, छमिया। शायद वे आ गये।

निमल हला डार्लिंग ! देखो, आज मैं तुम्हारे लिए क्या लाया ?
चदा आह ! मेरे लिए ? देखू देखू ।
निमल उहूँ ! ऐसे नही । पहले बताओ, क्या है ।
चदा न बताओ । मैं क्या छीन नहीं सकती ?
निमल अरे ! अरे ! क्या करती हो ? ठहरो ।
चदा ओह ! फूल ! कितने सुन्दर कितन प्यारे ! तुम तुम कितने अच्छे हो, निमल !
निमल सच ! और तुम ?
चदा निमल, एक बात कहूँ ? देखो, बुरा न मानना ।
निमल तुम्हारी बात का बुरा मानूगा ? और मैं ? (हँसकर) बावरी !
चदा क्यो तुम या बेकार म पैसा बरबाद करत हो ! इन पसो से
निमल हुँह ! कितने पसे ? कुल छ पैसे ही तो खच हुए !
चदा एस एसे दो छ पसे मिलाकर तीन आने बन सकते थे। उन तीन आनो म तुम्हार लिए
निमल एक मक्खन की टिकिया आ सकती थी ? यही न ?
चदा तुम मरे मुह की बात क्या छीन लेते हो, जी ! कौन सी आदत है यह तुम्हारी ?
निमल क्या यह कोई नई आदत है ?
चदा नही । बहुत पुरानी है । यह मुझे भी सिखा दो न, निमल !
निमल अब तो तुम भी सीख गई हो ।
चदा सच !

[दोनो हँसते हैं । हलके सगीत द्वारा दृश्य परिवतन]

[चन्दा और निमल की सम्मिलित हँसी सगीत म स उभरती है ।]

निमल हूँ! बहुत खुश नजर आ रही हो आज!
चन्दा क्यो नही?
निमल क्यो जी, हम भी ता सुन, ऐसी क्या खास बात है?
चन्दा खास बात तो है ही। आज ही तो वास्तव म मेरे जीवन मे हँसन का दिन आया है।
निमल सो कैसे?
चन्दा आजकल तुम कज का आखिरी पसा जो चुकाने जा रहे हो।
निमल सच है, चन्दा। आज की यह रात ही आखिरी रात है। कल से हमार जीवन की नई भोर का उदय होगा।
चन्दा हाँ, कल से हम दुनिया वालो क सामने सिर ऊँचा कर आजादी से चल सकेंगे। रात के वह दोना ट्यूशन और प्रूफरीडरी का काम कल से तुमको छोड देना होगा।
निमल नही, डार्लिंग, ये काम तो न छट सकेंगे।
चन्दा क्या, फिर कौन-सा कर्जा शेष रह जायेगा जिसे पूरा करने के लिए तुम्हे तन मन सुखाकर पैसा कमाना होगा।
निमल तुम्हारे अधूरे सपनो को पूरा करने की जिम्मदारी मेरी ही है चन्दा! इतन दिन दारुण अभाव मे, तुमने जो कष्ट सहे मुख से एक उफ तक निकाले बिना, जो इतनी मुसीबतो को झेल लिया, उसके बदले, क्या मैं
चन्दा क्या तुम मेरी एक तनिक-सी इच्छा भी पूरी न कर सकोगे?
निमल क्या? तुम एक बार कह दो। मुझे पूरा करने मे देर न लगेगी।
चन्दा वादा करते हो?
निमल : बिलकुल जी, एकदम।

चंदा तो कहो कि कल से मैं सब अतिरिक्त काम छोड़ दूंगा।

निमल परंतु चंदा

चंदा अब किन्तु परन्तु कुछ नहीं। तुम वादा कर चुके हो। तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत विनष्ट हो चुका। अब मैं तुम्हें कदापि इतना काम न करने दूंगी।

निमल स्वास्थ्य बना रह सके, इसके लिए ही तो मुझे काम करना होगा, चंदा।

चंदा देखो जी, मुझे बातों में भुलाने की कोशिश न करो। मैं कहे देती हूँ, मैं

निमल अपना हाथ इधर लाओ। चंदा। देखो, तुम्हारी य नाजुक पतली पतली उँगलियां कैसी खुरदुरी हो गई हैं! तुम्हारे गुलाबी गालों पर पीलापन छा गया है।

चंदा निमल!

निमल मेरे पास पैसा नहीं था, इसलिये बुढ़ापा वक्त जीतने की कोशिश करने लगा है, चंदा। लेकिन मैं उसे जीतने नहीं दूंगा। मैं फिर से तुम्हारे आराम के लिए सब सामान इकट्ठा करूँगा। फिर से तुम्हारे गालों पर सुर्खी लौट आयेगी। एक बार फिर से तुम्हारे जीवन में वह सुनहली रात आयेगी

चंदा निमल, जाओ, देर हो जाएगी तो बस बन्द हो जायेगा।

निमल तुम मेरी बातों को भले ही भावुकता भरे भावों की उड़ान समझ लो, चंदा, किन्तु इतना जान लो—तुम्हारा निमल, अब वह पहले वाला, भोला भाला निमल नहीं। जिंदगी की ठोकरें खाकर, अब वह पैसा कमाने की रीति सीख गया है, अब वह

चंदा (मन्द मन्द स्वर में) यह क्या मैं जानती नहीं! मन

कहती हूँ, निमल, मुझे तुम पर नाज है, वेहद नाज है। तुम्हारे ही कारण आज मेरी आँखा म आजादी की चमक है। मारी दुनिया के सामन मेरा सिर ऊँचा है। चालीस हजार रुपये का कर्जा जा हँसते हँसते चुका दे, वह क्या मामूली इसान है!

निमल वकार की बात मत बोलो।

चदा (हँसकर) वस, गुस्सा हो गये! गुस्सा होना तुम्हे आता भी है?

निमल (हँसकर) बावरी!

चदा विश्वास मानो, निमल—तुम्हारी चदा, अब वह पहले वाली नादान चदा नही, अब उसे दौलत नही चाहिये?

निमल फिर क्या चाहिए?

चदा सिफ तुम, तुम्हारा असीम प्यार।

निमल वह तो सदा स तुम्हारा ही है चदा।

चदा जानती हूँ—तभी तो आज तक जीवित रह सकी हूँ। पर, अब तुम जाओ। देर न करो। कही ऐसा न हो कि वैक वन्द हा जाये, और एक दिन आर यह भार हमार कन्धा पर चढा रह जाये।

निमल ठीक कहती हो, मैं जाता हू।

चदा तनिक ठहरो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ।

निमल तुम तुम वहा जाकर क्या करोगी?

चदा चौराहे पर से मैं हँगिंग गार्डेन जाने वाली 'वस' पकड लूगी। काम समाप्त करके तुम भी वही आ जाना।

निमल हा! बहुत दिन से हम साथ घूमने नही गये। आज बहुत दिन बाद

चदा हटो, जाओ भागो यहा स

निमल (हसकर) और तुम?

चन्दा तुम चलो भी। मैं पीछे पीछे आती हूँ।

[हलके संगीत द्वारा दृश्य परिवर्तन]

[पार्क मे होता धीमा धीमा शोर, बच्चो की खिल खिलाहट, पुरुषनारियो के मिले-जुले स्वर, गोला खोपरा वाले और चने चूडे वालो की पुकार।]

चन्दा वही बाग है, वैसे ही फूल खिले है, कुछ भी ता नही बदला लेकिन जिन्दगी बदल गई। दस वर्ष बीत गये। अरमान धुधले पड गये। खुशियाँ गरीबी म सिमट गइ, लेकिन अमीरो की इस दुनिया का सब कुछ वैसा का वैसा ही है, वही रगीनो, वही चहल पहल, हँसी और कहकहो का शोर।

[पार्क का शोर]

चन्दा इस डाली का यह फूल झड गया है, किन्तु इस के स्थान पर नई कली खिल रही है। क्या मेरे बुझे हुए अरमाना म भी नई रोशनी जाग सकेगी? अरे! यह क्या? यह कौन है? हाँ यह अवश्य रजनी है। खूब खूब मिली आज। चलू, उससे दो बातें कर लूँ।

[पार्क का शोर]

चन्दा रजनी आज भी बिलकुल वैसी ही है! उसकी सुन्दर देह म आज भी वही लावण्य है! दस वर्ष पहले का और आज की इस रजनी म कुछ भी अन्तर नहीं किन्तु मैं? हाँ मैं? नही, नहीं, मैं उसके सामने नही जाऊँगी। मेरे फटे-पुराने कपडे देखकर वह क्या कहेगी! दस वर्ष पूर्व उसे दावत का निमन्त्रण दिया था, वह आज भी अधूरा है। नहीं, मैं उसके पास नहीं जाऊँगी, उससे नहीं मिलूँगी। हरगिज नहीं।

[पार्क का शोर]

चन्दा लेकिन क्यो ? रजनी से मिलने म हानि ही क्या है ! मैंने कुछ गलती नही की। कसूर मेरा नही था। आज सारा कर्ज चुक गया है। आज मैं आज़ाद हूँ। उस सब कुछ बता दू,तो कैसा रहे ! हाँ यही ठीक है। खानदानी दौलत के पर्दे से वे अपनी इज्जत का ढकते हैं। एक गरीब अपनी इज्जत कैसे कायम रखता है, यह सुनकर वह क्या कहेगी ? मेरे निमल के लिए, उसके हृदय मे, उसकी आँखा मे कितनी श्रद्धा उमड पड़ेगी। लो वह तो इधर ही आ रही है। सुनो रजनी ?

रजनी क्षमा कीजिये। आप कौन हैं, मैंने आपको पहचाना नही।

चन्दा मुझे नही पहचाना ? मैं तुम्हारे सग कॉलिज मे पढती थी। हम पेडा पर चढकर, सग सग अमरूद चुराकर खाया करते थे। अध्यापिका को चकमा दे, चुपके से क्लास से भाग आया करते थे

रजनी समझ गई ! तुम्हे चन्दा ने भेजा है। बोलो, बताओ, चन्दा कहा है ? दस साल से मुझे उसकी खबर नही मिली। दस साल से

चन्दा अब भी नही पहचाना, रजनी ? मैं ही तुम्हारी चन्दा हूँ।

रजनी ओह ! सखी तू ? तू कितनी बदल गई है ! कहाँ गया वह रूप, वह सौन्दय, गुलाबी गालो की वह सुख लाली, वह

चन्दा क्या मैं इतनी बदल गई हूँ ?

रजनी ओह ! कहा रही तू इतने दिन ? कसे तूने अपने दिन बिताय जो आज तेरी यह दशा हो गई ? बोल, बता।

चन्दा मैं बडी मुसीबत मे फँस गई थी, रजनी।

रजनी वैसी मुसीबत ! तूने मुझसे क्या नहीं कहा ? तू मेरे पास क्या नहीं आई ? बस यही तेरा प्यार है ? इतना ही तू मुझे अपना मानती है ?

चन्दा [हलके से हँसकर] तेरे ही कारण तो मुझपर वह मुसीबत आई सखी, फिर तेरे पास कैसे आती ?

रजनी [अत्यन्त विस्मित हो] मेरे कारण ? सो कैसे ?

चन्दा स्मरण है ? एक दिन मैं तुम्हारा हीरे का कण्ठहार मांगकर ले गई थी। वह कण्ठहार उसी रात मुझसे कहीं खो गया था।

रजनी तेरा दिमाग तो ठीक है ? वह कण्ठहार तो तू मुझे चार दिन बाद ही वापस कर गई थी ?

चन्दा तू बिल्कुल नहीं पहचान सकी थी न ? हमारी मेहनत सफल हुई।

रजनी (और अधिक विस्मित हो) मेहनत ?

चन्दा हाँ। बिलकुल वैसा ही दूसरा कण्ठहार खोजने में हमें कितनी कठिनाई पड़ी। बम्बई की छोटी-बड़ी सभी गलियों के जर्रे जर्रे की खाक छान डाली, तब कहीं जाकर

रजनी (भयपूर्वक) चन्दा

चन्दा हाँ सखी। गरीब थे हम। चालीस हज़ार का कर्ज़ा चुकाना हमारे लिए सहज नहीं था। किन्तु मेरे निर्मल ने यह असम्भव काम भी सम्भव कर दिखाया। आज वह कर्ज का अंतिम अंश चुकाने के लिए अरे ! यह क्या ! तेरी आँखों में आँसू ?

रजनी (सिसककर) चन्दा मेरी सखी, मेरी बहन

चन्दा क्या हुआ रजनी ? रोती क्या है बावरी। जो होना था वह हो चुका। रोने के दिन तो बीत चुके। आज

तो हँसने का दिन है सखी।

रजनी (रोकर)—मेरे कारण तुझे कितने दुःख उठाने पड़े! तेरी जिंदगी बर्बाद हो गई!

चन्दा ऐसा न कह सखी! भूल तो मेरी ही थी।

रजनी नहीं, भूल मेरी थी। मुझे तुमसे पहले ही कह देना चाहिए था।

चन्दा क्या? क्या कह देना चाहिए था? कौन सी बात तुझे इतना परेशान कर रही है, रजनी! (निर्मल कुछ गुनगुनाते हुए आ पहुँचता है।)

निर्मल हल्लो, डार्लिंग। खूब! आज यहाँ श्रीमती चागला भी मिल गई! बस, दो सहेलियाँ गले मिली नहीं कि आँसू बरसने लगे! ठहरिए रजनी जी। स्नेह की इस अमूल्य निधि को धूल में न गिरने दीजिए। लीजिए इस रूमाल की सुनहली पखड़ियों में समेट लीजिए।

रजनी इतनी मुसीबतें झेल कर भी तुम लोगों की हँसी में तनिक भी अंतर नहीं पड़ा! पर मेरे मन में तो आज इतनी भी शक्ति शेष नहीं कि तुम्हारे इस सौभाग्य पर ईर्ष्या भी कर सकूं। तुम्हारे प्रति मैंने जो अपराध किया, उसके लिए मैं कभी अपने को क्षमा न कर सकूँगी।

निर्मल बात क्या है, रजनी जी?

रजनी उस कंठहार का मूल्य चालीस रुपये भी नहीं था। वह नकली हीरों का हार था। उसका कोई भी हीरा असली नहीं था।

चन्दा (चीखकर) रजनी?

[रजनी सिसक सिसककर रोती है। दूर कहीं सम्मिलित पुरुष-नारी स्वर खिलखिलाकर हँसते हैं।]

माँ, बहन और पत्नी

पात्र

मीनू	एक किशोर नवयुवती
रानी	मीनू की सहेली
हरीश	मीनू का पति
भानु	मीनू का भाई
पप्पू	मीनू का नववर्षीय पुत्र
रवि	पप्पू का बाल मित्र

पात्र-परिचय

मीनू

विख्यात 'सुलेखा कम्पनी' के ब्रांच मैनेजर हरीश चड्ढा की पत्नी है। लगभग तीस वर्ष की अवस्था है किन्तु अभी भी उसके मुख पर बीस वर्ष की नवयुवती का सा सारल्य है। वेष भूषा के प्रति वह अत्यन्त लापरवाह है, फिर भी उसके वस्त्रों से उसकी सुरुचि तथा कलात्मक हृदय का परिचय मिलता है। सदा हँसमुख, प्रसन्न तथा किसी-न किसी काम में व्यस्त रहती है मानो खाली बैठने मे उसे कुछ कष्ट होता है।

रानी

मीनू की सहेली है। धनी-मानी घर की बेटी है, और धनी-मानी घर की वधू। अत उसके शौक भी कुछ वैसे ही है। चटक गहरे रंग के वस्त्र पहनती है। ऊँची एडी के जूते सुन्दर सँवारे हुए जूडे मे, बेले की कलियों का गजरा सदा सजा रहता है। बात बात पर रूठ जाना मानो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।

हरीश

लगभग पैंतीस वर्ष का नवयुवक है। आखें बडी बडी नाक ऊँची तथा मस्तिष्क पर उभरती रेखाएँ दृढ निश्चय की प्रतीक हैं। अपनी प्रतिभा तथा योग्यता से उसने जीवन में यथेष्ट उन्नति की है। फिर भी और अधिक ऊँचा उठ पाने का कोई भी अवसर वह छोडना नहीं चाहता।

भानु

उसकी अवस्था लगभग बत्तीस वर्ष की है, फिर भी उसके व्यवहार में अभी प्रौढता की छाप नही आ पाई है। काम से अधिक उसे खेल पसन्द है। कालेज जीवन में वह फुटबाल टीम का कैप्टेन था। उन बीते दिनों को वह आज भी भूला नहीं है। पिता के न होने से घर सँभालने का उत्तरदायित्व उसके कंधो पर पड गया है, पर उस कर्तव्य को वह हँसी

खेल मे ही पूरा कर देता है।

पप्पू

नन्हा सा नववर्षीय पप्पू अपने महल्ले के शैतान बालकों का प्रतिनिधि है। वह सच्चे अर्थों मे उनका सरदार है। माँ के कितना ही सँवारने पर भी उसके बाल सदा उसके माथे पर बिखरे रहते है। स्वच्छ वस्त्रों पर पड़े धूल के निशान और जूतों पर पड़ी धूल उसकी विविध कार्यवाहियों का यथेष्ट परिचय देती रहती है। उसके विषय मे उसके पिता का यह कथन अक्षरश सच है—कि न जाने वह कब कौन-सी शरारत कर बैठे।

रवि

पप्पू का समवयस्क साथी, तथा उसकी सभी योजनाओं में उसका निकटतम परामशदाता है। वास्तव मे किसी के लिए यह पता लगाना कठिन है कि कौन सी योजना किसके मस्तिष्क मे उदित होकर, किसके द्वारा कार्यान्वित होती है।

माँ, बहन और पत्नी

स्थान मीनू के घर का ड्राइंगरूम, तथा सड़क का एक भाग।
समय अपराह्न

[द्वार पर थपकी]

मीनू कौन, रानी ? अरे ! भई, आओ, आओ। यह ईद का चाद आज किधर को निकल पड़ा ?

रानी हा, जी ! हम ईद के चांद तो हैं कभी-न-कभी दिखाई तो भी दे जाते हैं। पर हमारी मीनू रानी तो ईद का चाद भी नहीं। दर्शन ही दुर्लभ है।

[दोनो हँस पड़ती है।]

रानी चल, मीनू। आज पिक्चर चलें।

मीनू नही, रे ! मैं पिक्चर विक्चर नही जाती।

रानी अरी, बावरी ! 'मिनर्वा' मे 'लाल चूड़िया' लगी है। ऐसी पिक्चर बार-बार नही आती।

मीनू न आने दो।

रानी चल, उठ। अब ज्यादा नखरे न बघार।

मीनू नही, रानी। नखरे की बात नही। वास्तव में आज मैं नही जा सकूँगी। आज मुझे बहुत काम है।

रानी क्या काम है, ज़रा मै भी तो सुनू !

मीनू अभी बाजार जाकर पप्पू के लिए इतिहास की पुस्तक और कुछ कापी पेंसिलें लानी हैं। इनका यह नाइट सूट आज अवश्य सी कर तैयार कर देना है। और भैया अपनी एलबम दे गये थे, उसम

रानी बस ! पति, पुत्र और भाई—डूबी रह इन्ही म ! यही तो तेरी सारी दुनिया है।

मीनू तू झूठ नही कहती, रानी। कितनी सलोनी है यह दुनिया—कितनी छोटी-सी, फिर भी कितनी विस्तृत। कितनी

रानी बस, बस, रहने दे ! बोल तू चलती है या नही मेरे साथ ?

मीनू नही, बहन। आज तो न जा सकूगी।

रानी तेरी तो सदा की यही बात है ! किस दिन जा सकेगी, यह शायद तेरे भगवान को भी पता न होगा।

मीनू तू तो बेकार ही गुस्सा होती है !

रानी नही, जी ! हम कौन होते है गुस्सा होने वाले ? हम अधिकार ही क्या है किसी पर गुस्सा होने का ?

मीनू रानी ! बहन, बात तो सुन

रानी नही, जी ! मत बोलिये। बोलने म आपका समय नष्ट होगा। डूबी रहिये दिन रात इन्ही लोगो के काम म।

मीनू मैं कुछ थोडा-सा काम करती हूँ तो क्या ? वे सब भी तो मेरे लिए

रानी हाँ, हा, सब मालूम है ! वही पुरानी बात बार बार मेरे आगे कहने की ज़रूरत नही। अच्छा मैं चली

मीनू ठहर अरी, ओ रानी बात तो सुन

रानी (दूर से) फिर कभी सुनूगी। जब तुझे फुरसत होगी।

[जाते पैरो की ध्वनि]

मीनू चली गई ? बावरी ! न जाने इसका बचपना कब जायेगा ! आज भैया ने आने का कहा था। आये नही अभी तक ! न जाने कहा घूम रहे होगे !

[हलके सगीत द्वारा दृश्य परिवर्तन। बाज़ार का शोर तरकारी वालो की पुकार]

भानु आम दो दजन दिये ? ठीक है। केला—बस एक दजन

याफी होगा। और हाँ, देखो, सेर भर लीची भी दना।

फलवाली जी, सेठ और क्या दू, सठ ?

भानु बस, आर कुछ नहीं। लो, य पैस।

फलवाली चीकू दू माहब। नही तो य अनान्नास ?

भानु नही, भाई, और कुछ नही। इनना तो वे आन वाले मेहमान खा भी नहीं पायेंगे। लेकिन, अरे! यह तो तीन ही चीजें हुइ। मीनू जब देखेगी कि ऐसे शुभ अव सर के लिए मैं तीन फल खरीदकर लाया हूँ ता मुझे जिन्दा थाडे ही रहने देगी। बाप, र! बहन है कि बब्बर शेर! न जाने जीजा जी कैसे उसे वश म रखते हैं।

[हलके से हँसता है।]

भानु अच्छा, भई तरकारी वाली एक दजन सन्तर और दे दो। जरा जल्दी करो हा, ठीक है। बम, अब जीजी को लेकर घर चलू। देर हो गई, तो मा गुस्सा हागी। शानो की ससुराल वाल आये, इसमे पहले ही सब तयारी पूरी हो जानी चाहिए।

[हलके सगीत द्वारा दृश्य-परिवतन]

हरीश (जोर से हँसते हुए) हा हा हा! भई, यह एक ही रही! खूब! अच्छा दखा नटराजन् आज मैं लौट कर नहीं आऊँगा। अगर कुछ जरूरत हा ता मुझे घर पर फोन कर देना। मैं जा रहा हूँ—

[जाने जूतो की ध्वनि। सडक का शार]

हरीश उफ! बस मे आज कितना लम्बा क्यू है! टक्मी से जाना ही ठीक रहेगा। जल्दी भी पहुँच जाऊँगा और मीनू का ममाचार भी जल्दी मिल जायेगा। जब कभी उस वतान म ?र हा जाती है, ता वह कितना गुस्मा

हो जाती है! पर उसका भी क्या कसूर? दावत का सारा इन्तजाम भी तो उसीको करना पड़ता है। समय से पता न चले तो तैयारी कैसे करे, बेचारी! और फिर उसे पप्पू को भी तो संभालना पड़ता है। कितना नटखट है, शैतान। न जाने कब कौन सी शरारत कर बैठे, कुछ ठिकाना है! आहा वो रही टैक्सी टैक्सी! टैक्सी!!

[मोटर के आने की ध्वनि। दरवाजा खुलने-बन्द होने की ध्वनि]

हरीश चलो, मलाबार हिल।

[हलके संगीत द्वारा दृश्य परिवर्तन]

रवि अच्छा, पप्पू मैं झटपट तैयार होकर आता हूँ। तब तक तू देख—तेरी मम्मी अभी तैयार हुई या नहीं।

पप्पू (शान से) अरे, मेरी मम्मी ऐसी नहीं। या तो बात कहेगी नहीं, और यदि कहेगी तो उसे पूरा जरूर करेगी। वह तो कभी की तैयार हो गई होगी।

रवि सो तो मेरी मम्मी की भी बात है। अगर कुछ काम करने को कहती है तो उसे पूरा भी जरूर करती है। नहीं करना होता तो फौरन वजह बता देती है, कि वैसा क्यों नहीं कर सकेंगी। तभी तो मैं उन्हें इतना प्यार करता हूँ।

पप्पू वाह रे! जैसे मैं तो अपनी मम्मी को प्यार करता ही नहीं? मैं अपनी मम्मी को तुझसे ज्यादा प्यार करता हूँ।

[घण्टाघर की घड़ी तीन घण्टे बजाती है।]

पप्पू (घबराकर)—अरे! तीन बज गए?

रवि भाग, तू भाग, कपड़े बदलकर, मैं बस अभी आया

दो मिनट म।

पप्पू (पुकारकर) जल्दी आना।

रवि चिन्ता न कर। तेरे फुटबाल मैच को देर न होने दूगा।

[हलके सगीत द्वारा दश्य-परिवतन]

[मीनू स्वय ही धीरे धीरे कुछ बोल रही है जसे कुछ सोच रही है।]

मीनू पप्पू के लिए इतिहास की पुस्तक लानी है, भया की इस एलबम म चित्र लगाने हैं, और इनका यह नाइट सूट तैयार करना है। पहले पहले यह नाइट-सूट ही सा डालू। पप्पू और भैया का काम तो बाद म भी किया जा सकता है, पर इनके काम को देरी हो गई, तो गुस्सा होगे। बाप रे! कैसा गुस्सा है! मानो किसी काम में पल भर की भी देर हो गई तो आसमान ही टूट पडेगा।

[हलके से हँसती है, और कुछ गुनगुनाती है।]

मीनू मेरे हरीश यह नाइट-सूट कितना सुदर लगेगा तुम पर? देखो जी हम पर गुस्सा होना छोड दो, वरना हम भी किसी दिन ऐसे नाराज हो जाएँगे कि तुम भी क्या याद करोगे! हाँ!

[हौले से हँसती है और किसी फिल्मी गीत की धुन गुनगुनाती है।]

[दूर कही से हरीश पुकारता है—मीनू मीनू]

हरीश (पास आते हुए) मीनू मैंन कहा अजी सुनती हो

मीनू (विस्मय से) अरे! तुम आ गए? आज बडी जल्दी छुट्टी मिल गई दफ्तर से?

हरीश छुट्टी क्या मिल गई! लेकर आया हूँ।

मीनू क्यों ? ऐसी क्या मुसीबत आ गई !

हरीश मुसीबत नहीं आई, हमारे कलकत्ते के हैडआफिस से बिजनिस मैनेजर मिस्टर नागराजन् आए हुए हैं। रात को उन्हें डिनर के लिए कह दिया है। (कुछ हँसकर) बड़ी मेहनत करनी पड़ेगी आज तुम्हें।

मीनू (हँसकर) मैं क्या मेहनत से डरती हूँ।

हरीश सो तो मैं जानता हूँ। इतना भी न जानता होता, तो क्या उन्हें इतनी आसानी से निमन्त्रण देने का साहस कर बैठता। तुम्हारे हाथ का बनाया भोजन जो लोग एक बार खा लेते हैं, वे बरसों उसके गुण गाया करते हैं।

मीनू चलो, हटो बरसों तो हमारी शादी को भी नहीं हुए !

हरीश और सुनो ! नौ वर्ष का तो पप्पू ही है। उससे भी साल भर पहले हमारा विवाह हुआ था। और तुम कहती हो कि

मीनू अरे ! सच ! पप्पू नौ साल का हो गया ! हमारे विवाह को दस वर्ष बीत गए ! कितनी जल्दी बीत गए ये दिन !

हरीश हाँ, मीनू हमारे जीवन के दिन पंख लगाकर उड़ते जाते हैं मानो सुख अभिलाषाओं के सुनहले बादल, नील गगन में अठखेलियाँ करते हों। सच कहता हूँ

मीनू (लज्जित स्वर में) अरे ! हटो ! छोड़ो मेरा हाथ, कोई देख ले तो ?

हरीश देख ले, तो क्या ? तुम तो अभी भी ऐसे शर्मा जाती हो, जैसे अभी कल ही तुम्हारा विवाह हुआ हो !

मीनू (कृत्रिम रोष से)—नहीं मानोगे तुम !

[बाहर मोटर का हार्न बजता है।]

मीनू ये लो, भैया आए हैं, शायद !

हरीश हा, ऐसा बेसुरा हॉन और किसकी मोटर का होगा ?

मीनू देखो जी, मेरे भैया की मोटर को अगर कुछ कहा

भानु (दूर से पुकारते हुए आता है।) मीनू मीनू हल्लो जीजाजी। कहिए क्या हो रहा है। चल, मीनू उठ। जल्दी से चल।

मीनू (विस्मय से) कहाँ ?

भानु घर। मा ने तुझे अभी फौरन बुलाया है।

मीनू (और अधिक विस्मित हो) क्या ?

भानु (उसका हाथ पकडकर उठाते हुए) यह सब अब रास्ते मे पूछ लेना। चल, उठ जल्दी, बडी देर हो रही है।

हरीश लेकिन कुछ पता भी तो चले ! बात क्या है ?

भानु अरे बात क्या होगी, जीजाजी ! आज बनारस वाले शानो को देखने आ रहे हैं। मेहमानो की आवभगत शानो को सजाना सवारना सब कुछ इसी को तो करना होगा। बिना इसके गए, वहाँ कोई तिनका हिलाने वाला भी नही। उठ मीनू। अब देर न कर।

मीनू लेकिन भैया

भानु फिर लेकिन ? उठ।

मीनू भैया, बात तो सुनो

भानु अरे ! तू अभी तक बैठी है ! याद रखना देर करेगी तो माँ ऐसे कान खीचेगी कि सात जनम तक सुर्ख लाल रहेगे।

मीनू लेकिन भैया मैं तो आज नही जा सकूगी।

भानु अरे वाह रे साहबजादी ! शादी क्या कर दी है तेरी बडे भाई का रौब मानना ही भूल गई है !

[मीनू हँसती है।]

भानु हँसना पीछे बता, अब तू उठती है या गाद म उठाकर ले जाऊँ तुझे ?

हरीश लेकिन भानु मीनू आज नही जा सकेगी। हमारे हैड-आफिस के बिजिनस मैनजर यहाँ आय हुए ह। आज रात को घर पर उनका डिनर

भानु छाडिए, जीजाजी ! आपके घर म तो राज ही डिनर और पार्टियाँ चलती रहती है, इसलिए मीन अपने घर जाना ता छाड नही देगी ? आ बहन, उठ ! अब देर न कर

मीनू लकिन भैया, बात ता सुनो

[दूर कही स पप्पू पुकारता हुआ आता है—मा माँ]

पप्पू मा अरे ! तुम अभी तक एसे ही बैठी हा ! अभी तक तयार नही हुइ ! तुम हमशा देरी कर दती हा !

मीनू कैसी देरी, बेटा ?

पप्पू ला ! अब भी भूल गइ ! तुम्ह कभी कुछ याद नही रहता !

मीनू अब कुछ बतायेगा भी या बस खाली खडे खड झगडा ही करेगा ?

पप्पू आज हमारा फुटबाल का मैच नही है ? तुमने नही कहा था कि म भी देखन चलगी ?

मीनू अरे रे ! मैं ता सच ही भूल गई थी ! भला याद दिलाया तून भैया देखा, तुमने अपन पप्पू का ? अपनी टीम का कैप्टेन बना है। आज शील्ड जीतकर न लाय तो कहना।

भानु (गव स)—भाजा भी किसका है ? कप्टेन साहब, आज विजय का झण्डा गाडकर आना। दफ्तन वाले भी

कह—हा ! भानु ने अपने पप्पू को कुछ सिखाया है।

पप्पू क्या नहीं मामाजी जरूर । आज तुम भी तो चल रहे हो हमारा मच देखने ?

भानु जाने का विचार तो पक्का था, पर मुश्किल ऐसी आ पड़ी

पप्पू देखिये मामाजी, बहाने बनाने से काम नहीं चलेगा, आज आपको चलना ही पडेगा।

हरीन्द्र (हँसकर) हा पप्पू, शाबाश । अपने मामाजी को जरूर घसीटकर ले जाना।

पप्पू वाह, घसीटने की क्या जरूरत है ? हमारे मामाजी तो आप ही जायेंगे।

भानु नहीं, पप्पू । आज तो मैं न जा सकूगा । घर पर तुम्हारी मौसी को देखने कुछ लोग आ रहे हैं। आज तुम्हें अपनी मम्मी को भी छुट्टी देनी होगी। वह मेरे साथ जायगी।

पप्पू अरे वाह ! ऐसा कैसे होगा ! आज मेरा पहला मैच है। मम्मी ने कब से वादा कर रखा है। क्यों, मम्मी, तुम चलोगी ना ?

मीनू लेकिन, बेटा, आज तो मुझे बहुत काम है। घर पर कुछ लोगों की दावत है, और

पप्पू (गुस्से मे) दावत है तो क्या हुआ ? वह किन्नू क्या सिर्फ हाथ पर हाथ रखकर बैठने के लिए है ? फिर हमारा मैच तो पाँच बजे खतम हो जाएगा। नहीं माँ तुमको चलना होगा।

मीनू नहीं, बेटा आज घर में बाहर के लोग आ रहे हैं। किन्नू के किए कुछ न होगा। आज तो मुझे ही

भानु देखो मीनू—किन्नू के किये कुछ हो या न हो, तुम्हें अभी मेरे साथ चलना है। मैनेजर का डिनर पर कल

भी बुलाया जा सकता है, लेकिन लडके वाले

हरीश (चिढकर) क्या बच्चा की सी बातें करते हो भानु! बिजिनेस मैनेजर है। हैड आफिस से आया है। नाराज़ हो गया तो यह ब्राच आफिस भी हाथ से गया समझो। लडके वालो का क्या है! जिसे अपने बेटे की शादी करनी है वह आयेगा और पचास बार आयेगा।

पप्पू ए मम्मी! तुम क्या खडी खडी सुन रही हो! देर जो हो रही है। झटपट जाकर साडी बदल आओ। नही, रहने दो साडी यह भी क्या बुरी है, चलेगी। आओ, तुम। अब ठहरने का वक्त बिलकुल नही।

भानु हठ न कर पप्पू! मा आज तेरे साथ नही जा सकती।

पप्पू क्या नही जा सकती? क्या वह मेरी मा नही है?

हरीश (हँसकर) अरे, पगले! तेरी मा ज़रूर है पर उसे घर मे भी तो कुछ काम है। आज रात को घर पर दावत है।

पप्पू तो हुआ करे! दावत तो रोज़ ही होती रहती है। मेरा तो आज पहला मैच है।

हरीश वाह रे! तेरे मैच तो अब रोज़ ही हुआ करेंगे। आज स्कूल का है, तो कल कालेज का होगा। फिर यूनिवर्सिटी का होगा, नही तो किसी विदेशी टीम के साथ हो जायेगा।

पप्पू यह सब मैं कुछ नही जानता। आज मेरा पहला मैच है, मम्मी को ज़रूर मेरे साथ चलना होगा।

हरीश वाह रे! ओलम्पिक गेम्स मे तू गया तो वहा भी क्या मम्मी तेरे साथ बँधी बँधी जायेगी? वहा भी तो तू पहली ही बार जायेगा?

पप्पू (क्रोध से) मत जाओ, कोई मत जाओ। हम किसी को

अपने साथ नहीं ले जायेंगे। अब हम कभी किसी से कहीं जाने को नहीं कहेंगे। (एकदम सिसकी भरकर) मत जाओ।

मीनू अरे पप्पू बात तो सुन

पप्पू (सिसककर) हटो! छोड़ दो मेरा हाथ! तुम्हें तो बस पापा के काम के लिए फुरसत है! मामा से गप्पें ठोकने का बहुत वक्त है! हमारे लिए फुरसत क्या होगी तुम्हें!

मीनू पप्पू

पप्पू मत बोलो हमसे। छोड़ दो हमारा हाथ। हम अकेले ही चले जायेंगे।

मीनू अरे, शैतान! कहां भाग रहा है! बात तो सुन

पप्पू नहीं सुनूंगा। हरगिज नहीं। कभी नहीं। मैं जाता हूँ

[हलके संगीत के साथ दृश्य-परिवर्तन]

[पप्पू की सिसकियों की आवाज]

रवि (चौंककर) अरे! पप्पू, तू यहाँ सीढ़ियों पर क्या कर रहा है?

पप्पू (केवल सिसकी भरता है।)

रवि (विस्मित हो) अरे बुद्धू तू रो क्या रहा है? तेरी मम्मी अभी तक तैयार नहीं हुई?

पप्पू (सिसकी भर कर) मेरी मम्मी नहीं जायेंगी।

रवि क्या! क्या हुआ? तू तो कह रहा था

पप्पू (रोते हुए) भूल हुई जो कहा। मुझे क्या मालूम था कि मम्मी सब पापा और मामा को ही प्यार करती हैं मुझे कुछ भी नहीं समझतीं।

[पप्पू फिर से रोने लगता है।]

रवि अरे, वाह रे ! कमाल है ! इतनी सी बात के लिए तू रोता है ? जाएँगी कैसे नही तेरी मम्मी ! सुन, कान मे एक बात सुन।

[रवि धीरे से पप्पू के कान म कुछ कहता है।]

पप्पू (ताली बजाकर) हा हा यही ठीक है। यही ठीक रहेगा।

[हलके सगीत क साथ दश्य परिवतन]

भानु (क्रोध भरे स्वर म) मीन मेरे साथ जायेगी।

हरीश (और अधिक क्रोध से) नही। मीनू आज कही नही जा सकती।

मीनू अरे, बाबा ! आज झगड़ा ही करते रहोगे ? तब ता हो चुका कुछ भी काम। ठहरो, मैं तुम लोगा के लिए शबत बना लाऊँ।

हरीश (तेजी से) नही। अब शबत बनाने का वक्त नही। चलो, मेरे साथ बाज़ार। सामान खरीदकर लाना है।

भानु हरगिज नही। अब बाजार जाने का समय नही। चलो मीनू मेरे साथ। तुम्हे अभी खाना को तयार करना है। जलपान की सामग्री

[बहुत से बच्चा का शोर]

मीनू (घबराकर) अरे रे ! यह क्या ! छोडो, मुझे, छोडो।

एक बालक पप्पू तुम हाथ पकडो।

पप्पू रवि, तू ये दूसरा हाथ पकड।

दूसरा बालक दीपक तू पीछे से धक्का दे।

सब बालक एक साथ चलो, मामा की मोटर मे, चलो मामा की मोटर मे।

मीनू अरे, शैतानो ! यह क्या करते हो ! छोड दो मुझे। कुछ मेरी भी तो सुनो।

सब बालक एक साथ चलो मामा की मोटर में, चलो मामा की मोटर में।

हरीश (क्रोध से) यह क्या बदतमीजी है ! पप्पू ?

पप्पू जी पापा। आप का डिनर तो रात को नौ बजे होगा। माँ पाँच बजे तक घर जरूर आ जाएँगी। टा टा !

भानु (विस्मय से) अरे, मीनू ! इन तिनक मिनक से बन्दरों से हार मान लेगी तू ! धमका कर भगा दे न इन्हें ?

हरीश (क्रोध से) यह सब क्या है ? मीनू ! तुम्हारा हर समय बच्चों से खेलना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। तुम इस घर की गृहिणी हो। तुम्हारा पहला कर्तव्य घर में है।

भानु आप भूल में हैं, जीजाजी। इस घर में वह बाद में आई है। पहले वह मेरी बहन है। उसका पहला कर्तव्य अपने भाई-बहन के प्रति है।

हरीश नहीं। मीनू मेरी पत्नी है। उसका पहला कर्तव्य

मीनू हाँ जी हाँ ! मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। पर यह मत भूलो कि मैं किसी की बहन और किसी की माँ भी हूँ।

हरीश (क्रोध से) मीनू !

मीनू (हँसकर) क्षमा, जी ! अब मेरे कर्तव्य में बाधा न डालो। जाओ, तुम भैया के साथ बाजार जाकर सामान खरीद लाओ। मानो को देखने वाले साढ़े बजे तक अवश्य लौट जाएँगे।

हरीश (क्रोध से) क्या मतलब ?

मीनू पप्पू का मैच खत्म हो जायगा। तो मैं माँ के [illegible] जाऊँगी। [illegible] घर लौट आऊँगी। तब तक [illegible] तुम्हारी [illegible] ला कर रखना। पूरी-कचौरी बनाने में कितना

देर लगती है। तुम्हारे डिनर को तनिक भी देर न होगी।

हरीश (क्रोध से) अपने आगे तुम किसी की सुनोगी थोड़े ही।

मीनू एक की ही सुनने बैठ जाऊँ, तो औरों का काम कौन करे? चलो भैया, तुम्हारे ही कारण हमें इतनी देर हुई। अब तुम्हें हमें पप्पू के स्कूल पहुँचाना पड़ेगा। और देखो, मुझे घर ले जाने के लिए तुम ठीक पौने पांच बजे वहां पहुँच जाना।

भानु (क्रोध से) समझ क्या लिया है तुमने मुझे? अपना नौकर?

मीनू (हँस कर) नहीं, अपना भाई। और देखो जी तुम खाली न बैठे रहना, तब तक किशन् से प्लेट चम्मच वगैरा ठीक करा लेना।

पप्पू अब देर मत करो, मा। मैं भाग भाग कर तुम्हारा सारा काम करा दूगा

बालकों का सम्मिलित शोर चलो मामा की मोटर में, चलो मामा की मोटर में।

[मोटर का हॉर्न, बालकों की हँसी]

काली परछाइयाँ

पात्र

- बीना — बी० ए० की छात्रा
- कमला — बीना की माँ
- बसन्ती — बीना की नौकरानी
- मालती, शीला, चन्दा — बीना की सहेलियाँ

काले, सुनहले और शुभ्र श्वेत आवरण में लिपटे नारी के तीन रूप।

पात्र-परिचय

वीना

माता पिता की लाडली बेटी वीना बी० ए० की छात्रा है। इस वर्ष उसके नव जीवन का अठारहवाँ वसन्त देख रहे हैं। शायद यही कारण है कि पुस्तकों में पाठ के स्थान पर उसे किसी की सलोनी परछाइयाँ नज़र आती हैं। भोली नादान लड़की प्रेम की नैया को दोनों हाथों से खेना चाहती है किन्तु पतवार पकड़ना तक उसे आता नहीं। व्यावहारिक ज्ञान के अभाव में उसकी यौवन-सुलभ रंगीन कल्पनाएँ उसे मौत की परछाइयों तले ढकेल देना चाहती है—और वीना झुक जाना चाहती है जीवन से हार मान लेना चाहती है।

मालती

वीना की अन्तरंग सहेली है किन्तु उन दोनों के स्वभाव में धरती आकाश का अन्तर है। वीना यदि धरती की सुषमा को अपनी बाँहों में समेट लेना चाहती है तो मालती आकाश की ऊँचाइयों को छूने की कोशिश में है। वह हार मानना नहीं जानती। मुसीबतों की काली परछाइयाँ उसे डराती नहीं। उसके हृदय में दूना उत्साह भर देती हैं। यद्यपि अभी उसने जीवन के उन्नीस वर्ष ही पार किये हैं किन्तु अपने लक्ष्य को बरबस अपनी मुट्ठी में बाँध लेने की रीति उसे आती है। उसका किशोर मन यौवन के सुनहले मनोराज्य में खो जाना नहीं चाहता। वह तो जीवन का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लेने को ही आतुर और उत्कंठित है।

चन्दा और शीला

ये दोनों भी बी० ए० की छात्रा हैं। उनकी वेश भूषा, उनके बाल सँवारने का ढँग उनके बोलने की रीति देखकर अनजान व्यक्ति भी समझ सकता है, कि उन्हें पढ़ने लिखने की अपेक्षा अभिनय कला में अधिक रुचि

है। नृत्य और संगीत सिखाकर उनके माता पिता न उनकी इस रुचि की वृद्धि ही की है। प्रदर्शन का यथेष्ट अवसर नहीं मिल पाता, अत वह प्रत्येक पल उनकी प्रत्येक बात म प्रदर्शित होती रहती है।

कमला

बीना की मा कमला की आयु लगभग चालीस वर्ष है। बालों म कहीं-कहीं सफेदी चमक आई है, फिर भी देह अभी तक सुगठित और तरुण रक्त से भरपूर है। कॉलेज-जीवन मे वह अपने रगीन फशन के लिए विख्यात थी। आज भी उसकी लिपस्टिक और नेल पालिश छूटी नहीं है। किन्तु व्यवहार म नितान्त आधुनिका होने पर भी उसके आन्तरिक विचार वही है, जो उसकी दादी-नानी ने अपनी दादी-नानी से विरासत म पाये थे। नुकीली पेंसिल सी बारीक और धनुष सी वक्र, उसकी भौह-रेखा के पीछे अपने अहम का कितना गौरव छिपा हुआ है, यह उसके मुख पर दृष्टि पड़ते ही जाना जा सकता है।

बसन्ती

इस घर की नौकरानी बसन्ती की आयु लगभग पच्चीस छब्बीस वर्ष है। बीना उसे नौकरानी नहीं, अपनी सहेली मानती है, इसलिए दूसरे नौकरों पर उसका रुआब चढ गया है। वह बन-सँवरकर रहती है और उसके अधर सदा हँसी से खिले रहते हैं। इस घर म आये उसे कुल पाच-छ महीने हुए है फिर भी उसने सब का मन मोह लिया है यहा तक कि अवसर पड़ने पर वह मालकिन को खरी खोटी तक सुना देती है।

स्थान

बीना का कमरा आधुनिक ढँग से सजा हुआ है। फर्श पर मोटा कालीन बिछा है खिडकी-दरवाजो पर उसके रग से मेल खाते पर्दे है दीवारो पर प्रकृति की रम्य वनस्थली के सुदर चित्र टँगे हैं। एक कोने मे पढने की मेज और कुर्सी है। पास ही किताबो की अलमारी है। उधर दूसरे कोने मे ड्रेसिंग-टेबल है जिस पर प्रसाधन की सामग्री के अतिरिक्त सुदर सुनहरे फ्रेम मे जडी हुई बीना के माता पिता की फोटो भी है। पास

ही एक छोटे से स्टूल पर टेलीफोन रखा है।

आज वीना का जन्मदिन है। दावत का इन्तज़ाम इसी कमरे में किया गया है अत पलंग दीवार की ओर खिसकाकर बीच में बड़ी सी मेज़ डाल दी गई है जिस पर कांच के सुन्दर बर्तनों में फल, मिठाई तथा नमकीन आदि रखे हुए हैं। समीप ही एक चौकोर मेज़ पर रेडियो भी रख दिया गया है।

वीना के पढ़ने की मेज़ पर रखी घड़ी इस समय साढ़े पांच बजा रही है। खाने की मेज़ के इर्द गिर्द बीना की सहेलियाँ, हाथों में प्लेटें लिये एक दूसरे से छेड़खानी करते खा भी रही हैं और शोर भी मचा रही हैं। बसन्ती एक बड़ी सी प्लेट में गरम पकौड़े लेकर आती है, और मेज़ के बीच में रखकर लौट जाती है

काली परछाइयाँ

समय अपराह्न

स्थान मध्यवर्गीय परिवार का ड्राइंग-रूम

[बीना व उसकी सहेलियां की हँसी कमरे मे गूज रही है।]

मालती भई, पकौडे बहुत बढिया बने थे।

शीला मैंने तो इतने रसगुल्ले खाये कि बस कुछ न पूछो।

चदा अच्छा जी, तभी मैं भी तो कहूँ, क्या तू रसगुल्ले सी फूल रही है!

[सभी सहेलियाँ खिलखिलाकर हँस पडती हैं।]

शीला अच्छा, बीना अब एक नृत्य हो जाय।

बीना हाँ, हा, क्यो नही, बस शुरू कर दो भट से।

मालती खूब! शुरू कौन करेगा, जी?

सब सहेलियाँ बीना बीना बीना।

बीना (अपने कानो म उँगलियाँ डालकर) अरी मय्या, रे! इतना शोर!

मालती (मुसकराकर) ठीक है। हम तो केवल शोर मचाते हैं। अब भला हमारी बातें तुम्हे मीठी क्या लगेंगी?

शीला (मुसकराकर) मैं समझी। मन म मधु से मीठे मधुकर की बातें जा बस गई ह। तभी ता

चदा तभी तो सब कुछ भूल, बीना रानी यू फँस गई ह।

बीना हटो! मैंने क्या कहा जो तुमने ऐसी बातें शुरू कर दी।

मालती क्या? तूने नही कहा था?

बीना (उसकी कमर मे घूसा जमाकर) कहा था तेरा सिर!

चदा (बीना को अपने निकट खीचकर उसके कण्ठ मे अपने

दोनों हाथ डालते हुए) ना, भाई आज बीना को नाराज़ न करो।

मालती सच तो है! आज उसका जन्मदिन है। नृत्य तो हम लोगों को दिखाना चाहिए।

चंदा उसे नाराज़ करने से पहले नहीं सूझी थी, यह बात?

मालती (चंदा के हाथों से बीना को खींचकर) नाराज़ कौन है जी! मेरी बीना को आज तक किसी ने कभी नाराज़ होते देखा भी है?

शीला यह बात कही है, मालती ने। उठ चंदा खड़ी हो जा इसी बात पर।

चंदा नहीं भाई! मेरे पैरों में तो आज बड़ा दर्द है।

बीना (रुष्ट होकर) क्या नहीं! आज तो तुम सभी के पैरों में दर्द हो रहा होगा? ऐसी कौन-सी ओलम्पिक रेस में दौड़कर आई हो?

मालती अरे! तू तो सच ही नाराज़ हो गई!

बीना नहीं जी! मैं कौन होती हूँ नाराज़ होने वाली! मुझे अधिकार ही क्या है, नाराज़ होने का!

मालती अरे! वाह रे! ज़रा हठीली के नाज़ तो देखो! आओ री सखियो इसे हाथ जोड़कर मना लें।

शीला नहीं जी! हम कौन होते हैं इसे मनाने वाले! हमें अधिकार ही क्या है इसे मनाने का!

[सब एक साथ खिलखिला उठती हैं।]

बीना रहने दो। तुम लोगों की इच्छा नहीं तो नृत्य को मारो गोली। चलो, एक गीत ही हो जाए।

चंदा ठीक है। पहले तुम एक गीत सुना दो। फिर चाहे हम से नृत्य भी देख लेना।

बीना देख, अब तू स्वयं ही कह रही है। बाद में कहीं फिर

मुकर न जाना ।

चन्दा अजी, चन्दा ऐसी धोखेबाज नहीं । बात जो बोलती है, तो पूरी करके भी दिखाती है ।

बीना पक्की बात ?

चन्दा बिल्कुल, जी । एकदम ।

बीना तो ला, हाथ पर हाथ ।

[दोनों हाथ पर हाथ मारती है। गीत सुनने की आशा से, सहेलियाँ बीना के मुख की ओर देखती हैं। बीना चुपके-से उठकर रेडियो खोल देती है। पुरुष-स्वर में पक्का संगीत गूंज उठता है।]

मालती (झट से उठकर रेडियो बन्द करते हुए) धोखेबाज कहीं की । अब कभी तेरी बात पर विश्वास न करेंगे ।

शीला अजी, कहाँ से सीखी इतनी चतुराई ?

मालती अभी क्या ? अभी तो सीख रही है, बेचारी ।

चन्दा क्या करेगी सीखकर ! बेचारा मधुकर तो इतना भोला-भाला है कि

बीना (झट से उसके मुख पर अपना हाथ रखकर) हट, ऐसी बात न बोल !

चन्दा फिर कैसी बात बोलूँ ?

बीना (रोषपूर्वक) नहीं मानेगी तू ?

चन्दा (मुस्कराकर) मान जाऊँगी ।

बीना कब ?

चन्दा जब मधुकर दूल्हा बन, तुझे ले जाने के लिए, तेरे द्वार पर आ खड़ा होगा ।

[सब खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं।]

[पीछे के द्वार से बसन्ती आती है।]

बसन्ती बिटिया रानी शीला बहन जी की मोटर उन्हें लेने आई है।

वीना इतनी जल्दी ? कह द शीला अभी न जाएगी।

बसन्ती मोटर म बिटिया की माताजी भी बठी हैं।

शीला अर र र् मैं ता भूल ही गइ थी, मुझे तो मम्मी के साथ बाज़ार जाना है।

चन्दा शीला, मुझे भी रास्ते मे मेर घर छाड देगी ?

शीला नही दुलहिन बनाकर अपने घर ल चलूगी।

[हँसते हुए सब आगे पीछे जाती हैं। बसन्ती मेज़ पर बिखरे प्याले-प्लेट समेटती है। वीना अकेली आती है और कमर मे इधर उधर बिखरे उपहारा को समेटकर एक स्थान पर रखती है।]

वीना उफ ! ये सहेलिया है कि मुसीबत ! कितन सारे उपहार ले आइ। मना किया था, फिर भी अरे ! यह तो मधुकर का है ! यह यहाँ आया कसे ? ज़रूर उसने शीला क हाथ भेजा होगा। अभी पूछती हूँ।

[उठकर टलीफोन का डायल घुमाती है।]

वीना (टलीफोन पर) हलो कौन मधुकर जाओ, हम तुम स नही बालन क्या क्या ? हमने इतना मना किया फिर भी तुमने नही सुना ? शीला के सग उपहार भेज ही दिया वाह ! तुम कुछ दो, और हम पसन्द न आये नही, आज नही। कल कालेज के बाद नहीं, मधुकर नही। अगर माताजी को पता लग गया तो हाँ, हाँ यही ठीक रहेगा अच्छा तो फिर सात बजे देखो वहीं भूल म जाना गुड बाई

[वीना फोन रखकर, अपने पलग पर औंधी लेट

जाती है। उंगली से धरती पर लकीरें खींचते हुए मुसकराती है।]

बीना (धीरे धीरे) ओह? मधुकर! तुम कितने अच्छे हो! तुम्हारे मन में कितनी ममता है! तुम्हारी बातों में कितनी मिठास है! तुम मेरे हो! मैं तुम्हारी हूँ! हम दोनों को कोई कभी अलग न कर सकेगा। हम दोनों

मालती (पीछे के द्वार से अन्दर आते हुए) हूँ! सपना तो सुन्दर है!

बीना (झट से उठकर) अरे! तू बाजार नहीं गई?

मालती पर सपने सदा सच नहीं होते।

बीना (रुष्ट होकर) चल, ऐसी बात न बोल।

मालती बोलूं कैसे नहीं? तू मेरी सखी है। तू मेरे सामने अपने हाथों, अपने गले में फाँसी का फंदा कसती रह, और मैं समीप खड़ी देखती रहूँ?

बीना चल, हट! किसी से स्नेह करना क्या अपने गले में फाँसी का फंदा कसना है?

मालती (मेज पर पैर लटकाकर बैठते हुए) है ही।

बीना नहीं, मैं ऐसा नहीं मानती।

मालती तेरे न मानने से क्या होगा।

बीना (मुसकराकर) स्नेह तो हृदय की पावन पुनीत भावना है सखी। वह चिर-पुरातन, चिर नूतन और शाश्वत सत्य है। वह कभी दोषपूर्ण नहीं होता, क्योंकि वह हम किसी से सीखते नहीं। जीवन का यह चरमसत्य, समय आने पर स्वयं ही हृदय में प्रस्फुटित होने लगता है।

मालती (हँसकर) सच!

बीना (रुष्ट होकर) नही तो क्या मैं झूठ कह रही हू ! हँसती क्या है ! देख रही है, इस कली को, जो हस हँसकर इस गुलदस्ते मे झूम रही है ?

मालती हूँ !

बीना उपयुक्त समय आ जाने पर, जैसे कोई इसे खिलने से नही रोक सकता, ठीक वसे ही, किशोर मन म विक सित होते प्यार पर कोई बन्धन नही बाध सकता।

मालती यह तेरा भ्रम है, सखी ?

बीना (अचरज से) मेरा भ्रम ? कैसे ?

मालती देख, इधर, अपनी इसी कली की ओर। डाली से तोड़ कर इसे इस गुलदस्ते म घर की शोभा के लिए सजा दिया गया है। अब यह कभी न खिल सकेगी।

बीना (चीखकर) मालती !

मालती (मुसकराकर) क्या ? क्या मैं झूठ कहती हूँ।

[बीना दोनो हाथो म मुख छिपा कर सिसकती है। नेपथ्य म करुण सगीत की धीमी धामी रागिनी बजती है। सहसा बीना तनकर उठ खड़ी होती है।]

बीना (चीखकर) बसन्ती ?

बसन्ती (कहीं दूर से) जी आई।

[बसन्ती जल्दी जल्दी कमरे म प्रवेश करती है।]

बीना (उँगली से सकेत करते हुए) ले, जा। हटा दे इस गुलदस्ते को मेरी आँखो के सामने से।

बसन्ती (घबराकर) फूल तो आज सवेरे ही बदले थे, बिटिया रानी।

बीना (रोषपूर्वक) मैं कहती हूँ ले जा। हटा दे इस मुर्दे को।

बसन्ती अच्छा, बिटिया, अच्छा ! जैसी तुम्हारी इच्छा !

[बसन्ती गुलदस्ता उठाकर जाती है। संगीत की ध्वनि कुछ धीमी पड जाती है। बीना दोनों हाथो मे मुँह छिपाकर धीरे धीरे सिसकती है। मालती मेज पर से फिसल कर उसके निकट आ बैठती है, और स्नेह से उसकी कमर सहलाने लगती है।]

मालती बावरी, जिस प्यार के पीछे नैतिक आधार न हो, वह प्यार अनुचित है। उससे दूर रहना ही उचित है।

बीना (रोष मे भरकर) क्या प्रेम करना पाप है ?

मालती (दृढ स्वर मे) नही परन्तु, लुकाछिपी के ये खेल, प्रेम की पुण्य प्रभा से आलोकित नही। अंधकार मे खेलती ये काली परछाइयाँ, प्रेम की पुनीत शुभ्रता पर काले दाग लगा जाती हैं।

बीना (सहसा रोना भूल, दृढ स्वर मे) नही। हमारा प्रेम झूठ नही है।

मालती (हँसकर) बावरी ! तू क्या जाने, प्रेम किसे कहते हैं ! वह कैसे किया जाता है ! तू तो बुज़दिल है, बुज़दिल। और तेरा वह प्रमी ? वह तुझसे भी बढकर कायर है।

बीना (क्रोध से) मालती !

मालती रोष करेगी ? मुझ पर ! और अपने मन मे इतना भी साहस नही है कि समाज मे सिर ऊँचा कर, सबके सामने परस्पर मिल-जुल सको, हँस-बोल सको ?

बीना कैसी बातें करती है ! जानती नही, मा कितने पुराने विचारो की हैं।

मालती (हँसकर) तेरे इस काय का परिणाम, उनके पुराने

विचारों को और अधिक दृढ़ ही करेगा, उन्हें क्षीण कर नष्ट नहीं करेगा।

वीना (रोष से) आखिर तू चाहती क्या है ?

मालती तुझे अंधकार की गहराइयों से निकालकर, उजले प्रकाश में ले आना। सुन, वीना, विचार कितने ही पुराने क्यों न हों, किन्तु उन्हें बदलकर नया बनाया जा सकता है।

वीना नहीं। यह तेरा भ्रम है। माँ के विचार बदलना कदापि सम्भव नहीं।

मालती क्या ?

वीना उन्हें अपना पुरानापन ही प्रिय है। उनकी दृष्टि उस अतीतवर्ती ताल के गदले जल में अपने पुराने गौरव की परछाइयाँ खोजने में ही व्यस्त है। नये विचारों की छाया के लिए उनके मन में स्थान नहीं।

मालती (दृढ़ स्वर में) ताल का जल गँदला हो जाने पर विषाक्त हो जाता है। उसे बदलने का प्रयास न कर, यदि चुपचाप आत्मसात कर लिया जाए तो उससे जीवनदान नहीं मिलता, जीवन त्याग देना पड़ता है।

[वीना सहसा मालती की गोद में मुख छिपा कर सिसक उठती है। नेपथ्य में करुण रागिनी आलाप लेने लगती है।]

मालती (स्नेह से भीगे स्वर में) अरी, बावरी! रोती क्या है ? इन आँसुओं से क्या माँ के अंधविश्वास धुल जाएँगे ?

[वीना केवल चुपचाप सिसकती है।]

मालती चुप कर, वीना। रोने से क्या होगा ? यदि तुझमें इतना साहस नहीं, तो मैं कहूँ माँ से ?

बीना (सिसककर) नही सखी, नही।

मालती नही कहने से कब तक काम चलेगा, री ! या तू चाहती है कि मजु की तरह तेरे प्यार का अजाम भी

बीना (चौंककर, झट से उसका मुख अपनी हथेली से बन्द कर देती है।) मालती !

मालती (क्षोभ से हँसकर) मेरा मुह बन्द कर दे। पर क्या तू दुनिया का मुख भी बन्द कर सकेगी ? याद है—मजु की कितनी बदनामी हुई थी ? प्रेमी न उसे धोखा दिया। अपना दूसरा विवाह कर लिया। अभागिन न गगा की गोद म शरण लेनी चाही थी, उसने भी तो उस किनार पर फेंक दिया। आज उसका जीवन क्या नरक की घोरतम विभीषिका नही ?

[कही दूर से कमला पुकारती है।]

कमला बीना, अरी ओ बीना ?

मालती सुन माँ बुला रही है ! य लाल लाल आँखें देखकर, वे क्या कहगी ! जा झटपट मुह धो आ, उठ।

[बीना जल्दी स उठकर चली जाती है। दूसरे द्वार से कमला का प्रवेश]

कमला अरे ! मालती ! अकेले कैस बैठी है, बटी ? बीना किधर है।

मालती अभी तो यहीं थी। हाथ मुह धाने गई थी।

कमला अच्छा, वह आ जाए, तो तुम दोना मेरे पास आना। मैं जाती हूँ।

मालती (रुकते से स्वर में) मौसी ?

कमला (जाते-जात ठिठककर) क्या ? अरी, बोलती क्या नही ? क्या कह रही थी ?

मालती (सकोचपूवक) मौसी, एक बात कहूँ ?

कमला (स्नेह से) कह न, बेटी। मौसी से लज्जा कैसी!

मालती यही तो मैं भी सोचती हूँ, मौसी। तुम से भी लाज करूँगी, तो कहूँगी किससे?

कमला जानती हूँ, बेटी, जानती हूँ। तू तो मेरी अपनी बेटी है। वीना में और तुझमें मैं तनिक भी तो अन्तर नहीं मानती।

मालती (कहते कहते फिर रुककर) कह तो रही हूँ, लेकिन मौसी तुम मेरी बात मानोगी भी?

कमला लो और सुनो! आज तक तेरी कौन-सी बात मैंने नहीं मानी है, री!

मालती हा, मौसी, तुम तो बड़ी अच्छी हो। फिर भी मुझे तुम से बड़ा डर लगता है।

कमला (आनन्द से हँसकर) चल! झूठी कहीं की!

मालती (हँसकर) झूठ नहीं, मौसी। सच कहती हूँ। दुनिया में अगर मैं किसी से डरती हूँ, तो बस तुमसे। अरे, हाँ, मौसी खूब याद आया। वह मधुकर है न अरे, वही अपने प्रोफेसर शिवशंकर का बेटा बस, मौसी क्या कहूँ तुमसे, कितना गुणी है वह, कितना सुशील कितना

कमला (मुस्कराकर) फिर क्या? तेरी शादी करा दूँ उससे?

मालती अरे! नहीं मौसी। मुझे अभी जल्दी नहीं है। पर वह लड़का बड़ा अच्छा है। देरी होने से हाथ से निकल जाएगा। तुम ऐसा करो—कल ही उसके घर टीका भेज दो। सच कहती हूँ—वीना के लिए उससे अच्छा वर दूसरा नहीं मिलेगा।

कमला यह क्या बकवास है!

मालती (विस्मय से) बकवास! तुम विश्वास मानो, मौसी,

मैं ठीक कहती हूँ। वीना के लिए

कमला (हँसकर) अरी, वीना को तो अभी बहुत पढ़ना है। अभी से गृहस्थी के चक्कर में फँस कर क्या करेगी। समय तो आने दे। समय आने पर दूल्हों की कमी न रहेगी।

मालती समय आ गया है, मौसी। बहुत पढ़ चुकी वीना। अब आगे पढ़कर वह करेगी भी क्या? व्यर्थ समय तथा धन नष्ट करने से क्या लाभ?

कमला (तीखे स्वर में) व्यर्थ? शिक्षा पाकर क्या केवल तूने इतना ही सीखा है, कि शिक्षा पाना व्यर्थ है।

मालती नहीं, मौसी। पर उस शिक्षा का कुछ उद्देश्य भी तो होना चाहिए। वीना जितनी शिक्षा पा चुकी है, उसके नित्य प्रति के व्यावहारिक जीवन के लिए उतनी यथेष्ट है।

कमला बहुत बढ़ बढ़कर बोल रही है। तू भी तो उसी की कक्षा में पढ़ रही है। क्यों नहीं पढ़ाई लिखाई छोड़, माँ से कहकर, अपनी शादी करा लेती?

मालती (मुस्कराकर) यह तो अपनी अपनी रुचि की बात है, मौसी। देखती नहीं हो—कोई साइंटिस्ट बनना चाहता है, तो किसी को वकील बनना अच्छा लगता है। किसी को नौकरी पाने के लिए शिक्षा प्राप्त करना अच्छा लगता है, तो किसी को गृहस्थी बसाने में सुख मिलता है। माँ होकर भी, क्या तुम वीना को सुखी न कर सकोगी, मौसी? उसके मन की एकाकी इच्छा को पूरा न कर सकोगी?

कमला (अवज्ञा से हँसकर) पागल न बन। वीना के सुख के लिए ही मैं उसकी पढ़ाई में इतना पैसा खर्च कर रही

हूँ। किस बडे आदमी का बेटा, आज मामूली प
लिखी लडकी से विवाह करना चाहता है ?

मालती (एकदम आगे बढ कमला के दोनों हाथ पकडते हुए) बीना के सुख का यदि तुम्ह इतना ही ध्यान है, तो मेरी बात पर विश्वास कर लो, मौसी। उसका विवाह मधुकर से कर दो। नही तो

कमला (उसका हाथ झटककर) मधुकर मधुकर, संसार मे मधुकर के अतिरिक्त क्या और कोई लडका ही नही ?

मालती (दृढ स्वर म) हाँ। बीना के लिए नही। वह सिर्फ मधुकर से ही विवाह करना चाहती है।

कमला (क्रोध से) मालती !

[नेपथ्य मे तीखा सगीत उभरता है।]

मालती (दृढतापूर्वक) अभी समय है, मौसी। मेरी बात मान लो। नही तो पीछे पछताने के लिए भी कुछ शेष न रह जायेगा।

कमला अच्छी बात है। ठीक है। अगर बीना का मन अब पढाई मे नही लगता, तो मै अब शीघ्र ही उसका विवाह कर दूगी। किन्तु मधुकर का नाम फिर कभी मेरे सामने न लेना।

मालती क्यो नही ? मधुकर मे क्या दोष है ? क्या वह शरीर से स्वस्थ नही ? या उसम अपनी आजीविका स्वय कमाने की क्षमता नही ?

कमला (मुसकराकर) बस ! यही तो तुम्हारी रगीन कल्पनाओ का दोष है ! रूप रग देख लिया—उसके घर म भी कुछ है ? चक्की पीसने भेज दूँ अपनी बेटी को उसके घर। मेरी बेटी लाखो म एक है। राजरानी बनाऊँगी मैं उसे।

मालती (तीखे स्वर मे) अवश्य बनाओ राजरानी। काटा की शैया पर सुला दो उसे। जहा वह आठो पहर आसू बहाय, और उस घडी को कोसे, जिस मे उसन इस धरती पर जन्म लिया था।

कमला (क्रोध से) मालती!

मालती मुझ पर रोष कराेगी? पर एक दिन वह आयेगा जब तुम अपनी करनी पर स्वय रोष करोगी। मेरी आज की बात याद रखना मौसी। अपनी रगीन कल्पनाओ को साकार रूप देन के लोभ मे, यदि तुमने वीना को राज-रानी बना दिया, तो तुम उसे क्लेश के ऐसे गहन अन्ध-कूप मे ढकेल दोगी, जहा से वह कभी न निकल सकेगी।

कमला अरी, बस चुप कर। लडकियो का बहुत बोलना अच्छा नही होता! मेरी बेटी है मैं जो कुछ भी करूगी उस के भले के लिए ही करूँगी। (धम धम पैर पटकते कमला चली जाती है। दूसरे द्वार से वीना झाकती है और अन्दर पैर रखती है।)

मालती (दोनो हाथो के बीच अपना माथा दबा कर) उफ! चली गई? समझ म नही आता—ये बडे लोग अपने बचपन के दिन क्या भूल जाते है? क्या यह सम्भव है कि उन्होने कभी किसी से प्यार न किया हो? अभी आयगी वीना! क्या कहूँगी मैं उससे?

वीना कहगी क्या? सुन ली न तू ने माँ की बात? एक ओर तो वह मेरे प्यार का दम भरती हैं, दूसरी ओर मुझे जीवित ही अग्नि मे ढकेल देना चाहती हैं।

मालती यूँ निराश न हो, वीना। अपनी तरुणाई म उन्होंने भी किसी से स्नेह किया होगा। उन्होंने भी कभी सुन्दर सपन देखे होग। उन का मन बदलन के लिए हम कोई-

न कोई उपाय खोजना ही होगा।

वीना (दोनो हाथा मे अपना मुख छिपाकर) उपाय ? नहीं। मृत्यु के अतिरिक्त मेरे लिए अब अन्य कोई उपाय नही।

[वसन्ती अन्दर प्रवेश कर रही थी। यह सुनते ही उसके हाथ का गुलदस्ता छूटकर धरती पर गिर पडता है, और चकनाचूर हो जाता है।]

मालती अरे ! यह क्या किया, वसन्ती ! गुलदस्ता गिरा दिया।

वसन्ती (अपराधी से स्वर म) टूट गया बिटिया।

वीना (उन टुकडो को ताकते हुए) काच टूटता है, तो उसकी आवाज सब सुनते ह, दिल टूटता है जब, तो उसकी आवाज़ कोई नही सुनता।

मालती यू हताश न हो सखी। म मौसी को मजु की पूरी कहानी सुनाऊँगी। उन्हे अकल सीखनी ही होगी।

वीना नही मालती, अपनी अक्ल के आगे दूसरे की बुद्धि सब को तुच्छ लगती है। मा कभी न मानेंगी। आज उनकी बातो ने मेरा दिल तोड दिया है। प्राण ही टूट गये तो भला शरीर कैसे जीवित रहेगा ! मैं जाती हूँ।

मालती अरे ! कहाँ जा रही है ? ठहर सुन, वीना

वीना हट जा। छोड दे मेरा हाथ।

मालती ठहर वीना। नही सुनेगी ? मुझसे भागकर तू जायेगी कहा !

[आगे आगे वीना पीछे-पीछे मालती भागते हुए बाहर निकल जाती ह। वसन्ती झुककर काँच के टुकडे बीनती है।]

वसन्ती भाग गइ दोनो ? हाय ! बिटिया के मन को चैन नहीं ! मालकिन के दिमाग म तो मानो आँखें ही नहीं। उठा

ल्, यह काच जल्दी से। अगर अभी आ गई तो

[कमला जल्दी जल्दी अन्दर आती है। टूटा गुलदस्ता देखकर, एकदम रुक जाती है।]

कमला (परेशान होकर) अरी, क्या तोड दिया ? हाय राम! इतना कीमती गुलदस्ता था। तूने टुकडे-टुकडे कर डाला। कमबख्त, नमकहराम!

बसन्ती मन तो काच का गुलदस्ता ही तोडा है मालकिन, तुमने तो चिडिया का हीरे-सा दिल तोड डाला है।

कमला क्या बकती है! जबान सँभालकर बोल।

बसन्ती मैं गँवार भला क्या बोलूगी! इस धरती पर न जाने कितनी अभागिनी आठ पहर आसू बहाती है, बीना चिडिया भी

कमला (क्रोध से) बसन्ती!

बसन्ती कर लो मालकिन! अपने मन की पूरी कर लो। आसू बहाने वाला म एक की गिनती बढ जाएगी तो जमना के जल म बाढ न आ जाएगी!

कमला (व्यग्य से) जमना के जल म बाढ आए या न आए तेरे मन म दुख की नदिया क्यो उमड पडी है ?

बसन्ती मैं भी इन्सान हूँ, मालकिन, मैंने भी कभी किसी का प्यार किया था। जाने वाला चला गया, टूटे सपने छोड गया। फिर भी मैं न टूट सकी। (धीरे से सिसकी भरती है।)

कमला (विस्मित हो) बसन्ती!

बसन्ती (सिसककर) दुख की नदिया मे कितनी ही तूफानी बाढ क्यो न आए, समुन्दर की खारी बूदो मे वह सब घुलमिल जाती है।

[काँच के टुकडे हाथ मे उठा, बसन्ती चली जाती है।]

कमला इस हँसमुख बसन्ती के हँसते चेहरे के पीछे इतना गहरा दर्द छिपा है उफ ! तब क्या मरी बेटी भी नहीं, नहीं यह कदापि सम्भव नहीं तब मैं क्या करूँ ? हे प्रभु, हे परमेश्वर, मुझे बता दो, मुझे ठीक राह सुझा दो, भगवान क्या मालती सच कहती थी क्या बसन्ती का कथन ही ठीक है

[धीमे संगीत में उसके स्वर डूब से जाते हैं। दोनों हाथ जोड़ वह धरती पर झुक सी जाती है सहसा उसे लगता है कि उसके सामने एक काली छाया आ खड़ी हुई है।]

काली छाया (रूक्ष स्वर में) नहीं, मालती का कथन मिथ्या था।

कमला (भयपूर्वक) तुम ? तुम कौन हो ?

काली छाया (अट्टहास करके) हा हा हा—मुझे नहीं पहचाना। मैं तो तेरी ही परछाई, तेरा ही असली रूप।

कमला मेरा असली रूप ? इतना वीभत्स, इतना खौफनाक नहीं नहीं, यह कदापि सम्भव नहीं।

काली छाया (कटु स्वर में) भागने की कोशिश न कर कमला। अपने अन्तर में निवास करने वाली आत्मा से आज तक कौन भाग सका है ? तेरी कोशिश बेकार होगी, तुझे मेरा कहना मानना ही होगा।

कमला मानना ही होगा ? अच्छा मैं मानूंगी तू बोल, मैं क्या करूँ ?

काली छाया मधुकर से प्रेम कर बीना ने तेरी सत्ता को ठुकराया है। युग युग से चलती चली आई शाश्वत रूढ़ियों पर उसने कटु कराल, पद प्रहार किया है। उसके इस विद्रोह को चूर-चूर कर डाल। अपनी इच्छा के अनुसार किसी लड़के से उसका विवाह कर, नई पीढ़ी के इस

विद्राह को कुचल डाल। न भूल, यह वह चिगारी है—जो घर घर म प्रतिष्ठित, माता पिता की चिरतन प्रतिष्ठा को, पलक मारते भस्मीभूत कर डालेगी।

कमला किन्तु परन्तु इससे वीना के मन को दु ख होगा।

काली छाया दु ख ? हा हा हा ? रूढ़ियो की रक्षा के लिए पुरातन विश्वासो को सुरक्षा के लिए, इस धरती की बेटियो ने, अपने प्राण, हँसते हँसते ज्वलन्त ज्वाला म होम कर दिए। क्या तू इस धरती की बेटी नही ? क्या वीना ने तेरा दूध नही पिया ?

कमला हा हा तू ठीक कहती है मैं इसी पावन धरती की बेटी हूँ वीना मेरी ही सन्तान है।

[नेपथ्य म धीमा सगीत उभरता है।]

काली छाया अपने मन को मजबूत कर हृदय म विश्वास भर। अपनी सन्तान को मनमानी करने का अनुचित अधिकार न दे। न भूल डोर हाथ से छूट जाए तो फिर पतग हाथ नही आती।

कमला हा हा ठीक है मैं आज ही वीना के डैडी से कहूँगी

गम्भीर स्वर नहीं, तू ऐसा नही कर सकती।

[कमला चौंककर सिर उठाती है। सामने एक सुनहली छाया-सी खडी है।]

कमला (घबराकर) क्या कहा ?

सुनहरी छाया (दृढ स्वर म) माँ होकर, तू इस तरह अपने हाथ से अपनी बेटी की हत्या नही कर सकती।

कमला तू ? तू कौन है ?

सुनहली छाया मैं ? (मीठे स्वर म) मुझे नही पहचाना ? मैं तो तेरी ही परछाईं हूँ, तेरा ही असली रूप।

कमला मेरा अगली रूप इतना भव्य, इतना उज्ज्वल नहीं नहीं, यह कदापि सम्भव नहीं

सुनहली छाया (मीठे स्वर म) भागने की कोशिश न कर, कमला, अपने अन्तर म निवास करने वाली आत्मा स आज तक कौन भाग सका है। तेरी कोशिश बेकार होगी, तुझे मेरा कहना मानना ही होगा।

कमला मानना ही होगा ? अच्छा, मैं मानूँगी, तू बोल, मैं क्या करूँ ?

सुनहली छाया अपने अपराध का भार वीना पर न डाल। अपने अविचार का दण्ड उसे न दे।

कमला (विस्मय से) मेरा अपराध मेरा अविचार !

सुनहली छाया हाँ अपराध तेरा है। नारी होकर तू नारी की कामना भावनाओं को न पहचान सकी ! माँ होकर तू बेटी की इच्छाओं को न समझ सकी ! तुझसे बढकर अपराधी और कौन होगा ?

कमला मैं अपराधिनी ?

सुनहली छाया हाँ, तेरी बेटी के युवा हृदय म किशोर भावनाएं कुसुमित हो रही थी। उनपर तू ने ध्यान न दिया। उनके पल्लवित होने से पूर्व ही यदि उपयुक्त जीवन साथी चुन, तूने उसे उसके हाथों म सौंप दिया होता, तो तेरी सत्ता पर आघात न हुआ होता।

कमला हा हाँ मैंने भूल की बहुत बडी भूल

सुनहली छाया जीवन की उस भूल का दण्ड तुझे मिल गया। अब दूसरी भूल न कर नही तो तुझे जीवन पर्यन्त पछताना होगा मौत की गोद म भी तुझे शान्ति न मिल सकेगी

कमला हाँ हाँ ठीक है तू ठीक कहती है। मैं आज ही

बीना के ईंडों से कहूँगी।

काली छाया (सहसा पार्श्व म उभरकर, कठोर स्वर में) नहीं, तू एमा नहीं कर सकती।

सुनहली छाया (दृढ़ स्वर म) नहीं, तुझे ऐसा करना ही होगा।

काली छाया (कटु स्वर में) सोच ले, कमला यह पाप होगा।

सुनहली छाया (मीठे स्वर म) तू विश्वास मान, इससे बढ़कर पुण्य दूसरा नहीं।

कमला (दोनों हाथों से अपना माथा दबाकर) उफ! तुम दोनों कौन हो कहाँ से आई हो।

काली छाया तेरी अन्तरात्मा के भीतरी तल से बावरी!

सुनहली छाया हम तो तेरा ही असली रूप ह, तेरे ही विचारों की वास्तविक प्रतिच्छाया

कमला मेरा ही असली रूप मेरे ही विचारों की प्रतिच्छाया फिर तुम दोनों एक साथ मुझे उल्टी सलाहें क्यों दे रही हो?

काली छाया तू मेरी बात मान ले, पहले मैं तेरे पास आई थी।

सुनहली छाया प्रथम विचारों के संग चल पड़ने वाले सदा ठोकर खाते हैं। विचार करने पर ही बुद्धि उभरती है। तू मेरा सहारा ले।

काली छाया नहीं मेरा।

कमला उफ! मुझपर दया करो, तुम जाओ मैं अकेली तुम दोनों का सामना न कर सकूँगी। जाओ जाओ

[दोनों परछाइयाँ खिलखिलाकर हँसती हैं, और अदृश्य हो जाती हैं।]

कमला उफ! मेरे मस्तिष्क मे आँधियाँ उमड रही है! मेरे हृदय म तूफान लहरा रहा है। मैं क्या करूँ! अपनी आत्मा की कौन-सी बात मानूँ? भगवान मुझे सत्पथ

की राह दिखा दो। मुझे शक्ति दो, बल दो, बुद्धि दो

गम्भीर स्वर — किसे पुकार रही है ! मैं तो तेरे पास ही हूँ।

[बीना चौंककर सिर उठाती है। सामने एक शुभ्र श्वेत-सी छाया है।]

कमला — (घबराकर) तुम ? तुम कौन हो ?

बुद्धि — (कोमल स्वर म) मुझे नही पहचाना ? मैं ही तो तेरी असली शक्ति हूँ तेरी बुद्धि।

कमला — मेरी बुद्धि ? इतनी देर से तू कहाँ थी ? क्यो मुझे अकेला छोड गई थी ?

बुद्धि — किसने कहा कि छोड गई थी ? मैं तो सदा तेरे साथ हूँ। तेरी आत्मा की परछाइया कभी तुझे आगे खीचती हैं कभी पीछे ढकेलती है और इनके भँवर जाल म फँसकर तू भूल जाती है, कि तुझे सदा मेरा सहारा है।

कमला — (हँसकर) तेरा सहारा ? हा, जैसे मकडी के नाजुक तार को तूफानी आँधियो का आसरा

बुद्धि — व्यग्य न कर ! तेरी काया मकडी के तार-सी नाजुक या तृण सी बलहीन भले ही हो, पर तेरे अन्तर्मानस म वह शक्ति है जो इस ससार का जीवन देती है। तू नारी है तू स्नेह की प्रतिमूर्ति है। क्या तू स्नेह का अपमान करेगी ?

कमला — क्या कहा ? मैं शक्ति हूँ मैं स्नेह की प्रतिमूर्ति हू मैं स्नेह का अपमान कर रही हूँ ?

बुद्धि — हाँ, आज तू ने भूल की कि तू वह अनादि चिन्मय माया है जिसके समक्ष बडे से बडे विद्वानो की विद्वत्ता तृण-सी झुक जाती है। तू आदि शक्ति है, जगन्माता, जगत जननी, वह चिर-पुरातना सीता, जिसके समक्ष

अत्याचार के प्रतीक रावण को वरबस शीश झुकाना ही पड़ता है, क्या आज तू स्वयं ,अत्याचार करेगी ?

कमला मैं अत्याचार करूँगी ? नहीं, नहीं ! मुझमे इतनी शक्ति कहाँ मैं तो वही युगो पुरानी अनादि सीता हूँ। जिसने सदा अत्याचार के समक्ष झुक जाना ही सीखा है।

बुद्धि अत्याचार जो करते हैं, उन्ही पुरुषो का पढाया पाठ, बोलकर तू गौरव का अनुभव कर रही है ? बावरी ! जहाँ तक अपना व्यक्तिगत प्रश्न है, सीता भले ही स्वाथ त्याग, सिर झुकाकर चली हो, पर अपनी सन्तान का प्रश्न सामने आते ही, वह निडर सिंहिनी-सी, वन वन भटकने को सन्नद्ध होकर उसकी रक्षा करती है। उसे इस योग्य बना देती है कि वह अपने पूवजा को पराजित कर, उन्हे नया पाठ पढा सके।

कमला हाँ, हाँ तू ठीक कहती है नई सन्तान जो ज्ञान प्राप्त करती है उसीके सहारे विश्व प्रगति के पथ पर चलता है। तब फिर, आज मैं क्या करूँ ? मेरा क्या कतव्य है ?

बुद्धि (मुस्कराकर) बहुतही सीधा और सरल। तू अनागत की आशका, और अतीत की परछाइयो मन डूब। बुद्धि से काम ले। तेरे पथ के काटे फूल बन जाएँगे।

[बुद्धि,अदृश्य हो जाती है। कमला दोनोहाथा के बीच अपना सिर दबा लेती है। आगे-आग बीना और पीछे-पीछे मालती भागते हुए आती है।]

बीना मा-माँ (उसकी गोदी म लुढक जाती है)।

कमला बीना, मेरी बच्ची, तू कहा थी, अब तक ! मैं कहाँ खा गई थी मायाजाल मे वह सपना था, या सच्ची बात थी ?

बीना देख लो, माँ यह मालती नहीं मानती !

मालती शिकायत पीछे सुनना मौसी, पहले देखो, इसकी मुट्ठी मे क्या है ?

कमला यह क्या, पिस्तौल ? बीना तू होश म है या नही ?

बीना मेरे हाथ छोड दे, सखी। इस पिस्तौल म छिपे कबूतर को उडाकर, मैं माँ के प्रश्न का उत्तर दे दू !

मालती कबूतर उडाकर, नूरजहाँ ने सलीम का प्रेम प्राप्त किया था, बावरी ! उसने आत्मघात नहीं किया था।

कमला मालती, जा मधुकर को बुला ला। हाथ के कबूतर को उडाकर, नूरजहा ने जहाँगीर को पा लिया था, देख इसके हाथ के इस विचित्र कबूतर को देखकर, इसका सलीम क्या कहता है ?

बीना (लजाकर) ओह ! माँ !

[शीला, चन्दा का काली व सुनहली छाया के रूप म प्रवेश।]

शीला, चन्दा शाहज़ादी को सलीम मिल गया। अब बान्दियो को घर जाने की फुरसत मिले।

कमला अरे, तुम ! तो वह सपना नही था।

बीना (मालती को आगे ढकेलकर) सपना नही, वह इन्द्रजाल था माँ, यह रही तुम्हारी बुद्धि। पकड लो, अब जाने न पाएँ। ठहर, कहाँ चली !

मालती (मुस्कराकर) बसन्ती सलीम को बुलाने गई है न ? अब पलक पाँवडे बिछाओ तुम, हम फूलो के हार पिरो लाएँ।

बीना नही मानेगी तू ? अच्छा !

[रुष्ट हो उसकी कमर में घूसा जमाती है। सब खिलखिलाकर हँसते हैं।]

मान-मर्दन

पात्र

वसुदेव कृष्ण के पिता
देवकी कृष्ण की माता
यशोदा नन्द-वधू
कंस मथुरा का राजा
रानी कंस की रानी
भीमक एक प्रहरी
रुद्रक दूसरा प्रहरी
पुरजन, प्रजा इत्यादि

काल सदियां पूर्व भादों की एक रात।

मथुरा के प्रबल प्रतापी राजा कंस के अत्याचार से प्रजा त्रस्त थी। माता पिता तथा बहन-बहनोई को बंदीगृह मे डाल देने वाले उस तक्षक के नागफास मे आबद्ध सारा राज्य तडफडाकर छटपटा रहा था। पापी अपने भविष्य के प्रति सदा शंकाशील रहता है और यही कारण था कि कंस के मन को भी शान्ति न थी। उस अशान्ति के झोके ने घर घर के दीप बुझा दिये थे। रक्षक ही यदि भक्षक बन जाए, तो दु खी प्रजा किसके पास रक्षा पान की पुकार लेकर जाये, और फिर उस प्रचण्ड अधर्मी ने तो अपने राज्य मे भगवान का नाम लेना भी निषिद्ध कर दिया था। उसके राज्य मे केवल उसके ही गुणो का बखान करने का, केवल उसी की यशोगाथा गाने का आदेश था। मौत की भीख माँगती उसकी प्रजा के आँसुओ से धुधली आशा के सामने, दूर दिगन्त मे केवल एक ही दीप झिलमिला रहा था— शेषशायी विष्णु की चिरन्तन-पुरातन शाश्वत प्रतिज्ञा कि अत्याचारी के अत्याचार का शमन करने के लिए, उसका मान मदन करने के लिए वे स्वयं साधारण-जन बन, जन-साधारण के मध्य जीवन धारण करेंगे। प्रजा के आकुल अन्तर की जो चिरन्तन पुकार थी, वही तो कंस के अन्तर्मानस की सब से बड़ी भयपूर्ण आशंका थी। वह सत्तावादी तो चाहता था उस ब्रह्माण्ड नियन्ता, आदि शासक लक्ष्मीपति का भी

मान-मदन कर देना ।

[नैपथ्य मे करुण रागिनी बज रही है । बारी-बारी से पुरुष व नारी का गम्भीर कठ स्वर गूज उठता है ।]

पुरुष भूला कस, आज वह फूला मद भार ! अधकार ! हा-हाकार !

नारी नित-नव बढता अत्याचार ! धरा पर बढता अतुलित भार !

पुरुष रो-रो कहते सकल नर नार ।

पुरुष व नारी (एक साथ) । विश्व नियन्ता, ओ खेवनहार—कह दे फिर एक बार पुकार—
यदा-यदा हि धमस्य ग्लानिभवति भारत ।
अभ्युत्थानम् धमस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम् !

नारी सूनी कर दी मा की गोद, छीना पापी ने सकल आमोद ।

पुरुष सुन नही पडता म त्राचार, नहीं कही धूम, होम की क्षार ।

[समवेत पुरुष कठा का गान]

गीत ओ, दुर्जय विश्वजित

नवाते शत सुरवर नर नाथ,
तुम्हारे इन्द्रासन तल माथ ।
घूमते शत शत भाग्य अनाथ,
सतत रथ के चक्रो के साथ ।

तुम नृशस नृप से जगती पर चढ अनियत्रित,
करते हो ससृति को उत्पीडित, मद-मर्दित ।
नग्न नगर कर, भग्न भवन प्रतिमाएँ खडित,
हर लेते हो विभव, कला-कौशल, चिर-सचित ।

सनिक (गरजकर) । बन्द करो, बन्द करो यह गीत ।

[कोडे मारने का शब्द]

पुरजन आह ! मारते क्यों हो ? तुम्हारे नृप का यशोगीत ही तो गा रहे हैं हम !

सैनिक (क्रोध से) । यशोगान है यह ! नारकी ! अधम ! पापी ! नीच !

[नारियों के करुण स्वर में, सैनिकों का रुदन-स्वर डूब जाता है ।]

गीत (नारी कंठ से)—

अरे ! देखा इस पार,
दिवस की आभा मे साकार ।
दिगम्बर सहम रहा संसार,
हाय ! जग के कर्त्तार ! ! !

प्राण ही तो कहलाई मात !
पयोधर बने उरोज उदार ।
मधुर उर इच्छा की, अज्ञात
प्रथम ही मिला मृदुल आकार ।

छिन गया हाय गोद का बाल !
गड़ी है बिना बाल की नाल ! !

सैनिक (कड़ककर) पकड़ लो पकड़ लो, भागने न पाए । ये सब देशद्रोही हैं । दंड पाने के अधिकारी हैं । चलो, चलो राजा के पास

नर-नारी (क्रुद्ध स्वर में) । लो, पकड़ लो । हां अवश्य पकड़ लो, राक्षसो ! क्या करोगे तुम हमारा ? सन्तान को मार डाला घर-बार जला डाला तुम्हारे हाथों की मृत्यु भी अब हमारे लिए वरदान बनेगी

पुरुष हां ! दुखों से निवृत्ति दे वह हमारे लिए अमरदान बनेगी ।

नारी व पुरुष (एक साथ) हम मृत्यु चाहते हैं,हमे मृत्यु दो मौत दो।
[नैपथ्य मे करुण सगीत उभरकर शात हो जाता है।]

सनिक (उच्च स्वर मे) मथुराधिपति महाराजाधिराज, शूरवीर, रणवीर, प्रबल, प्रतापी, अमित तज बलशाली, दुप्ट दलनकारी, साधु महाराज कस राज की जय।

कस कहो, भीमक ! क्या समाचार है ?

भीमक राज्य मे सब कुशल है, महाराज। किसी भी घर म कोई नवजात शिशु जीवित नही आज। गली-गली, नगर-नगर पुरजन आपकी यशोगाथा गाते अघाते नही नर नाथ।

कस (अट्टहास करके)। हा हा हा देखना ! सावधान रहना ! आज की रात्रि, काल रात्रि है। कल खिलेगा नया सवेरा, नया प्रात , और मैं सत्य ही बनूगा सकल भुवन का नर नाथ। हा हा-हा

[रौद्र रस पूरित सगीत बज उठता है । उसके स्वर थमते ही मेघ गरज उठते हैं। पवन सांय-सांय कर उठती है। बिजली की कडक मे पहरेदारा के स्वर खो-खो जाते हैं]

प्रहरी जा ग ते रहो। हो नि ' या र रहा।
[बिजली की कडक। बादला की गरज]

वसुदेव (कोमल स्वर मे)। प्रिये ! बडी व्याकुल हो तुम ! क्या इतनी चिन्तित हो उठी हो, आज ?

देवकी (घबराये स्वर मे) नही। कुछ भी तो नही, आर्य-पुत्र।

वसुदेव (स्नेहपूर्वक)। मुझे ! मुझे भी नहीं बताओगी, अपने मन की बात ?

देवकी सुनकर करोगे क्या ? व्यथा होगी तुम्हें भी बस !

इतना ही तो !

वसुदेव तुम्हारी व्यथा बटा सकू इस बन्दीघर मे केवल इतना ही अधिकार तो रह गया है मेरे हाथ।

देवकी न, आर्य पुत्र ! न कहो ऐसा। सुनकर हृदय विदीर्ण हुआ जाता है। हाय ! न जाने कब कटेगा, यह जटिल नाग पाश !

वसुदेव कटेगा, प्रिये, अवश्य कटेगा विकल धरती की प्यासी पुकार सुन, सजल मेघमाला को दौडकर आना ही पडता है। हमारी अविरल पुकार क्या उन सत्ताशील शेषशायी के कानो तक न पहुँचेगी, नही, नही पहुँचेगी। अवश्य पहुँचेगी।

देवकी (विकल होकर) कब ? जब आशा आँचल का आधार छोड जाएगी जब जीवन दीप बुझने लगेगा ? इस तन का मोह छोड, जब ये प्राण सिहरते शून्य म उडजायेंगे ?

वसुदेव इतनी अधीरता ! छि, आर्य्ये ! यह तुम्हे शोभा नही देता।

देवकी अधीर कसे न हूँ नाथ ! उस पापी ने मेरे सात अबोध बालको का मौत के झूले पर सुला दिया ! और आज आज इस आठवें शिशु को भी, वह

वसुदेव (चौकक्र)—प्रिये ! प्रिय ! क्या, आज, आज ही

देवकी (सिसकी भरते हुए—हाँ आर्य्य पुत्र ! आज आज आज ही

[वायु का वेग बढ जाता है। बढ जाता है बादलों का शोर, टप टप बूदें टपकने लगती हैं, यमुना की लहरें लहरा लहरा कर उमड घुमडकर तट से टकराती हैं।]

भीमक रुद्रक ! लगता है मानो आज महाप्रभु अत्यन्त कुपित

हो उठे हैं ।

रुद्रक सच कहते हो, भीमक ! यह दामिनि की दमक—घिर-घिर कर एकाकार होते इन मेघ खण्डो की यह गर्जना, वायु की यह लोमहर्षक तर्जना—लगता है मानो आज प्रलय की रात आ पहुँची है !

भीमक देखो देखो, तनिक यमुना की ओर, लगता है, मानो आज वह इन पत्थर की दीवारो को गिरा देना चाहती है । इन लौह शृ खलाओ को तोड डालना चाहती है । मिटा देना चाहती है, इस लौह ब दीघर को, इसके कालिमामय, अनिष्टकारी अस्तित्व को ।

रुद्रक शीत से गात ठिठुर रहा है । अँग अँग काप रहे हैं । दाँत से दाँत बज रहे है । चलो, सखे ! कम्बल लपेट जरा कोठरी म लेट रह ।

भीमक (आश्चय से)—परन्तु ये राजब दी ?

रुद्रक (हँसकर)—राजब दी ? हम लौह शरीर वालो की यह दशा है, तो फूल से कोमल गात वाले उन सुकुमार राज-दम्पति की दशा कसी दयनीय होगी, मित्र ! ऐसे मे कहाँ भागकर जाएँगे वे ?

भीमक ठीक कहते हो । आओ हम चलें ।

रुद्रक तुम चलो । मैं भर आता हूँ । किले की इन दीवारो का एक अ तिम चक्कर लगा आऊँ ।

भीमक अच्छा, मैं चला ।

[भीमक चला जाता है । उसके जूतो की ठकाठक धीरे धीरे कम होते, ब द हो जाती है । उसी समय रुद्रक आप ही आप हौले से बोल उठता है]

रुद्रक (धीम करुण स्वर मे)—हाय ! अभाग वसुदेव, हत भागिनि देवकी ! पूवज म के किस कटु पाप के कारण,

भोगनी पड रही है तुम्हे, यह बन्दी घर की कराल यातना। कुछ भी हो। मैं तुम्हे जीवित ही जल-समाधि न लेने दूगा। खोले जाता हूँ यह द्वार। गर्विता यमुना की लहरें, जब तुम्हारे चरणो से आ टकरायें, तब कहीं भागकर अपने प्राण बचा लेना। रक्षा कर लेना अपनी उस यम यातना से जो जल मे डूब जाने पर, सास घुट घुट कर मरने मे मिलती है।

[लोहे की जजीर झनझना कर धरती पर गिर पडती है। रक्षक के जूतो की आवाज धीरे धीरे कम होकर बन्द हो जाती है। देवकी के धीरे धीरे कराहने का स्वर उभरता है।]

वसुदेव (चौककर)—अरे! यह क्या!

देवकी (विस्मित हो)—क्या हुआ, आर्य-पुत्र?

वसुदेव वह देखो—तुम्हारी पीडा देख, वह लौह शृखला आज मानो स्वय ही टूट गई है! ताला खुलकर नीचे गिर पड़ा है! पवन ने अपने सहस्रो हाथो का जोर लगा, इस रुद्ध कपाट को भी खोल डाला है।

देवकी आह! द्वार खुला! परन्तु लाभ क्या? ऐसी आंधी वर्षा म भागकर जाओगे भी कहा!

वसुदेव आधी वर्षा न होती, तब भी तुम्हे ऐसी दशा मे छोड कर, मैं कदापि कही नही जा सकता था, आर्ये।

देवकी इस व्यर्थ की भावुकता से क्या लाभ है, नाथ! मैं भाग कर भी बच न सकूगी। जानती हूँ—आज मेरा अन्तिम समय आ गया है। उफ! कितनी पीडा है मैं चल न सकूगी। तुम जाओ आह!

वसुदेव (घबराकर)—मुझे देवकी!

देवकी (कराहते हुए)—अब समय नहीं। जाओ, तुम भाग

जाओ। उफ! मैं मरी यह कष्ट तो अब सहा न जायेगा।

वसुदेव घबराओ नही, सुलक्षणे। तुम-सी निर्भीका को भय खाना शोभा नही देता।

देवकी आर्यपुत्र, नाथ, कहाँ हो तुम ? क्या चले गये ? हाय! मुझे अकेला छोडकर चले गये

वसुदेव मैं यही हूँ, सुभगे। देखो, यहा तुम्हारे पार्श्व म, देखो, आखे खोलो, देवकी

देवकी तुम अभी तक गये नही! जाओ, समय रहते चले जाओ। उफ! कभी तो कहना मान लिया करो

वसुदेव देवकी प्रिये देवकी! हा! क्या मूर्छित हो गई! देवकी अरे! कोई है—जल लाओ, जल, पखा परन्तु यहा होगा भी कौन, कौन यहाँ मेरी सुनेगा केवल बन्दीघर की ये बिधर दीवारें जाऊ, पानी ले आऊ

[मुख पर पानी के छींटे देने का स्वर]

वसुदेव देवकी देवकी

देवकी (क्षीण स्वर मे कराहकर)—गये नही तुम अभी तक नहीं गए! मैं विनती करती हूँ—तुम जाओ सच कहती हूँ, यह जानकर कि तुम्हे बन्दीघर से छुटकारा मिल गया है, तुम मुक्त हो गय हो, मेरी पीडा आधी भी नही रह जाएगी।

वसुदेव व्यर्थ न बोलो। बोलने से शक्ति क्षीण होती है। थकान उमडती है। कुछ देर चुप होकर लेटी रहो, सुलक्षणे।

देवकी (कराहकर)—आह! नही सहा जाता नहीं सहा जाता अब यह दाह यह यत्रणा! निष्कृति दो मुक्ति दो हे, प्रभु जीवन दो, या मृत्यु दो

[कक्ष मे नवजात शिशु का रुदन गूज उठता है।]

वसुदेव चुप, रे चुप। कोई सुन लेगा। तू क्यों रोता है! तू हँस कि अभी पल भर उपरात ही, तुझे जीवन के बंधन से छुटकारा मिल जायेगा। रोयेंगे तो हम, कि हमारा रक्त बिंदु हमारा आधार हमारे प्राणों का एकाकी सहारा

देवकी (कराहकर)—आर्यपुत्र ?

वसुदेव अब कुछ न बोलो, शुभे। मैं जाता हूँ, अब कंस के पास। जाने की वेला आ गई।

देवकी हाँ! जाने की वेला आ गई। जाने से पहले सुन लो मेरी एक बात एक भूली बिसरी गाथा—जो न जाने क्यूँ, आज आ गई याद।

वसुदेव झटपट कह दो, क्या कहती हो। देरी न करो नहीं तो

देवकी बात पुरानी है—उस दिन मैं रोहिणी के संग, यमुना के तीर जल भरने गई थी। वहा मिल गई यशोदा

वसुदेव यशोदा ?

देवकी हाँ, यशोदा। ब्रज की रानी। नन्द की महारानी। यमुना की लहरों मे हिल-मिल, हम संग संग नहाये। एक दूसरे पर खूब छींटे उड़ाये, और खेल-मेल में बह बोली

[यमुना की कल-कल, छल छल करती लहरों के शोर के साथ सम्मिलित नारी कण्ठ का हास।]

यशोदा (खिलखिलाते हुए) देवकी, देवकी छींटे न मार, नहीं तो याद रख, ऐसा बदला लूंगी कि तू भी याद करेगी।

देवकी (हँसकर) बदला ? बड़ी आई बदला लेने वाली! क्या करेगी, बोल ?

यशोदा क्या करूँगी ? बताऊँ ? तेरी गोदी के लाल को छीन लाऊँगी तुझसे।

देवकी छीन लेना, बेटे मुझे नहीं सुहाते। पर सुन ले—यदि तेरी गोद मे खिली कोई कोमल कली, तो उसे मैं उठा लाऊँगी।

[उभरते सगीत मे उनके स्वर डूब जाते हैं। सगीत के स्वर रुकते ही एक नारी चीख उठती है।]

कस रानी, रानी क्या हुआ तुम्हें रानी ?

रानी (भयभीत स्वर मे) बचाओ बचाओ

कस (हल्के से हँसकर) डर गइ तुम ! क्या सपना देखा कोई ? उठो, आखें खोलो, तुम पर आक्रमण करने का साहस कौन कर सकता है उठो, प्रिये ! ये पलक-पाखुडी खोल दो।

रानी (घबराई-सी) मैं कहाँ हूँ तुम कौन हो ? ओह ! आर्यपुत्र ? आप ?

कस (हँसकर) हा मैं। तुम्हारा कस।

रानी मैंने बडा भयकर सपना देखा, नाथ !

कस (अट्टहास कर उठता है)—हा हा हा डर गईं ? एक तुच्छ स्वप्न मात्र से ? अवनिपति, महाबलशाली, प्रतापी कस की सहगामिनि होकर ? हा हा-हा

रानी (भयभीत स्वर मे) मत हँसो, मत हँसो। यू विधि के विधान को हँसी मे न उडाओ, महाबली ! देखो—अर्धरात्रि की काली घडिया बीत चली। उसका जन्म हो गया होगा, जिसको मैंने देखा स्वप्न मे तुम्हारे बाल पकड कर खीचते हुए, तुम्हारे लहूलुहान शरीर को सीढियो पर घसीटते हुए

कस हो गया ? उसका जन्म हो गया ! और वसुदेव उसे

अभी तक मेरे पास नही लाया ? मैं अभी देखत उस खल, दुरात्मा, पापी को।

[द्वार पर ठकठकाहट]

कस (उच्च स्वर म) कौन है ?

प्रहरी महावली की जय। बन्दी वसुदेव नवजात शिशु लेकर पधार रहे है महाराज !

कस आने दो।

[द्वार खुलने का शब्द]

कस (अट्टहास करते हुए। हा हा हा, आ गया आ ग मेरा काल—वह जिसे तुमने अभी देखा था स्वप्न म स्वप्न का यथार्थ फल सदा विपरीत होता है, आर्य देखना मैं अभी इसके बाल पकडकर, इस इन्ही सान्नि पर हैं, यह क्या ! यह तो कन्या है, वसुदेव !

वसुदेव हा, महावली इस बार स्वय लक्ष्मी मेरी गोद मे आई हैं।

कस लक्ष्मी ? हा-हा हा ! नही, लक्ष्मी नही, यह चडिका है। मेरा अमगलकारी काल है। इसे मार डालना ही मेरे लिए श्रयस्कर है, लाओ, इसे मुझे दो।

रानी नही, नही महावली एसा न करो। यह तो बालिका है। इसकी कोमल देह मे इतनी शक्ति कहाँ कि यह तुम्हे पछाड सके। तुम्हारा कहना सच है। मेरा सपना सार्थक रहा। सपने म मृत्यु पाकर, आज तुम्हारी आयु के वर्ष चिर अमर हो गये। अब कोई तुम्हारा कुछ न बिगाड सकेगा।

कस (गरजकर)। चुप रहो। तुम इतनी शीघ्र भूल गई नारद की वह बात। कमल की पखुडी का दिखाकर क्या कहा था उन्होने—कौन जान सकता है कि इन

पखुडियो मे से कौन सी पखुडी आठवी है ! कौन जानता है कि यह नन्ही बालिका, अपनी सुकोमल देह मे, सिहनी की सी शक्ति नहीं भर लाई है।

वसुदेव मैंने कभी तुमसे दया की भीख नही मागी, कस। अपनी किसी सतान के लिए, कभी तुमसे याचना नही की। आज इस कन्या की भीख मुझे दो, महाबली। यह, अबोध कलिका

कस एक दिन मेरा काल बनेगी। लाओ, छोड दो

रानी (सिसकी भरकर) दया, महाबली, दया, यह तो कन्या है।

कस कन्या हो, या पुत्र—है तो वसुदेव की सतान। आकाशवाणी की वह चेतावनी मैं भूल नही पाता कि वसुदेव की आठवी सन्तान मेरी मौत बनकर जन्म लेगी। आज मैं भी देख लू—किसने किसकी मौत बनकर जन्म लिया है।

वसुदेव रानी (एक साथ) दया, महाबली, दया।

कस दया ? यह किस वस्तु का नाम है ? महाबली के बलशाली व्यक्तित्व के आगे इस दुरत भीख का क्या मूल्य है ! हट जाओ रानी। छोड दो मेरा हाथ। मैं इसे एक ही प्रहार म

[रानी चीख उठती है। पत्थर पर पटकने का शब्द। एक जोर के पटाखे की ध्वनि। किसी नारी-कठ की मधुर खिलखिलाहट।]

नारी का स्वर (मानो कही दूर से बोल रही है) दुरात्मा, तेरे पापो का घडा, आज लबालब भर गया है। अरे, ओ पापी कस, जीतकर भी तू हार गया। तेरी ही लौह शृखलाओ ने तुझे हरा दिया, काल पाश मे फँस

लिया। तेरा वैरी जन्म ले चुका है। तुझे मृत्यु-मुख में पहुँचाने वाला वह काल, इस समय अपनी माँ की बाँहों में सुख से झूला झूल रहा है। ले सुन मैं तुझे क्षणिक दिव्य शक्ति देती हूँ सुन उस मंगलाचार को जो उस भुवनमोहन कान्हा का अभिनंदन कर रहा है

[नेपथ्य में ढोलक के संगीत की हलकी-सी ध्वनि उभरती है।]

रानी (सिसककर)। उफ! महाबली मूर्छित हो गए।

वसुदेव धरा पर लोट गया कंस। गर्व से गगन को छूने वाला तेरा ललाट आज धूलि को चूम रहा है, क्योंकि आज शिशु गोपाल ने जन्म लिया है।

रानी (सिसककर) धन्य वह धरित्रि, धन्य वह देश—जहाँ स्वयं विष्णु ने अवतार लिया है।

[गीत के स्वर उभरकर स्पष्ट हो जाते हैं]

गीत यशुदा के भये नन्दलाल,
बधावा लाई मालनिया।
यशुदा के भये नन्दलाल
बधावा लाई

यमुना के तीर

पात्र

उर्मि—नवविवाहिता वधू
भुवन—उर्मि का पति
नारी—समाजलांछिता नारी

स्थान यमुना का निर्जन तट
समय संध्या बीतने के बाद

पात्र-परिचय

उर्मि

नगर के विख्यात वकील की बेटी उर्मि ने अपनी माता से सारे गुण पाये हैं। ममता और माधुर्य से ओत प्रोत, उनकी निष्ठा तथा विश्वास भरे हृदय की दीप्ति से कांतिमान उसके मुख का लावण्य भारतीय-सौन्दर्य का अनुपम प्रतीक है। आज तक उसने कभी दुःख नहीं पाया, कभी अभाव नहीं जाना। उसके किशोर हृदय ने आज तक सुनहली कल्पनाओं से खेलना ही जाना है। जीवन के दोराहे पर आकर वह जिस नये पथ पर पैर रख रही है उस पर दूर जहाँ तक दृष्टि जाती है फूल बिछे हुए हैं। बावरी! कौन बताये उसे कि फूलों के नीचे सदा कांटे छिपे रहते हैं।

भुवन

इस नगर का यशस्वी डाक्टर है। उसकी आयु लगभग अट्ठाईस वर्ष है। वह जीवन के अनेक अनुभव प्राप्त कर चुका है। उसके निर्मम व्यावहारिक हृदय ने उसे कोमल कल्पना शून्य बना डाला है। व्यर्थ भावुकता में बहना उसे पसन्द नहीं।

नारी

यद्यपि उसकी आयु अभी केवल उन्नीस वर्ष की है, परन्तु उसे जीवन का वह अनुभव प्राप्त हो चुका है जिसे पाने की कामना कोई भी नारी नहीं कर सकती। मां ने उसे अपने आंचल से ढांककर, घर की सीमाओं

मे बन्द करके रखा था। किन्तु यौवन की सुनहली किरणें तो मानो सूर्य की प्रखर रेखाएँ हैं जो तनिक सा छिद्र पाते ही भीतर प्रवेश कर जाती हैं। उसके जिस अल्हड भोलेपन का, मां गर्व से अपनी पडोसिना मे बखान किया करती थी, वही उसके लिए काल बन गया—ऐसा काल जिसने मृत्यु-दड का कराल प्रहार कर के भी उसे जीवित रहने का मजबूर कर दिया। मृत्यु पाने की कामना करके भी वह मर न सकी, क्योकि वह नारी थी—जो जीवन को जन्म देती है, उसे विनष्ट नहीं करती।

[यमुना की लहरें तट से टकरा-टकराकर शोर मचा रही हैं। पछियो के मधुर गीत, और शिखी की पीऊ-पीऊ से वातावरण मुखरित हो उठा है। तभी वहा, उर्मि [और भुवन की आमोदपूर्ण खिलखिलाहट गूज उठती है।]

पात्र-परिचय

उर्मि

नगर के विख्यात वकील की बेटी उर्मि ने अपनी माता से सारे गुण पाये हैं। ममता और माधुर्य से ओत प्रोत, उसके निष्ठा तथा विश्वास भरे हृदय की दीप्ति से कांतिमान उसके मुख का लावण्य भारतीय-सौन्दर्य का अनुपम प्रतीक है। आज तक उसने कभी दुख नहीं पाया, कभी अभाव नहीं जाना। उसके किशोर हृदय ने आज तक सुनहली कल्पनाओं से खेलना ही जाना है। जीवन के दोराहे पर आकर, वह जिस नये पथ पर पैर रख रही है, उस पर दूर जहाँ तक दृष्टि जाती है, फूल बिछे हुए हैं। बावरी! कौन बताये उसे कि फूलों के नीचे सदा काँटे छिपे रहते हैं।

भुवन

इस नगर का यशस्वी डाक्टर है। उसकी आयु लगभग अट्ठाईस वर्ष है। वह जीवन के अनेक अनुभव प्राप्त कर चुका है। उसके निर्मम व्यावहारिक हृदय ने उसे कोमल कल्पना शून्य बना डाला है। व्यर्थ भावुकता में बहना उसे पसन्द नहीं।

नारी

यद्यपि उसकी आयु अभी केवल उन्नीस वर्ष की है परन्तु उसे जीवन का वह अनुभव प्राप्त हो चुका है, जिसे पाने की कामना कोई भी नारी नहीं कर सकती। माँ ने उसे अपने आँचल से ढाँककर, घर की सीमाओं

मे बद करके रखा था। किन्तु यौवन की सुनहली किरणें तो मानो सूय की प्रखर रेखाएँ है जो तनिक-सा छिद्र पाते ही भीतर प्रवेश कर जाती हैं। उसके जिस अल्हड भोलेपन का, माँ गव से अपनी पडोसिना म बखान किया करती थी, वही उसके लिए काल बन गया—ऐसा काल जिसने मृत्यु-दड का कराल प्रहार कर के भी उसे जीवित रहने का मजबूर कर दिया। मृत्यु पाने की कामना करके भी वह मर न सकी, क्योंकि वह नारी थी—जो जीवन को जम देती है, उसे विनष्ट नहीं करती।

[यमुना की लहरें तट से टकरा-टकराकर शोर मचा रही हैं। पछियो के मधुर गीत, और शिखी की पीऊ-पीऊ से वातावरण मुखरित हा उठा है। तभी वहा, उर्मि [और भुवन की आमोदपूर्ण खिलखिलाहट गूज उठती है।]

यमुना के तीर

भुवन (विस्मित-सा स्वर म) समय कितनी जल्दी बीत गया, उर्मि। जिस समय हम यहा आये थे, सूर्यास्त की सुनहली आभा से पश्चिम का आकाश रगीन हो उठा था। अब उस गुलाबी आभा पर, चन्द्र की रुपहली चान्दनी पूरी तरह छा गई है।

उर्मि (साँस खीचकर) काश! बीते पलो को पुन लौटा लेना सम्भव होता! यदि ऐसा हो पाता, तो मैं आज की इन घडियो को, अपने आचल मे बाधकर रख लेती।

भुवन (स्नेह से) ऐसा क्यों, उर्मि!

उर्मि (लजाकर) यह भी क्या कुछ पूछने की बात है! अपने ही मन से पूछ लो न।

भुवन (कुछ हँसकर) मेरा मन तो यही कहता है कि जो पल बीत चुके वे विस्मृति म खो चुके। वे हैं, मानो कुछ बुझती चिंगारी—केवल किसी ज्वलन्त दीपशिखा की अवशिष्ट राख।

उर्मि ऐसा न कहो, भुवन! दीप का आलोक कभी मिटता नही। सच कह दो—क्या तुम आज की इन अनुभूतियो को भविष्य मे कभी भूल सकते हो?

भुवन मेरी भोली उर्मि! भविष्य की इतनी चिन्ता क्यो? चन्दा-तारो भरी इस रात का यह जगमगाता आनन्द, क्या तुम्हे सब कुछ भुला देने के लिए यथेष्ट नही?

उर्मि तुम सच कहते हो! वह देखो—विकल यमुना, सागर से मिलने को आतुर हो किस अधीर आग्रह से आगे

बढती ही जा रही है। नृत्य विभोर मयूर को कैसे मुग्ध होकर देख रही है मयूरी ! ये तमाल-तरु प्यासे नयनो से यमुन जल पर डोलती अपनी छाया को कैसे निरख रहे है ! आओ, हम भी इन इठलाती लहरो पर झूलती अपनी परछाइयो म कुछ खोजकर, कुछ पा ले।

भुवन (हलके से हँसकर) बावरी ! जब हम एक दूसरे को देख सकते हैं, पा सकते हैं, तब परछाइयो मे क्या खोजने जायँ ?

उर्मि अतीत का वह जीवन परछाई बनकर ही रह गया है, भुवन ! फिर भी उसका एक एक दिन, मेरी आखो के आगे छाया-नृत्य कर रहा है। याद है वह दिन, जब प्रथम बार हम-तुम मिले थे ?

भुवन हा। उस दिन सीढियो से गिर पडी थी तुम। तुम्हारे एक पैर की हड्डी टूट गई थी, असह्य पीडा से कराह रही थी, तुम्हारे इन नयनो से जल ढुलक-ढुलक पडता था।

उर्मि तुम्हारे दो बोल सुनकर ही मेरा भय भाग गया था। तुम्हारे शक्तिशाली हाथो को निपुणतापूवक प्लास्टर चढाते देख, मुझे लगा था मैं वास्तव मे ठीक हो सकूगी। सारी जिन्दगी मुझे लगडा लगडाकर नही बितानी पडेगी।

भुवन कितने धैय कितने साहस का परिचय दिया था उस दिन तुमने ! मैं सोच भी नही सका था कि तुम्हारी इस कृश काया मे इतनी शक्ति भरी होगी।

उर्मि तुमने महीने भर बाद प्लास्टर खोलने का आश्वासन दिया था। उस महीने का एक एक दिन मेरे लिए युग-सम बन गया था। परन्तु महीने भर बाद जब तुमने एक्सरेलिया तो कहा, 'हड्डी अभी ठीक से जुडी नहीं है।

कम से कम दो सप्ताह और लगेंगे।'

भुवन — सुनकर मानो तुम्हारे धैर्य का बाँध टूट गया था। अपनी वेदना को छिपाकर, उनकी आँखों में आँसू ला भर मैं सदा हँसा करता था, परन्तु उस दिन तुम्हारे नयनों से ढुलकती बूंदों को देख, मेरी आँखें भर आई थीं।

उर्मि — फिर भी तुमने अपने रूमाल से मेरे आँसू पोंछते हुए कहा था, 'उर्मि, मुझ पर विश्वास करो। तुम्हारा पैर अवश्य ठीक हो जायेगा। यदि न हुआ तो मैं अपना भी पैर तोड़ लूंगा।'

भुवन — और मेरी यह मूर्खता भरी बात सुन, तुम खिलखिला कर हँस पड़ी थीं। जानती हो उस समय मेरा मन हुआ था कि तुम्हारे कपोलों पर ढुलकते उन आँसुओं को, अपने अधरों से उठा लूँ।

उर्मि — तुम्हारे मन की बात, तुम्हारे नयनों ने स्पष्ट कह दी थी, भुवन। उस समय न जाने कितनी लाज न आ रही था मुझे। झट से आँसू पोंछ, मैंने सिर तक चादर तान ली थी। और तुम तुम घबराकर बाहर भाग गए थे।

भुवन — परन्तु तुमने भागने कहाँ दिया? पैर का प्लास्टर खुल जाने पर सभी ने देखा था कि तुम्हारा पैर बिलकुल ठीक हो गया है। परन्तु तुम्हें वहम था कि तुम्हारा पैर कमजोर हो गया है। नित्य इसी विषय पर घण्टों विवाद कर तुम व्यर्थ मेरा समय विनष्ट किया करती थी।

उर्मि — क्यों झूठ बोलते हो? तुम स्वयं ही तो भाग भागकर आया करते थे। और उस दिन मुझसे बिना पूछे ही, तुमने पिताजी से विवाह का प्रस्ताव कर दिया था।

भुवन तुम्हारे मन की बात तुम्हारी आँखो ने गुपचुप जा कह दी थी, उर्मि।

उर्मि चलो, हटो! और पिताजी वे सदा से प्रेम विवाह के विरुद्ध थे, परन्तु तुमने न जाने क्या वशीकरण मत्र चलाया कि उन्होने किंचित् भी विरोध न किया।

भुवन विरोध क्या करते! कोई आवारा, निकम्मा, चरित्र हीन लडका होता तो मना करते। चिराग लेकर खोजते, तब भी उन्हें ऐसा सुयोग्य दामाद न मिलता।

उर्मि (खिलखिलाकर) वाह रे मियाँ मिटठू! यह क्या नही कहते कि मेरे समान विदुषी, प्रवीणा वधू पाना तुम्हारे पिता के लिए कठिन था। तभी तो उन्होंने चटपट विवाह रचा डाला।

भुवन विवाह की तिथि तो तुमने ही निश्चित की थी, उर्मि। कल तुमने नव-वधू का शृगार सजा था। मेरे दुपट्टे से, अपने आचल की गाठ बँधवाकर, अग्नि को साक्षी बनाकर, तुमने सदा सदा के लिए बाध लिया मुझे।

उर्मि (शरारत भरे स्वर म) क्या यह बन्धन तुम्हें प्रिय नही?

भुवन सामने झूमते उस वृक्ष से पूछो—अक मे लहराती उस ललित लता का बन्धन

[दूर कही बाँसुरी की मीठी धुन बज उठती है]

उर्मि सुनो सुनो कैसा है वह स्वर?

भुवन लगता है, जैसे कन्हैया अपने ब्रज की ममता भुला नही पाए हैं।

उर्मि नही, भुवन, नही! यह तो नटखट नन्दकिशोर की चपल मुरली के बोल नही। कितना करुण है यह राग!

मानो विरहिणी राधा, अपने का हा की खाज म भटक रही हो।

भुवन तुम्हारी आखा म आसू ! अरी, बावरी ! किसी चर वाहे का बेटा होगा वह। समय काटने के लिए

[मुरली की धुन ब द हो जाती है]

उर्मि सुनो ! वह रागिनि थम गई। रूठ गई मानिनि राधा ! रूठकर क्या लेगी अभागिन ! गौओ को रिझाने वाला वह गोपाल मथुरा जाकर राजकुमार बन गया। राज कुमारी रुक्मणि को पा, वह प्रथम प्यार को भूल गया!

भुवन भूल तो राधा की ही थी। क्यो वह घर म पड़ी पड़ी बिसुरती रही ? क्यो नही मथुरा जाकर उसने कृष्ण को अपनी याद दिलाई ?

उर्मि तुम तो कहागे ही ऐसा ! तुम भी पुरुष हो न ? भोली राधा क्या जानती थी कि उसके स्नेह का धन उसे यूँ भूल जाएगा। सुनो सुनो फिर वह करुण रागिनि!

[वशी की धुन धीरे धीरे समीप आती जा रही है।]

उर्मि (व्याकुल स्वर म) वशी की यह धुन, हमारा पीछा क्यो कर रही है भुवन ? अभी तो हमारे सम्मिलित जीवन का प्रारम्भ भी नही हुआ। अभी से यह विरह गीत क्या ? यह कैसा अपशकुन !

भुवन कितनी भावुक हो तुम उर्मि ! विश्वास मानो, यह दैवी राग नही। किसी मानव के हाथो म सधी मुरली का स्वर है। आओ, जरा आगे बढ़कर देखें, यह कौन है ?

उर्मि (उसकी बात अनसुनी करके) यमुन कितनी केलि क्रीड़ा की होगी श्याम न तेरे श्याम अक म कितने

रास रचाए होंगे तेरे इस तट पर सगिनि, क्या याद नहीं तुझे उस मुरलीधर का वह नटखटपन कितनी मटकी फोडी होगी, उसने तेरे इस तट पर कालिन्दी, तेरी लहर लहर म समा गई वशी की वह रुचिर धुने

भुवन उर्मि

उर्मि वशी की वह मधुर धुने जिन्हें सुन, झूम झूम जाता था ब्रज का पत्ता पत्ता तेरे इन तटवर्ती तर तले, थिरक थिरक उठते थे, वे गोपकुमार-कुमारी यमुन, क्या याद नही तुझे सखिया के वे हास, का हा के वे परिहास, राधा के नयनो मे छिपा लज्जा का आभास

भुवन उर्मि उर्मि सुनो

उर्मि पाषाणी, उस भोले भाले नटवर को अपनी गोद खिला-कर, दे दिया तूने उसे अपने जैसा ही श्याम हृदय अरी, ओ ! ब्रज बरसाने की समस्त मटकियो का दूध-छाछ लेकर भी तू रही काली की काली तनिक भी गोराई न आई तेरे गात म और दृष्टि की ओट होते ही, राधा को भुला दिया उस हठीले तात ने राधा को जिसके विरह गीत से आज भी गोकुल की धरती काँप रही है। काँप रहा है गगन, वह नील सदन

भुवन उर्मि, कुछ मेरी भी

उर्मि श श श ! चुप रहो, भुवन ! देखते नही यमुना की गति इस समय मानो रुक गई है। उसकी लहर लहर इस करुण रागिनि के सग रा रही है। समीर सहम गया है। वृक्षा का पत्ता-पत्ता, जड-अचल हो उठा है कोयल अपनी बोली भूल गई है देखो, उन मयूरो के नयन भी गीले हो उठे हैं। और और, देखो

मानो विरहिणी राधा, अपने का हा की याद में मन रही हो।

भुवन तुम्हारी आंखों में आंसू! अरी, बावरी! किसी गांव के का बेटा होगा वह। समय काटने के लिए

[मुरली की धुन बन्द हो जाती है]

उर्मि सुना! वह रागिनि थम गई। रूठ गई मानिनि राधा! रूठकर क्या लेगी अभागिन! गौओं को रिझाने वाला वह गोपाल मथुरा जाकर राजकुमार बन गया। राजकुमारी रुक्मणि को पा, वह प्रथम प्यार को भूल गया।

भुवन भूल तो राधा की ही थी। क्या वह घर में पड़ी-पड़ी बिसुरती रही? क्यों नहीं मथुरा जाकर उसने कृष्ण को अपनी याद दिलाई?

उर्मि तुम तो कहोगे ही ऐसा! तुम भी पुरुष हो न? भोली राधा क्या जानती थी कि उसके स्नेह का धन उसे भूल जाएगा। सुनो सुनो फिर वह करुण रागिनि।

[वंशी की धुन धीरे धीरे समीप आती जाती है।]

उर्मि (व्याकुल स्वर में) वंशी की यह धुन, हमारा ह्रदय क्या कह रही है भुवन? अभी तो हमारे सम्मिलित जीवन का प्रारम्भ भी नहीं हुआ। अभी से यह विरह गीत क्या? यह कैसा अपशकुन!

भुवन कितनी भावुक हो तुम, उर्मि! किस्मत माना दर ईश्वी राग नहीं। किसी मानव के हाथों में पड़ी मुरली का स्वर है। आओ जरा बाहर चलकर देखें वह कौन है?

उर्मि (उमगी मन अनसुनी करके) सुनो! किसी के ...बुला रही हो श्याम! तेरे श्याम अब के किसी

रास रचाए होगे तेरे इस तट पर सगिनि, क्या याद नहीं तुझे उस मुरलीधर का वह नटखटपन कितनी मटकी फोडी होगी, उसने तेरे इस तट पर कालिन्दी, तेरी लहर लहर म समा गई वशी की वह रुचिर धुने

भुवन उर्मि

उर्मि वंशी की वह मधुर धुनें जिन्हें सुन, झूम झूम जाता था ब्रज का पत्ता पत्ता तेरे इन तटवर्ती तरु तले, थिरक थिरक उठते थे वे गोपकुमार कुमारी यमुने क्या याद नही तुझे सखियो के वे हास, कान्हा के वे परिहास राधा के नयना मे छिपा लज्जा का आभास

भुवन उर्मि उर्मि, सुनो

उर्मि पाषाणी, उस भोले भाले नटवर को अपनी गोद खिलाकर, दे दिया तूने उसे अपने जैसा ही श्याम हृदय अरी, ओ ! ब्रज बरसाने की समस्त मटकिया का दूध-छाछ लेकर भी तू रही काली की काली तनिक भी गोराई न आई तेरे गात म और दृष्टि की ओट होते ही, राधा को भुला दिया उस हठीले तात ने राधा को जिसके विरह गीत से आज भी गोकुल की धरती *काँप रही है । काँप रहा है गगन, वह नील सदन*

भुवन उर्मि, कुछ मेरी भी

उर्मि श-श श ! चुप रहो, भुवन ! देखते नही यमुना की गति इस समय मानो रुक गई है। उसकी लहर लहर इस करुण-रागिनि के सग रो रही है। समीर सहम गया है । वक्षा का पत्ता पत्ता, जड-अचल हो उठा है कोयल अपनी बोली भूल गई है देखो, उन मयूरो के नयन भी गीले हो उठे हैं । और मोर, देखो

देखो वह कौन है? मैं कहती थी न—वह राधा है युग युग की वही पुरानी राधा आचल धूल म लोटता हुआ, केश बिखरे हुए, अक म छाछ की गगरी छिपाये हुए, वह अपने काहा की खोज म भटक रही है क्या नही सुनेंगे करुणानिधान उसकी करुण पुकार?

भुवन (घबराकर) क्या होश खो बैठी हो, उर्मि! वह तो कोई पगली है। कही हमला न कर बठे। चलो, हम चलें।

उर्मि (कुछ हँसकर) पगली? हाँ! प्रेम पागल ही बना देता है, भुवन! और फिर राधा? वह तो मानो कृष्ण की श्वासो पर जीती थी।

भुवन (व्याकुल स्वर मे) चलो, उर्मि। चलो अब। रात बहुत बीत गई। अब घर चलना चाहिए। चलो, जल्दी।

उर्मि ठहरो, भुवन। मा राधा ने कृपाकर मुझ दशन दिए है तो उनसे दो बातें कर लू। ठहरो मुझे अकेला छोडकर तुम कहाँ जा रहे हो?

भुवन जाता हूँ उर्मि। उधर सडक के किनारे मोटर अकेला खडी है। देखू, कहीं इस पगली न पत्थर मार, उसकी खिडकी शीशे न तोड दिए हो। आओ तुम भी। देर हो गई तो मा नाराज होगी।

[भुवन के भागते पैरो की ध्वनि]

उर्मि चले गए? भाग गए? एक निरीह नारी से डर गय? छि! भुवन! मैं न जानती थी कि तुम इतने कायर हो। चलू देखू कौन है यह निभया। रात के अँधियारे म इस निजन सरिता-तट पर, यह अकेली

क्यो भटक रही है।

[बंशी का स्वर तीव्र हो एकाएक थम जाता है]

उर्मि बहन, इस अँधियारे मे यमुना के तीर क्यो भटक रही हो ? कौन हो तुम ?

नारी मैं ? यमुना के इसी तट पर हम खेला करते थे। वह वंशी बजाया करता था। एकटक उसकी ओर निरखते, मैं विभोर सी सुना करती थी। उसके मुख से नित्य वही एक बात सुनते, मैं सच ही समझने लगी थी कि वह मेरा कृष्ण है, और मैं उसकी राधा हूँ।

उर्मि और आज वह अभी तक नही आया ? तुम उसी की प्रतीक्षा कर रही हो ?

नारी नही, सखी। प्रतीक्षा के दिन तो बीत गए। प्रणय के उन्माद म, मैं भूल गई थी कि कृष्ण कभी राधा का न हो सका। उस छिन भर के चितचोर का कुछ विश्वास नहीं। छलिया गोकुल छोडकर जो गया तो फिर एक बार भी वापस नही आया।

उर्मि भूलती हो, बहन। यह बैलो के कन्धा पर चलने वाले रथो का युग नही, कि अकेली राधा कृष्ण के समीप न जा सके। इस यन्त्र युग मे, गगन की दूरी पलको मे पूरी होती है। मुझे उस छलिया का पता बता दो। उसे तुम्हारे चरणो म लाकर न पटक दिया तो कहना।

नारी नही। वह कायर था, विश्वासघाती आज मैं उसकी परछाईं भी नही देखना चाहती। पश्चात्ताप तो इस बात का है कि किसी ने मुझे कभी कुछ बताया क्यो नही। अवस्था आ जाने पर यदि मैं वह साधारण-सा आवश्यक ज्ञान पा जाती तो तो

[अपने दोनो हाथ आगे बढा देती है]

उर्मि (भयाकुल स्वर में) उफ ! यह क्या ? तुम्हारी बाँहों में शिशु ?

नारी हाँ, शिशु ! भगवान् ने नारी के शरीर में इतनी क्षमता भर दी थी, तो उसे इतनी शक्ति भी क्या नहीं दी कि वह पुरुष के प्रबल आक्रमण का विरोध कर सके ?

[शिशु के वक्ष में मुख छिपा वह सिसक उठती है।]

उर्मि रो मत, बहन। रोने से क्या होगा ? अब तो प्रतिकार का केवल एक ही उपाय शेष है—वह नारकी जहाँ भी हो उसे खोजकर लाना होगा। अपने इस भार को, उसे स्वयं ही वहन करना होगा।

नारी (सिसककर) यह, केवल आकाश कुसुम है, सखी। जो आज से आठ महीने पूर्व ही इस शिशु की चुपके से हत्या कर डालने का दम्भ भरता था, वह आज इसकी रक्षा क्या करेगा ? उस पापात्मा के हाथ में, मैं अपने रक्त बिन्दु को कदापि न सौंप सकूँगी।

उर्मि चलो तब तुम मेरे संग चलो।

नारी तुम्हारे साथ ? पर तुम्हारा घर तो इसी नगर में है न, जहाँ उस अधम के कदम घमते रहते हैं। मैं वहाँ जाऊँगी, जहाँ कोई मुझे पहचान न सके। जैसे कि जमुना की इन जल बूँदों में से प्रत्येक का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होते हुए भी कोई उन्हें अलग अलग पहचान नहीं सकता, ऐसे ही मैं भी संसार में कहीं खो जाऊँगी।

उर्मि तो फिर लौट जाओ, बहन। आधी रात यहाँ क्या भटक रही हो ?

नारी यमुना के इस तीर पर, इस बालुका के कण-कण में, किसी की स्मृति छिपी है, सखी। यहाँ कभी प्रेम शिखा

जल उठी थी। अब शेष हैं, केवल बुझती चिंगारी।

उर्मि सखी मेरी, अभागिन

नारी बुझती चिंगारी! हा, तुमने कभी देखी है, राख से ढकी चिंगारी। चिंगारी जब बुझ-बुझकर सुलगने लगती है, व्यथा उर मे सौ सौ करवटें बदलने लगती है और उसके कँटीले दाह से, मानव जीवित हो, सौ सौ मौत मर उठता है।

उर्मि उस मृत्यु से निष्कृति पाने का केवल एक ही उपाय है सखी! भूल जाओ उस गुमराह को जो दो दिन को तुम्हारा साथी बना था। दूसरी राह पर मुड़कर, अब तुम जीवन की नई मंजिल खोज लो।

नारी यही मैंने भी सोचा था। इसी उद्देश्य से, आज मैं अन्तिम बार इस तट पर आई थी। यमुना की इन लहरो से टकराकर, किसी दिन कन्हैया ने मा यशोदा की सूनी गोद भर दी थी। आज मैं इसे, इस डोंगी म लिटाये जाती हूँ। कल यह भी किसी की सूनी गोद की शोभा बन जायेगा।

उर्मि (दोनो हाथ फलाकर)—तो इसे मुझे ही दे दो। मेरी भी गोद सूनी है बहन।

नारी (अविश्वास से) सच कहती हो?

उर्मि देख नही रही हो, मेरे भाल पर सिन्दूर की यह रेखा, और मेरी यह सूनी बाँहें? विश्वास करो, माँ अपने शिशु को जितना प्यार कर सकती है उतना ही स्नेह यह मेरे आँचल की छाया मे पाएगा।

नारी तो, बहन लो। (शिशु का मुख चूमकर) मेरे लाल, तुझे जन्म देकर भी, मैं तेरी माँ न बन सकी। मेरे इस दुःख को, काई क्या समझ सकेगा!

उर्मि तुम्हारी व्यथा समझने का झूठा दम्भ मैं नहीं करूंगी, बहन। मैंने कभी दु:ख नहीं पाया। फिर भी नवजात बछड़े के दूर हटा दिए जाने पर, मैंने गाय को रम्भाते देखा है। नवजात बच्चे को छू देने पर मैंने कुत्ते का गुर्राना सुना है। अपने सिर में तनिक-सी पीड़ा होते ही अपनी माँ के मुख पर घिर आई पीड़ा का अनुभव किया है। तुम निश्चिन्त रहो—तुम्हारे शिशु को माँ का अभाव कभी न खलने पाएगा।

नारी (सिसककर) विदा विदा, मेरे शिशु आ, जाने से पहले एक बार और तुझे गोद में ले लूं एक बार और तेरा मुख देख लूं तेरी ये नन्ही नन्ही उंगलियाँ बड़ी होकर कलम पकड़ेंगी, या कटार, यह आज कौन जान सकता है!

उर्मि कुन्ती का कर्ण, सारथी की गोद में पलकर भी विश्वजयी बना था बहन। तुम्हारा बेटा, बड़ा होकर कुछ भी क्यों न करे, परन्तु वह तुम्हारा नाम कभी नहीं लजाएगा।

नारी (सिसककर) मुझे तुम्हारा भरोसा है, बहन, अच्छा मैं चली। विदा

उर्मि एक पल ठहरो। तुम्हारा नाम मैं नहीं पूछती। परन्तु जाने से पहले इसके पिता का नाम बता दो। ईश्वर न करे यदि कभी किसी कारण

नारी तो सुन लो, मैं तुम्हारी इच्छा में बाधा न डालूंगी। अब यह तुम्हारा है। इसका मंगल अमंगल किसमें है और किसमें नहीं यह भार भी अब तुम्हारा है। इसके पिता का नाम है—डाक्टर भुवन। इसी नगर के विख्यात जौहरी खीमामल-कंचनमल का पुत्र है वह।

उर्मि (भयाकुल भाव से) डाक्टर भुवन जौहरी खीमामल का बेटा ?

नारी हाँ, वही। अब मुझे जाने दो भाग जाने दो। कही ऐसा न हो कि देर होने पर मेरी बुद्धि अपना विचार बदल दे। मैं जाती हूँ

[भागते-भागते उसके अन्तिम स्वर, क्षीण से क्षीण तर होते जाते है]

उर्मि (आप ही आप) अभी मैंने क्या कहा था—इस जीवन में मैंने कभी दु ख नही पाया (हलके से हँसती है) हा! इस जीवन म मैंने कभी दु ख नही पाया था, फिर भी जो मेरे जीवन का सबसे बडा सुख था, वही मुझे सबसे बडा दु ख द गया। जिसे मैं समझती थी, निर्दोष, निष्पाप, जगत् मे केवल अपना, वह वह ओह, और उसी के सग मुझे रहना होगा ? उसी के सग अपना सारा जीवन बिताना होगा ?

[वह शिशु के वक्ष म मुख छिपाकर सिसक उठती है]

उर्मि (सहसा सिसकना बन्द कर) भुवन भुवन, यह क्या किया तुमने और और तुम उसे भूले नही हो। देखते ही, तुम प्रथम झलक मे ही उसे पहचान गए थे। पगली है वह ? और तुम तुम्ह तो इतना भी साहस नही हुआ कि उसे अपना मुख तक दिखा सकते? कायर! हाँ, वह ठीक ही कह रही थी—तुम निपट कायर हो वास्तविकता से डरकर भागने वाले को और क्या कहते हैं ? अपनी जिम्मेदारियो से घबराकर भागने वाले को और क्या समझा जाए ? चल, मरे

शिशु अभागा तू नहीं अभागा है तेरा वह पिता, जो अपने आपको तेरे मीठे प्यार से वंचित करना चाहता है देख, वो आ रहा है, उधर से

भुवन तुम अभी तक यही खडी हो, उर्मि आओ, जल्दी। है! यह क्या? तुम्हारे हाथो म क्या है?

उर्मि (व्यग मे हँसकर) वही, जिसे भूल से छाछ की गगरी समझा था।

भुवन छि! किसी के पाप को अपनी बाँहो मे सँभालते तुम्हे घृणा भी नही आई?

उर्मि पाप? चलो, आज तुम्हे उसकी याद तो आई?

भुवन (क्रोध स) उर्मि?

उर्मि हाँ भुवन, पाप पुण्य की परिभाषा भूल, पुरुष ने स्वेच्छाचार किया, नारी पर अत्याचार हुआ, और उसका शिकार हुआ यह यह अबोध शिशु!

भुवन (खीझकर) क्या पागल हो तुम भी? न जाने कहाँ से, किसका बच्चा उठा लाइ। अब इसे अनाथालय भेजने का भभट करना होगा।

उर्मि (व्यग स) केवल अनाथालय? यमलोक नही?

भुवन (क्रोध स भडककर) उर्मि?

उर्मि (हँसकर) आज मैं खूब समझ गई हूँ —जिसे नर की दहाड समझा करती थी वह केवल भेड का मिमियाना है। बता सकते हो भुवन, इस शिशु मे क्या दोष है? ससार के अन्य बालको से यह किस बात म भिन्न है?

भुवन कविता बहुत हो चुकी उर्मि! रात बीत रही है। घर वाले चिन्तित होंगे। चलो, मोटर म बैठो।

उर्मि सुनो भुवन। सृष्टि के निर्माता केवल दो हैं—पुरुष

और नारी। नारी का काम है जन्म देना और पुरुष का लालन पालन के साधन जुटाना। तुम मुझे कोई कारण बता सकते हो कि क्यों इसके पिता को इसका पालन पोषण नहीं करना चाहिए ?

भुवन (खीझ भरे स्वर मे) ठीक तो है। यदि इसके पिता का नाम जानती हो, तो चलो, राह मे इसे उसी के द्वार पर पटक देंगे, मुझे कोई आपत्ति नही।

उर्मि (शिशु को आगे बढाकर) तो लो, सभालो, तुम ही इसके पिता हो। यह तुम्हारा ही पुत्र है।

[एकाएक वह सिसक उठती है]

भुवन (व्याकुल स्वर मे) उर्मि उर्मि !

[उर्मि केवल सिसकती रहती है]

भुवन (अविश्वास से) तो यह सच है ? और और इसकी माँ ?

उर्मि (सिसकी भरकर) यमुना के तट पर से, यमुना की-सी लहरो मे खो गई है वह।

भुवन (हतबुद्धि हो) डूब गई जल मे समा गई और तुम खडी-खडी देखती रही ? नारी होकर तुम नारी की व्यथा नही समझ सकी ? उसे मौत से नहीं बचा सकी ?

उर्मि (सहसा तीखे स्वर मे) हाँ, नारी हूँ। इसीलिए तो मैंने उसे नही रोका। क्या तुम मुझसे यह आशा करते हो कि अपने हाथो मैं अपना सोने का ससार लुटा देती ? पल भर की भावुकता मे भूल

[वह फिर से सिसकने लगती है]

भुवन उर्मि उर्मि यह तुम कह रही हो ? तुम ! नही। मेरी जो सरल स्नेहातुरा उर्मि थी, वह आज ईर्ष्या मे

कही खो गई है। उसके स्थान पर खडी है केवल एक एक

[सहसा भुवन भागने को पैर बढा देता है]

उर्मि (घबराकर) भुवन, ठहरो, भुवन तुम कहा भागे जा रहे हो?

भुवन (अपना हाथ छुडाते हुए) न रोको। हटो, छोड दो मेरा हाथ। जान बूझकर मैं उसे डूबने नही दे सकता। उस जल-समाधि मे से उसे निकालना ही होगा।

उर्मि (कसकर उसका हाथ पकडते हुए) ठहरो, भुवन। रुको सुनो मेरी बात। तुम गलत समझ रहे हो। देखती हू—उसी के शब्दो को दोहराकर, मैंने बडी भूल की।

भुवन (ठिठककर) उसी के शब्द?

उर्मि हा। वह मरी नही। जिसमे इतना साहस था कि समाज की लाछना सहकर भी इस शिशु को जन्म दे सकी, वह मृत्यु की बात कैसे सोच सकती है? वह अभागिन पराजिता अवश्य है किन्तु कायर नही।

भुवन (उर्मि को झकझोरकर) तब कहाँ है वह? बोलो बताओ, वह कहाँ है?

उर्मि उसकी आशा छोड दो, भुवन। जिस ससार मे वह जा चुकी है, उससे, तुम उसे कभी नही खोज पाओगे।

भुवन तुम झूठ बोल रही हो केवल मुझे धोखा दे रही हो। जिससे कि

उर्मि नही भुवन। मेरा विश्वास करो। अपने स्वार्थ के लिए मैं एक गृहस्थी कदापि विनष्ट नही कर सकती थी। यह सत्य है कि किसी दिन उसने अपने समस्त मन प्राण से तुमको चाहा था। परन्तु तुम्हारे कपट पूर्ण छल ने

उसके उसी असीम प्रेम को अतीव घृणा मे बदल डाला।

भुवन यह असम्भव है। ऐसा नही हो सकता।

उर्मि सत्य यही है, भुवन। आज वह तुमसे इतनी घणा करने लगी है कि तुम्हारा मुख भी नही देखना चाहती। आज उसे स्वय अपने से इतनी घणा हो गई है कि ,वह किसी को अपना मुख नहीं दिखलाना चाहती। उसके सामने जाकर, उसकी व्यथा का भार और न बढाना। भुवन।

भुवन (भयाकुल स्वर मे) उर्मि!

उर्मि एक नारी के विषय म, नारी के वचनो पर विश्वास करो, भुवन। हम स्नेह करती हैं, तो अपने स्नेह के पात्र के लिए प्राण तक उत्सग कर देने को प्रस्तुत हो उठती हैं, और यदि हम घृणा करती हैं, तो उस घृणा के पात्र के ससग से बचने के लिए, हम स्वय अपने हाथो अपने को मिटा देने के लिए सन्नद्ध हो उठती हैं। वह प्राण तज देगी, किन्तु अब तुम्हारा स्पश सहन न कर सकेगी।

भुवन यदि यह सच है, यदि वास्तव मे, मुझसे इतनी घृणा की जा सकती है, तो मैं ससार में किसी को अपना मुख दिखाने योग्य नही। सरिता की इस बहती धारा मे ही, मुझे मुक्ति खोजनी होगी। हट जाओ, छोड दो मेरा हाथ

उर्मि (दृढ स्वर मे) होश मे आओ, भुवन। पागल न बनो। क्या तुम चाहते हो कि मैं सुहाग का अथ समझे बिना ही विधवा हो जाऊँ? कि यह नन्हा शिशु निपट अनाथ हो जाये, ससार मे हमारा कोई सहारा, कुछ

आधार न रह जाय ?

भुवन (कातर स्वर मे) मैं ससार म किसी को सहारा देने योग्य नही, मुझे छोड दो, उर्मि। मेरे भाग्य म, मेरे इस निष्फल जीवन का यही अन्त लिखा है।

उर्मि इस निष्फल जीवन को सफल बनाने वाले भी तो तुम ही हो, आज तुम प्रायश्चित्त की अग्नि म तप रहे हो, दहकती आँच मे तपकर ही स्वण निखरता है, यह तुम

भुवन शब्दो के जाल मे मुझे न बाँधो, उर्मि। आज ही तो मैं वास्तव मे अपने को ठीक से पहचान पाया हूँ। क्या तुम चाहती हो कि किसी दिन मैं तुम्हे भी धोखा दू

उर्मि भुवन, सुनो

भुवन (अधीरता से) तुम्हें भी धोखा दूँ, तुमस भी छल करूँ। यमुना के तीर तुम भटकती रहो, और, मैं मैं ? देख रही हो, सामने फूल फूल मँडराती उस तितली को ? एक पुष्प की सुग ध का आनन्द लेकर, दूसरे पर उड जाना, छि। इसी तरह नही, नहीं। यमुना की इस सुशीतल गोद मे ही अब मुझे शान्ति मिल सकेगी। छोडो, छोडो, मुझे छोड दो।

उर्मि (सहज स्नेह से) दु ख के तनिक से आघात से इतने पागल न बनो, भुवन ! अभी आधा घण्टे पूव, जिसका तुम्ह ध्यान भी नही था उसी के लिए सहसा तुम्हारे मन मे इतना प्रेम जाग गया कि उसे खोकर तुम जीवित भी नही रहना चाहते।

भुवन प्रेम ? नही आज खोजन पर भी, मुझे अपने हृदय मे उस मोह को कही कोई चिह्न नहीं मिलता। फिर भी मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि आज के दिन जब

कि मैं जीवन के इस दोराहे पर आ खड़ा हुआ हूँ। भगवान् ने उस मेरे पथ के बीच पहुँचाकर, मुझे राह सुझाने का प्रयत्न किया है

ऊर्मि यह तुम्हारे मन की भ्रान्ति नहीं भुवन, यह सत्य है। इस शिशु को तुम्हारी गोद में डालकर आज वह तुम्हें एक नया पाठ पढ़ा गई है। 'तुम स्वयं जीवित रहो, और उसे भी जीवित रहने दो' आज वह तुम्हें यही मंत्र सिखा गई है।

भुवन शायद शायद तुम्हारा कथन ही ठीक है। परन्तु मुझे विश्वास नहीं कि जीवन के इस अध्याय तक पहुँच जाने पर अब मैं यह नया पाठ सीख सकूँगा। भँवर बनकर फिर कहीं उड़ जाने से मुझे कौन रोक सकेगा?

ऊर्मि (मीठे स्वर में) रोकने वाला भी है, भुवन!

भुवन (व्यंग से) कौन? तुम!

ऊर्मि नहीं। यह नन्हा शिशु। इसके निष्पाप नयनों में झाँक कर देखो—उनमें कितनी सरलता भरी है। इसकी असहायता इसकी निर्बोधता, इसकी कोमलता का अनुभव करो, भुवन। सहज में अपना सारा भार तुम्हारे ऊपर डालकर, यह कितना निश्चिन्त हो गया है।

भुवन मुझ पर? नहीं नहीं। तुम पर।

ऊर्मि (मुस्कराकर) इसके डगमग करते नन्हे-नन्हे पग, जब घर की धरती पर डोल उठेंगे, जब सूने घर के कोने कोने में इसका रुदन और हास छा जाएगा, तब तुम्हें पता लगेगा कि इस विश्व में प्रीति और विश्वास के अतिरिक्त कहीं कुछ शेष नहीं।

भुवन नहीं ऊर्मि, मकड़ी के तार की भाँति नाजुक है यह

सहारा। मुझे विश्वास नहीं होता, कि इस कोमल तन्तु के तार में बँधकर, मैं जीवन पथ पर चल सकूँगा, आगे बढ़ सकूँगा।

उर्मि तुम्हें सहारा देने के लिए मैं भी तुम्हारे साथ हूँ। भुवन।

भुवन (विस्मय तथा अविश्वास से) तुम! तुम क्या सच्चे मन से कभी मुझे क्षमा कर सकोगी? क्या फिर कभी वही पुरानी प्रीति

उर्मि तुम्हारे पथ पर बिछा सकूँगी? क्यों नहीं, भुवन! जिसके निकट तुम सब से अधिक अपराधी थे, जब वही तुम्हें यों क्षमा कर गई, तब क्या तुम समझते हो कि उस महिमाशालिनी महीयसी से मैंने कुछ भी नहीं सीखा?

भुवन तब चलो, उर्मि। तुम्हारा सहारा पाकर मैं चलता रहूँगा।

उर्मि हमारे पथ पर किसी के त्याग का दीप जलता रहेगा। नित्य प्रति अधिकाधिक बढ़ते उसके ज्योतिपुञ्ज आलोक में प्रकाशित रहेगी यह राह, जो सरल है, बाधाहीन है, निष्पाप है

भुवन चलो उर्मि।

उर्मि चलो। लो सँभालो अपने मन खिलौने को। (दूर कहीं वंशी बज उठती है, और साथ ही किसी नारी का करुण स्वर लहराता आता है)

गीत कान्ह संग जाऊँ मय्या मय्या,

पिता नन्द बा, बाबा बाबा,

औ यशुमति को मय्या।

कान्ह संग

[भुवन और उर्मि एक-दूसरे की ओर देखकर मुसकराते हैं। उर्मि की हँसती आँखों में गीले आंसू हैं, जिन्हें भुवन हाथ बढ़ा हल्के से पोंछ देता है।]

[भुवन और उर्मि एक-दूसरे की ओर देखकर मुसकराते हैं। उर्मि की हँसती आँखों में गीले आँसू हैं जिन्हें भुवन हाथ बड़ा हल्के से पोंछ देता है।]

निन्यानवे का चक्कर

पात्र

शील	एक अठारह वर्षीया किशोरी
चन्द्रा	शील की माँ
सुखिया	चन्द्रा की नौकरानी
मिस रिजवी	मुस्लिम लेडी डॉक्टर
मिस चटर्जी	बंगाली लेडी डॉक्टर
मिस मिराजकर	इंगलैंड रिटर्न लेडी डॉक्टर

समय

दोपहरी के कुछ बाद।

पात्र-परिचय

शील

अठारह वर्षीया शील, अपनी माता की इकलौती बेटी और उसकी समस्त धन जायदाद की वारिस है। उसके किशोर मन मे यौवन-सुलभ कोमल भावनाएँ है। कल्पना की सुनहली रुपहली रूपरेखाएँ हैं। अपनी माता के प्रति उसे असीम प्रेम है, और उनके लिए वह सहर्ष अपना जीवन भी अर्पित कर देने को प्रस्तुत है। यह सुन्दर, आधुनिका किशोरी बी० ए० की छात्रा है किन्तु इधर कुछ दिन से बीमारी के कारण उसका कालेज जाना छुटा हुआ है। दिन रात शय्या म पडे रहने के कारण मुख की कान्ति कुछ श्रीहीन हो गई है।

चन्द्रा

नगर की सम्भ्रान्त महिला है। पति की मत्यु हो जाने के बाद से, उनका सारा काय व्यापार उ होने अपने हाथो मे सभाल लिया है। समाज म उच्च स्थिति होने के कारण उन्ह सामाजिक कार्यों से अवकाश नही मिल पाता। सदा कोई न कोई घेरे रहता है। अपनी स्थिति के अनुसार सुन्दर रेशमी वस्त्र पहनने का उन्हे शौक है। नाक म हीरे की छोटी सी लौंग कानो म हीरे के टॉप्स, कण्ठ म सच्चे मोतियो की दोहरी माला और मोती की ही चूड़ियाँ वे सदा पहने रहती हैं। बालो के जूड़े में फूल लगाना और अधरो पर हलकी सी लिपस्टिक लगाना भी नही भूलतीं। उनकी कायकुशलता योग्यता व चतुरता की सारे नगर म धाक है किन्तु जहाँ उनकी बेटी का प्रश्न सामने आता है, व किंकर्तव्यविमूढ हो उठती है।

मिस रिजवी

कुशल लेडी डॉक्टर है। नगर मे उनका मान सम्मान है। भगवान्

मे उनका अखण्ड विश्वास है शायद यही कारण है कि मध्यवर्गीय घरानों मे, उनका अधिक आदर होता है । वे अधिकतर सलवार, कमीज ही पहनती हैं। कालेज की विद्यार्थिनियों की तरह दुपट्टा उनके वक्ष पर ही पडा रहता है। अपना सफेद कोट पहन लेने पर वे डाक्टर सी लगती हैं, नही तो प्रथम दृष्टि म देखन पर कोई उन्हें किसी भद्र घर की महिला ही समझ सकता है। शरीर से तनिक स्थूल हैं। फैशन के प्रति उन्हें अरुचि है। उनकी कुछ अपनी मान्यताए हैं, और उन्ह उन्ही के अनुसार चलना पसन्द है। बात करत समय, बीच बीच म अपनी एनक उतारकर, रेशमी रुमाल स उसके शीशे रगडने की उनकी पुरानी आदत है। आयु उनकी लगभग पैंतास वर्ष है।

मिस चटर्जी

हँसमुख, विनोदी स्वभाव की बगाली महिला हैं। रग रूप सुन्दर है। अत्यन्त आधुनिका होते हुए भी साडी बगाली रीति से ही बाधती हैं, जो उनके इकहरे शरीर पर बडी सुन्दर लगती है। अभी नई नई डॉक्टरी आरम्भ की है, अत उन्ह अनुभव अधिक नही, किन्तु अन्य डाक्टरो का सहयोग ल, व इस त्रुटि की पूर्ति कर लेती हैं। अपने कालेज जीवन मे उन्होने किसी साथी युवक स प्रेम किया था। नगर मे सभी जानत हैं कि शिक्षापूर्ण कर उसके विलायत से लौट आने पर उन दोनो का विवाह होगा। वह युवक पजाबी है अत बचारी हिन्दी बोलने की पूरी कोशिश करती है, किन्तु शशव मे अभी तक बगाल मे ही रहने के कारण उनकी बोली पर जो बगाली पुट ह, वह सहज ही छूट नही पा रहा है। आयु लगभग छब्बीस वर्ष है।

मिस मीराजकर

अभी हाल म ही इगलड से डॉक्टरी की विशेष शिक्षा प्राप्त कर लौटी हैं। साडी पहनने म उन्हें उलझन लगती है। सिल्क का ब्लाउज और सुन्दर रगीन ट्राउजस पहनती है। बौबकट बाल कन्धो पर लहराते रहत हैं। उनकी चाल ढाल में, भावभगी म, इगलैंड की छाप है। यहा

तक कि वे हिंदी के पूर्ण शुद्ध वाक्य भी नही बोल पाती। बीच-बीच मे अनायास ही अंग्रेजी के शब्द बोल जाती हैं। निन्यानवे के चक्कर ने उन्हे डाक्टर तो अवश्य बना दिया है किन्तु डाक्टरी की अपेक्षा उन्हे घूमना फिरना और गप्पें ठोकना ही अधिक रुचिकर लगता है। अभी नई-नई प्रैक्टिस प्रारम्भ की है, किन्तु इंग्लैण्ड रिटर्न होने के कारण, नगर मे उनका विशेष मान सम्मान है। आयु उनकी लगभग अट्ठाईस वर्ष है।

सुखिया

सीधी सादी अनपढ नौकरानी है। उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य और उद्देश्य अपनी स्वामिनी को सुखी रखना है। काम तत्परता से भाग भागकर करती है। काम में यदि कुछ भूल हो जाती है तो यह उसका दोष नही, उसके सरल और सीधे स्वभाव का दोष है। परिश्रमी और ईमानदार है। उसकी आयु लगभग बीस वर्ष है।

[शील का शयन कक्ष। आधुनिक रीति से सजा हुआ है। दीवारो पर कुछ उसके अपने बनाये हुए चित्र टँगे हुए हैं। कोने वाली खिडकी के पास, पूरे शीशे की ड्रेसिंग टेबिल है, जिस पर प्रसाधन की सामग्री सुरुचिपूर्ण ढग से सजाकर रखी गई है। कमरे की *खिडकियो पर हलके धानी रग के पर्दे हैं, जो नीचे बिछे कालीन और* मेजपोश तथा कुर्सी कवर आदि से मेल खाते है। कमरे के बीचोबीच म शील का पलग पडा हुआ है। सिरहाने छोटी सी मेज है, जिसपर थर्मामीटर, दवा का गिलास छोटी-छोटी दवा की दो तीन शीशियाँ आदि रखी हुई हैं। एक कोने मे शील की पढने की मेज कुर्सी और पास ही किताबो की अलमारी है। वस्तुओ पर यद्यपि धूल का नाम नही किन्तु उनके रखे जाने के ढग को देखकर ही कहा जा सकता है कि इधर कुछ दिन से उनका उपयोग नही किया जा रहा है।

इस समय दिन का डेढ बजा है। शील अपने पलग पर हलकी-सी चादर गले तक ओढे लेटी है। छत का पखा धीरे धीरे घूम रहा है। शील की निगाहें उसी पर टिकी हुई है।

समीप ही आरामकुर्सी पर बैठी चन्द्रा कोई उपन्यास पढ रही है।

एकाएक शील करवट बदलकर हलके से स्वर म, धीरे से कराह उठती है। चन्द्रा के हाथ से पुस्तक छूट पडती है और मुख-पर वेदना की रेखाएँ उभर आती हैं—कैसा है यह निन्यानवे का चक्कर, जिसने उसकी बेटी को यो फास लिया है। कब यह समाप्त होकर नॉमल पर आएगा ? चन्द्रा के मन मे निरन्तर घुमडन वाले इस प्रश्न का उत्तर क्या डाक्टरो के पास भी नही है ?]

निन्यानवे का चक्कर

शील (कराह कर) माँ आह! माँ

चन्द्रा (घबराकर) शील, कैसी तबियत है, बेटा?

शील बुखार तो आज भी नही उतरा, माँ!

चन्द्रा न जाने कब उतरेगा! इस बीमारी ने मेरी भूख प्यास सब छीन ली है। ये कमबख्त डॉक्टर भी बस सिर्फ रुपये लेने के मरीज हैं। मेरा बस चले तो

शील गुस्सा न करो, मा!

चन्द्रा गुस्सा कैसे न करूँ, बेटी? सोचती थी तेरा विवाह कर छुट्टी पा लूँगी। अपना बाकी जीवन तीर्थयात्रा मे बिताऊँगी। लेकिन यहाँ तो बस चिन्ता, चिन्ता, चिन्ता! कभी तेरे सिर मे दर्द है कभी कमर मे पीडा, कभी पेट मे शूल

शील माँ, तुम इतनी चिन्ता क्या करती हो? डॉक्टरो का इलाज तो हो ही रहा है।

चन्द्रा बेटी, तू क्या जाने मेरे दिल का हाल? कैसी आग सी जलती रहती है, हर दम मेरे मन मे!

शील माँ!

चन्द्रा शाम सबेरे आँचल फैलाकर अपने भगवान से भीख माँगती हूँ—'हे मगलमय, मेरी शील को जल्दी से अच्छा कर दो। वह भली चगी हो जाय। उसके सब रोगो को दूर भगा दो। मैं धूमधाम से उसका विवाह करूँ। मेरे द्वार पर शहनाइयाँ बजें। यह आँगन

फुलझड़ियों से भर जाये। ऊँचे घोड़े पर बैठकर, हीरे की
कलगी लगाकर, सुन्दर सा दूल्हा मेरे द्वार पर

शीला (कराहकर) माँ!

चन्द्रा क्या हुआ बेटी? बोल न? बोलती क्यों नहीं?
हाय! तू सफेद क्यों पड़ती जा रही है? सुखिया, अरी
ओ सुखिया,

सुखिया (कहीं दूर से) आई, मालकिन।

[सुखिया का प्रवेश]

चन्द्रा देख सुखिया, मेरी शीला को क्या हो गया! जा जल्दी
से अनार का रस तो ला।

[द्वार पर खट खट] [सुखिया जाती है।]

चन्द्रा आई कमबख्तो! आने वालों को यह नहीं सूझता कि
बेटी बीमार है। दो घड़ी तो मुझे उसकी खटिया के पास
बैठ लेने दें। ना, भला यह कैसे होगा! काम काम
काम सारी दुनिया के सारे कामों का ठेका मैंने ही ले
रखा है! आज विधवाश्रम का उद्घाटन है कल
वनिता विद्यालय में जलसा। और कुछ नहीं तो के
अभाग के दो मांगने वाले ही

[सुखिया का प्रवेश]

सुखिया महिलामंडल की सिक्रेटरी साहिबा आई हैं,
मालकिन।

चन्द्रा (व्यंग्य से) सिक्रेटरी साहिबा आई हैं। इन सब को क्या
सिर का दर्द हो गया? मालूम नहीं मेरी बेटी कितने
दिनों से बीमार है? जा, जा, कह दे उनसे, आज
मिलना नहीं हो सकेगा। बिटिया रानी की तबियत
खराब है।

शीला (कराहकर) मत जाओ, माँ। कुछ कहती क्यों

तू बार बार सफेद पड जाती है ? सुखिया अरी ओ सुखिया !

सुखिया (कहीं दूर से) जी अभी आई मालकिन।

चन्द्रा (जोर से) अरी ओ आई की दादी। डाक्टर नहीं आई अभी तक ?

[सुखिया का प्रवेश]

सुखिया जी, डॉगदरनी साहेबा ने तीन बजे आने को बोला था, मालकिन।

चन्द्रा (क्रोध से) तीन बजे तीन बजे मरीज चाहे दर्द से तडपता रहे। चाहे उसका दम निकलता रहे, लेकिन डाक्टरनी साहेबा की दोपहर की नींद में खलल न पडे ? मेरा बस चले तो

[द्वार पर खट खट]

सुखिया लो व डॉगदरनी साहेबा आ गई शायद।

चन्द्रा अरी, कमबख्त, तो खडी खडी मेरा मुह क्या ताक रही है ? जा, जा, उन्हे जल्दी से अन्दर बुला ला।

सुखिया जी, मालकिन।

[जाती है]

चन्द्रा शील, तू साफ-साफ क्या नहीं कह देती इस डॉक्टरनी से कि इस दवा से तुझे कुछ फायदा न होगा। कितने दिन से तू बीमार है ? ऐसी दवा किस काम की जो

(सुखिया के संग डॉक्टर का प्रवेश)

चन्द्रा (सहसा स्वर बदलकर) आइय, आइय, डॉक्टर।

मिस रिजवी सलाम वालेकुम। कहिए। मरीज का क्या हाल है ?

चन्द्रा देखिए, आज इसका टैम्परेचर फिर 99 4 हो गया। भूख भी नहीं लगती। फिर भी दुखता है, पेट मे रह-रहकर शूल-सा उठता है।

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है, फिक्र की बात नही है। फिक्र नाहीं करता। फिक्र करने से बुखार ज्यादा जोर पकडता। हम अभी नई दवा तजवीज करता।

चन्द्रा डॉक्टर, कब तक पीनी पडेंगी ये दवाये ? कब तक उतरेगा यह बुखार ? कितन दिन तो बीत गये इसी चिन्ता मे !

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है, फिक्र की बात नही है। खुदा से दुआ मांगो। खुदा सबकी सुनता है।

चन्द्रा खुदा मेरी नही सुनता, डॉक्टर ! चिन्ता के मारे मेरे प्राण निकले जा रह हैं। उधर इसके विवाह के दिन पास आते जा रह है, इधर यह दिन दिन दुबली होती जा रही है। इस वष इसे बी०ए० की परीक्षा भी देनी है।

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है सब होगा। वक्त वक्त पर सब काम होगा। खुदा बडा कारसाज है। अल्लाताला से दुआ कीजिय। आपकी बच्ची फौरन से पेश्तर दुरुस्त हो जायगी। मिस शील, तुम दवा लिया था ?

शील जी डाक्टर।

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है, अल्लाताला का फजल है। तुम फल खाया था ?

शील नही डॉक्टर। मुझे भूख नहीं लगती।

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है। फिकर की बात नही है। (चन्द्रा से) डॉक्टर मीराशकर ने आज इनको देखा ?

चन्द्रा आज तो वह नही आय।

मिस रिजवी मिस चटर्जी आया था ?

चन्द्रा जी वे भी नही आई।

मिसरिजवी क्यो नहीं आया ? आपने बुलाया ही नही होगा। उन दोनों को अभी फौरन बुलाना होगा।

चन्द्रा लीजिये, अभी लीजिये। सुखिया, जा झटपट, भागकर जा।

सुखिया अभी जाती हूँ, मालकिन।

[झटपट जाती है]

चन्द्रा डाक्टर, जो कुछ आपने कहा, मैंने सब किया। तीन तीन डाक्टरों को फीस दी। फिर भी इसकी दशा नहीं सुधरती! क्या सोचा था, क्या हो गया! इसका विवाह कर देती तो मुझे ससार के झगड़ा से छुटकारा मिल जाता। आनन्द से सारे देश की तीर्थ यात्रा करती। पर चिन्ता तो चिता की तरह, मुझे तिल तिल कर जला रही है।

मिस रिजवी खुदा बड़ा नेक है, रानी साहबा, बड़ा रहमदिल है। वह सबकी खबर रखता है। उस परवरदिगार पर भरोसा रखिये। आप फिकर मत करिये। आपकी बेटी

चन्द्रा फिकर कैसे न करूं, डाक्टर? अब मेरा मन इस दुनिया से ऊब गया है। मैं इसके झगड़ा से छुटकारा पा जाना चाहती हूं। शीला मेरी अकेली बेटी है। आँचल में छिपाकर, अपनी साँसों से जिलाकर, इसे इतना बड़ा किया था। लेकिन यह रोज बीमार रहने लगी। अपनी साँसों के बुझने से पहले अगर मैं इसका विवाह कर जाती

मिस रिजवी अल्लाह रहम करे! खुदा के वास्ते मरने जीने की बात जबान पर न लाइये रानी साहबा! खुदा आपको और आपकी बच्ची को हजारहा साल की उम्र दे

[बाहर हॉर्न की आवाज]

मिस रिजवी म लीजिये। डॉक्टर आ गई शायद।

सुखिया डागदरनी साहेबा की मोटर तो रास्ते मे ही मिल गई मालकिन।

[सुखिया के सग सग दोनो डॉक्टरो का प्रवेश]

डा० मीराजकर गुड ईवनिंग रानी साहेबा, गुड ईवनिंग डॉक्टर। आई वाज इन दि वे। क्या रोगी की दशा कुछ अधिक चिन्ताजनक है ? गुड ईवनिंग, मिस शील।

मिस चटर्जी नोमश्कार, नोमस्कार, मिश शःल। आपका तोबियत आजु केशा है ?

मिस रिजवी ठीक है। ठीक है। फिकर की बात नेई है। रानी साहेबा बहुत घबरा रही थी, इसीलिए

मिस चटर्जी आज का टैम्परेचर कितना रहा ? (हाथ मे थर्मामीटर लेकर) ओह ! दुई ठो पाइन्ट जासती है ? 99 4 ?

चन्द्रा यही तो समझ मे नही आता, डॉक्टर ! वक्त पर दवा पिला दी थी, फिर भी बुखार क्यो बढ गया ?

शील (कराहकर) मेरे पेट का दद (आह भरते हुए) डॉक्टर, मेरे पट का दद कुछ बढ गया है।

मिस चटर्जी हाँ, शो बोढना तो नेंई चाहिए। इशकी दोवा भी दे दिया गया था।

शील वह दवा सुबह चार बजे की थी। मुझे नीद आ गई थी, इसलिए मैं उसे पी नही सकी।

मिस चटर्जी आछा, आछा, जागाना ठीक नेई था। नो तो ठीक ही रेहा।

डा० मीराजकर लेकिन जागने पर तो मैडिसन लेना था, जी। मैडिसन नैगलक्टेड, इम्प्रूवमैन्ट नगलैक्टेड।

चन्द्रा अच्छा, डॉक्टर, अब कोई नई दवा दे दीजिए जिससे मेरी बटी जल्दी से

मिस चटर्जी तुम फिजूल घोबराता है। घोबराने से रोगी की

तबियत और ज्यादा खराब होता है।

चन्द्रा — मैं कहाँ घबराती हूँ, डॉक्टर? लेकिन बस अब आप इसे जल्दी से अच्छा कर दीजिए।

डॉ० मीराजकर — आप विश्वास रखिए। हैव फेथ आन अस। डॉक्टर चटर्जी कितना विद्वान है। हजारों रोगी इनके हाथों इलाज पा चुके हैं। और मिस रिजवी? ओह! ऐंजी बडी नोन हाऊ टेलेटेन्ट शी इज।

मिस रिजवी — ठीक है, ठीक है। डाक्टर मीराजकर की दवा म लुकमान का असर है, और जबान मे शक्कर का सरूर। आप हमारे ऊपर पक्का इत्मीनान रखिए। गरूर की बात नही आपकी बेटी की जिन्दगी, हमारे हाथों म महफूज है। अल्लाताला उसको बहुत जल्द सेहत बख्शेगा।

[सुखिया का तेजी से प्रवेश]

सुखिया — रानी साहबा रानी साहेबा।

चन्द्रा — (गुस्से से झिडककर) क्या है?

सुखिया — मालकिन सिक्टरी साहेबा आपको याद कर रही है। बोलती है बडा जरूरी काम है।

चन्द्रा — नही, नही, कह दे उनसे। इस समय मैं हरगिज नही मिल सकती। मेरी बटी की तबियत ठीक नही है।

डा० मीराजकर — ना, ना जी। दटस नाट राइट। आप अपना काम कर आइए। हमे भी कुछ म्यूचुअल कसल्टेशन करना है।

शील — जाओ माँ।

चन्द्रा — अच्छा, तो डॉक्टर, मैं जाती हू। सुन ही आऊँ, वे क्या कह रही हैं (जाते जाते लौटकर) देखिए आप लोग खूब होशियारी से कन्सल्टेशन कीजिएगा। कही कुछ कमी न रह जाए।

मिस रिज़वी ठीक है, ठीक है। फिकर नाहीं करना। मुदा के इक बाल स, हम मशविरा करन मे कुछ कसर नही छोड़ेंगे।

डा० मीराजकर आप निश्चित रहिए। हम बड़ी सावधानी से कन्सल्टेशन करेगा।

मिस चटर्जी फारक पाड़ने नाई शारता।

चन्द्रा तो बेटी, मैं जाऊँ। जरा उसकी बात भी सुन आऊँ।

शील जाओ माँ, मेरी तबियत कुछ इतनी बुरी भी नही है।

चन्द्रा (खुश होकर) ऐसी बात, हमेशा बोला कर न बेटी। जब तू ऐसी बात बोलती है, तो मेरा मन खुशी से जगमगाने लगता है। अच्छा तो मैं जाती हूँ।

[चन्द्रा चली जाती है।]

डॉ० मीराजकर अच्छा, तो मिस शील, मैं जरा तुम्हें एक्ज़ामिन कर लूँ?

[स्टेथस्कोप लगा कर शील को देखते है।]

मिस रिज़वी (कुछ सोचते स्वर मे) मेरे ख़याल म तो इस बीमारी का कोई खास सबब जरूर होना चाहिए।

मिस चटर्जी हाम तो काल जाच लिया था। एमा कोई बात नेंई।

डा० मीराजकर ओह, यस! नथिंग सीरियस। (स्टेथस्कोप रखकर शील की नब्ज थामते हुए) मिस शील, आपके पेट मे दर्द होता है?

शील जी हाँ। कभी कभी।

मिस चटर्जी दारद किश खास जागा से निकोलता है?

डॉ० मीराजकर आई मीन टु से, किस खास जगह स शुरू होता है?

शील इधर से उठकर, इधर से घूमकर, उधर को चलकर, यूँ चक्कर खाकर, इधर स ऊपर को उठ जाता है।

[कराहती है।]

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है। फिकर की बात नेईं है। कल तुमने क्या खाया था ?

शील वही जो आपने बताया। फ्रूट जूस और बार्ली वाटर।

मिस चटर्जी अच्छा, मिस शील, य दारद डाआने शाइड, या बार्यां शाइड ?

डा० मीराजकर शी मीन्स लेफ्ट साइड, और राइट साइड।

शील राइट साइड, नो, नो लेफ्ट साइड। नो, नो, राइट

मिस चटर्जी कोई बात नेईं। कोई बात नेईं

डॉ० मीराजकर तो चलिए डाक्टर। हम लोग साथ के कमरे में चल कर डिसाइड कर लें, क्या ट्रीटमेंट होना चाहिए।

मिस चटर्जी, मिस रिजवी हा चलिए।

शील नही डाक्टर। आप लोग यही डिसाइड कीजिए। मैं भी सुनना चाहती हूँ कि मेरे ट्रीटमेंट के विषय मे आपने क्या सोचा ?

डॉ० मीराजकर तुम नरवस तो फील नही करोगी ?

शील नरवस क्या होने लगी ? मैं बच्ची तो हू नही। बी० ए० मे पढती हू। सुनकर डरूँगी क्या ?

डा० मीराजकर आल राइट, डाक्टर। यही डिसाइड करें। कोई ऐसी बात तो है नही। मिस शील इज एन एजूकेटेड मॉडर्न यंग गर्ल।

मिस चटर्जी ओ, कोई बात नेइ। हम इधर ही डिशाइड कोरने शोक्ता।

मिस रिजवी मेरे ख्याल से तो महज दवा से काम नही चलेगा।

डॉ० मीराजकर ओह! आई क्वाइट एग्री विद यू। आई थिंक वी विल हैव टु ऑपरेट।

शील (चौंककर) क्या ? आपरेशन ?

मिस रिज़वी — ठीक है, ठीक है। फिकर नाही करना। खुश क इस बात से, हम मशविरा करने मे कुछ कसर नहीं छोड़ेंगे।

डा० मीराजकर — आप निश्चिन्त रहिए। हम बड़ी सावधानी से कम्प्लेटेशन करेगा।

मिस चटर्जी — फारम पाड़ने नाइ पारता।

चन्द्रा — तो बेटी मैं जाऊँ। ज़रा उसकी बात भी सुन आऊँ।

शील — जाओ माँ, मेरी तबियत कुछ इतनी बुरी भी नहीं है।

चन्द्रा — (खुश होकर) ऐसी बात, हमेशा बोला कर न बेटी। जब तू ऐसी बात बोलती है, तो मेरा मन खुशी से जगमगाने लगता है। अच्छा तो मैं जाती हूँ।

[चन्द्रा चली जाती है।]

डा० मीराजकर — अच्छा तो मिस शील, मैं ज़रा तुम्हें एक्ज़ामिन कर लूँ?

[स्टेथस्कोप लगा कर शील को देखते हैं।]

मिस रिज़वी — (कुछ सोचते से स्वर में) मेरे ख़याल म तो इस बीमारी का कोई ख़ास सबब जरूर होना चाहिए।

मिस चटर्जी — हाम तो काल जाँच लिया था। ऐशा कोई बात नेंई।

डा० मीराजकर — ओह, यस ! नथिंग सीरियस। (स्टेथस्कोप रखकर शील की नब्ज़ थामते हुए) मिस शील, आपके पेट मे दर्द होता है?

शील — जी हाँ। कभी कभी।

मिस चटर्जी — दारद किश खाश जागा से निकोलता है?

डा० मीराजकर — आई मीन टु से, किस ख़ास जगह से शुरू होता है?

शील — इधर से उठकर इधर से घूमकर, उधर को चलकर, यूँ चक्कर खाकर, इधर से ऊपर को उठ जाता है।

[कराहती है।]

मिस रिज़वी ठीक है, ठीक है। फिकर की बात नेइ है। कल तुमने क्या खाया था ?

शील वही जो आपने बताया। फ्रूट जूस और बार्ली वाटर।

मिस चटर्जी अच्छा, मिस शील, य दारद डाक्षान शाइड, या बायाँ शाइड ?

डॉ० मीराजकर शी मीन्स लेफ्ट साइड, और राइट साइड।

शील राइट साइड, नो, नो लैफ्ट साइड। नो, नो, राइट

मिस चटर्जी कोई बात नेई। कोई बात नेई

डॉ० मीराजकर तो चलिए डाक्टर। हम लोग साथ के कमरे म चल कर डिसाइड कर ले, क्या ट्रीटमेंट होना चाहिए।

मिस चटर्जी }
मिस रिज़वी } हा चलिए।

शील नहीं डॉक्टर। आप लोग यहीं डिसाइड कीजिए। मैं भी सुनना चाहती हूँ कि मेरे ट्रीटमेंट के विषय मे आपने क्या सोचा ?

डॉ० मीराजकर तुम नरवस तो फील नहीं करोगी ?

शील नरवस क्या होने लगी ? मैं बच्ची तो हू नही। बी० ए० मे पढती हू। सुनकर डरूँगी क्या ?

डा० मीराजकर ऑल राइट, डॉक्टर। यही डिसाइड करें। कोई ऐसी बात तो है नही। मिस शील इज़ एन एजूकेटेड मॉडन यग गल।

मिस चटर्जी ओ, कोई बात नेइ। हम इधर ही डिशाइड कोरने शोक्ता।

मिस रिज़वी मेरे ख्याल से तो महज़ दवा से काम नही चलेगा।

डा० मीराजकर ओह ! आई क्वाइट एग्री विद यू। आई थिंक वी विल हैव टु ऑपरेट।

शील (चौंककर) क्या ? आपरेशन ?

मिस रिजवी ठीक है। ठीक है। मेरा भी यही ख्याल है। ऑपरेशन किए बिना ठीक बीमारी का पता न चलेगा। क्यों डॉक्टर ?

मिसचटर्जी जोरूर। इशरो शोरल दोवाई दूसरा नेई है। आपरेशन कारने होगा।

शील (घबराकर) ओह! आपरेशन ?

मिस चटर्जी हाँ। आपरेशन। डारने की कोई बात नही मिशबाबा। आपको बिलकूल कोई तक्लीफ नेई होगा।

शील क्या आपरेशन के बिना ठीक नही हो सकता ?

मिस चटर्जी जबे ऐशो बीमारी होता तो ऑपरेशन जोरूर कोराना होता, बाबा।

शील नही। मैं आपरेशन नही कराऊँगी। आप लोग मुझे छोड दीजिए। मुझपर दया कीजिए। मैं खुशी-खुशी मर जाऊंगी, लेकिन ऑपरेशन नही कराऊँगी। नहीं, हरगिज नही।

डा० मीराजकर आप इतना क्या डरती है मिस शील ? यू आर एन एजुकेटड यग गल। इतना नरवस होना आपको शोभा नही देता।

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है। डा० मीराजकर ठीक बोलता शील बाबा।

डा० मीराजकर आपरेशन कितनी अच्छी चीज है। जो बीमारी हजार दवाओ स अच्छी न हो वह आपरेशन से झट ठीक हो सकती है। बस इन्स्ट्रु मैं ट से पूरे बोडी को ओपिन कर, सब चीज आख से देखकर, खटाखट ठीक कर दिया जाता।

शील उफ! अब मैं क्या करूँ भगवान!

मिस चटर्जी आपरेशन से मुर्दा शोरीर मे कोई जान डाला जाता।

तुमको डरने की कोई बात नेइ है।

डा० मीराजकर यू शुड अन्डरस्टैंड आल दिस, मिस शील।

शील ओह! अब मैं क्या करूँ?

डॉ० मीराजकर आपको कुछ नही करना होगा। सब-कुछ तो हम लोग खुद ही कर लेंगे। आई विल माईसैल्फ कन्विन्स योर मदर।

शील लेकिन मैं इस तरह अपनी जान खतरे मे नही डालना चाहती।

मिस रिज़वी खतरे मे कैसे? फिर हम लोग किसलिए है?

डॉ० मीराजकर अगर रोगी यह समझने लगे, तब तो बस, फिर हम लोगो का प्रोफेशन तो बस हो गया।

शील तो क्या अपना प्रोफेशन चलाने के लिए आप लोग ऑपरेशन करते है?

मिस चटर्जी कैसा बात बोलता बाबा! हाम तो मारीज को आराम देना वास्ते आपरेशन कारते।

शील मुझे ऐसा आराम नही चाहिए।

डॉ० मीराजकर ठीक है। तो फिर बीमार रहिए। पढना लिखना सब चौपट कीजिए। अपनी मदर को तरीड रखिए। पैसा फूकिए और डाक्टरो का घर भरिए।

शील मैं इस सबके लिए तैयार हूँ। बी० ए० की परीक्षा मे अभी बहुत दिन बाकी है। मेरी मा को हमेशा कोई न कोई चिन्ता घेरे ही रहती है। मेरी इस बीमारी मे घिरकर वे कम से कम घर मे तो रहती है। रही पैसे की बात। सो उसकी मुझे फिक्र नही। उस पैसे से अगर आप लोगो का कुछ भला हो सके, तो मुझे खुशी ही होगी।

मिस चटर्जी शौत्य वचन। शौत्य वचन। तो फिर आप ऑपरेशन

जे आप ईतना काचा दिल राखता हाय।

शील — तो फिर मुझे ऑपरेशन कराना ही होगा ?

मिस रिजवी — (खुश होकर) ठीक है, ठीक है। खुदा का फजल है। आपको अक्ल ता आई।

शील — अच्छा तो फिर पहले मैं आप लोगा से एक बात

डॉ० मीराजकर — स्पीक, स्पीक।

मिस रिजवी — ठीक है, ठीक है। उस परवरदिगार का बहुत बहुत शुक्र है। आप फरमाइए न।

मिस चटर्जी — जोरूर बोलो, बाबा, जोरूर।

शील — देखिए, असल मे बात यह है कि

मिस चटर्जी — बोलिए मिश शील। मानने वाला होगा, तो हाम आपकी बात जोरूर मानेगा।

शील — बोलती हूँ अभी बोलती हू। माँ किधर है ?

मिस चटर्जी — वा ओपने शिकटरी से बातें कोरता।

शील — अच्छा, तो ये बीच के दरवाजे ब द कर दीजिए।

[मिस चटर्जी उठकर दरवाजा ब द कर अपनी जगह लौटती है।]

मिस रिजवी — लीजिए हुजूर। अब तो दरवाजे भी ब द हो गये। अब तो कुछ बोलिए।

शील — वाह ! यह पर्दा तो आपने खुला ही छोड दिया। उसे भी खीच दीजिए।

मिस रिजवी — इतनी नफासत ? मालूम होता है, आप तो ड्रामा कर रही हैं।

[डा० मीराजकर उठकर पदा खीच देते हैं]

डा० मीराजकर — नाऊ यू मस्ट स्पीक आउट, मिस शील। डोंट वेस्ट अवर टाइम।

शील — (उठकर बैठते हुए) असल मे बात यह है कि मैं...

बिल्कुल बीमार नही हूँ।

मिस चटर्जी — की बोलता, बाबा ?

डा० मीराजकर — व्हाट डू यू मीन टु से !

मिस रिजवी — ऐं—यह कैसी बात !

शील — सच, डॉक्टर, मैं बिल्कुल बीमार नही हूँ। थोडा सा ठेम्परेचर तो यू ही बिस्तर मे पडे पडे हो गया। मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

मिस रिजवी — तब आपको यह ड्रामा खेलने की क्या जरूरत थी ? मुफ्त मे सबको फिक्र मे डाल रखा है।

डा० मीराजकर — ओह ! यू फूल ! गुड फार नथिंग ! सबको बेकार परेशान किया। मिस शील, आपके पास पैसा है, इसका यह मतलब तो नही कि आप हम लोगो का टाइम वेस्ट करें ?

मिस चटर्जी — शौत्य वचन, शौत्य वचन। हाम तो बाबा, ऐशा कोभी शुना नेंइ।

शील — डाक्टर, सच मैं बहुत परेशान हूँ। मेरा तन रोगी नही, मेरा मन रोगी है। मजबूर होकर मुझे बीमारी का बहाना करना पडा। लेकिन आपरेशन की बात सुन कर मैं अपने को और छिपा न सकी। मुझे सब-कुछ आपसे कहना ही पडा।

डा० मीराजकर — टल अस फ्रैंकली, मिस शील। व्हाट डू यू वान्ट टु से ? आखिर इस सब बकवास मे आपका मतलब क्या है ?

मिस चटर्जी — शौत्य वचन, शौत्य वचन। ठीक बात बोलो मिश शील। जे गोलू मोलू बात हामारी शोमोझ म नई आता।

शील — लेकिन यह बात मैं आप लोगों स कहना नहीं चाहती।

मिस रिजवी — लेकिन आप कुछ कहना क्यो नहीं चाहतीं, इसका भी

तो कुछ सुराग दीजिये। आप बीमार नही है, लेकिन बीमार भी हैं। यह कैसा माजरा है? क्या माहौल है? कुछ तो फरमाइये।

मिस चटर्जी बोलो, शील बाबा, ठीक बात बोलो। बोलने से मौन का पोरेशानी हालका होता।

शील बता देने से फायदा भी क्या होगा? आप लोग मेरी कुछ भी तो मदद नही कर सकेंगी।

डा० मीराजकर क्यो नही करेंगे। हम लोग हर तरह से पेशेन्ट की मदद करने को तैयार रहते हैं। आप बात भी तो बोलिये। बी फ्रैंक।

शील तो क्या आप लोग वाकई मेरी मदद करेंगे?

मिस चटर्जी जोरूर करेंगे, बाबा जोरूर।

शील अच्छा तो सुनिये नही, नही। रहने दीजिये। आप लोग मुझे बीमार ही रहने दीजिये।

मिस चटर्जी कोई बात नेंई। जोब रानी शाहेबा हाम शे ईलाज के बारे मे पूछेगा तो हाम शाफ बोल देगा—जे शील बाबा कोनई बीमार नेइ।

शील देखिये डाक्टर, माँ से ऐसा कहकर, आप मेरी बीमारी और बढा देंगी। इस तरह आप मेरा भी नुक्सान करेंगी ही, अपना भी बहुत नुक्सान करेंगी।

मिस रिजवी वह कैसे?

शील आपके ऐसा बोलते ही, आपकी फीस की इतनी लम्बी रकम फौरन बन्द हो जायेगी।

मिस चटर्जी शोत्य वचन, शोत्य वचन। लेकिन जब आप बीमार नेई, तब हाम फोकट मे फीश कैशे लेगा?

शील फोकट क्यो? आप अपनी दवा देती रहिये। सिर्फ ऑपरेशन की बात मत बोलिये। आपको अपनी दवा

की पूरी कीमत मिलेगी, और मुझे देखने की फीस भी।

मिस रिजवी — ठीक है, ठीक है। लेकिन इस तरह रानी साहबा की दौलत तो बेकार जाया होगी।

शील — सो होने दीजिए। दौलत मेरी है। मैं अकेली उसकी वारिस हूँ। मेरे सिवाय मा का और है ही कौन? यह सारी दौलत मेरे खर्च करने के लिए तो है।

मिस चटर्जी — कैसी बात बोलता बाबा! पैसे का आपको बिलकुल दारद नइ लागता।

शील — मन के दर्द के आगे, पैसे का दर्द कुछ कीमत नहीं रखता डॉक्टर। मन का दर्द ठीक करने के लिए, पैसे का दर्द छोड़ना ही पड़ता है।

डा० मीराशंकर — मुझे आपसे पूरी सिम्पैथी है, मिस शील। लेकिन जब आप बीमार नहीं हैं, तब आपकी मदद से फीस लेना मेरी शराफत एलाऊ नहीं करता।

शील — तब तो फिर मुझे सारी बात साफ साफ बोलनी ही पड़ेगी।

मिस चटर्जी — शौत्य वचन, शौत्य वचन।

मिस रिजवी — ठीक है ठीक है। इतनी देर बाद, अब आपका दिमाग कुछ दुरुस्त हुआ।

शील — डाक्टर, आपने कभी किसी से प्रेम किया है?

मिस रिजवी — अल्लाह रहम करे! मिस शील अभी आप कमसिन हैं। नादाँ हैं। ऐसे खयालात को दिल में जगह न दीजिये। इसका इन्तजाम हरगिज़ हरगिज़ ठीक न होगा।

शील — थैंक्स डाक्टर लेकिन अगर यह सलाह आप कुछ दिन पहले दे देतीं, तो मैं बीमार न पड़ती। और आपको

भी मेरे इलाज के लिये इतनी लम्बी फीस न मिलती।

मिस रिजवी — इस बीमारी का सिर्फ एक ही इलाज है, मिस शील। आपको अपने दिल पर काबू रखना होगा। तभी आपकी सेहत ठीक हो सकेगी।

मिस चटर्जी — शौत्य वचन शौत्य वचन।

डा० मीराजकर — यस। राइट। मिस शील, हमारी डाक्टरी में, आपकी इस बीमारी का कोई इलाज नहीं। यू विल हैव टु चेन योरसल्फ। आपकी यह बीमारी हम लोगों से नहीं सँभल सकती।

शील — (एकदम बिस्तरसे नीचे उतर, उनके ठीक सामने खड़े होकर) यही है आप लोगों की सिम्पैथी? इसी तरह आप लोग मेरी मदद करना चाहते थे? अभी यही वादा किया था आप लोगों ने?

मिस चटर्जी — हाम की कोरेगा, बाबा। ऐशा डाक्टरी हाम नहीं किया।

शील — अभी तक नहीं किया, तो अब शुरू कर दीजिये।

डा० मीराजकर — डोंट बी एबसर्ड! टॉक सेंस। यू आर नोट ए चाइल्ड एनी मोर, मिस शील।

शील — लेकिन जब आपने आधी बात सुन ही ली है तो आपको पूरी बात सुननी ही पड़ेगी, और मेरी मदद भी करनी पड़ेगी।

डा० मीराजकर — आल राइट। गो ऑन।

शील — इस मर्ज का इलाज मैं जानती हूँ। इस बीमारी का सिर्फ एक ही इलाज है।

डा० मीराजकर — ऐसा मत कहिये। आप बीमार नहीं हैं।

शील — बीमार हो तो हूँ (कमरे में इधर से उधर टहलते हुए) वह दूसरी बात है कि मेरी यह बीमारी मेरे शरीर की

नही मेरे मन की है।

मिस रिजवी — ठीक है ठीक है। तब सही इलाज के लिये आप किसी पहुँचे हुए फकीर के कदमा मे जाइये। सिफ वहीं आपके टूटे दिल को राहत मिल सकेगी।

नील — नही। किसी फकीर के कदमा म नही, मेरा इलाज एक कलाकर के हाथो मे है।

मिस चटर्जी — कलाकार ? आर्टिस्ट ? वो जो तोसवीर बोनाता।

नील — जी हाँ। आज उसे कौन नहीं जानता ! सभी की ज़बान पर उसका नाम है। पिछले महीने जो कला प्रदशनी हुई थी, उसम उसके चित्र को प्रथम पुरस्कार मिला था।

मिस चटर्जी — ओ ! तुम सुधाकर की बात बोलता ?

नील — हाँ, वही। इस दुनिया मे मेरा इलाज सिफ वही कर सकता है।

मिस रिजवी — या खुदा ! मालूम होता है, आप उसे चाहने लगी ह।

शील — आपका अनुमान गलत नहीं।

डॉ० मीराजकर — इस चाह का रीज़न ?

नील — रीज़न ? सबब ? एक आदमी क्या हँसता है, क्यो रोता है उसे भूख क्या लगती है वह पानी क्यो पीता है जाडे म उसे गरम कपडो की जरूरत क्यो होती है, गर्मी मे उसका मन पखे की ठण्डी हवा पाने के लिये क्यो तडफडाता है ?

डा० मीराजकर — यह तो नेचर का नैसेसिटी है।

शील — यह भी नेचर की नसेसिटी है, डॉक्टर, रोटी के बिना आदमी जिन्दा नहीं रह सकता। कैलसियम और विटा-मिन की कमी पर वह बीमार पड जाता है। सुधाकर का अभाव ही, मेरे इस रोग का कारण है। यह पूरा

हुए विना, मेरी यह बीमारी दूर न हो सकेगी।

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है, लेकिन अगर आपकी चाहत, इस इन्तहा तक बढ चुकी थी, ता आप यू ही उससे शादी कर सकती थी। मुफ्त म यह ड्रामा खेलने की क्या जरूरत थी ?

शील सुनिये डाक्टर, मैं सुधारक को बचपन से जानती हूँ।

मिस रिजवी तब तो और भी आसानी थी। आपको इस बीमारी का बहाना करने की क्या जरूरत थी ?

शील बहुत बडी जरूरत थी डाक्टर। सुनिये। आज से दस साल पहले, जब मेरे पिताजी जीवित थे, उन्होंने मेरी शादी की बातचीत, अपने मित्र के लडके से पक्की कर दी थी। बचपन से ही, एक-दूसरे से लडते झगडते, हम जीवन की इस मजिल पर पहुँचे। मेरे बचपन का वही साथी, आज कलाकार सुधाकर के नाम से पुकारा जाता है। लेकिन मा नही चाहती कि मेरी शादी किसी कलाकार से हो।

मिस चटर्जी केयों ? कोलाकार भी तो आदमी होता। जानवर नेइं। आपकी मा को आपके पिताजी की बात राखना चाहिय।

शील काश, पिताजी जीवित होते ! डॉक्टर माँ कहती है — कलाकार पागल होता है। लम्बे-लम्बे बाल बढाकर, घर गहस्थी से दूर भागता है। दिन रात जमीं-आस्मा, चाँद सितारो की बातें करता है।

मिस चटर्जी य बात ता ठीक हाय। लेकिन जोब आप बोचपने म ही उसको अपना पति मान चुका है तो आपका शादी, उसने होना ही चाहिये।

शील हाँ, मैं उसे अपने दिल से नहीं निकाल सकती। वह मेरे

रोम रोम मे बस चुका है।

डा० मीराजकर लेकिन आपकी माँ क्या कहती हैं, मिस शील ?

शील वे चाहती हैं कि मेरी शादी उनकी सहेली के बेटे से हो। इसीलिए मैंने यह बीमारी का बहाना किया जिससे न मैं बीमारी से उठूं और न मेरी माँ जान बूझकर, मुझे शादी की इस जलती भट्ठी में झाक दें।

मिस चटर्जी शौत्य वचन, शौत्य वचन। तुम ठिक किया शील बाबा।

शील मा को ब्लड प्रेशर है। मैं नहीं चाहती कि उनकी बात न मानकर, मैं उनके सुन्दर सपने को चूर-चूर कर दूं। जरा सोचिये, डाक्टर। मैं अगर मना कर दू तो उनके दिल को कितना गहरा सदमा पहुँचेगा। हो सकता है, इस सदमे से उनका हार्ट फेल ही न हो जाये। इतना बड़ा खतरा मैं कैसे उठा लू डॉक्टर ?

मिस चटर्जी शौत्य वचन। शौत्य वचन। ऐशा केशेज बहोत होना। शोदमा लागने शे, दिल की धोडकन एकदाम रुक जाता।

शील इसीलिये मैंने यही ठीक समझा कि मैं कुछ दिन के लिये बीमार पड जाऊँ। मा की सहेली, हमेशा बीमार रहने वाली लडकी से, अपने बेटे की शादी करना हरगिज मजूर न करेगी। उस लडके की शादी हो जाने पर धीरे धीरे जब मा के दिल की हालत सँभल जायेगी, तब मैं

डा० मीराजकर रियली यू आर वन्डरफल, मिस शील ! यू आर डूइंग ए ग्रेट सैक्रिफाइस फौर यौर पुअर मदर सक। रियली वन्डरफुल !

मिस चटर्जी ओदभुत ! ओद्भुत !

शील — तभी तो मैं कहती हूँ कि आप लोग मेरा इलाज बन्द मत करिये।

डॉ० मीराशंकर — आपने कैसी प्रावलम खड़ी कर दी, मिस शील! मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता कि मैं क्या कहूँ।

मिस चटर्जी — हाम तो बोश एक बात जानता। जाब रानी शाहेब हाम शे पूछेगा, तो हाम शाफ बोल देगा—ज शील बाबा कोतई बीमार नइ।

शील — मेरी इतनी लम्बी कहानी सुनकर भी आप लोगों ने सिर्फ इतना ही कहा? तभी तो मैं कहती हूँ—डाक्टर लोगों के पास सिर्फ दिमाग होता है, दिल नाम की कोई चीज नहीं होती।

डॉ० मीराशंकर — सचमुच मिस चटर्जी मिस शील की बात मेरी समझ में आ रही है।

मिस चटर्जी — शौत्य वचन, शौत्य वचन। शील बाबा के कोथन में शचाई है।

मिस रिजवी — आप भी डाक्टर मीराशंकर की तरह बोलने लगी, मिस चटर्जी!

शील — सुनिये, मिस रिजवी—मां से सच बात बोलकर आप मेरा तो नुकसान करेंगी ही, लेकिन उससे आपको भी बहुत बड़ा नुकसान होगा।

मिस चटर्जी — ओ, आप फिर शे फीश की बात बोलता। लेकिन जब आप बीमार नेईं, ताब हाम फोक्ट में फीश क्यों लेगा?

शील — फोक्ट में क्यों? दवा तो आप देंगी ही। और मुझे देखने आने में आपकी मोटर का पैट्रोल, और आपका वक्त दोनों ही खर्च होंगे।

मिस चटर्जी — नेइ, नेइ, बाबा, ऐशा तो मुझशे नाही होना शाकेगा।

डॉ० मीराजकर — हम लोग इस तरह आपकी मदर की वैल्थ में फिजूल आपरेशन जारी नहीं रख सकते, मिस शील।

शील — सोच लीजिये। आप भी सोच लीजिये डाक्टर चटर्जी। एस मौके बार बार नहीं आते।

मिस चटर्जी — शो तो ठीक हाय। तो फिर इश पर भी कौंसलटशन कर लें, डॉक्टर ?

डा० मीराजकर — मैं तो तैयार हूँ। अगर इस तरह मिस शील का वास्तव में भला होता है, तो मुझे कोई ऑबजैक्शन नहीं। हम डाक्टर ठहरे। हम केवल बाडी का ही नहीं, माइण्ड का ट्रीटमेंट भी तो करना है।

मिस चटर्जी — डॉक्टर रिजवी, आप कुछ नेई बोला ?

मिस रिजवी — मुझे तो यह सब फालतू बात बिल्कुल मजूर नहीं। मैं तो आप लोगों को यही मशविरा दूगी कि

[चन्द्रा का प्रवेश। शील हड़बड़ाकर शैया में घुस जाती है।]

चन्द्रा : शील, मैं आ गई। देख, मैं आ गई, बेटा। मैं कितनी जल्दी में सब काम खतम कर तेरे पास लौट आई। कहिये, डाक्टर, आप लोगों ने कन्सल्टेशन कर लिया ?

मिस चटर्जी — (हँसकर) हाँ हाँ, बहोत बाढिया कसल्टेशन।

चन्द्रा — कब तक ठीक हो जायगी, मेरी बच्ची ?

मिस चटर्जी — फिकर की कोई बात नेई। शील बाबा शीघर आछा होगा। थोरा दिन लागेगा। कोई बात नेई।

चन्द्रा — आह, डाक्टर ! आज मुझे सच्ची शान्ति मिली। आप लोगों ने सचमुच मुझे बचा लिया, नहीं तो शील की चिन्ता मुझे खाए डाल रही थी। शील, मेरी बेटी, सुना तूने ? अब तो झटपट अच्छी हो जायेगी।

मिस चटर्जी — शौत्य वचन, शौत्य वचन।

चन्द्रा (खुश होकर) अब तू झटपट अच्छी हो जायेगी। मैं धूमधाम से तेरा विवाह करूँगी। मेरे द्वार पर शहनाइयाँ बजेंगी। मेरे घर का आँगन फुलझड़ियों से भर जायगा। ऊँचे घोड़े पर सवार होकर, सिर पर हीरे की कलगी लगाकर साँवला सलोना दूल्हा मेरे द्वार पर

शील (कराहकर) माँ

चन्द्रा अरे! यह क्या? क्या हो गया तुझे? शील, मेरी बच्ची, आँखें खोल। डाक्टर, डाक्टर देखिये मेरी शील को। रह रहकर इसे यह क्या हो जाता है! यह कैसी सफेद-सी पड़ जाती है! डाक्टर

मिस चटर्जी यह शाक कुछ नहीं। शील बाबा, आँखें खोलो, देखो तुम्हारा माँ घोबराता। शील बाबा

[शील धीरे धीरे आँख खोल देती है।]

चन्द्रा शील, मेरी बच्ची, ओह! तूने आँखें खोल दीं! डाक्टर कितनी अच्छी हो तुम! हाँ डॉक्टर, आप लोगों ने खूब मेहनत से कन्सल्टेशन किया है, न? कहीं कुछ कसर तो नहीं रह गई। डिसकशन तो ठीक से हुआ, न? आप सबकी राय तो एक ही है न?

मिस रिजवी ठीक है, ठीक है। फिकर की बात नहीं है। लेकिन एक बात मैं जरूर कहे बिना नहीं मानूँगी। वह यह कि

मिस चटर्जी आ, वो कोई ऐसा खास बात नइ।

चन्द्रा (घबराकर) बात क्या है, डॉक्टर?

रिजवी दरअसल बात यह है कि

डॉ० मीराजफर ओ, नो, नो। वो कोई ऐसी खास बात नहीं। हम लोग कन्सल्टेशन कर ही रहे थे कि आप बीच में ही आ गई। बट दैट इज नौट मैटर। नौट एट आल।

मिस चटर्जी — शौत्य वचन गौत्य वचन। ऐसा कोई खास बात नइ है। इशा बीमारी म घोबराना नइ चाहिये। पशेन्ट के मोन म शान्ती राहना चाहिए।

चन्द्रा — मैं भी तो यही चाहती हूँ, डाक्टर, हमेशा मैं अपनी शील को समझाती रहती हूँ कि वह शान्त रहे। प्रसन्न रहे। सौ रोगों की एक दवा मन की हँसी है। पर वह मेरी सुनती तब ना। न जाने क्या इतनी उदास रहती है। शील, तुमने सुनी डाक्टर की बात? अब तुम हरगिज कभी उदास मत होना।

डा० मीराशंकर — यह उदासी सिर्फ एक तरह से दूर हो सकती है।

चन्द्रा — कैसे? किस तरह? जल्दी बोलिए, डाक्टर। अपनी बेटी की आँखों मे खुशी की तस्वीर देखने के लिए मैं दुनिया की दौलत निछावर कर सकती हूँ।

डा० मीराशंकर — सारी दुनिया की दौलत लुटाकर भी आप इनके लिए खुशी नहीं खरीद सकेंगी। नो नौट एट आल। हां, अगर आप इनकी शादी कर दें, तो आपके मन की मुराद फौरन पूरी हो जाएगी।

मिस चटर्जी — शौत्य वचन गौत्य वचन। तुम मेरे मोन की बात बोला हाय, डाक्टर मेरे मन की बात बोला हाय।

मिस रिजवी — ठीक है ठीक है। इस बीमारी का सिर्फ एक यही इलाज है। जिस लड़के को आपने पसंद किया है, उसके साथ फौरन से पेश्तर इनका निकाह कर दीजिए।

चन्द्रा — आह! तुमने मेरे मन की बात कह दी, डाक्टर? मैं तो खुद ही चाहती हूँ कि झटपट अपनी बेटी की भावरें डाल दूँ। उसके लिए बड़ा खूबसूरत लड़का खोज रखा है मैंने। इतना सुन्दर, इतना सुशील

डा० मीराशंकर — केवल सुन्दर और सुशील ही है या कुछ काम धाम

भी जानता है ? किसी बेकार घूमने वाले छोकर से

चन्द्रा नहीं, डॉक्टर, बैरिस्टर, ये होने लगा ? वह तो बडा भारी वकील है। शहर के नामी सरकारी वकील का बेटा।

मिस चटर्जी नेंई, नई । वकील होने से नई चाल शाकेगा। आगर आपनी बेटी का हाथ, किशी वोकील के हाथ म थामा देगा, तो वह शदा दु ख पाएगा, शदा वीमार रहेगा।

चन्द्रा कैसी बात बोलती है, डाक्टर ! वह लडका तो बडा ही बुद्धिमान, बडा ही सुशील, बडा भारी काम काजी

डा० मीराजकर यही तो असल बात है, रानी साहेबा। दट इज द रियल पाइन्ट। वकील लोगों को सिफ वहम करना आता ह, व बात बात पर सिफ बाल का खाल निकालने बठ जाते हैं। आपकी बेटी बडी ही सेंटी मटल है। वह यह हरगिज़ बर्दाश्त न कर सकेगी। है न, डाक्टर रिज़वी ?

मिस रिजवी मैं मैं यह सब कुछ नहीं जानती। मेरे ख्याल में तो

मिस चटर्जी शौत्य वचन, शौत्य वचन। रिज़वी, तुम बिलकुल ठीक बात बोलता। तुम्हारा खोयाल बिलकूल ठीक हाय। किशी वोकील शे शादी कर मिश शील कोदापि शुखी नेंई राहने शकेगा।

मिस रिजवी आप लोग बातें कीजिए। मुझे देर हो रही है। मैं जाती हू।

चन्द्रा अरे, अरे आप कहाँ जा रही ह ? जरा ठहरिए, डाक्टर।

मिस रिजवी नहीं। मुझे देर हो रही है। सलाम वालेकुम।

[मिस रिज़वी उठकर चल देती है]

डा० मीराजकर — बासेयुम अरपाम। गहरी-नींद सोइएगा, मिस रिजवी!

मिस चटर्जी — दो य वया (भारा) स्वीट ड्रीम्स।

चन्द्रा — तो फिर डॉक्टर, आपके विचार मे, मेरी शील के लिए कैसा लड़का ठीक रहेगा? कोई डॉक्टर हो तो कैसा रहे?

मिस चटर्जी — आ, ना नई। डॉक्टर होने से तो बिलकुल नेई चाल जायेगा। वो इफैलिटैन, टी० बी०, टाइफाइड, कैन्सर की बातें करेगा, तो तुम्हारा बेटी भोय से बेहाल हो जाएगा।

चन्द्रा — आपका कहना ठीक है, डॉक्टर। तब मैं किसी इंजीनियर की तलाश करूँ?

डा० मीराजकर — व्हाट नॉनसेंस! रानी साहबा, आप इतनी समझदार होकर भी कभी-कभी कैसी बातें करती हैं! किसी इंजीनियर के संग बांध दीजियगा, अपनी बेटी को। जिससे वह उसे अपने पीछे-पीछे, पहाड़ों, जंगलों और खाइयों मे घसीटता घूमे? मेरी बात मानिये। इस तरह, यू विल सिम्पली मडर हर।

चन्द्रा — (घबराकर) नहीं, नहीं, मैं तो सिर्फ आपकी राय लेना चाहती थी। तब फिर उसके लिये कोई व्यापारी ही ठीक रहेगा।

मिस चटर्जी — ओ, नो। शेयर बाजार के बुल्स, और बियस की बातें सुन सुन आपका बेटी का दिमाग पागल हो जायेगा। नेइ, नेइ ब्योपारी ठीक नेइ राहने शाकेगा।

चन्द्रा — उफ! यह नहीं, वह नहीं अजब मुसीबत है। कैसी विचित्र है यह लड़की! क्या संसार मे इसके योग्य कोई भी दूल्हा नहीं?

डॉ० मीराजकर — है क्यों नहीं?

चन्द्रा — कौन है वह ? बोलो डॉक्टर। जल्दी बताओ।

डा० मीराजकर — कोई भी आर्टिस्ट, कलाकार, जिसकी भावुकता म आपकी बेटी अपना दुख भूल जाय।

मिस चटर्जी — शौत्य वचन, शौत्य वचन। डाक्टर मीराजकर ठीक बोलता। आपकी बेटी को जो बीमारी हाय, उशका बश जे ही एक ईलाज हाय।

डा० मीराजकर — राइट, राइट क्वाइट राइट। आपकी बेटी हमेशा गमगीन रहती है। इट इज मोस्ट एसेन्शल टु डाइवट हर अटेन्शन। और उसका सिफ एक ही इलाज है। मेरी हर टु सम आर्टिस्ट। उसकी रगीन भावनाओ म डूब, वह अपने इन गमगीन सपना का भूल जायगी।

चन्द्रा — उफ ! कैसी मुसीबत है ? अब मैं उसके लिए कलाकार खोजने कहाँ जाऊँ ?

शील — तुम्हे कही नही जाना होगा, माँ। मै अभी शादी नही करूँगी।

डॉ० मीराजकर — पेशन्ट को डॉक्टर का आदेश मानना चाहिये, मिस शील। यू मस्ट ओबे अस।

मिस चटर्जी — शौत्य वचन। शौत्य वचन।

शील — लेकिन जरा आप ही सोचिये, डाक्टर। आपने तो एक इम्पोसिबिल-सी बात कह दी। भला यह कब सम्भव है कि माँ, मेरी शादी किसी निकम्मे कलाकार से

चन्द्रा — (झटपट) इम्पोसिबिल कुछ भी नही है, शील। तेरी खुशी के लिये, मैं डॉक्टर की सब बातें मान सकती हूँ, बेटा।

डा० मीराजकर — आपकी मा को कष्ट नही उठाना होगा, मिस शील। नो, नो, नोट एट आल। मैं एक कलाकार को जानती हू। वह मेरा परिचित मित्र है। बेचारे के माँ, बाप,

भाई वहन काई नहीं। पुअर बोय। ही विल रैस्पक्ट योर मदर नाइक हिज़ ओन।

मिस चटर्जो — आप गुधाकर की बात बोलता, डाक्टर ?

डा० मीराजकर — यस, यस, द सेम फैलो। बडा ही अच्छा लडका है। बडा ही शीलवान। रियली, आई स

मिस चटर्जो — शौत्य वचन। वह लडका आपके लिए नहीं, नहीं, आपकी बटी के लिए, बिलकुल ठीक राहन शाकेगा, रानी शाहेब।

शील — नहीं, माँ। तुम इनकी बात न सुनो। मैं अभी शादी नहीं करूँगी।

चन्द्रा — तू चुप रह, डाक्टर, मैं उसके घर नहीं जाऊँगी। किसी वहान आप उसे यहाँ बुलाकर ला सकेंगी ?

डा० मोराजकर — श्योर श्यार। जब उसे पता चलेगा कि आप उसकी पेंटिंग्स की एडमायरर है ता वह ऐसा खिंचा चला आएगा, ऐसा खिचा चला आएगा, जसे शहद पर मक्खी।

शील — लेकिन, डाक्टर मैं शादी नहीं करूँगी, नहीं करूँगी,।

चन्द्रा — क्या नहीं करेगी, बेटी ? आखिर किसी न किसी से तुझे शादी करनी ही है। तब किसी भोले भाल कलाकार से ही सही।

शील — लेकिन मा

डॉ० मोराजकर — यू मस्ट ओबे अस मिस शील।

मिस चटर्जो — शौत्य वचन शौत्य वचन।

शील — अच्छा जब आप लाग नहीं मानते तो

चन्द्रा — आहा! अब मेरी बेटो भट से ठीक हो जायेगी। मैं धूमधाम से उसका विवाह करूँगी। मेरे द्वार पर शहनाइयाँ बजेंगी। यह आँगन फुलझडियों से भर

जायेगा । ऊँचे घोडे पर बैठकर, हीरे की कलगी लगा कर, सुन्दर सा दूल्हा मेरे द्वार पर

शील माँ, तुम तो बस (शर्मा जाती है।)

[सब हँसते है, पर्दा गिरता है।]

आँचल का छोर

पात्र

राधा	एक अष्टवर्षीय बालिका।
किशोर	राधा का पिता।
वीना	राधा की माँ।
रमेश	एक विद्यार्थी।
पार्वती	राधा के घर की नौकरानी।
नन्हा	राधा का नन्हा मुन्ना दस महीने की आयु का भाई।

समय

दोपहर के कुछ बाद।

पात्र-परिचय

किशोर

इस नगर के मध्यम वर्ग का युवक है। आयु उसकी लगभग तीस वर्ष है। किसी दफ्तर में काम करता है। पत्नी से उसे स्नेह है। अपने बच्चों से ममता है। पर वह उनमें लिप्त नहीं रहता। संगीत का उसे कुछ विशेष शौक है। परन्तु उसकी पत्नी को नहीं। अतः प्रायः दोनों में इस बात पर मीठी नोक झोंक हो जाया करती है।

वीना

किशोर की पत्नी। सभ्य सुसंस्कृत बी० ए० पास। घूमने फिरने की शौकीन है। अपने बच्चों से वह विशेष प्रेम करती है और घर में रहती है तो उन्हीं में डूबी रहती है। कालेज में उसने सिविक्स, पालिटिक्स और इतिहास कितना ही क्या न पढ लिया हो यह निश्चित है कि गृह विज्ञान सम्बन्धी उसका ज्ञान अधूरा है। आयु लगभग पचीस वर्ष है।

रमेश

आयु लगभग बाईस वर्ष है। कालेज का विद्यार्थी। इस वर्ष एम० ए० की परीक्षा देने वाला है। चंचल, चपल, हँसमुख और बातूनी है। लेकिन अवसर पड़ने पर प्रत्येक समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर सकता है क्योंकि वह मनोविज्ञान का विद्यार्थी है। केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से ही नहीं, अपितु व्यावहारिक जीवन में भी वह उसका प्रयोग करके देखना चाहता है।

राधा

किशोर की बेटी। आयु लगभग आठ वर्ष। माँ की लाडली बेटी होने कारण बड़ी हठीली हो गई है। इसी कारण वह प्रत्येक बात में अपनी

इच्छा पूरी होते देखना चाहती है और उसके पूर्ण न होने पर उसके मन मे विद्रोह भडक उठता है।

पार्वती

किशोर की नौकरानी। आयु लगभग बीस वर्ष। अधिक बोलती नही। अपने काम से काम रखती है। चुपचाप अपना काम करती रहती है। उसे काम से उसे लगन है या अरुचि यह उसकी शक्ल या बातो से जाना नही जा सकता।

नन्हा

किशोर का नन्हा मुन्ना दस महीने का बेटा, जिसे केवल रोना आता है। सोने और दूध पीने के अतिरिक्त जिसे और कुछ काम नही।

स्थान लखनऊ।

समय अपराह्न।

[किशोर के मकान का भीतरी भाग। कमरा सजा हुआ है। दीवारो पर चित्र लगे हैं, जो नव दम्पती की सुरुचि का पता देते हैं। बीचोबीच म सोफा सेट पडा है। उसीके किनारे छोटी-सी मेज पर रेडियोग्राम रखा है। मन्टलपीस पर फूलदान और चीनी मिट्टी के कुछ खूबसूरत खिलौने सजे हैं जिनके दोनो किनारो पर तिलक और गाधी के बुत सुशोभित है। उनकी विरुद्ध दिशा मे लेनिन और स्टालिन के चित्र टगे है। कमरे में अगरबत्ती की हलकी सुगन्ध महक रही है।

इस समय दिन के दो बजे हैं। किशोर आराम से सोफा पर अधलेटा-सा बैठा है। उसके हाथ मे अखबार है। दृष्टि कभी कभी बीच मे मैन्टलपीस पर रखी घडी की ओर उठ जाती है।

रसोई के अन्दर से कुछ बर्तनो की खटपट की आवाज बीच-बीच मे आ जाती है।]

आँचल का छोर

किशोर — (उठकर, अँगड़ाई लेते हुए) उफ, कैसा मनहूस दिन है! आज किसी काम में मन ही नहीं लगता। बीना! मैंने कहा, अजी सुनती हो।

पार्वती — (रसोई में) साब, बीबीजी पड़ोस में गई हैं।

किशोर — (खीझकर) मेम साहब का कभी घर में पैर ही नहीं टिकता। हफ्ते में एक दिन घर पर रहता हूँ, तभी उन्हें पड़ोसिनों की याद आती है। राधा, अरी ओ राधा!

पार्वती — (वहीं से) बिटिया रानी खेलन गई हैं, सरकार।

किशोर — जैसी माँ, वैसी बेटी। अच्छा भाई, अपन तो रेडियो सुनें। अपने अकेले मन का बस वही एक सहारा है।

[किशोर गुनगुनाते हुए उठता है और रेडियो खोल देता है। तभी नन्हे के ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज़ आती है।]

किशोर — यह नन्हा क्यों रो रहा है! किसीसे इतना नहीं होता कि इसे गोद में उठा ले। ज़रा चुप करा ले। घूमने फिरने से छुट्टी मिले तब तो। रानी जी घर पर रहेंगी तो उससे ऐसी चिपटी रहेंगी मानो घर में उसके अलावा और कोई है ही नहीं। और बाहर जाएँगी तो उसे बिल्कुल भूल ही जाएँगी। सहेलियों के साथ गप्प मारने से ज़रा छुट्टी मिले तभी तो याद आए कि मैं एक बेटे की माँ भी हूँ। नन्हे से बेटे की जिसे समय पर दूध और नींद की ज़रूरत है। अपनी गप्पें सलामत

रहें, बेटा चाहे भूखा बिलखता रहे। उफ कितना रो रहा है, बचारा! पावती, अरी ओ पावती!

पार्वती (पुकारकर) जी आई सरकार।

किशोर और किस्मत के ठाठ, कि नौकरानी भी मिली तो ऐसी। काम जो कुछ कह दिया सो कर दिया, नहीं तो कुछ मतलब नही। देख रही है कि बीबीजी घर मे नही हैं। नन्हा बुरी तरह रो रहा है। पर क्या मजाल कि जरा गोद मे उठा ले। ना। कोई यह न कह देगा कि 'आहा! आज तो पावती ने अपनी अक्ल से काम कर लिया

पार्वती मुझे बुलाया था, साब।

किशोर हाँ। यह नन्हा कब से रो रहा है तुझे सुनाई नहीं देता?

पावती सुनाई देता है, साब।

किशोर सुनाई देता है तो उसे गोद म उठाकर चुप क्या नही कराया?

पावती मैं उसे अच्छी तरह देख रही थी, साब।

किशोर देख रही थी, क्या मतलब?

पावती साब बीबीजी जाते समय कह गई थी 'पारो नन्हा पालने म सो रहा है, उसे देखते रहना। गफलत मत करना।' मैं बहुत अच्छी तरह देख रही थी साब।

किशोर कम्बख्त, यह क्या बकवास है? अगर मान लिया कि तू बेवकूफ है भी, तो अक्ल को इम्प्रूव करने का प्रयत्न क्यो नही करती?

पावती (कुछ न समझकर) जी, साब!

किशोर (खीझकर) ओफ! कुछ नही। जा नन्हे को उठा ले। और देख बीबीजी कहाँ गई है, उन्हें बु ला ला।

पार्वती (जाते जाते) समझ गई, मालिक।

किशोर (माथे पर हाथ रखकर) शुक्र खुदा का। तू कुछ समझी तो सही।

[दरवाजा जोर से खुलता है। बदहवास वीना तेजी से अन्दर आते हुए चौखट से टकराकर धरती पर गिर पड़ती है।]

किशोर (चिढ़कर) देखकर नहीं चला जाता? और कुछ नहीं तो चौखट से ही टकरा गई। श्रीमती जी, इतनी देर से आप थीं कहाँ?

वीना (एकदम रोकर) राधा मेरी नन्ही सी बच्ची।

[वीना फफक फफककर रो उठती है।]

किशोर (घबराकर) क्या हुआ राधा को? कहाँ है वह?

वीना (सिसककर) न जाने कहाँ चली गई। उसका कहीं पता नहीं।

किशोर (अचरज से) क्या कह रही हो?

वीना (सिसककर) ठीक कह रही हूँ। मैं उसे सारे में खोज आई। वह आज सुबह से ही गायब है। मैं खोज खोजकर हार गई, पर वह कहीं भी नहीं मिली।

किशोर अरे तो इसमें इतना रोने की क्या बात है? किसी सहेली के घर खेल रही होगी। आ जायगी, अपने-आप।

वीना नहीं, अब वह नहीं आयगी। कभी नहीं आयगी।

किशोर छि! कैसी बात बोलती हो? होश हवास क्या आज सहेली के घर ही छोड़ आई हो?

वीना वह रोते रोते घर से भाग गई थी। आज मैंने उसे मारा था। अपनी नन्ही सी बेटी को (जोर से रो उठती है।)

किशोर मारा था? क्या? किस बात पर?

बीना अपनी जिस बटी को मने कभी कडी बात नही बोली थी, कभी नही धमकाया था आज उसी को मैंने छडी से मारा। अब वह नहीं आयेगी, कभी नही आयेगी।

[दोनो हाथो म मुख छिपाकर सिसकती है।]

किशोर कैसी बात बोलती हो? नन्हे से बच्चे को भी कोई छडी से मारता होगा?

बीना न जाने उस समय मेरी कैसी मति हो गई थी। क्रोध के वशीभूत हो, मैं मानो सब कुछ भूल गई। सामने छडी पडी थी। उठाकर उस पीट डाला। उफ! मा नही, उस समय मैं राक्षसी बन गई थी राक्षसी। धिक्कार है मुझे, धिक्कार है

किशोर (तीखे स्वर म) बीना

बीना (सिसककर) क्या हो गया था मुझे? क्यो नही उस समय मेरा हाथ टूटकर गिर पडा? क्यों मैंने अपनी बटी को

किशोर (बात का हँसकर उडान की कोशिश करते हुए) पगली! सुन मेरी बात सुन। (दो उँगलियो से उसका चिबुक पकडकर ऊपर उठाते हुए) बीना, सुन

बीना (दृष्टि उठा किशोर की ओर दखती है मानो पूछ रही हो—"क्या?")

किशोर अब, बेकार रोन से क्या होगा, बीना! यह रोना धोना बन्द करो। गुस्सा होकर भाग भी गई तो क्या, थोडी देर मे खुद ही लौट आयेगी।

बीना नही। मेरा मन कहता है, अब वह नही आयेगी, कभी नही आयेगी।

किशोर मन तो बडा धोखेबाज है, बीना। यह हमेशा धोखा देता है। उसकी कही बात कभी सच नहीं होती। मैं

कहता हूँ—वह अभी लौट आयेगी।

बीना (सिसककर) वह रोते रोते भाग गई। उसके बोल अभी भी मेरे कानों में गूज रहे है। उसकी बरसती आखें, अब भी मुझे चारा तरफ नजर आ रही हैं। फिर भी तुम कहते हो कि मैं तुम्हारी बात पर विश्वास कर लू ?

किशोर हा तुम देखना। मेरी बात जरूर सच होगी। बच्चे कभी कोई बात देर तक याद नही रखत। वह अब तक उस बात को भूल भी गई होगी। देखना, अभी हँसते-गाते आकर, वह तुम्हारे आचल का छोर पकडकर लटक जायेगी।

बीना तुम्हारे कहने से क्या होता है ? मैं जानती हूँ। वह अब नही आयेगी।

किशोर मा हाकर तुम्ह सन्तान के मन का ज्ञान नही। मैं कहता हूँ

बीना मरा मन कहता है—वह मुझसे रूठ गई है। मैंने उसे कसकर पकड रखा था। वह मरे हाथा स छूटकर भाग गई। जाते-जाते बोल गई— मैं जा रही हूँ। अब कभी नही आऊँगी। फिर तुम मार लेना जी भरकर मार लेना। देखू कैसे मारती हो ?'

किशोर (हँसकर) जरा सी बच्ची तुम्हारे हाथ से छूटकर भाग गई ? इतनी कमजोर हा तुम ?

बीना (चिढकर) तुम्हे हँसी सूझ रही है ?

किशोर नही, नही। वाह! किसने कहा ?

बीना और कौन कहेगा ? तुम्हारी ये दो आँखें क्या कम हैं, तुम्हारे दिल का हाल कहने के लिए ?

किशोर समझ गया। य आँखें ही मेरी दुश्मन हैं। इन्हें बन्द

करने के लिए आन मुझ काई न कोई उपाय खोजना ही हागा ।

बीना हटो, कभी बात बोलते हा ?

किशोर ठीक तो कहता हूँ । जो बात मैं कभी मन म भी नहीं सोच पाता, व ी तुम न जाने कहा से, मेरी इन आखा म पढ लेती हो ! तब फिर मैं मजबूर होकर, इन्हे बन्द करने का उपाय न करू, तो क्या करूँ ।

बीना (चिढकर) फिर व ी ?

किशोर लो, अब न बोलूगा । कुछ न कहूगा । न मुख स न आँखा म । लाओ, जरा एक रूमाल ता दा ।

बीना रूमाल ? रूमाल का क्या कराग ?

किशोर ओफ्फोह ! तुम दो तो सही ।

बीना तुम्हे रूमाल की पडी है । मेरा दिल डर से धडक रहा है, तडफडा रहा है । मैं

किशोर अच्छा है । थोडी एक्सरसाइज हो जायेगी । मोटापे का डर नही रहगा ।

बीना (सुनी अनसुनी करके) मेरी न ही-सी बेटी न जान कहा भटक रही हागी ? कही वह रास्ता न भूल गई हो । कही वह किसी माटर के नीचे न आ गई हा । कही वह किसी कुएँ म अरे ! यह क्या ? तुमने अपनी आँखो पर पट्टी क्यो बाध ली ?

किशोर पट्टी न बाध लू, ता क्या करूँ ? कलियुग का जमाना जो ठहरा ।

बीना (विस्मय से) यहा कलियुग, सतयुग कहाँ से आ पहुँचे ?

किशोर और नही तो क्या ? एक वह जमाना था जब पति के सन्तोष के लिए, पत्नी अपनी आँखा पर रूमाल बाध

लेती थी। एक आज का जमाना है जबकि अपनी आखे सुदर न होने के कारण, पत्नी, पति की बडी बडी सुदर आखो से डाह करती है। सब कलियुग की माया है।

बीना हा, कलियुग की माया तो है ही। बेटी का सुबह से पता नही, और बाप को हँसी मजाक से फुरसत नही। वह बेचारी भूखी प्यासी न जाने कहाँ भटक रही होगी, तुम्हे क्या ? आराम से रेडियो सुनो बैठकर।

किशोर (चिढकर) समय म नही आता, तुम्हे सगीत से इतनी चिढ क्या है ?

बीना (तेजी स) सगीत से मुझे चिढ क्या होने लगी, मुझे भी फिल्मी गान सुनन का शौक है, लेकिन यह हर समय का राग तो अच्छा नही लगता। सच, कभी कभी जी चाहता है तुम्हारे इस रेडियो मे दियासलाई लगा दू।

किशोर तब फिल्मी गीत कहा स सुनने को मिलेंगे ?

बीना न मिलें। इस दिन रात की टाँय टाय से तो वही ज्यादा अच्छा रहेगा।

किशोर जानती हो—शैक्सपियर न कहा है—जिस मानव को सगीत म आनन्द नही आता वह हत्या तक कर सकता है।

बीना फिर मजाक ?

किशोर खूब ! मरी सीधी सादी बातें तुम्हे हँसी मजाक-सी लगती हैं ? जब मजाक करूँगा तब क्या कहोगी ?

बीना हे राम ! तुम्हे हँसी सूझ रही है। मेरे प्राणो पर बनी है। ईश्वर क लिए ये बातें बन्द करो। कही जाओ, कुछ करो। जस भी हो जहाँ स भी हो, मेरी बेटी को खोजकर ला दो।

किशोर कैसी नादानी की बातें करने लगती हो तुम कभी-कभी! अरे! छड़ी की मार किसे अच्छी लगती है? हाथ से छूटकर भाग गई, तो क्या हुआ? लौट आयेगी थोड़ी देर में।

बीना (सिसककर) सुबह की गई है। अभी तक नहीं लौटी। बड़े बूढ़े तो इतनी देर भूखे रह नहीं सकते। वह नन्ही सी जान

किशोर वह नन्ही-सी जान, किसी सहेली के घर बैठी मजे से लड्डू पूरी उड़ा रही होगी।

बीना कैसे पिता हो तुम? और कोई होता तो ऐसी बात सुन व्याकुल हो उठता। नंगे पैर गलियों की खाक छानने को निकल पड़ता। एक तुम हो कि सुनकर तुम्हारा रोम तक नहीं हिला।

किशोर रोम हिलने की कोई बात भी तो हो?

बीना इतनी बड़ी बात हो गई वह तुम्हारी समझ में कुछ भी नहीं?

किशोर मैं तुम्हारी तरह पागल नहीं हूँ। आओ, रेडियो सुनो थोड़ी देर मन बहल जाएगा।

बीना (सुनी अनसुनी करके) हाँ पागल तो हूँ ही। माँ का दिल जो पाया है। पलकों में छिपाकर बेटी को पाला था। आँचल की छाया में छिपाकर दुनिया की नजरों से बचाया था। मेरे आँचल का छोर पकड़, उसके नन्हे नन्हे पैरों ने डगमग डगमग चलना सीखा था। आज वही उन्हीं नन्हे-नन्हे पैरों से भागकर

किशोर अरे! तो रोती ही रहोगी या कुछ बताओगी भी? आखिर इतना घबराने की कुछ बात भी हुई? बात क्या थी? क्या तुमने इस बुरी तरह उसे मारा?

वीना नहीं। कुछ नहीं हुआ। तुम चैन से घर म बैठो। आराम स अपना रेडियो सुनो। मैं खुद जाकर अपनी बेटी को खोज लाऊँगी। (रोती है।)

किशोर न जाने कैसी आदत है तुम्हारी ! बेकार तिल का ताड़ बनाने बैठ जाती हो। खुद भी परेशान होती हो और मुझे भी परेशान करती हो। अरे! कहाँ जा रही हो? ठहरो सुनो तो सही।

वीना नहीं। मुझे सुनने सुनाने की फुरसत नहीं। इतनी देर यहा बैठ तुम्हे गाथा सुनाऊँगी, न जाने उसका क्या हाल होगा ! न जाने वह कहाँ भटक रही होगी ? कहीं वह रास्ता न भूल गई हो, कहीं वह किसी मोटर के नीचे न आ गई हो। कही वह   हटो, छोड़ दो मेरा हाथ। मुझे जाने दो। मैं कहती हूँ। हट जाओ।

किशोर लेकिन कुछ पता भी तो चले। आखिर तुम जा कहाँ रही हो ?

वीना अपनी बेटी की खोज म।

किशोर तो क्या राधा सच ही भाग गई ? क्या वह वास्तव म कहीं चली गई ?

वीना नहीं जी ! वह क्यों कहीं जाने लगी ? तुम्हारे सपनों के पालने म आराम से झूल रही होगी। बेटी की हित चिन्ता से तुम्हें अपना दर्शन ज्ञान अधिक प्यारा है। ना। अपना संगीत अधिक रुचता है तुम्हें तो खोए रहो उसी म। डूब रहो। दुनिया मरे या जिये, तुम्हारी बला से।

किशोर (अचरज से) वीणा ?

वीना बड़े ज्ञानी, दार्शनिक, संगीतवेत्ता बनते हो। तुम अपना ज्ञान लिए बैठे रहो। हटो मुझे जाने दो।

किशोर लेकिन तुम मेरे शास्त्र ज्ञान की बातें सुनती कहा हो ? मैंने तुमसे कितनी बार कहा कि तुम दिन रात मुन्ने में ही न उलझी रहा करो। इससे राधा के मन पर बुरा असर पड सकता है।

बीना (चिढकर) क्या बातें करते हो ? भाई को प्यार किया जाता देख, बहन के दिल पर बुरा असर होगा ? तुम्हारे शास्त्र की सभी बातें अदभुत और निराली हैं। तभी तो दार्शनिकों को सनकी और पागल कहा जाता है। जाओ अपना काम करो। मुझे अपना करने दो।

किशोर तुम उसे कहाँ कहाँ देख आई ? मुंसिफ साहब के घर पता लगाया ? मोहन दादा के यहा पूछा ?

बीना मैंने कहीं पूछा हो, या न पूछा हो, तुमसे मतलब ? तुम आराम से घर बैठे रहो। हटो, रास्ता छोड़ो। मुझे जाने दो।

किशोर तुम कहा जाओगी ?

बीना जहा तुम नही जा सकोगे। बेटी के गुम हो जाने की बात सुनकर भी तुम यो खडे खडे हसते रहे ? तुम्हारे शरीर मे दिल नही, पत्थर है पत्थर। तुम शिला से अचल बन घर मे बैठो। मैं माँ हूँ अपनी बेटी को कही न कही से खोज ही लाऊँगी। (रोती है।)

किशोर (अधीर भाव से) इस तरह रोने से तो बेटी मिल नहीं जायगी ?

बीना नही जी। इस तरह खडे खडे बातें बनाने से जरूर मिल जायगी।

किशोर बीना आज तुम्हे हुआ क्या है ?

बीना वही, जो अपनी बेटी से बिछुड जाने पर किसी भी मा

को होता है।

किशोर तुम माँ हो तो मैं भी उसका पिता हूँ। मेरे मन में भी उसके लिए ममता है। लेकिन मैं तुम्हारी तरह झूठ मूठ रोने धोने में विश्वास नहीं करता।

वीना अच्छा जी, तो मैं झूठमूठ रोती हूँ।

किशोर नहीं नहीं। यह मैंने कब कहा? लेकिन तुम्हीं बताओ इस तरह रोने से कुछ फायदा है।

वीना अच्छा तो कुछ काम करने में तो फायदा है? कम करने में तो तुम विश्वास करते हो न। जाओ फिर, यहाँ क्यों खड़े हो? जाओ न, जाते क्यों नहीं?

किशोर मुझे अब भी विश्वास नहीं होता कि

वीना तो तुम अपना विश्वास लिए बैठे रहो, लेकिन मेरे रास्ते में रुकावट तो मत डालो। मैं न जानती थी कि तुम इतने कठोर हृदय भी हो सकते हो।

किशोर (नरमी से) कठोर हृदय मैं बिल्कुल नहीं हूँ, वीना। लेकिन (वीना को रोते देख एकदम क्रुद्ध होकर) पहले मारती हो, फिर रोती हो। मुसीबत आती है, मेरी। अब कहाँ खोजने जाऊँ बताओ।

[उत्तर में वीना केवल रोती है।]

किशोर (क्रोध से) अब बैठकर रोने से क्या होगा? इधर उधर पड़ोस में पूछो। पता लगाओ। मैं पुलिस-स्टेशन जाता हूँ। रेडियो से भी ब्राडकास्ट कराने की कोशिश करूँगा। पार्वती पार्वती।

पार्वती (दूर से) जी, सरकार, अभी आई।

किशोर देखो, कान खोलकर सुन लो, जब मैं उसे लेकर लौटूँ तब

[पार्वती का प्रवेश]

पावती जी साब। आपने मुझे बुलाया।

किशोर देख, पावती। राधा बड़ी देर से घर नहीं आई है। जा तू जरा मुंसिफ साहब के घर देख आ। कहीं वह वहां न बैठ रही हो। मोहन दादा के घर भी जाना। समझी।

पावती समझ गई साब। (जाने को मुड़ती है।)

किशोर और देख सुन हरभजन काका से भी पूछना, और लच्छा मौसी के घर भी पता लगाना।

पावती जी साब। समझ गई सरकार।

बीना समय तो गई, पर लौटना जल्दी। वहीं बैठकर सुखिया से जबान लड़ान न बैठ जाना कहीं।

किशोर अब जाने भी दोगी उसे, या बातों में ही खड़ा किए रखोगी?

बीना लो, और सुनो। बातों में तुमने खड़ा कर रखा है या मैंने।

किशोर अच्छा, बाबा मैंने, मैंने, मैंने। सब कसूर मेरा ही है। बस अब तो हुआ। जा पावती, तू आंधी की तरह से जा और तूफान की तरह से लौटकर आ। समझी।

पावती जी साब, समझ गई, साब सब समझ गई।

[पावती तेजी से चली जाती है।]

किशोर उठो तुम भी। यह रोना धोना बंद करो। मैं हुक्का संभालो। मैं जा रहा हूँ। पता लगाकर ही लौटूंगा।

[नेपथ्य में धीमा संगीत। पट परिवर्तन। बाजार की किसी सड़क का दृश्य। अकेली राधा सड़क पर धीरे धीरे चल रही है। उसके फ्राक पर कीचड़ के धब्बे हैं। एक रिबन खुलकर कहीं गिर पड़ा है। दूसरा ढीला हो गया है। पैरों में थकन है। मुख पर क्लेश।]

राधा (होले होले, स्वयं अपने आपसे ही) बहुत थक गई। अब तो चला नहीं जाता। लेकिन भूख भी तो लगी है। पर खाना कहां से मिलेगा? घर पर मां मेरे लिए खाना लिए बैठी होगी। क्या बनाया होगा आज अम्मां ने? मटर की तरकारी और आलू के पराठे? सोच रही होगी। अभी राधा आएगी, तो उसे खाने को दूगी। तब फिर घर लौट चलूं? देर भी तो कितनी हो गई? कैसी ज़ोर की भूख लगी है।

[राधा लौट पड़ती है। लेकिन दो पग चलकर ही ठिठककर रुक जाती है।]

राधा नहीं। मैं नहीं जाऊंगी। क्यों जाऊं? खाना लिए बैठी होगी, तो बैठी रहे न। खा लें अपना खाना। मुझे नहीं चाहिए। क्या उन्होंने मुझे मारा? क्या छड़ी से पीटा? कोई उन्हें पीटे तो पता चले। कैसी चोट लगती है, उस मोटी-सी छड़ी से। बड़ी आई मारने वाली? नहीं, मैं नहीं जाऊंगी, हरगिज़ नहीं जाऊंगी। ज़रा-सा थक गई तो क्या? यहीं बैठ जाती हूँ। अभी थकान उतर जाएगी, तो फिर चल पड़ूंगी।

[सड़क के एक किनारे बैठ चप्पलों की धूल झाड़ने लगती है।]

राधा छि! कितनी मिट्टी है! सारी सड़क पर मिट्टी ही मिट्टी है, तभी तो मेरे पैरों पर... आहा! कितना मज़ा होता, अगर सड़क पर मिट्टी के बजाय रोटियां बिछी रहतीं। तब आने-जाने वाले चलते चलते मज़े से रोटियां उठा उठाकर खाया करते। फिर किसीको घर लौटने की ज़रूरत न पड़ती। न इतनी ज़ोर की भूख ही बरदाश्त करनी पड़ती। लेकिन इन्हें भूख क्यों लगती

है और रोटी खाने से हमारा पेट क्यो भर जाता है ? अच्छा,एक बात है, जब रोटी हमारे लिए इतनी ज़रूरी चीज़ है, तब वह मुफ्त म क्यो नही मिलती ? पैसे से क्यो मिलती है। किसीके पास पैसे न हो, तो वह क्या करे ? भूखा रहे ? उस दिन मास्टरजी कहते थे। दुनिया मे सबसे ज्यादा ज़रूरी चीज़ हवा है—हवा जिसमे हम सास लेते हैं। कोई इन्सान हवा के बिना ज़िन्दा नही रह सकता। लेकिन इन्सान रोटी के बिना भी तो नही रह सकता। और जब हवा पैसे से नही मिलती तो रोटी क्यो पैसे से मिलती है ? अरे ! मैं भी कैसी बुद्धू हूँ। इस सवाल का जवाब मास्टरजी से पूछ लिया होता तो मज़ा आ जाता। इम्तहान मे अगर वो ये सवाल दे देते, तो मैं चट से उत्तर दे देती। लेकिन क्या हुआ ? मास्टरजी से ज्यादा अच्छी तरह तो मेरे पापा ही बता सकते है। हाँ, यही ठीक है। उनसे ही पूछूंगी।

[राधा उठकर चल पडती है, लेकिन फिर रुक जाती है।]

राधा लेकिन पापा तो घर मे हैं। और घर मे माँ भी हैं। मैं घर जाऊँगी, तो अम्मां मुझे देख लेंगी, और फिर छडी स मारेंगी नहीं। मैं घर नहीं जाऊँगी। हरगिज़ नही जाऊँगी। लेकिन मुझे भूख भी तो लग रही है। रोटी के लिए पैसे कहाँ से आहा। यह गुब्बारे वाला ? कैसे प्यारे प्यारे गुब्बारे बेच रहा है।

[सामने से एक गुब्बारे वाला, बास म बहुत सारे रग बिरगे गुब्बार लगाये, गीत गाता हुआ आता है।]

गुब्बारे वाला आओ चुन्नू आआ मुन्नू आओ बिटिया रानी। ल ला य गुब्बारे, लाल, सुनहर औ' धानी। आओ चुनू, आआ मुन्नू

राधा (पुकारकर) ए गुब्बार वाले! हमका भी गुब्बार दा।

गुब्बारे वाला लो लो, बिटिया, गुब्बार ला। बालो, कौनसा दू?

राधा एक हमका यह दा, एक यह पीला दो। और चार य लाल दो, और बस, चार यह हरे रग के दे दो।

गुब्बारे वाला लो, यह लो। एक यह बजनी। एक यह पीला। चार यह लाल और चार य हरे। बस?

राधा बस।

[गुब्बारे हाथ मेले, हवा म हाथ ऊँचा कर राधा गुब्बारे वाले के स्वर म गाने का प्रयास करती है।]

राधा आआ चुनू, आओ मुन्नू आओ बिटिया रानी। ले ला य गुब्बारे, लाल, सुनहरे औ धानी। आओ चुनू

गुब्बारे वाला अरे! वाह, बिटिया! यह क्या कर रही हा?

राधा गुब्बारे बच रही हूँ।

गुब्बारे वाला वाह री मुन्नी! मुन्नी रानी गुब्बारे बेचती नही, खरी दती ह। ला दखो, और कौनसा लोगी? बालो, बताआ।

राधा नही हम और गुब्बारे नही चाहिए। हम बस इतन को बच लेंग।

गुब्बारे वाला अच्छा भाई, तुम्हारी मर्जी। आज यह खेल खलना चाहती हा ता यही सही। लाआ हमार पस ता दो।

राधा पस ता हमार पास नही हैं।

गुब्बारे वाला पस नही है?

राधा — नही, हम ये गुब्बार बेचेंगे। बचकर हमको पैसे मिलेंगे। पैसे से हम पूरी खायेंगे। हमको भूख लगी है।

गुब्बारे वाला — ओह! भूख भी लगी है? पूरी भी खरीदोगी। बडा अद्‌भुत खेल है तुम्हारा। अच्छा, आज हम जाते है। कल इसी जगह आकर हमको पैसे दे देना।

राधा — वाह, पैसे कहा से देंगे? उनकी तो हम पूरी खा लेंगे न?

गुब्बारे वाला — इन पैसा की तुम पूरी खा लेना। हमारे पैसे अम्मा स ला देना।

राधा — नही, अम्माँ से हमारी लडाई हा गई है। अब हम अम्मा के पास नही जाएँगे। आखिर अम्मा समझती क्या है? क्या हम उसके विना रह ही नही सकते? हम भी दिखा देंगे अम्माँ को, अगर उन्हे हमारी परवाह नही तो हम भी उनकी परवाह नही। अब हम हरगिज घर नही जाएगे। अगर हम भूख न लगी होती तो

[राधा की आँखो मे आँसू भर आते है।]

गुब्बारे वाला — (आसू पाछकर) भूख लगी है तो घर जाओ बटो!

[उत्तर म राधा जोर से सिर हिलाकर मना करती है।]

गुब्बारे वाला — जाओ, मुनिया घर जाओ। अम्मा रोटी भी देगी, मस भी देगी। ये गुब्बारे ले जाओ। कल मैं फिर आऊँगा। जाओ बिटिया, घर जाओ।

[गुब्बारे वाला गाता हुआ चला जाता है—
आओ चु न आओ मुन्नू, आओ बिटिया रानी,
ले लो ये गुब्बारे]

राधा — घर? नही, नही। अब मैं कभी घर न जाऊगी। घर

जाऊँगी ता, अम्मा फिर मुझे मारेगी। अम्मां मुझे प्यार नही करती। ज़रा भी नही। वह तो बस मुन्ने को प्यार करती है। अब मैं घर नही जाऊँगी, हरगिज़ नहीं जाऊँगी। कभी नही जाऊँगी। इन गुब्बारा को बेचकर मुझे बहुत सारे पैसे मिलेंगे। उनसे मज़े से पूरी पराठ खरीदकर खाऊँगी।

[एक हाथ से आसू पोछते, दूसरे हाथ से गुब्बारे हवा मे उडाते, गाती हुई आगे बढती है।]

राधा आओ चुन्नू, आओ मुन्नू आओ बिटिया रानी, ले लाय गुब्बारे लाल, सुनहरे

[पल भर को राधा नजरा की ओट होती है। उसी समय मोटर के हान की तीखी आवाज़, राधा की चीख और ब्रेक लगन की कक्श ध्वनि। एक पुरुष स्वर गूज उठता है।]

रमेश ए लडकी, क्या तेरी मौत आई है?

[आगे आग डरी सी राधा, पीछे-पीछे रमश स्टेज पर आते हैं।]

राधा किधर? मुझे तो दिखाई नही देती।

रमेश मैं कहता हूँ क्या तुझे मौत पाने की लगी है मरना चाहती है?

राधा नही, मुझे भूख लगी है। मैं खाना चाहती हूँ।

रमेश भूख लगी है तो घर क्यो नही जाती? अम्मां खाना देगी।

राधा नहीं, अम्मां खाना नहीं देगी। वह तो मुझे मारती है।

रमेश (हँसकर) मारती है, तो क्या हुआ? मां की मार तो सभी को खानी पड़ती है, बेबी रानी।

राधा नहीं आप कुछ नहीं जानते। यह बात नहीं है।

रमेश तब क्या बात है ? हम समझा दो।

राधा पहले मेरी माँ मुझे कभी डाटती तक नही थी, लेकिन

रमेश पहले कब ?

राधा जब मुन्ना घर म नहीं आया था, तब मा मुझे बहुत प्यार करती थी। मेरा सब काम खुद अपने हाथ से करती थी। मुझे नहलाती थी, खिलाती थी, सुलाती थी, बाज़ार ले जाती थी। जब से मुन्ना अस्पताल से आया है, मा को मेरा काम करने की फुरसत ही नही मिलती। दिन रात उसी शैतान के काम मे फँसी रहती है।

रमेश लेकिन बेबी रानी, मुन्ना छोटा भी तो है। तुम तो अब बडी हो गइ हो। अपना काम खुद कर सकती हो। लेकिन वह तो अभी बहुत छोटा है। मा अगर उसका काम नही करे, तो फिर कौन करे ?

राधा क्या ? पावती जो है ?

रमेश पावती ? वह कौन है ?

राधा हमारी नौकरानी। वह जो हमारे घर काम करती है।

रमेश लेकिन पावती मुन्ने की मा तो नही है। जसे माँ पहले तुम्हारा सब काम अपने हाथ से करती थी, एसे ही अब मुन्ने का करती है। इसमे इतना गुस्सा करने की क्या बात है ? वह तुम्हारा ही तो भाई है।

राधा नही। मुझे एसा भाई नहीं चाहिए जिसकी वजह से बात बात पर दिन रात मार खानी पडे। क्यों लाई माँ उसे अस्पताल से ? हमने तो नही कहा था लाने को ?
(एकाएक वह रो पडती है।)

रमेश च च च् बुरी बात। रानी बेबी कही रोती भी होगी। देखो हमारी बात सुनो अरे, भई, कुछ

हमारी भी तो सुनो।

राधा (सिसककर) क्या ?

रमेश देखो बबी, माँ कभी कभी मारती है, तो हमेशा प्यार भी तो करती है। मीठी मीठी मिठाई खाने को देती है, नय नय कपडे

राधा नही। मेरी मा अब मुझे प्यार नहीं करती। बस, वह तो सिफ मु ने को ही प्यार करती है।

रमेश किसने कहा ?

राधा कहेगा कौन ? क्या मैं इतना भी नही देखती, इतना भी नही समझती ? क्या मैं नन्ही-सी बच्ची हूँ ?

रमेश नहीं, नहीं तुम तो बहुत बडी हो। बडी समझदार हो। तभी तो मैं कहता हूँ कि घर लौट जाओ। समझदार बच्चे ऐसे बेवकूफी के काम नही किया करते।

राधा कसी बेवकूफी ?

रमेश यही। चुपके से घर से निकल भागना और मा बाप को बेकार परेशान करना। यह बेवकूफी ही तो है। जाओ, बेबी, घर लौट जाओ।

राधा नही। अब मैं घर नही जाऊँगी हरगिज नही जाऊगी, कभी नही जाऊँगी। घर जाऊँगी तो माँ फिर मारेगी।

रमेश क्यो मारेगी ?

राधा देखते नहीं ? यह मेरे फ्राक पर कीचड लग गया है। क्या मैंने जान बझकर लगाया है ?

रमेश नही नही, कौन कहता है ?

राधा माँ तो यही समझती है कि मैं जान बूझकर सब काम बिगाड देती हूँ। मेरा फ्राक गन्दा हो गया इसलिए वह मुझे मारेगी। खाना खाने के लिए मैं वक्त पर घर न पहुँची इसलिए भी वह मुझे मारेगी। नही, अब मैं

घर नही जाऊँगी, हरगिज नही जाऊँगी। कभी नही
(सिसकने लगती है।)

रमेश राते नही, बेबी। रोना बुरी बात है। देखो कुछ गलती हो जाने पर ही मा मारती है। आज तुमने कुछ गलती की होगी तभी तो मा ने मारा होगा।

राधा (चिढकर) वाह! हमने क्या गलती की? मा बैठी मुन्ने के कुर्ते पर गोटा टाक रही थी। हमने कहा
[दृश्य-परिवर्तन]

राधा मा, भूख लगी है, ओ माँ, सुनती हो कि नही, हम भूख लगी है।

बीना हा, राधा। तग न कर। मुझे काम करने दे।

राधा हम कुछ नही जानते। हम कुछ खाने को दो। उठो, नही तो मैं अभी तुम्हारा सारा गोटा मसल दूगी।

बीना हट यहाँ से। जा पार्वती से माँग ले।

राधा (चिढकर) पार्वती, पार्वती, जब देखो, तब पार्वती। बस एक पार्वती ही तो रह गई है मेरा काम करने के लिए। मैं जाती हूँ।

[कोने में बैठी पार्वती का पल्ला खीचते हुए राधा उससे बोलती है।]

राधा ए पारो उठ। मुझे कुछ खाने को दे। उठ ना। छोड यह आलू। इन्हें बाद मे काटना। उठ। तू उठती है या नही। कहूँ मैं माँ से?

पार्वती हटो बिटिया! तग न करो। वहाँ अलमारी म केला रखा होगा, जाओ ले लो।

राधा हुह! केला भी कोई खाने की चीज है? मैं तो नही खाऊँगी केला। क्या खाऊँ? भैया तो खाए ... और हम खाएँ केला? अरे हाँ!

चुपके से चलकर क्या पता चलेगा माँ को ! हा, हाँ यही ठीक है। तो चलू, धीरे धीरे चुपके चुपके

[राधा आड में रखी कोन की अलमारी की ओर बढती है। उस ओर मा की पीठ है। वह अलमारी खोलती ही है कि सहसा मुन्ना रो पडता है। हाथ की सलाई नीचे फेंक, बीना लपक कर मुन्ने को गोद मे उठा लेती है।]

बीना मुन्ना, मेरा राजा बेटा। मुन्ने को भूख लगी है ? मुन्ना दूध पिएगा ? मैं अभी मीठा मीठा दूध बनाकर लाती हूँ। अपने राजा बेटे को अरे ! यह क्या ? राधा, तू क्या कर रही है ?

राधा (भय से काँपकर डरे स्वर मे) कुछ नही माँ, कुछ नही, मैं तो वह मैं तो जरा इस डिब्बे की तस्वीरें देख रही थी।

बीना (क्रोध से) लाख बार मैंने तुझसे कहा कि ये बिस्कुट न खाया कर। ये मुन्ने के लिए है। पर जब देखा तब तू इन्हीको खाने बैठ जाती है। फिर खाएगी ? बोल ?

राधा माँ !

बीना जब तक एक बार कान नही खीचे जाएगे, तब तक तुझे अक्ल न आएगी। (उसका कान पकडकर) फिर खाएगी ? बोल-बोल ?

राधा (गुस्से से) कान क्यो पकडती हो ? मेरा कान दुखता है। छोड दो, माँ, छोड दो।

बीना एक तो कसूर करती है, ऊपर से बात मानने को तैयार नही होती ! ठहर मैं बताती हूँ तुझे।

[सामने पडी छडी उठाकर, बीना जोर से एक छडी राधा को मारती है। राधा एकदम रो

पडती है।]

राधा (रोकर) हाय, मा! मारा नही अब नही खाऊँगी। कभी नही खाऊँगी। न मारा मा, मत मारो मा

बीना मारूँगी जी भरकर मारूँगी। आज म तुझे मार ही डालूगी। तू बहुत सिर पर चढ गई है। सदा मुझे तग करती रहती है। कभी मेरा कहना नही मानती, कभी मरी बात नही सुनती। आज मैं (सटासट उसके चार छ छडी जमा देती है।)

राधा मारोगी? लो, मैं जाती हू। फिर मार लेना। देखू किस मारती हो।

बीना ए राधा, कहाँ भागी जा रही है? सुन, ठहर, ओ राधा

राधा मैं जा रही हू। अब कभी नही आऊँगी। कर लो तुम मुन्न को प्यार। बना लो उसके लिए नए-नए कपडे।

अब मैं कभी तुम्हे परेशान नही करूँगी। मैं जा रही हू। अब म कभी लौटकर नही आऊँगी। हरगिज नही आऊँगी। मैं जा रही हूँ। अभी, इसी दम (बाहर भाग जाती है।)

[दृश्य-परिवर्तन]

राधा (सिसककर) अब मैं घर नही जाऊँगी, कभी नहीं जाऊँगी।

रमेश (गहरी साँस भरकर) कितनी नादान है तुम्हारी माँ! माँ बन गई, लेकिन माँ बनना सीखा नही।

[राधा केवल सिसक सिसककर रोती है।]

रमेश रोओ नही बेबी रानी। रोती क्या हो? घर नहीं जाना चाहती?

राधा नहीं।

रमेश न जाना भई, न जाना। मेरे घर तो चलोगी ?

राधा तुम्हारे घर ? क्या तुम्हारी माँ मुझे प्यार करेंगी ?

रमेश क्या नहीं ? जरूर करेंगी।

राधा वे मुझे मारेंगी तो नहीं ?

रमेश नहीं, नहीं, मारेंगी क्यों ? तुम तो बड़ी अच्छी लड़की हो। बड़ी समझदार। समझदार बच्चा को मेरी मा बहुत प्यार करती है।

राधा (ताली बजाकर) ठीक है। तब मैं तुम्हारे घर चलूंगी।

रमेश अच्छा, तो जाओ बैठो मोटर म।

राधा चलो। अरे, वाह ! अंकिल। तुम्हारी मोटर तो बड़ी सुन्दर है।

रमेश पसन्द आई तुम्हे ?

राधा उहूँ ! जरा भी नहीं।

रमेश सच ?

[दोना हँस पडते हैं। दृश्य परिवतन]

[रमश और राधा घर के सामने खड़े हैं। राधा की आँखो पर रूमाल बँधा है। वह रमश की गोद मे चढ़ी हुई है]

रमेश लो राधा रानी, हमारा घर आ गया।

राधा आहा ! घर आ गया ? अच्छा, नया, अब हमारी आँखो पर से रूमाल खोल दो।

रमेश वाह ! अभी से कैसे खोल दूँ ?

राधा क्यों अभी क्यों नहीं ?

रमेश इतनी जल्दी भूल गई ? अभी क्या वादा किया था ?

राधा क्या ?

रमेश   माँ की गोद में बैठकर, आँखों पर से रूमाल खोला जाएगा, यही तो फैसला किया गया था न ? आओ, अन्दर चलें।

राधा   तुम बड़े नटखट हो अकिल।

रमेश   अपनी राधा से अधिक नहीं। लो पकड़ो मेरा हाथ। नीचे उतरो।

राधा   अब हम तुम्हारे घर की, छोटी सी बजरी की सड़क पर चल रहे हैं न, अकिल ?

रमेश   हाँ। इस छोटी-सी सड़क पर लाल लाल बजरी बिछी है। लो यह हमारे घर का दरवाजा आ गया और यह हमने घण्टी बजा दी।

[रमेश द्वार पर लगी घण्टी का बटन दबा देता है।]

राधा   तुम्हारे घर मे भी बगिया है, अकिल ? क्या उसमे भी फूल खिलते हैं ?

रमेश   हाँ, हाँ, क्यो नही ? हमारी बगिया म बड़े सुन्दर फूल खिलते हैं। बेला, जूही और गुलाब। लो, अभी तक कोई दरवाजा खोलने ही नही आया। एक बार फिर घण्टी बजा दें।

[रमेश पुन घण्टी का बटन दबाता है।]

रमेश   वह देखो। शायद कोई आ रहा है। पैरो की आवाज सुन रही हो न ? यह उसने दरवाजा खोला, और

राधा   और, यह हमने अपनी आँखो पर से रूमाल खोल दिया। अरे, वाह ! अकिल, खूब !

रमेश   क्या हुआ राधा ?

राधा   तुम्हारा घर तो बिल्कुल हमारे घर जैसा ही है, अकिल !

रमेश अच्छा ! क्या तुम्हारा घर भी ऐसा ही है ?

राधा हाँ आ बिल्कुल। वैसा ही पर्दे ! वही मेज ! (अन्दर झाँककर) वैसा ही रेडियो !

[अन्दर कही शिशु रोता है।]

राधा (चौंककर) अरे ! मेरा नन्हा भैया भी बिल्कुल इसी तरह रोता है।

रमेश तुम्हारा भैया कितना बडा है ?

राधा यही कोई सालभर का होगा। तुम्हारा भैया कितना बडा है ?

रमेश हमारा भैया भी इतना ही बडा है।

राधा (विस्मय से) अरे ! सच !

[दोनो ज़ोर से हँस पडते हैं।]

राधा अंकिल, तुम्हारी मा किधर हैं ? हमे उनके पास ले चलो न !

रमेश यह दरवाजा खोलकर कोई झटपट लौट गया है। वह उन्हे बुलाने ही गया होगा। बस वे आती ही होगी। सुनो वह चप्पलो की आवाज। लो वे आ गई

राधा (एकदम चीखकर) अरे माँ, तुम ?

बीना राधा, मेरी बच्ची, तू आ गई ? आ, आ, मेरी गोद मे आ। राधा, मेरी बेटी, तू कहाँ चली गई थी ? आ रानी। माँ की गोद म आ। कब से मैं तुझे खोज रही थी, राधा, मेरी बेटी

[बीना दौडकर राधा को गोद मे उठा लेती है। राधा छूटने को छटपटाती है।]

राधा (चीखकर) छोड दो। मुझे छोड दो। मुझे जाने दो।

रमेश राधा, कहाँ जा रही है ?

राधा अंकिल, [illegible] हो। [illegible] [illegible] ले

आए। तुमने अपना वादा पूरा नहीं किया। तुम बड़े बुरे हो। छोड़ दो, मुझे जाने दो।

बीना राधा, बेटी, बात सुन

राधा नहीं। नहीं सुनूंगी। मैं कुछ भी नहीं सुनूंगी। तुम मुझे जरा भी प्यार नहीं करती। तुम तो मुझे मारती हो। हटो, हट जाओ। मुझे जाने दो।

किशोर (नपथ्य से बोलते हुए, सामने स्टेज पर आता है।) बीना, मैंने कहा, अजी सुनती हो, राधा का तो कहीं भी अरे! क्या राधा आ गई? मेरी बेटी मिल गई? ए, नटखट, कहाँ चली गई थी, तू? आ, इधर, मेरी गोद में आ।

राधा नहीं, हम नहीं आएँगे।

किशोर क्यों? पापा की गोद में नहीं आओगी?

राधा पापा। (दौड़कर उसकी गोद में चली जाती है।)

किशोर यह बात। अच्छा, पहले पापा के गले में हाथ डालो। हाँ, ऐसे। अच्छा अब पापा को एक खट्टी मिट्ठी चुम्मी दो। हाँ ऐसे। अच्छा अब एक खट्टी मिट्ठी अम्मा को भी दो।

राधा नहीं।

किशोर क्यों?

राधा जब अम्मां हमें प्यार नहीं करती, तो हम अम्मा को क्यों प्यार करें?

बीना कैसी बात बोलती है, बेटी! मैंने कब तुझे प्यार नहीं किया?

राधा मत बोलो हमसे। हम तुमसे नहीं बोलते।

किशोर देखो बीना! बेटी को तुमने नाराज कर दिया है। अब उसके लिए गरम गरम पकौड़ी तो बनाकर लाओ

और अपने हाथ से खिलाओ। तब वह मानेगी। है न राधा ?

राधा नहीं। हम नही चाहिए पकौडी।

रमेश अरे वाह! पकौडी नही चाहिए ? हमसे तो कोई पकौडी को पूछ, तो हम कभी मना न करें।

राधा हुँह! क्या खाएं ? पकौडी की प्लेट लाकर माँ मेज पर रख देंगी। कहेगी ए राधा देख वहाँ मेज पर पकौडी रखी हैं। जा, खा ले। मैं मुन्ने को दूध पिला रही हूँ।

वीना नही, बेटी! आज मैं तुझे अपने हाथ से पकौडी खिलाऊँगी। पहले की तरह, तेरा सब काम अब मैं हमेशा खुद ही किया करूँगी। आ, मेरे पास तो आ।

राधा मत बोलो हमसे। जब हम तुमसे नहीं बोलते, तो तुम क्या हमसे बोलती हो ? पापा, इन्हे जानते हो, कौन हैं ?

किशोर कौन है ?

राधा ये मेरे अंकिल हैं। यही तो मुझे मोटर में बैठाकर यहाँ तक लाए है।

रमेश जी। मेरा नाम रमेश है। मैं एम० ए० का विद्यार्थी हू। मेरा विषय मनोविज्ञान है।

किशोर बडी खुशी हुई तुमसे मिलकर। रमेश, कृतज्ञता प्रगट करने के लिए आज मेरे पास शब्द नही।

रमेश ऐसा न कहिए भैया। यह तो मेरा कर्तव्य था।

किशोर इस घर को अपना ही घर समझना। दूसरे-तीसरे दिन

राधा जानते हो पापा इनकी मोटर बडी सुन्दर है। और, हाँ, रास्ते मे इन्होंने मुझे बहुत सारी चीजें खिलाई।

किशोर अच्छा ! क्या क्या खाया तूने ?

राधा बताऊँ ?

किशोर हूँ।

राधा गुलाबजामुन एक, बर्फी दो, केक तीन आइसक्रीम चार, समोसे पाँच। कोको कोला छ

किशोर बाप रे ! इतना खा गई ? तेरा पट नही फूटा ?

वीना (नाराज होकर) क्यो बेटी का नजर लगाते हो ? सुबह की भूखी थी, उसने खाया ही क्या ? मैं अभी उसके लिए मीठा मीठा दूध और गरम गरम हलवा लाती हूँ।

रमेश हाँ भाभी ! जरा जल्दी से लाइएगा। मुझे भी बडे जोर की भूख लगी है।

वीना बस, अभी लाई।

किशोर अच्छा, राधा, एक बात बताएगी ?

राधा क्या, पापा ?

किशोर पहले बोल, बताएगी ?

राधा पूछो न।

किशोर तू घर से क्यो भाग गई थी ?

राधा घर मे हम अच्छा नही लगता।

किशोर क्या, अच्छा क्या नही लगता ?

राधा क्या करें, माँ हमे प्यार नही करती। बस मुन्न को प्यार करती है।

किशोर किसने कहा ?

राधा कहेगा कौन ? पहले माँ हमारा सब काम अपन हाथ से करती थी। अब दिन रात मुन्न के काम मे फँसी रहती है।

किशोर लेकिन राधा, मुन्ना अभी छोटा है। वह क्या तेरी

तरह अपना सब काम अपने हाथ से कर सकता है ?

राधा यह सब हम कुछ नहीं जानत।

रमेश वाह ! तुम नहीं जानोगी, तो और कौन जानेगा ? मुन्ना भी तो तुम्हारा ही है।

राधा नहीं। हम ऐसा रोना मुन्ना नहीं चाहिए। क्यों माँ मुन्ने को लाई, हमने तो नहीं कहा था लाने को ?

रमेश राधारानी, हम बताएँ माँ मुन्ने को किसलिए लाई है।

राधा बताओ।

रमेश जिससे संग खेलने के लिए राधा को एक नन्हा सा भाई मिल जाए।

राधा पर वह खेलता कहा है ? पडा सोता रहता है। आलसी कहीं का !

रमेश अभी तो वह बहुत छोटा है। जब बडा हो जाएगा, तभी तो खेलेगा।

राधा मेरे संग खेलेगा ? मेरी उँगली पकडकर घूमेगा ?

किशोर इतना ही नहीं। तेरा काम करेगा। प्यार से तुझे दीदी कहकर बुलाएगा। सब बात में तेरा कहना मानेगा।

राधा तब माँ ने ऐसा क्यों नहीं कहा ?

किशोर मा ने समझा होगा कि तू इतनी समझदार है कि यह ज़रा सी बात तुझे जरूर मालूम होगी। बताने की जरूरत ही नहीं।

रमेश अच्छा राधा ऐसा करो। मुन्ना तुम्हारा नन्हा-सा भैया है, न ?

राधा हाँ।

रमेश तो मे का सब रो। माँ को

फुर एगी तो ह किया

राधा (विस्मित होकर) मैं ? मुन्न का नाम मैं किया करूँ ?

किशोर क्यों नहीं ? क्या वह तेरा नन्हा-सा भाई नहीं है ?

राधा (ताली बजाकर) हाँ हाँ वह मेरा नन्हा-सा भैया है। मैं उसे अपने हाथ से दूध बिस्कुट खिलाऊँगी। पलने म झूला झुलाऊँगी। उगली पकड़-कर चलना सिखाऊँगी। माँ, ओ, माँ

बीना (अन्दर से ही) आई बेटी ! अभी आई। (बाहर आते हुए) क्या है राधा, बोल चिड़िया !

राधा माँ, दूध की शीशी हमे दो। हम मुन्ने को दूध पिलाएँगे।

बीना अच्छा, अच्छा, पिलाना। ले पहले तू कुछ खा ले।

राधा (उसका आँचल पकड़कर लटकते हुए) नहीं। पहले हम दूध की बोतल लाकर दो।

बीना देती हूँ, बाबा, देती हू। मेरा आचल तो छोड़।

रमेश छोड़ दो, राधा रानी ! चलो, तुम मेरे साथ चलो।

राधा (अचरज से) तुम्हारे साथ ? कहाँ ?

रमेश मेरे घर। यहा इस घर मे तो तुम नही रहोगी न ?

राधा आप बड़े नटखट हैं। जाइए, हम आपसे नही बोलते।

बीना न बोलना, री ! मुझे तो छोड़।

किशोर (हसकर) अरे यह क्या, बावरी ! आँचल मे अपना मुख क्यो छिपा रही है ?

बीना भली चाचा भतीजी की लड़ाई हुई। बीच म, मेरा आचल मुफ्त मे फस गया।

रमेश मुफ्त में नही फसा, भाभी ! इस पर लगे काजल के ये दाग इस बात की खुली गवाही दे रहे हैं कि

अपने अधिकार मे कर लिया, किन्तु शशाक नरेन्द्रगुप्त ने छल से उसकी हत्या करा डाली।

हर्षवर्धन की आयु यद्यपि अभी केवल सोलह वर्ष की थी, किन्तु उसके हृदय मे अपार शौर्य था। अपने चारो ओर घुमड-घुमडकर घिरती विपत्तिया का उसने अतुल पराक्रम से सामना किया, तथा मालव और गौड के षडयन्त्र को ध्वस्त कर दिया।

राजनीति के विषम जाल मे फँसकर भी वह पारिवारिक स्नेह को नही भूला था। नवीन विचारा को ले, एक नवीन साम्राज्य का स्वप्न देखने वाले, उस युवा शासक ने, चितारोहण करती अपनी बहन के प्राणो की रक्षा कर, देश की नारियो के सम्मुख कर्तव्य का नया दीप जला दिया। उसके झिलमिल आलोक मे यह सत्य स्पष्ट हो उठा कि जिन्हे प्रगति के पथ पर चलना है, उन्हें अपना समग्र मनोबल एकत्र कर, रूढिया मे लिपटी गलित-जर्जरित, विकारग्रस्त परम्परा की आहुति देनी ही होगी।

[संगीत के स्वरा के साथ नूपुर छनक रहे हैं। जैसे-जैसे संगीत अधिक तीव्र हो प्रखर होता जाता है, नृत्य की छमछमाहट बढ़ती जाती है।]

आहुति

राज्यश्री (कडककर) ठहरो!

रूपलेखा (चौंककर) महादेवी!

राज्यश्री (गम्भीर स्वर म) नत्य व द कर दो, लेखा!

रूपलेखा (विनीत भाव से) अपराध जान सकूगी, दवी?

राज्यश्री अपराध? नही लेखा कभी कुछ अपराध नही कर सकती।

रूपलखा (दढ स्वर म) बिना किसी अपराध के महादेवी भी लेखा के नत्य की अवमानना नही कर सकती।

राज्यश्री तू सच कहती है, लेखा! आज तेरे नृत्य करते नयनो म विषाद के काले बादल घिर आय हैं, जो उमड उमड कर बरस जाने को आकुल याकुल हो रहे है। तब फिर तू ही कह दे—क्या नत्य पर से मेरा ध्यान हट जाना अस्वाभाविक है?

रूपलेखा महादेवी!

राज्यश्री सच कह दे लेखा! आज क्या सवाद सुन लिया है इन कानो न, जो ये नयन या बरसने को प्रस्तुत हो उठ है।

रूपलेखा कुछ भी नही, महादेवी!

राज्यश्री कब तक छिपायेगी लखा?

रूपलेखा (रुंधे स्वर म) मरी वाणा आज बोलने म असमथ है महादवी!

राज्यश्री वाणी भल ही मूक रह जाय, पर तेरे नयना न उसक मौन को अकारथ कर दिया है। बोल दे, लेखा! एसा

क्या बात है, जो इन हँसती आँखों में ये बादल घिर आये है ?

[सहसा रूपलेखा सिसक उठती है]

राज्यश्री अरे ! यह क्या ? तू तो रोने लगी ? लेखा

[रूपलेखा की सिकसिया और भी बढ जाती हैं]

राज्यश्री (घबराकर) क्या है, लेखा ? तू बोलती क्यो नही ? महाराज तो कुशल से है ? भाई हर्ष पर तो कुछ सकट नही आया ? भ्राता राज्यवर्धन पर किसी नए शत्रु ने धावा तो नही किया ?

रूपलेखा (सिसकी भरकर) न, पूछो, स्वामिनि ! मैं असमर्थ हूँ। वह बात मैं अपने मुख से न कह सकूगी।

राज्यश्री (गम्भीर स्वर में) तुझे कहना ही होगा, लेखा ! क्या तू चाहती है कि मेरा व्याकुल हृदय औरअधिक चिन्ताकुल हो उठे ? कि मेरे मानस पर घिरी शकाओ की ये घटाए उमड घुमडकर, मेरी शेष अवशेष, सुख-शान्ति को भी नष्ट विनष्ट कर डालें ?

[दोनो हाथो में अपना मुख छिपा रूपलेखा धीरे-धीरे सिसकती है।]

राज्यश्री (व्याकुल होकर) आज मेरे चारो ओर अग्नि जल रही है। पिता की मृत्यु हो गई। माँ ने सहमरण का पथ खोज लिया। भ्राता राज्यवर्धन युद्ध की दहकती लपटो में घिर गया। वह किशोर हर्ष, जिसकी अभी आयु की रेखाएँ भी नही फूटी, अपने नाजुक, कोमल हाथो से हिलते डगमगाते सिंहासन की डोर सभालने में कब तक समर्थ रहेगा ? कब तक मुझे धडकते हृदय से आर्यपुत्र के युद्ध से लौटने की प्रतीक्षा करनी होगी? कब तक

हाते समय जाना लेनी पडती है किसी शत्रु पत्नी को ब दी बनाते समय नहीं। नाओ, इधर, अपने दोनो हाथ।

[लाहे की हथकडी थनथना उठती है।]

राज्यश्री (कडककर) ठहर पामर! एक कदम भी आगे न बढाना। जानता नही मैं कौन हू!

सैनयनायक (अट्टहास) हा हा हा।

रूपलेखा अवश्य यह काई पागल है। नही तो किसमे इतना साहस है कि परम प्रतापी राज्य राजेश्वर गहवर्मा की पट्टमहिषी का ब दी बनाने की बात बोल सके!

सैन्यनायक उन्ही मालव नरेश वीरवर्मा सम्राट देवगुप्त के लौह-सैनिकों म, जिन्हाने पापी गहवर्मा के प्राण लिए।

राज्यश्री (चौककर) महाराज के प्राण ले लिए? महाराज का घात कर दिया गया? नही, नही ऐसा नही हो सकता। सनिक, तुम झूठ बोलते हो। ऐसा नही हो सकता।

[बोलते बालते उसका स्वर रुधन लगता है। स्वर क्षीण हाता जाता है, मानो वह बेसुध हो रही हो। उस कातर वाणी के ऊपर सनिका का प्रबल अट्टहास छा जाता है। नेपथ्य में करुण सगीत उभरता है।]

सैन्यनायक (गरजकर) विक्रम! बाध लो इन सबको।

[अनेक नारी-कण्ठ एक सग चीख उठते है। सगीत स्वर एकदम तीव्र होकर, एकाएक थम जाते है।]

श्रीरग स्थाण्वीश्वर की जय हो!

हष कहो, श्रीरग, क्या समाचार है?

श्रीरग (रुधे कठ से) महाराज!

रूपलेखा (अधीर स्वर मे) इतना दु ख न करें, महादेवी !

राज्यश्री (आह भरते हुए) आह ! कैसी विभीषिका है ! यह कैसी विडम्बना है भगवन् ! क्यो तूने मुझे काटों का यह स्वर्ण मुकुट पहना दिया ? क्या नहीं मुझे भी वन का वैभव दिया, फूलो का ताज दिया ? अपनी उस हरीतिमा जटित, पल्लव-आच्छादित कुटिया म, मैं सुख की नीद तो सोती ! मेरे दिन और मेरी रात, प्रिय हरिजनो की चिन्ता म आकुल-व्याकुल होकर छटपटाते हुए तो न बीतती। मेरा मन निराशा और दु खो की इन आँधियो मे तो न उडा करता। पूर्वजन्म मे, मैंने ऐसा कौन-सा पाप किया था, जो मुझे राजा की बेटी बनकर जन्म लेना पडा। राजा की वधू बन कर जीवन बिताने को विवश होना पडा।

रूपलेखा (रुँधे कठ से) ऐसा न कहिए, महादेवी !

राज्यश्री और तू ? लेखा मेरी सखी, मेरे शैशव की सहचरी होकर भी अग्नि की उन धधकती लपटो को और अधिक दहका रही है ! अपने इन गरम-गरम आँसुओं से बार-बार उनम नई आहुति डाल रही है ! क्या यही तेरा प्यार है ? क्या यही तेरा अपनापन है ? क्या इसी तरह तू अपनी स्वामिनी को अपने प्यार क बधन म बाँध लेना चाहती है ?

[द्वार खुलने का भारी शब्द। सैनिकों के भारी जूतो का कोलाहल]

राज्यश्री (कठोर स्वर म) कौन हो तुम ? बिना सूचना दिए हमारे सम्मुख उपस्थित होने का दुस्साहस तुमने कैसे किया ?

सैन्यनायक (हल्के से हँसकर) साम्राज्ञी की सेवा म उपस्थित

होने समय आना लेनी पन्ती है किसी शत्रु पत्नी का ब न्दी बनाते समय नही। नाओ, इधर, अपने दोनो हाथ।

[लोहे की हथकडी झनझना उठती है।]

राज्यश्री (कडककर) ठहर पामर! एक कदम भी आगे न बढाना। जानता नही मै कौन हू!

सन्यनायक (अट्टहास) हा हा हा।

रूपलेखा अवश्य यह कोई पागल है। नही तो किसमे इतना साहस है कि परम प्रतापी राज्य-राजेश्वर गहवर्मा की पट्टमहिषी को ब दी बनाने की बात बोल सके!

सन्यनायक उ ही मालव नरेश वीरवर्मा सम्राट देवगुप्त के लौह-सनिका मे, जि होने पापी गहवर्मा के प्राण लिए।

राज्यश्री (चौककर) महाराज के प्राण ले लिए? महाराज का घात कर दिया गया? नही, नही एसा नही हो सकता। सैनिक, तुम झूठ बोलते हो। ऐसा नहीं हो सकता।

[बोलते बोलते उसका स्वर रुधने लगता है। स्वर क्षीण होता जाता है, मानो वह बेसुध हो रही हो। उस कातर वाणी के ऊपर सैनिको का प्रबल अट्टहास छा जाता है।
नपथ्य मे करुण सगीत उभरता है।]

सन्यनायक (गरजकर) विक्रम! बाध लो इन सबको।

[अनक नारी-कण्ठ एक सग चीख उठते है। सगीत स्वर एकदम तीव्र होकर, एकाएक थम जाते हैं।]

श्रीरग स्थाण्वीश्वर की जय हो!

हर्ष कहो, श्रीरग क्या समाचार है?

श्रीरग (रुधे कठ से) महाराज!

हर्ष (गम्भीरतापूर्वक) तुम राजदूत हो श्रीरग। विचलित होना तुम्हे शोभा नही देता।

श्रीरग प्रियदर्शी सम्राट कितना अच्छा होता, यदि यह क्लेशकारी समाचार सुना पाने से पूर्व, मेरे ये प्राण इस देह से छूट गए होते।

हर्ष (अधीरतापूर्वक) भावुक न बनो, श्रीरग। जो कुछ कहना है शीघ्र कहो।

श्रीरग (कापते स्वर मे) युद्ध मे शशाक नरेन्द्र वर्मा की विजय हुई। हमारे महाराज राज्यवर्धन का छल कौशल से घात कर दिया गया।

हर्ष हा! भैया!

श्रीरग इस तरह अधीर न हो, देवपुत्र! धैर्य रखें। साम्राज्य की इस डगमगाती नौका की पतवार अब आपके ही हाथो मे है।

हर्ष (कापकर) उफ! यह जीवन कितना कटु है! इसमे अभी और न जाने क्या क्या होने को है!

श्रीरग साहस से काम लीजिए सम्राट! थानेश्वर की प्रभा पुज राजकुमारी का तिमिराच्छन्न भाग्य भी अब आपके ही अधीन है।

हर्ष (घबराकर) श्रीरग सम्राट् गृहवर्मा सब भाँति समर्थ हैं। उनके रहते, तुम्हे ऐसी बात नही कहनी चाहिए।

श्रीरग नही कहना चाहता था, देव, किन्तु कहे बिना अन्य कोई उपाय भी तो नही। मौखरि-नरेश ने वीर गति पाई। शत्रु सैनिक साम्राज्ञी को बन्दी बनाकर ले गए।

हर्ष (दोनो हाथो मे अपना मुख छिपाकर) उफ! यह मैं

क्या सुन रहा हूँ ! यह कैसा हृदय विदारक समाचार है ! क्या यह सच है, या कोई भीषण सपना है ? मैं स्वस्थ हू, या मेरा मस्तिष्क विकृत हो गया है ? क्या मेरा सिर चक्कर खा रहा है ? मेरी आँखो के आगे अ धकार सा छाता जा रहा है

श्रीरग (घबराकर) महाराज ! महाराज ! अरे ! केतन, पुष्पक, दौडकर आओ, हमारे सम्राट मूच्छित हुए जा रहे हैं। जल लाओ चवर अरे, जल

हर्ष (साहस समेटकर) कौन मूच्छित हो रहा है ? हर्ष ? नहीं। ऐसा कदापि नही हो सकता। शत्रु युद्धभूमि मे विजयपताका फहराता रहे, और हर्ष मूच्छित हो महलो मे लोटता रहे ? थानेश्वर की राजकुमारी व दी घर म प्यासी पडी तडफडाती रहे,और हर्ष अपने अग पर शीतल चदन जल छिडकडाता रहे ? नही। ऐसा नही हो सकता। यह कदापि सम्भव नहीं। हटो, हट जाओ मेरे सामने से।

श्रीरग प्रियदर्शी सम्राट, धीरज रखिए। आप ही इस भाँति अधीर होगे तो हम कौन धीरज बँधाएगा।

हर्ष अधीर ? हा, हा, हा ! हिमालय भी कभी अधीर होता है, श्रीरग ? आज धीरज तो उन दस्युआ को खोना है, जिन्होने मेरी बहन की देह को स्पश करने का दुस्साहस किया है। अधीर तो उन पामर कायरो को होना है, जिन्होने मेरे वीर भाई के प्रति विश्वास-घात किया है।

श्रीरग महाराज !

हर्ष सुनो, श्रीरग, तुम भी सुनो, केतन, पुष्पक तुम तीनो को साक्षी बनाकर आज मैं पिता की पुनीत समाधि

हर्ष (गम्भीरतापूर्वक) तुम राजदूत हो श्रीरंग। विचलित होना तुम्हें शोभा नहीं देता।

श्रीरंग प्रियदर्शी सम्राट, कितना अच्छा होता, यदि यह क्लेशकारी समाचार सुनाने से पूर्व, मेरे ये प्राण इस देह से छूट गए होते।

हर्ष (अधीरतापूर्वक) भावुक न बनो, श्रीरंग। जो कुछ कहना है, शीघ्र कहो।

श्रीरंग (काँपते स्वर में) युद्ध में शशांक नरेन्द्रवर्मा की विजय हुई। हमारे महाराज राज्यवर्धन का छल कौशल से घात कर दिया गया।

हर्ष हा! भैया!

श्रीरंग इस तरह अधीर न हों देवपुत्र! धैर्य रखें। साम्राज्य की इस डगमगाती नौका की पतवार अब आपके ही हाथों में है।

हर्ष (काँपकर) उफ! यह जीवन कितना कटु है! इसमें अभी और न जाने क्या क्या होने को है!

श्रीरंग साहस से काम लीजिए, सम्राट! थानेश्वर की प्रभा पुंज राजकुमारी का तिमिराच्छन्न भाग्य भी अब आपके ही अधीन है।

हर्ष (घबराकर) श्रीरंग सम्राट ग्रहवर्मा सब भाँति समर्थ हैं। उनके रहते, तुम्हें ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

श्रीरंग नहीं कहना चाहता था, देव किन्तु कहे बिना अन्य कोई उपाय भी तो नहीं। मौखरि-नरेश ने वीर गति पाई। दस्यु सैनिक साम्राज्ञी को बंदी बनाकर ले गए।

हर्ष (दोनों हाथों में अपना मुख छिपाकर) उफ! यह मैं

क्या सुन रहा हूँ ! यह कैसा हृदय विदारक समाचार है ! क्या यह सच है, या कोई भीषण सपना है ? मैं स्वस्थ हू, या मेरा मस्तिष्क विकृत हो गया है ? क्या मेरा सिर चक्कर खा रहा है ? मेरी आँखो के आगे अन्धकार सा छाता जा रहा है

श्रीरग (घबराकर) महाराज ! महाराज ! अरे ! केतन, पुष्पक, दौडकर आओ, हमारे सम्राट मूच्छित हुए जा रहे हैं। जल लाओ चवर अरे, जल

हर्ष (साहस समेटकर) कौन मूच्छित हो रहा है ? हर्ष ? नही। ऐसा कदापि नही हो सकता। शत्रु युद्धभूमि मे विजयपताका फहराता रहे, और हर्ष मूच्छित हो महलो मे लोटता रहे ? थानेश्वर की राजकुमारी, बन्दी घर म प्यासी पडी तडफडाती रहे,और हर्ष अपने अग पर शीतल चदन जल छिडकडाता रहे ? नही। ऐसा नही हो सकता। यह कदापि सम्भव नही। हटो, हट जाओ मेरे सामने से।

श्रीरग प्रियदर्शी सम्राट धीरज रखिए। आप ही इस भाति अधीर होगे, तो हम कौन धीरज बँधाएगा।

हर्ष अधीर ? हा, हा, हा ! हिमालय भी कभी अधीर होता है, श्रीरग ? आज धीरज तो उन दस्युओ को खोना है, जिन्होने मरी बहन की देह को स्पर्श करने का दुस्साहस किया है। अधीर तो उन पामर कायरो को होना है जिन्होने मेरे वीर भाई के प्रति विश्वास-घात किया है।

श्रीरग महाराज !

हर्ष सुनो, श्रीरग, तुम भी सुनो, केतन, पुष्पक तुम तीनो को साक्षी बनाकर, आज मैं पिता की पुनीत समाधि

की शपथ खाकर कहता हूँ। जब तक थानेश्वर की सीमा ब्रह्मपुत्र के पार न पहुचा दूगा मैं शैया पर पर न रखूगा। जब तक मैं शत्रु का धूलि धूसरित न कर दूगा मेरे शूरवीर-सनिक आँधी बन, धरती पर धूल के समान उडते रहगे।" विकराल आँधी के समक्ष, प्रकृति की समस्त सत्ता नत हो, शीश झुका दती है। मेरे सैनिको के सम्मुख, विश्व की काई भी सत्ता सिर न उठा सकेगी। जाओ तुरन्त जाओ अविलम्ब युद्ध की तयारी करो।

श्रीरग (उत्साहभरे स्वर मे) जो आज्ञा, महाराज!

[युद्ध के नगारे बज उठते ह। धीम धीम, फिर जोर से। ध्वनि धीरे धीरे दूर जाने लगती है।]

श्रीरग उत्तरापथेश्वर प्रियदर्शी सम्राट श्रीहृप की जय!

हृप आओ, श्रीरग। आज हम बहुत प्रसन्न हैं।

श्रीरग सेवक कारण जान सकेगा सम्राट्?

हृप आज प्रस्थान का दिन है श्रीरग। हमारी चतुरगिणी सेना टिड्डी दल सी शत्रु देश पर छा जान को आतुर है। अपने शूरवीरो का प्रबल उत्साह देख हमारे अन्तर्मानस म उत्साह का सागर लहरा रहा है। आज हमारे अन्तप्रदेश म सौ सौ सूर्यों का आलोक बिखर रहा है, लक्ष लक्ष चन्द्रमा की चाँदनी छा रही है।

श्रीरग (रुधे कठ से) यह श्रीरग बडा ~ , महाराज!

हृप (वि[illegible] [illegible]ी भी क्या [illegible]

श्रीरग जब [illegible] न होते है [illegible] समा-

चार [illegible] हाराज [illegible]

प्रस [illegible] पडता

ज

है सखे ! मनुष्य का सुख मानो विधि से देखा नही जाता। आज क्या नवीन समाचार है ?

श्रीरंग (रुँधे स्वर म) विधि न मुझे इस योग्य क्यो नही समझा कि कभी तो मैं मगलकारी समाचार ला सकूँ ! क्या वह सदा मुझे अशुभ समाचारो का वाहक बना देने को प्रस्तुत रहती है।

हर्ष (दुखी मन से हलके-से हँसकर) समाचार सुखदायी नही, यह कहकर मेरा आधा दुख तो तुम पहले ही छीन लेते हो, मित्र ! बोलो क्या बात है ?

श्रीरंग देवी राज्यश्री कारागार के बंधनो से छूटकर भाग गई, उनका कही पता नही।

हर्ष (अत्यन्त विस्मित हो) क्या कहा ?

श्रीरंग जी हाँ सम्राट, महादेवी की चतुराई ने बंदीगृह के तालो की सार्थकता को व्यर्थ सिद्ध कर दिया वे न जाने कहाँ जा छिपी है। हमारा अनुमान है कि उनकी प्रमुख सहचरी रूपलेखा उनके साथ है।

हर्ष (आश्चर्य से) परन्तु वह जाएगी कहाँ ? उसे तो यही आना था। कारागृह से निष्कृति पा लेने पर उसका पितृ गृह ही तो उसके लिए एक मात्र सुरक्षित स्थान था।

श्रीरंग महाराज का कथन सत्य है। देवी राज्यश्री को यही आना चाहिये था। परन्तु न जाने क्यो, वे यहाँ न आ कर किसी अज्ञात स्थान म जा छिपी है। हम अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उनकी पूरी खोज कर रहे हैं।

हर्ष उफ ! राज्यश्री ! यह तूने क्या किया ! राजकुमारी होकर, कहाँ तू काँटो म भटक रही है। मेरे पास क्यो नही आई, बावरी ! क्या तुझे विश्वास नही

था कि तरा भाई तेरी रक्षा कर सकेगा ?

श्रीरग इस भाति अधीर न हो, सम्राट !

हर्ष (रुँधे कण्ठ स) आज मैं रो देना चाहता हू, श्रीरग ! जसे प्यासी धरती के शुष्क अधरा से उठती आहा से विदग्ध हो, गगन अविरल धाराओ मे ढुलक पडना चाहता है, वस ही आज मैं भी हृदय मे आलोडित सन्ताप को सहस्रो धाराओ म व॰ा दना चाहता हूँ।

श्रीरग सम्राट !

हर्ष उफ ! मेरी बहन आज अनाथा की तरह धरती पर न जाने कहाँ भटक रही है ? सूयवशीय प्रभाकर सम्राट प्रभाकरवद्धन की पुत्री आज निराश्रिता है। स्वनाम धय नरेश गहवर्मा की पट्टमहिषी आज गहविहीन हो।

श्रीरग (अधीरतापूवक) ऐसे वचन न वोलें, महाराज ! आपके रहते कौन मूढ़ महादेवी को निराश्रिता कहने की मूखता कर सकेगा ?

हर्ष न कहने से सच बात मिथ्या नही हो जाती, भद्र ! निश्चय ही राजकुमारी मुझ अपना नही समझती, पराया मानती है, नहीं तो क्या वह मेरे पास न आकर इस भाति अज्ञात म खो जाती।

श्रीरग महादेवी के प्रति एसे विचार मन म न लायें, सम्राट ! निश्चय ही उन्ह यहाँ आने की राह न मिली होगी। शत्रु क गुप्तचरो का मनवत जाल व्य न विछा है इसी कारण व कहीं अन्यत्र जा छिपा होगा।

हर्ष नहीं। एसी बात नहीं है श्रीरग। जो कारागार की लौह शृखलाओ से भयभीत नहीं हुई, वह मिट्टी के पुतला म क्या डरगी ? मुझे ता किसी और ही बात

का भय है।

श्रीरंग — किस बात का, देव ?

हर्ष — वह सती हो जाना चाहती है। निश्चय ही वह जानती है कि मैं बाधा डालूंगा इसीलिए

श्रीरंग — कदापि नहीं, सम्राट। हमारी राजकुमारी इतनी कायर नहीं कि ऐसे कायरतापूर्ण विचारों को अपने मन में लाएँ। आपके लिए ऐसा सोचना भी अनर्थ है।

हर्ष — नहीं, श्रीरंग! आज इस बात को न सोचना ही अनर्थ होगा। वास्तव में यही बात है। वह सूर्यवंशीय कुल की सन्तान है। उसकी देह में, अपने पिता पितामहों का रक्त लहरा रहा है। अपनी माता का दृष्टान्त उसके सामने है। अब उसके मन में जीवन की इच्छा शेष नहीं रही। निश्चय ही, वह जीवित ही मृत्यु को अपना लेना चाहती है।

श्रीरंग — (दृढ़ स्वर में) ऐसा नहीं हो सकेगा, देव! महादेवी कुछ अनर्थ कर सकें, इससे पूर्व ही हम उन्हें खोज लेंगे।

हर्ष — तुम्हारी सामर्थ्य पर मुझे विश्वास है, भद्र! परन्तु अपनी बहन के दृढ़ निश्चयी स्वभाव को भी मैं पहचानता हूं। यदि उसको पुनः पाना है, तो उसकी खोज में मुझे स्वयं ही जाना होगा।

श्रीरंग — (विस्मित होकर) अनुसंधान की रीति हमने सीखी है सम्राट आपको उसका ज्ञान नहीं। आपका जाना निष्फल ही नहीं, व्यर्थ भी होगा। हमारे रहते आप क्यों कष्ट करेंगे ?

हर्ष — बहन को पाने का प्रयास भी क्या भाई के लिए कष्ट हो सकता है, श्रीरंग? जाओ, बन्द कर दो युद्ध की इन तैयारियों को।

श्रीरग सम्राट !

हर्ष जाओ श्रीरग, इस भांति मरी ओर देखत खड़े न रहो। स्थगित कर दो सेना का प्रयाण। शत्रु कहीं भागा नही जा रहा है, शपथ फिर भी पूरी की जा सकती है किन्तु बहन का जीवन यदि खो गया, तो इस जन्म म, वह फिर कभी न मिल सकेगी।

श्रीरग जी हाँ, आपका यह कथन तो सत्य है, सम्राट !

हर्ष (अत्यन्त अधीर हो) अरे ! तुम अभी तक यहीं खड़े हो ? जाओ, जल्दी करो। कुछ चुने हुए सनिको को लेकर मरे पीछे पीछे आओ। मैं जा रहा हूँ।

श्रीरग ठहरिए, सम्राट ! इस तरह निता न अकेले न जाइए।

हर्ष मैं अकेला नही, मेरी बहन की स्मृति मेर साथ है।

श्रीरग परन्तु पदल

हर्ष पदल नही, म दढ आशा के अश्व पर सवार हू।

श्रीरग किन्तु आपन कभी नगी धरती पर पर नही रखा। कुश कटको से आपके पैरो म छाले पड जाएगे, सम्राट।

हर्ष वह तो अच्छा ही होगा। हृदय का उत्ताप उनकी राह ढुलककर बाहर वह जाएगा।

श्रीरग ठहरिय, सम्राट ! सुनिय

हर्ष नही श्रीरग ठहरने का अवकाश नही सुनने का समय नही। मैं जा रहा हू। जिस साथ आना हो वह मेरे पीछे-पीछे आ जाए।

श्रीरग समस्त थानश्वर आपक सग है, सम्राट ! महादे.. राज्यश्री केवल आपकी ही बहन नही व हमारी भी कृपालु बहन हैं। व हमारी स तानो की वात्सल्यमयी माता हैं। हम पूरी तयारी स उनकी खाज म

हर्ष इधर तुम तैयारी करते रहो, उधर उसकी चिता के शोले भी ठंडे पड़ जायेंगे। हटो, हट जाओ। छोड़ दो मेरी राह। मुझे जाने दो।

श्रीरंग महाराज! उफ! चले गए? हमें भी शीघ्र जाना चाहिए। अभी, तुरन्त, केतन पुष्पक

[तीव्र संगीत में उसका स्वर डूब जाता है]

रूपलेखा महादेवी!

राज्यश्री क्या?

रूपलेखा एक बात कहूं, महादेवी!

राज्यश्री बोल न?

रूपलेखा मैं भली भांति पता लगा चुकी हूँ। दस्यु देवगुप्त के गुप्तचर निराश होकर लौट चुके हैं। चलिए, अब घर लौट चलें। विलम्ब करने से कुछ लाभ नहीं।

राज्यश्री (कुछ सोचते से स्वर में) तू ठीक कहती है, लेखा! विलम्ब करने से अब कुछ लाभ नहीं। मैं भी घर लौट जाना चाहती हूँ। मृत्यु से पूर्व, एक बार फिर सहोदर भाई के भोले मुखड़े को निरख लेना चाहती हूँ। परन्तु

रूपलेखा परन्तु क्या, महादेवी?

राज्यश्री यदि यदि हर्ष ने मेरे कर्तव्यपालन में बाधा डाली तो

रूपलेखा ऐसी शंका न कीजिये, महादेवी! हमारे महाराज वीर हैं कायर नहीं। वे कदापि आपके कर्तव्य पथ में रोड़ा बनकर न अड़ेंगे।

राज्यश्री तू नहीं जानती, लेखा। वह बचपन का हठीला है। माँ जब सहमरण के लिए प्रस्तुत हो उठी थी, उसने उनकी राह रोककर कहा था— किसका अनुकरण

कर, तुम यह गर्हित राह अपनाने जा रही हो, माँ ? क्या तुम नहीं जानती कि तुम किसकी माँ हो किसकी पत्नी हो ! राम की माँ ने, या अभिमन्यु की पत्नी ने, क्या इस राह को अपनाया था, जो तुम इसे आलिंगन कर लेने को प्रस्तुत हो उठी हो ?

रूपलेखा मुझे स्मरण है, महादेवी।

राज्यश्री मा के सामने उस वीर की एक नही चली थी। उसकी बाल हठ पर हँसकर उसका मुख चूम व हँसती हँसती चिता पर चढ़ गई थी। पर मैं छोटी हू। यदि उसने हठ ठान ली तो मैं उससे कैसे जीत सकूगी ?

रूपलेखा कायर न बनियें, महादेवी।

राज्यश्री कायर मैं नही बनना चाहती लेखा। जीवित लपटो का आलिंगन कर, मैं आज ही पति के समीप पहुँच जाना चाहती हू पर अन्त समय एक बार भाई का मुख देख लेने का मोह मेरे परो को पीछे खींच रहा है।

रूपलेखा यह मोह नही, आपका कर्तव्य है जो आपको पुकार रहा है। तनिक सोचिये तो सही—पिता गये, मा गई भाई भी गया। ससार म आपके सिवा उनका अब कौन है ! इस किशोरावस्था म यदि आप भी उन्हे यूँ निरा-धार छोड़कर चली जायेंगी, देखभाल कौन

[करुण संगीत में उसके स्वर डूब जाते हैं]
[दृश्य-परिवर्तन]

हर्ष आह ! घूमते घूमते कितने दिन बीत गए । धरती का कण कण खोज डाला, पर बहन का पता न लगा । कहाँ होगी आज वह ? कहाँ सोती होगी क्या पहनती होगी, क्या खाती होगी ? किस प्रकार, कैसे उसके दिन बीत रहे होंगे ?

धीरग अधीर न हो, महाराज ! दुःख के दिन सदा नहीं रहते । क्लेश की यह काली रात अब मिटने ही वाली है ।

हर्ष नहीं, धीरग, यह रात अब कभी न जायेगी, कभी न मिटने पाएगी । मेरे जीवन की भोर अनन्त कालिमा में डूब चुकी है । अपने जीवन के शेष दिन, अब मुझे दुःख की इस अँधियारी में ही भटक-भटककर बिताने होंगे ।

धीरग ऐसा न कहें, देव !

हर्ष कैसे न कहूँ, भद्र ! यही बात तो दिन रात मेरे तन मन में कसकती रहती है । इसने मेरे नयनों की नींद छीन ली है, मेरी पलकों का विश्राम हर लिया है । मुझे लगता है, मानो मेरे जीवन में, अयश के अतिरिक्त अब किसी भी वस्तु के लिए स्थान शेष नहीं । मानो दुर्भाग्य के अतिरिक्त अब मेरा और कोई भी संगी नहीं । मेरा मन दिन रात रो रोकर मुझसे पूछा करता है— इस नरक तुल्य जीवन में अब क्या यह अवसादपूरित दुर्भाग्य ही शेष है ? इसका क्रूर कराल नूतन आघात, जो कुछ अवशेष है, उसे भी निःशेष कर डालेगा, या कभी मेरे मन की टिमटिमाती आशा पूरी भी हो सकेगी ? अब मुझे जीवन भर अकेले ही भटकना होगा

या मैं कभी बहन का मुख फिर देख भी सकूँगा।

श्रीरग धैर्य रखिये, देव! महादेवी का पता शीघ्र ही मिलेगा।

हर्ष यह तो तुम नित्य कहते हो, श्रीरग। पर वह दिन कब आयेगा? जब आशा की डोर टूट जायेगी, जीवन का ज्योतिर्मय दीप बुझ जायेगा? नहीं, नहीं चलो, उठो अब। बहुत विश्राम कर लिया।

श्रीरग ठहरिये, सम्राट्! आपके पैरों से लहू निकल रहा है। पुष्पक जल लाने गया है। एक बार उन्हें धो देने से

हर्ष लहू की इन बूंदों को तू धोयेगा? हा हा हा! ये लहू की बूंदें नहीं श्रीरग, ये मेरे मानस के आँसू हैं। जल की बूंदों से ये न धुल सकेंगे। इन्हें तो राज्यश्री की मधुर हंसी ही धोकर मिटा सकेगी। आओ, उठो। पुष्पक पीछे आता रहेगा।

श्रीरग महाराज, तनिक रुकिए, सुनिए, एक पल तो ठहरिए।

हर्ष तुम रुको, ठहरो। पुष्पक को लेकर आना। मैं आगे जाता हूँ।

श्रीरग (पुकारकर) महाराज! उफ! चले गए क्या दशा हो गई है हमारे सम्राट् की! भूख नहीं, प्यास नहीं, नींद नहीं पलभर को भी विराम नहीं, दिन रात अहर्निश चलते रहना ही मानो उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य बन गया है। यदि सच ही देवी राज्यश्री इस जग से नाता तोड गई हो, तो क्या होगा? हे प्रभो! कुशल करना। वर्धन वंश के इस अन्तिम दीप को बुझा न देना। प्रजा की कामना पूर्ण करना। उसकी वात्सल्यमयी माता उसे लौटा देना। यह युगल ज्वलन्त ज्योति युगों युगों तक ज्योतित होती रहे, अपनी प्रभा से युगों तक विश्व को आलोक-दान

देती रहे।

[हलके सगीत द्वारा दृश्य परिवतन]

राज्यश्री यह कैसी प्रभा है, कैसा आलोक है! आज कौन तिथि है, लेखा ?

रूपलेखा आज पूर्णिमा है, राज्य राजेश्वरी।

राज्यश्री (कुछ विस्मय से) आज पूर्णिमा है।

रूपलेखा *हाँ, महादेवी, आज गगन में मेला लगा है। पूर्ण चन्द्र की प्रभा चहुँ ओर छिटक रही है। नन्हे नन्हे तारे अपनी उज्ज्वल ज्योति विकीर्ण करते मंगल मना रहे है। आकाश गंगा, पथ भूलों को राह दिखा रही है। चलिए, देवी! हम भी इस पुण्य तिथि को प्रस्थान की तिथि बना लें। आज ही, इसी रात, थानेश्वर की ओर प्रयाण कर दें। अब विलम्ब करने से लाभ ही क्या है ?*

राज्यश्री तू ठीक कहती है, लेखा! अब विलम्ब करने से कुछ लाभ नहीं। ला, चिता चिन दे। आज महापर्व है। यही महाप्रस्थान की शुभ तिथि है।

रूपलेखा (सहसा चीखकर) महादेवी!

राज्यश्री (हलके से हँसकर) इतना भय क्यों ? उठ, अब देर न कर।

रूपलेखा मैं ऐसा न कर सकूँगी, स्वामिनी!

राज्यश्री क्या नहीं कर सकेगी ?

रूपलेखा अपने शैशव की सहचरी को, वर्धनवंशीया राजकुमारी को, मैं अपने हाथों अग्नि में न ढकेल सकूँगी। नहीं। यह महापातक मुझसे न हो सकेगा।

राज्यश्री (हलके से हँसकर) बावरी! नहीं जानती, वर्धन वंश की नारियाँ चिरकाल से अग्नि को अपनी परम-पुनीत

सहचरी मानती आई हैं। जननी यगुमति का शौय भी क्या तू भूल गई ?

रूपलेखा मैं भूली कुछ भी नही हूँ, महादेवी । परन्तु

राज्यश्री सत्य म शका को स्थान नही, लेखा । मा की याद कर। वैदेही के समान, उन्होंने पति के समक्ष ही ज्वलन्त ज्वाला का आलिगन किया था । उनकी निश्चयरूपिणी शिला से टकरा, हम सबके अश्रु छिन्न विच्छिन्न स हो गए थे । उनके उस उग्र आग्रह के समक्ष, समस्त प्रजा वग के आकुल अनुरोध धूल से उड गए थे। उनका वह सतेज शौय ही मेरे प्राणो म समा गया है, सखी !

रूपलेखा यह कथन आपके ही योग्य है महादेवी ! परन्तु एक बार शान्त चित्त से विचार तो कीजिए। अग्रज के आकस्मिक वध स महाराज यू ही उदभ्रा त हो रहे होगे । आपके चितारोहण से उनकी क्या दशा होगी ?

राज्यश्री (भय-विस्मय से) अग्रज का वध ? तू क्या कह रही है, लेखा ? क्या भाई राज्यवधन

रूपलेखा हाँ महादेवी ! उसी दिन, जिस दिन दस्यु आपको ब दी बनाने आए थे, उसी दिन मुझे यह समा चार मिला था । इसी कारण

राज्यश्री (सिसक उठती है) हाय ! यह मैं क्या सुन रही हू ? अभी मैंने यह क्या सुना ! हा, भाई ! गए ! तुम भी गए ? दुर्दैव न जाने और कौन कौन-से भीषण समा चार सुनाएगा अभी ! कसा है मेरा भाग्य! मानो कोई अखण्डित अटूट लौह शिला जिस पर दुर्दैवरूपी करालदण्ड बारम्बार प्रहार करता है, पर वह टूट नहीं पाती। उसकी प्रबल चोट स केवल लाल लाल दहकती चिगारी ही छिटकती है मैं आमूल भस्म नही

हो पाती।

रूपलेखा शोक करने से क्या होगा, महादेवी ! धीरज रखिए। रात्रि दिवस सा गतिमान सुख दुख का यह चक्र अपनी अविराम गति से निरन्तर घूमता ही रहता है। हसते हँसते इसका भार वहन करन म ही सच्चा शौय है।

राज्यश्री नही, लेखा, नही। मेरे मन म ववण्डर भूम रहा है। मेरे समक्ष कलकरूपिणी कालिमा रौद्र रूप रच, ताडव मे निरत हो उठी है। यह विषम विभीपिका, सम विभीपिका का ताप सह बिना शान्त नहो सकेगी। तू चिता का निर्माण कर अभी इसी क्षण। अब मैं पल भर का भी विलम्ब सहन नही कर सकती।

रूपलेखा (सिसककर) देवी !

राज्यश्री उठ, लेखा ! विलम्ब न कर। यह तेरी सखी के वचन नही, तेरी स्वामिनी का आदेश है। अविलम्ब आज्ञा-पालन तेरा कतव्य है।

रूपलेखा (रुधे स्वर मे) स्वामिनी की आज्ञा सेविका को शिरोधाय करनी ही पडेगी, महादेवी !

राज्यश्री उठ, मैं भी तेरी सहायता करती हू। हस दे, लेखा। आँसुओ की यह बरसात ब द कर दे। लकडिया गीली हो गइ, तो यह चिता जल भी न सकेगी।

रूपलेखा उफ ! महादेवी, तुम्हारी यह हसी, मेरे हृदय म फफोले डाल रही है।

राज्यश्री अरे ! देख उधर। वह मोटी-सी लकडी ह। चल, दोनो मिलकर, पहले उसे उठा लाएँ।

रूपलेखा महारानी, मेरे पैर लडखडा रहे हैं। भय स मरा हृदय काँप रहा है।

राज्यश्री और मरा हृदय हप से उछल रहा है। आज मैं अपने

कुल की परम्परा को अमर रखने के लिए बलिदान बन जाऊँगी देख लेखा, कितनी सु दर सेज है कितना सुन्दर है इसका आकार ! बस, अग्नि स्पर्श करने की देर है, इसकी विस्तृत ऊँचाइ लपककर गगन का छोर छू लेगी। मेरी व्याकुल आत्मा, उसी के सहारे

रूपलेखा (सिसककर) महादेवी !

राज्यश्री (हलके से हँसकर) रोती है ? बावरी ! आज रोने का अवसर नहीं, हँसने की बेला है। ला, चिता में अग्नि प्रज्वलित कर।

रूपलेखा महादेवी यह चिता यहीं बनी रहने दो। एक बार थानेश्वर के दर्शन कर आओ। फिर लौटकर

राज्यश्री (कड़ककर) रूपलेखा ?

रूपलेखा (रुँधे स्वर में) जो आज्ञा महादेवी मैं अभी अग्नि उत्पन्न करती हूँ।

राज्यश्री (विस्मय से) यह क्या ? तेरे हाथ काँप रहे हैं ! तेरी देह गिरी जा रही है ! तेरी आँखें आँसुओं से अंधी हो गई हैं ! छि ! ला चकमक मुझे दे।

रूपलेखा नहीं, यह मेरे वश की बात नहीं, महादेवी।

राज्यश्री मन को इतना कमजोर न बना। रुदन द्वारा इस मंगल-मय बेला को अशुभ न बना दे। आ, आज मेरा पूर्ण शृंगार कर दे। वधू वेश बना दे मेरा। भर दे मेरी माँग में सिंदूर की लाल प्रज्वलित रेखा। अक्षय अमिट सुहाग की साखी—जिसके सहारे मैं अपने खोए सुहागपन को पुनः पा सकूँगी।

रूपलेखा (कातर स्वर में) महादेवी !

राज्यश्री सुहाग कुछ ... होगा। ... ी करना होगा। ... ... मुझे

बुला रही हैं। वह कौन सती साध्वी है, जो इस पुनीत आमन्त्रण की उपेक्षा कर सके ? आज अरे ! यह क्या !

[दूर अश्व समूह के टापों की ध्वनि गूंज उठती है।]

रूपलेखा (कम्पित स्वर में) महारानी, यह तो किसी अश्व-समूह के आगमन की दौडती ध्वनि है। सुनिए ! वह तो इधर ही बढ़ती आ रही है।

राज्यश्री हां ! तू ठीक कहती है। सम्भवतः इस ज्योति शिखा ने, शत्रु के गुप्तचरों को हमारी उपस्थिति का आभास दे दिया है। चल, भाग चलें।

रूपलेखा चलिए महारानी, जल्दी कीजिए।

राज्यश्री परन्तु क्या भागकर भी हम उनसे बच सकेंगे ? हमारी कन्दरा यहां से कितनी दूर है, लेखा ?

रूपलेखा कुछ दूर तो अवश्य है महादेवी ! परन्तु हमें प्रयत्न तो करना ही होगा। आइये, झटपट दौड चलें।

राज्यश्री ठहर, लेखा। देख मेरी साडी कांटों में उलझ गई।

रूपलेखा मैं छुडाती हूँ। उफ ! कैसे कांटे हैं ! एक को छुडाओ, तो दूसरा आ उलझता है।

[दूर कहीं सैनिक घोष—महाराज की जय !]

रूपलेखा अरे ! दस्यु के गुप्तचर नहीं, ये तो अपने ही सैनिक हैं। लगता है, महाराज कहीं समीप ही आ पहुंचे हैं।

राज्यश्री (कम्पित स्वर में) हर्ष ? हर्ष आ गया ? उसने मेरा पता पा लिया ? अब वह अपने साथ मुझे लौटा ले जाने की हठ करेगा और और फिर नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। हर्ष मुझे कदापि जीवित नहीं पा सकता।

रूपलेखा ठहरिये महादेवी, एक पल तो ठहरिये। देखिए कांटा

कुल की परम्परा को अमर रखन के लिए वलिदान वन जाऊँगी दख लेखा, कितनी सु दर सज है कितना सु दर है इसका आवार ! वस, अग्नि स्पश करने की दर है, इसकी विस्तृत ऊँचाइ लपककर गगन का छोर छू लेगो। मेरी व्याकुल आत्मा, उसी के सहारे

रूपलेखा (सिसककर) महादेवी !

राज्यश्री (हलक से हँसकर) रोती है ? वावरी ! आज रोने का अवसर नही, हँसने की वला है। ला, चिता मे अग्नि प्रज्वलित कर।

रूपलेखा महादवी, यह चिता यही बनी रहन दो। एक बार थानेश्वर के दशन कर आओ। फिर लौटकर

राज्यश्री (कडककर) रूपलेखा ?

रूपलेखा (रु धे स्वर मे) जो आज्ञा, महादेवी मैं अभी अग्नि उत्पन्न करती हूँ।

राज्यश्री (विस्मय से) यह क्या ? तेर हाथ काँप रह है ! तेरी देह गिरी जा रही है ! तेरी आँखें आसुओं से अ धी हो गई हैं ! छि ! ला चकमक मुझे दे।

रूपलेखा नही यह मेरे वश की वात नही, महादवी।

राज्यश्री मन को इतना कमजोर न वना। रुदन द्वारा इस मगल-मय वेला को अशुभ न बना दे। आ, आज मरा पूण शृगार कर दे। वध वेश वना दे मरा। भर दे मेरी माग म सि दूर की लाल प्रज्वलित रखा। अक्षय अमिट सुहाग की लाली—जिसके सहार मैं अपन खोए सुहागघन को पुन पा सकूगी।

रूपलेखा (कातर स्वर मे) महादेवी !

राज्यश्री तुझसे कुछ नही होगा। सब कुछ मुझे स्वय ही करना होगा। देख य लपट किस तरह वाँह बढाकर मुझे

बुला रही हैं। वह कौन सती साध्वी है, जो इस पुनीत आमन्त्रण की उपेक्षा कर सके? आज अरे! यह क्या!

[दूर अश्व समूह के टापों की ध्वनि गूंज उठती है।]

रूपलेखा (कम्पित स्वर में) महारानी, यह तो किसी अश्व-समूह के आगमन की दौड़ती ध्वनि है। सुनिए! वह तो इधर ही बढ़ती आ रही है।

राज्यश्री हाँ! तू ठीक कहती है। सम्भवतः इस ज्योति शिखा ने, शत्रु के गुप्तचरों को हमारी उपस्थिति का आभास दे दिया है। चल, भाग चलें।

रूपलेखा चलिए महारानी, जल्दी कीजिए।

राज्यश्री परन्तु क्या भागकर भी हम उनसे बच सकेंगे? हमारी कन्दरा यहाँ से कितनी दूर है, लेखा?

रूपलेखा कुछ दूर तो अवश्य है महादेवी! परन्तु हमें प्रयत्न तो करना ही होगा। आइये, झटपट दौड़ चलें।

राज्यश्री ठहर, लेखा। देख मेरी साड़ी काँटों में उलझ गई।

रूपलेखा मैं छुड़ाती हूँ। उफ! कैसे काँटे हैं! एक को छुड़ाओ, तो दूसरा आ उलझता है।

[दूर कहीं सैनिक घोष—महाराज की जय!]

रूपलेखा अरे! दस्यु के गुप्तचर नहीं, ये तो अपने ही सैनिक हैं। लगता है, महाराज कहीं समीप ही आ पहुँचे हैं।

राज्यश्री (कम्पित स्वर में) हर्ष? हर्ष आ गया? उसने मेरा पता पा लिया? अब वह अपने साथ मुझे लौटा ले जाने की हठ करेगा, और और फिर नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। हर्ष मुझे कदापि जीवित नहीं पा सकता।

रूपलेखा ठहरिये महादेवी, एक पल तो ठहरिये। देखिए काँटा

का यह झाड़ आपके संग घिसट रहा है। मुझे इसे छुड़ा तो लेने दीजिए। उफ! इस तरह अधीर हो, आप किस ओर चलती जा रही हैं! (चीखकर) महादेवी!

राज्यश्री   हट जा, लेखा, मेरी राह छोड़ दे। हर्ष के यहां आने से पूर्व ही मुझे समाधि ले लेनी होगी।

रूपलेखा   (रुंधे स्वर में) स्वामिनि!

राज्यश्री   (क्रोध से) हट जा, लेखा। मेरे सामने से दूर हो जा।

रूपलेखा   (दृढ़ स्वर में) नहीं, लेखा नहीं हटेगी। वह आज अपराधिनी है। दण्ड प्रार्थिनी है। जो भी दण्ड मिलेगा, सहर्ष स्वीकार करेगी, किन्तु स्वामिनी को उलटे पथ पर जाने की राह न दे सकेगी।

राज्यश्री   नहीं हटेगी? जानती है इसका परिणाम?

रूपलेखा   (विनीत स्वर में) अवलम्बहीन भाई का एकमात्र सहारा हो तुम। महादेवी, उस अभागे भाई का यह एकमात्र अवलम्ब न छीनो। उसने अपनी जननी को चिता में क्षार होते देखा है। पिता और अग्रज की असमय ही अकाल मृत्यु वहन की है। क्या अब वह तुम्हें भी चिता में भस्म होते देख सकेगा? तुम्हें भी ज्वाला की भेंट होते देख, हताहत प्राण शून्य हो, क्या वह अपनी देह भी, इसी चिता में अर्पित न कर देगा?

राज्यश्री   (कातर स्वर में) लेखा, लेखा, मेरे कर्तव्य में बाधा न डाल, सखी। मुझे धर्म-संकट में न फंसा। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं—मुझे छोड़ दे। जाने दे। हर्ष यहां आ सकें उससे पूर्व ही मैं इस काया को भस्म कर दूं। प्रिय की स्मृति में इसकी आहुति दे दूं।

भिक्षु   (गम्भीर स्वर में) पुत्री, सावधान! कायर न बन। इस शरीर का जन्म, इस अपने ही द्वारा नष्ट करने

के लिए नही हुआ।

रूपलेखा आचाय, म विष्णुगुप्त की पुत्री रूपलेखा, आपको प्रणाम करती हूँ। भिक्षराज, आप तथागत के अनुयायी ह। मेरी स्वामिनी का सत्य कम पथ की राह सुझा दीजिए।

भिक्षु कल्याण हो, वत्से! तुम्हारी स्वामिनी तो स्वय ही बुद्धिमती ह। जगत मे कौन इतना बुद्धिमान है, जो आज उनका गुरु बन सके?

राज्यश्री मैं प्रभाकरवधन की पुत्री राज्यश्री आपको प्रणाम करती हूँ। स्वीकार करें, आचाय!

भिक्षु भगवान बुद्ध सदा तुम्हारा कल्याण करें। मुझे, भिक्षु को कुछ भिक्षा मिलेगी?

राज्यश्री मेरी असमथता को क्षमा करें, देव! यहाँ वन मे मैं आपको क्या भिक्षा दे सकूगी?

भिक्षु दाता का दानी मन तत्पर होना चाहिए, दान की कही कमी नही। वह वन हो या महल, भिक्षु का मनचाही *भिक्षा प्रत्यक स्थान पर दी जा सकती है।*

राज्यश्री बोलिय, भिक्षुराज, इस समय, इस स्थान पर मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ?

भिक्षु भिक्षु को सवा नही, भिक्षा चाहिए।

राज्यश्री वही कहिए, देव!

भिक्षु देवी, मुझे तुम्हारे जीवन की तुम्हारे प्राणो की भिक्षा चाहिए।

राज्यश्री ऐसी असम्भव बात बोलकर, मुझे धम सकट म न फँसाइए, भिक्षुराज!

भिक्षु धम सक्ट? हा! हा! हा! (अवज्ञापूवक हँसता है)

राज्यश्री (विस्मित हो) आप हँसते है ?

भिक्षु (एकाएक रुककर) सच है। यह हँसने की नही, रोने की बात है। भद्रे, आज तुम्हारा मन, यह किस महापातक की ओर उन्मुख हो उठा है ?

राज्यश्री (विस्मय से) महाराज ! धर्म को आप महापातक के नाम से पुकार रहे हैं ?

भिक्षु सच्चे धर्म को पहचानो, मा ! स्वय जीवित रहो, और दूसरो को जीवित रहने की प्रेरणा प्रदान करो। दया, धर्म, दान की अबाध सरिता म दीन दरिद्रो के दु खो को डुबा दो, बहा दो। इसी म तुम्हारा कल्याण है। यही वास्तव मे तुम्हारा सच्चा नारी धर्म है।

राज्यश्री (हलके से हँसकर) मुझे इस छलावे मे न भुलाइये, भिक्षुराज ! जो समर्थ हैं, शक्तिवान है, वे दया, धर्म, दान करें। अनेकानेक शुभ कर्म सम्पन्न करते हुए पुण्य-लाभ करे। मुझ अभागिनि के पास अब क्या है ? मेरे जीवन म तो अब कुछ भी शेष नही। मैं निरी सामर्थ्य हीन हो चुकी हू। आपके उपदेश अब मुझे इस ससार म न खीच सकेंगे।

भिक्षु (हँसकर) म तुम्हे ससार म खीचने की कामना क्यो करूँगा, वत्सले ! अग्नि जहा होती है, पतग वहा स्वय ही खिचकर चला आता है। अभी तुम बालिका हो, नव-कलिका हो, अभी तुम्हे खिलना है। जगत म अपना यश सौरभ फैलाना है। कौनसी शक्ति है वह, जो तुम्हे खिलने से रोक सकेगी ?

राज्यश्री आप भ्रम म हैं भिक्षुराज ! मैं नव-कलिका अवश्य हूँ, किन्तु डाल से टूटी हुई। फूल जब झडने लगता है, तो उसकी झरती पखडियो को बिखरने से कौन रोक

सकता है! सरिता जब सूखने लगती है, तब अजलि भर भर जल भरने स उसके प्राण शुष्क कूल पुन छलक नहीं उठत। मैं वही सूखी सरिता हूँ, वही ग धहीन मुरझाया फूल!

भिक्षु समझ गया, दवी! तुम जीवन से पलायन करना चाहती हो। तुम्हारी इच्छा है पराजिता बन जाने की।

राज्यश्री आचाय, आप ज्ञानी प्रतिष्ठित पुरुष है। एक पतिव्रता के प्रति ऐस वचन आपको शोभा नही देते। एक वीर क्षत्राणी को कायर कहन की मूखता आज तक कभी किसी मदप ने भी न की होगी।

भिक्षु क्रोध न करो, भद्रे! क्रोध म विवेक खो जाता है। मेरी बात ध्यान से सुनो।

राज्यश्री (लज्जित होकर) मैं क्षमा-प्रार्थिनी हूँ, दव!

भिक्षु मुझसे नही, अपने क्रोध स क्षमा मागो, आर्ये! सुनो मेरी बात सुनोगी?

राज्यश्री कहिये, आचाय!

भिक्षु जीवन स पलायन करना कायरता है। स्वय जीवित रहकर कम द्वारा पति की स्मृति को जीवित रखना उसकी प्राणहीन नश्वरकाम के सग जल मरन से कही अधिक श्रेष्ठ है।

राज्यश्री (विस्मय से) आचाय!

भिक्षु मृत्यु द्वारा कमब धन से त्राण अवश्य मिल जाता है, कि तु सग सग जीवित मनुष्य की स्मतिया भी विस्मृति म विलुप्त हो जाती हैं। आत्महनन द्वारा कायर ही इस जग से पलायन करते है वीरो का यह माग नही।

राज्यश्री (कातर स्वर म) आचाय!

भिक्षु सच्ची शूरवीरता इसी मे है कि विपत्ति बाधाओ को हँस हँसकर झेलते हुए दिवगत आत्मा की स्मृति को अमर बना दो। सच्चा पातिव्रत्य इसीमे है कि कुछ ऐसे काय कर जाओ जो युग युग तक तुम्हारे पति का नाम प्रकाश पुज नक्षत्रो की आलोकित आभा के समान दिग दिगन्त म विकीर्ण होता रहे। यही सच्ची पतिभक्ति है। यही सच्चा शौय है।

राज्यश्री (विस्मित होकर) यह कसा नूतन उपदेश आप दे रहे हैं आचाय! जो समस्त धम शास्त्रो के विरुद्ध है। चिर-पुरातन काल से चितारोहण द्वारा ही तो नारियो ने अपनी पति भक्ति की परीक्षा दी है।

भिक्षु ठहरो भद्रे! पुरातन-काल का नाम ले, उस कलकित न करो। दशरथ के स्वग गमन करने पर, क्या कौशल्यादि रानियो ने भी सग सग अग्नि-समाधि ली थी?

राज्यश्री (अक स स्वर म) जी नही, आचाय!

भिक्षु (गम्भीर स्वर में) विचार म काम लो, देवी! अग्नि-प्रवेश का दृष्टान्त देती जिस क्रिया द्वारा, आत्मशुद्धि का जो माग, ऋषि मुनियो ने निर्धारित और प्रतिपादित किया था, उसका सहज सत्य अथ समझो! पति की स्मृति म आहुति अवश्य दो, किन्तु अपनी देह की नहीं, अपितु पति द्वारा प्राप्त सुख जनित कामनाओ की अग्नि की भेंट अवश्य दो, पर अपने प्राणो की नही सधन्त ा पीडिता क दुग ् र को।

राज्यश्री (कातर वाणी म) आचाय!

भिक्षु समस्त भौतिक व प्राकृतिक जगत का ा सहज सरल नियम है, यह तो तुम्ह ज्ञात न हो, ानो अवार तुम

कदापि नही। भ्रम म फँसकर

राज्यश्री आप किस नियम की बात कर रहे है, आचाय ?

भिक्षु किसी भी वस्तु का विनाश करना अति सहज है किन्तु निर्माण अति कठिन। स्मरण रहे—नान धुरधर तुम्हारे मनीषिया ने पुष्पक विमान की तो कौन कहे, अग्निवाण तक का आविष्कार कर डाला। पर वे किसी ऐसे यत्र का आविष्कार न कर सके, जो पल भर को भी मृत देह म पुन श्वासा का सचार कर सके।

[दौडते घोडा की दूर से आती टापे पास आती जाती है।]

हष बहन बहन, राज्यश्री !

राज्यश्री भैया, भैया, हष !

रूपलेखा प्रणाम करती हू, सम्राट !

भिक्षु तुम सवका कल्याण हो ! तुम जगत के लिए कल्याण कारी बनो। तथागत सदा तुम्हारी रक्षा करें।

हष प्रणाम करता हू, आचाय !

भिक्षु उठो वत्स, तुम्हारा गौरव सदा अमर रहेगा। बहन का हाथ थाम लो। भिक्षु भिक्षा पा गया। इस मिलन की बेला उसके जाने का समय आ गया। बोलो सब—स्थाण्वीश्वर सम्राट हषवधन की जय ! मौखरि राज्य अधीश्वरी, तेजस्विनी, विपुल शौयशालिनी महादेवी राज्यश्री की जय !

[सैनिको के सम्मिलित कण्ठो का गम्भीर जयघोष]

साथी, हाथ बढाना

पात्र

शेखर	मैजिस्ट्रेट मि० कुमार का पुत्र
राधा	मि० कुमार के दिवगत मित्र की पुत्री
रेखा	शेखर की सहपाठिन
बिन्दु	शेखर की बहन
सरला ,	शेखर की मा
दीनू	शेखर का सेवक
श्रीधर	सभी के द्वारा भिन्न भिन्न रूप मे
पोस्टमन	मनोनीत साथी

पात्र परिचय

शेखर

शेखर धनी पिता का एकमात्र पुत्र है अत उसकी वेशभूषा साधारण लडका स कुछ भिन्न है घर म भी वह फूलदार मलीला बुशर्ट और क्रेपसिल्क की पतलून पहनता है। बालो को उसने यत्न स सँवारना सीखा है, और एक कघा उस की बुशर्ट की जेब म चमकता रहता है। वह अभी डाक्टरी की फाय इयर म पढ रहा है, अत घर और बाहर की सभी प्रकार की समस्याओ से मुक्त है। उसकी समस्या यदि है, तो बस केवल एक—उसकी इच्छा के विरुद्ध माँ और बहन उसे जिस लडकी के साथ बाध देना चाहती है, किस प्रकार उससे मुक्ति पाकर, वह स्वय अपने द्वारा मनानीत, सब प्रकार से अपने उपयुक्त अपनी समवयस्का और सहपाठिन लेडी डाक्टर से विवाह कर सके। उसके युवक हृदय म युवकोचित स्नेह की उद्दाम भावना है और है जीवनसगिनी के प्रति एक मीठी सी मनुहार—साथी हाथ बढाना

रेखा

फशन की बजाने वाली किसी कठपुतली के हाथो म यदि थर्मामीटर और गले म स्टेथस्कोप लटका दें, तो वही हमारी डॉक्टर रेखा है। क धो तक कटे हुए बाल, सूना माथा गहरी लाल लिपस्टिक गुलाबी पाउडर स रजित गाल और तीखे लाल रग की नेल पालिश उसकी विशेष विशेषताएँ है। ऊँची एडी के सण्डिल पहनकर जब वह चलती है, तो किसी चिडिया के समान फुदकती हुई प्रतीत होती है। उसकी आँखो का चश्मा, हर समय उसकी नाक पर ढुलकता रहता है, जिस उसे बार बार ठीक करना पडता है। गन्दगी से उसे चिढ है और उसके मन म बस एक ही लगन है

किस प्रकार उसके चारो ओर सब स्वस्थ और सबल रहे। दिन रात इसी चिता मे डूबी रहने के कारण ही शायद वह इतनी दुबली हो गई है कि दूर से देखने पर वह फूलदार सिल्क मे लिपटा एक गोल बास सी प्रतीत होती है। वह सच्चे अर्थों मे पूरी लेडी डाक्टर है। यदि उसमे कुछ कमजोरी है, तो बस केवल एक—बोलते समय बीच बीच म अग्रेजी शब्दो का प्रयोग किये बिना, वह अपने मनोभाव व्यक्त नही कर सकती। वास्तव म यदि उसका वश चले तो वह अपने मुख से प्रत्यक शब्द अग्रेजी भाषा मे ही निकाले, लेकिन हिदुस्तानी घरो म हि दी बोले बिना काम नही चलता, अत उसे मजबूर होकर हि दी बोलनी ही पडती है।

उसके युवक हृदय म भी आकाक्षाए हैं, कामनाए है। वह भी अपने साथी से हाथ बढाने की माग करती है, किन्तु एक भि न 'परपज' के लिए

बिन्दु

वह सीधी-सरल भारतीय किशोरी है। उसके लम्बे घने बाल है, अत उसे जूडा बनाने का शौक है। सु दर कला विभूषित जूडे म कु द कलिया की वेणी सजाकर, और माथे पर कुमकुम की छोटी-सी बि दी लगाकर, वह मानो किसी कुशल कलाकार की अद्वितीय कलाकृति-सी दृष्टिगत होती है। उसके सरल मुख पर सदा भोली मुसकान खिली रहती है और उसके चपल पर, सदा घर म इधर से उधर थिरकते रहते हैं। उसके किशोर मन मे जीवन के प्रति उमग है कोमल अनुभूतिया हैं अनजान साथी की चाह है। उसका अ तमन, उस अनजान अपरिचित की खोज है जो किसी दिन उसके घर के द्वार पर सेहरा बाधकर आ खडा होगा। वह भी उससे पुकार-पुकारकर कहना चाहती है आओ आओ साथी हाथ बढाना किन्तु भारतीय सस्कृति म पली होने क कारण, और माता पिता की पूण अनुवर्तिनी होने के कारण, उसके मन की यह विकल पुकार, मन म ही दब सी गई है

सरला

मजिस्ट्रेट मिस्टर कुमार की पत्नी सरला, एक कुशल गृहिणी और ममतामयी मा है। यद्यपि उसकी अवस्था लगभग चालीस वर्ष है, किन्तु वह अभी भी तीस वर्ष की महिला सी प्रतीत होती है। पति का मान और पद प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए उसे लिपस्टिक तथा पाउडर आदि का प्रयोग करना पडता है, किन्तु वह उसे बिल्कुल पसन्द नही। इसीलिए वह उनका इतना हलका प्रयोग करती है कि देखने वाले को पता ही नही चलता। सिल्क की हलकी रगीन साडी और उसीम मेल खाते सुन्दर ब्लाउज मे लिपटा उसका आकर्षक व्यक्तित्व बडा प्रभावशाली और भव्य जान पडता है। घर का गृहिणी पद सँभालने के लिए जिस कोमल शासन की आवश्यकता है, उसका उसे पूर्ण ज्ञान है, अत क्रोध म भी उसके मुख स कटु बात नहीं निकलती, जीवन म इतने मीठे कडवे अनुभव प्राप्त कर लेने के बाद उसके हृदय मे यह भावना विश्वास बनकर जम गई है कि "अन्त म भगवान सब कुछ ठीक कर देगा।" अत यदि कोई बात उसकी इच्छानुसार नही भी होती, तो वह सहज प्रसन्नता स उसे स्वीकार कर लेती है। किन्तु अपने घर के शासन मे किसी का हस्तक्षेप वह सहन नही कर सकती। ऐसा होने पर उसका क्रोध, उग्र रूप रख, मचल उठने को व्यग्र हो उठता है।

उसका उद्दाम यौवन बीत चुका है, शायद इसीलिए किशोर यौवन की भावनाओ को वह भली भाँति पहचानती है। वे ही चचल चपल भावनाए उसके लिए आज चिन्ता का विषय बनी हुई हैं। उसका विकल मन भी, आँसू भरी आँखो से, बारम्बार पुकार उठता है—साथी हाथ बढाना'। अपने लिए नहीं, अपनी दिवगता बाल सगिनी की बेटी राधा के लिए, जिसे उन्होने शैशव से ही अपनी कन्या के समान पाला है

श्रीधर

सुन्दर हसमुख नवयुवक है। काली बरौनिया स घिरी उसकी बडी-बड़ी सुन्दर आँखों स सदा वात्सल्य बरसता रहता है। उसकी मधुर वाणी

म गहन अपनापन और गहरी मिठास है। पल भर मे किसी अनजान अपरिचित को अपना कैसे बना लिया जाता है, यह उसे खूब आता है। उसके सरलतापूण व्यवहार मे, छल-कपट का कही कोई चिह्न नही।

पतलून शट की अपेक्षा उसे बगाली कुरते से ही विशेष प्रेम है, और खासकर घर मे उसे पाजामा-कुरता पहनकर घूमने में ही सुख मिलता है। उसके घुघराले बाल, हलके से बिखरे रहते हैं। कोई हठीली-सी लट, जब-तब माथे पर आ झूलती है, तो वह हलके से सिर झटक कर उसे हटा देता है।

वह सुदर है, और इस बात का उसे पूण ज्ञान है। उसकी चाल मे लापरवाही है, और अदा मे एक मस्ती। उसके व्यक्तित्व मे एक अनूठा सम्मोहक खिचाव है, कि जो कोई एक बार उसे देख लेता है, उसी का हो जाता है। उसके आगे पीछे रूप का मेला सा लगा रहता है। उसके माता-पिता, प्रिय परिजन, सभी मित्र-सबधी इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि शीघ्र से शीघ्र शुभ लग्न मे उसका विवाह कर दिया जाये, किन्तु वह स्वय अपने विवाह की ओर से एकदम निर्लिप्त है। उसकी लापरवाही भरी, मस्त निश्चिन्तता को देखकर कोई भी यह अनुमान लगाने मे समथ नही हो पाता कि उसके किशोर मन मे भी, कभी यौवन की वह उन्मत्त पुकार मचल उठती है या नहीं—साथी हाथ बढाना

दीनू

कुमार फैमिली की सेवा मे उसने जीवन के बयालीस लम्बे वष काट दिये हैं। अब इस घर का सुख-दुख ही उसका अपना सुख-दुख हो गया है। बाल सब खिचडी हो गये हैं, मूछो के बीच मे सफेद रेखायें पड गई हैं माथे की झुर्रियो म प्रौढता के चिह्न स्पष्ट हो उठे हैं, फिर भी उसके शरीर म युवाओ की सी शक्ति है। अपनी राधा बेटी से उसे कुछ विशेष स्नह है, और शायद इसी कारण, उसका पक्ष ले, वह कभी कभी भगवान् प्रायना कर बठता है—साथी, हाथ बढाना

राधा

भोली-भाली सरल-सी बालिका, जिसकी बडी-बडी काली कजरारी आखो म उदासी मानो समाकर रह गई है। घने काले बालो की दो लम्बी-लम्बी चोटिया उसकी पीठ पर झूमती रहती हैं। श्वेत स्वच्छ परिधान म वह वियोग पाप से शापित कोई तापस-कन्या सी प्रतीत होती है। मानो वह कोई शकुतला हो, जिसका दुष्यन्त छोडकर चला गया हो, और लौटकर आना भूल गया हो। कि तु थोडा-सा श्रृगार कर रगीन रेशमी परिधान पहन लेने पर, वह स्वग की अलौकिक सुदरी सी प्रतीत होने लगती है। उसके गोरे गोरे हाथो म भूलती, लाल हरी चूडियाँ, उस के व्यक्तित्व म चार चाद लगा देती है।

मेघदूत के यक्ष के प्रेयसी, गगन पर दूर से छाते बादलो को इस आशा से देखा करती होगी कि वे उसके लिए प्रिय का सन्देशा लाते होंगे, किन्तु राधा उनकी ओर इसी एकाकिनी आशा से देखती है कि वे उसके लिए कभी भूले भटके भी कोई सन्देशा न लायेंगे। वह भली भाति जानती है कि उसका प्रिय, दूसरे के पाश म बँध चुका है। उसके विकल मन की आशा, इस जीवन म अब कभी भी पूरी न हो सकेगी, फिर भी उसके निगूढ अन्तरतम म एक अव्यक्त आकुल सगीतमय पुकार समा-सी गई है, और उसके मूक अधर विकल हो मौन अव्यक्त स्वरो म, बरबस पुकार उठते है—साथी, हाथ बढाना

[शेखर का कमरा। कोने म ऊँचे दपणयुक्त, सुदर आधुनिक ड्रेसिंग टेबिल है, जिस पर शेविंग का सामान तथा कघा, ब्रश आदि युवकोचित शृगार की सभी वस्तुएँ यथास्थान रखी हैं। बाई ओर की दीवार के सहारे एक छोटा-सा बुकशैल्फ है। उसके समीप ही पढ़ने की मेज है। मेज पर टेबिल लैम्प के अतिरिक्त, टेलीफोन भी है। कापी पर पन खुला पडा है जैसे अभी कोई पढ़ते-पढ़ते उठ गया है।

मेज के आगे दीवार म एक दरवाजा है जो घर के अन्दर

खुलता है। उसके ठीक सामने दाइ ओर की दीवार म दूसरा दरवाजा है, जो बाहर के कमरे मे खुलता है। सामने की दीवार मे एक खिडकी है, जिससे सामने के लॉन मे लहराते पेड पौधो की झलक दिखाई दे रही है।

पलग पर मेजपोश के रगो से मेल खाता पलगपोश बिछा है। खिडकी-दरवाजो पर हलके रग के परदे है। कमरे की कोई भी वस्तु अस्त व्यस्त नही। सभी पर सुरुचिपूण हाथो से, यत्नकौशल-पूवक सवारे जाने की स्पष्ट छाप है।

पर्दा उठने पर, राधा बुकशल्फ पर झुकी किताबें सवार रही है। शेखर का गुनगुनाते हुए प्रवेश। वह ड्रेसिग टेबिल के सामने खडे हो, कघे से बाल सँवारता है। दपण म बुकशैल्फ पर रखे गुलदस्ते की प्रतिच्छवि पडती है। वह चौककर मुडता है। गुलदस्त की ओर तेजी से बढता है, और क्रोध भरे स्वर म नौकर को पुकारता है।]

साथी, हाथ बढ़ाना

शेखर (क्रोधपूर्वक) दीनू अरे ओ दीनू

दीनू (भागते हुए आकर, घबराया सा) जी सरकार!

शेखर (धमकाकर) यह गुलदस्ता यहाँ क्या रखा है? लाख बार तुझ से कहा

दीनू (हाथ जोड़कर) जी सरकार, मैंने नही रखा।

शेखर (और अधिक क्रोध से) फिर किसने रखा?

[दीनू सकपकाकर, राधा की ओर देखता है, और फिर घबराकर बिना कुछ उत्तर दिए, दृष्टि झुका लेता है।]

शेखर बेईमान, नमकहराम! कभी कोई बात याद भी रहती है तुझे! लाख बार तुझे बताया कि रेखा देवी को बैडरूम में फूल रखना बिल्कुल पसन्द नहीं। ऐसा करना हैल्थ के लिए इन्जूरियस है। तन्दुरुस्ती को बेहद नुकसान पहुँचाता है। अभी वे आने वाली हैं। यदि देख लेती, तो आज तेरी खोपडी पर ये बाल न रहते।

[दीनू अपनी गंजी खोपडी सहलाते, गुलदस्ता उठा, चुपचाप अन्दर चला जाता है। शेखर खिडकी के समीप खडे हो बाहर झाँकने लगता है। राधा धीरे से उसके निकट आ खडी होती है।]

राधा (हौले से) क्षमा करना, शेखर। मुझे नहीं मालूम था

कि रेखाजी को

शेखर (बाहर देखते हुए) खैर ! अब तो मालूम हो गया !

[राधा सकपकाकर चुप हो जाती है। जाने को मुड़ती है। फिर लौटकर खड़ी हो जाती है।]

राधा (धीमे स्वर में) शेखर ?

शेखर हूँ !

राधा एक बात कहूँ ? मानोगे ?

शेखर जो कुछ कहना है, जल्दी कहो। मुझे फुरसत नहीं है।

राधा मैंने तुम्हारे लिए दस्ताने बनाए हैं। (आगे बढ़ाते हुए) ज़रा पहनकर तो देखो, ठीक बने हैं।

शेखर (उपेक्षापूर्वक) रख दो उधर।

राधा पहनकर भी नहीं देखोगे ?

शेखर (क्रोध से) कहा न कि रख दो उधर।

[तेज़ी से मुड़कर बाहर निकल जाता है। राधा दस्तानों में मुख छिपा रो पड़ती है। बिन्दु का प्रवेश।]

बिन्दु राधा तू रो रही है ! अरी, क्या हुआ ?

राधा (सिसककर) कुछ नहीं, दीदी !

बिन्दु कुछ कैसे नहीं ! क्या बात है, बोल !

[राधा कुछ उत्तर न दे केवल सिसकती है।]

बिन्दु (सोचकर) समझी। आज फिर भैया ने कुछ कह दिया है। क्यों तू बार बार उनके पास डाँट खाने के लिए जाती है !

[राधा बिन्दु के वक्ष में मुख छिपा सिसक उठती है।]

बिन्दु (राधा का मुख ऊपर उठाने की कोशिश करते हुए) राधा, ये आँसू पोंछ दे। मेरी बात सुन। सच कहती

हूँ, यदि तूने मेरी बात न मानी तो जीवन भर आसू बहाएगी और बदले म कुछ भी न पाएगी।

राधा (सिसककर) जानती हू, दीदी। मेरी किस्मत ऐसी ही खोटी है। मेरे भाग्य म आँसू बहाना ही लिखा है।

बिन्दु (हसकर) बावरी! आँसू बहाएँ तेरे दुश्मन। सुन, तू बुद्धि से काम ले। भया की बात अपने दिल से निकाल दे। जानती तो है—रेखा के रहत वे कभी तेरी ओर न देख सकेंगे। फिर व्यथ ही मोह बढाने से क्या लाभ ?

राधा मोह क्या जान-बूझकर बढाया जाता है, दीदी? वह तो न जाने कसे स्वय ही दिल मे समा जाता है, और बेवस सा मन

बिन्दु (प्यार स धमकाकर) बस, रहने दे। ये कथा कहानियो के सवाद मेरे सामने न बोल। पिताजी ने तेरे लिए कैसा सुन्दर-सा दूल्हा खोजा है। अभी आता ही होगा, वह तुझे देखने।

राधा (क्रोध से) वह कौन होता है मुझे देखने वाला!

बिन्दु अच्छा, न सही। उसकी आँखो पर मैं पट्टी बाँध दगी। तू ही उसे देख लेना।

राधा (रुष्ट होकर) दीदी!

बिन्दु (उसके गले मे अपने दोनो हाथ डालकर) मेरी रानी बहन! चल कपडे बदल ले। माँ, तुझे बुला रही हैं।

राधा (हठपूवक) नही, मैं नहीं जाऊँगी।

बिन्दु (उसका हाथ पकडकर खीचते हुए) जाएगी कसे नही! चल।

[बिन्दु राधा को खीचते हुए अन्दर ले जाती है। दूसरे द्वार से सरला का प्रवेश।]

सरला राधा अरी, आ राधा (इधर उधर देखकर) यहाँ भी नहीं है। सारे घर में नाच आई। निगोड़ी न जाने कहाँ छिपकर जा बैठी है!

[धरती पर पड़े दस्ताना को उठाकर, ड्रेसिंग-टेबिल पर रखती है। शेखर के फोटो की ओर देखती है और उसे हाथ में उठा लेती है।]

सरला मेरा बेटा है तू फिर भी जी चाहता है कि तुझे कोठरी में बन्द कर, चार दिन तक दरवाजा न खोलूं। वह लक्ष्मी सी बिटिया जो मन ही मन तुझे अपना देवता मानती है, अपने मन की पीड़ा, मन में ही छिपाए, घर के अधियारे कोने में छिपती घूमती है। और तू उस बलमटी रेखा के जाल में फसकर, अपने माता पिता की बात मानना भी भूल गया है। दीवाने! तू क्या जाने, अपनी लक्ष्मी को दूसरे के हाथों सौंपते, मेरा हृदय कैसा फटा जा रहा है! मेरी पीड़ा तू क्या समझेगा!

[शेखर का तेजी से प्रवेश]

शेखर माँ माँ, मोटर कहाँ गई है?

सरला स्टेशन।

शेखर (प्रसन्न होकर) रेखा को लेने?

सरला नहीं। ढाई बजे वाली ट्रेन से श्रीधर आ रहा है। उसी के लिए

शेखर परन्तु माँ, तूफान से रेखा आ रही है। मोटर तो उसके लिए भेजनी थी।

सरला तो घबराता क्यों है? उसके लिए दोबारा चली जाएगी।

शेखर (क्रोध से) खाक दोबारा चली जाएगी! पौने तीन

तो बज रहे हैं। मैं कहता हूँ

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

शेखर (फोन उठाकर) हलो हाँ, ठहरो (फोन से मुख हटाकर) माँ, रामसिंह कह रहा है कि पसैंजर एक घण्टा लेट । वहीं प्रतीक्षा करे, या मोटर लौटा लाए ?

सरला अब लौटाकर क्या लाएगा, वही

शेखर ठहरो। मैं उससे कहे देता हूँ। (फोन में) हलो रामसिंह ? देखो पाँच नम्बर प्लेटफार्म पर तूफान आएगा। ठीक तीन बजे। उसमें रेखादेवी आ रही है। फस्ट क्लास में होगी। उन्हें लेकर, तुम फौरन घर आ जाना। सामान वगैरा ठीक से उतरवा लेना। उन्हें कोई कष्ट न हो। समझ गए अच्छा, ठीक है।

[फोन रख देता है।]

राधा और अगर तूफान भी लेट हो, तो ?

शेखर (अनसुनी करके) देखो, माँ ! रेखा को चाय के साथ नमकीन पिस्ते बहुत अच्छे लगते हैं। और हाँ हाथ पोछने के लिए, धोबी का धुला नया तौलिया निकाल देना। रेखा को मैले तौलिए से सख्त नफरत है। छूत की बीमारियाँ गन्दे तौलिए से ही फैलती है।

सरला (क्रोध से) तू और तेरी रेखा !

[तेज़ी से अन्दर चली जाती है। शेखर गुनगुनाते हुए, मेज पर रखी वस्तुएँ, अपनी रुचि अनुसार सँवारता है। राधा पर्दा उठाकर झाकती है, और हौले हौले पग बढ़ाते, शेखर के पीछे आ खड़ी होती है।]

राधा ओहो ! आज बहुत प्रसन्न है, आप ?

शेखर (गम्भीर स्वर म) देखो, राधा (मुडकर देखता है और मुसकराकर) अरे! वाह! आज तो आपने बड़ा शृंगार किया है।

राधा (कुछ लजाकर) कैसा लगता है? अच्छी लग रही हू?

शेखर क्या नही? क्यो नही? पर सच पूछो तो, लडकियो का यह लिपस्टिक, पाउडर लगाना मुझे जरा भी पसन्द नही।

राधा (झटपट रूमाल निकालते हुए) मैं अभी सब साफ किये देती हू।

शेखर (एकदम उसका हाथ पकडते हुए) है! हैं! कही ऐसा गजब न कर बैठना।

राधा (घबराकर) क्यो?

शेखर मा से सुना है, तुम्हारे दूल्हे साहब तशरीफ ला रहे है, और

राधा (क्रोध से) जब तक मेरी सगाई न हो जाये, तब तक किसी को मेरा दूल्हा कहकर पुकारने का तुम्हे कोई अधिकार नही है।

शेखर (मुसकराकर) अभी तक नही हुई सगाई, तो क्या हुआ? अभी घण्टे भर बाद हो जायेगी, और तब

राधा (दृढ स्वर म) नही। यह सगाई नही होगी।

शेखर (अचरज से) होगी कसे नही? सगाई कराने के लिए ही तो वह आ रहा है।

राधा जो मुझसे पूछे बिना आ रहा है, उसे मुझसे मिले बिना ही, लौट भी जाना पडेगा। उसे रोकने वाला यहाँ कोई नही है।

शेखर है कसे नही? तुम जो हो।

राधा (क्रोध से) तुम सब-कुछ कह सकते हो ? तुम्ह सब कुछ कहने का अधिकार है ? आखिर तुम अपने को समझते क्या हो, शेखर !

[तेजी से जाने को मुडती है। शेखर मुसकरा कर हाथ मे एक पुस्तक उठा, इजी चेयर पर लुढक जाता है। राधा धीरे धीरे लौटकर, उसके पीछे आ खडी होती है। नेपथ्य से रह रहकर, हलके गीत की ध्वनि आती है—"साथी हाथ बढाना। विरही मन का प्यार पुकारे—साथी हाथ बढाना "]

राधा (हौले से) शेखर ?

शेखर (घूमकर, कृत्रिम विस्मय स) अरे ! तुम अभी तक गई नही ?

राधा इस समय भी, इस पुस्तक म, तुम्हारा मन कस लग रहा है, शेखर ! जरा बाहर तो देखो—मौसम कसा सुहावना है ! जी चाहता है इन बादलो के सग हम भी उड जाय।

शेखर क्या बेकार की बातें करती हो !

राधा सुनो, शेखर, माली की बिटिया कितना मीठा गीत गा रही है। कितने दिन से, हमने, साथ-साथ झूला नहीं झूला। चलो, आज हम मिलकर झूला झूलें।

शेखर जाओ, राधा। तग न करो।

राधा आज बचपन की एक बात मुझे याद आ रही है—वह भी एक ऐसी ही बादलो भरी सन्ध्या थी। तुम बगिया म बठे, कागज की नाव बना रहे थ। मैं तुम्हारे पास ही बटी, कच्ची अमिया खा रही थी। तभी उधर स माँ आ निकली थीं। मरे हाथ म कच्ची अमिया

देखते ही, वे क्रुद्ध हो उठी थी। किन्तु वे मुझे धमका पातीं, इससे पहले ही तुमने झटपट मेरे हाथ से अमिया छीनकर कहा था, "नही, माँ! नही! अमिया तो मैं खा रहा था। राधा ने बिल्कुल नही खाई। वह तो सिफ देख रही थी कि यह खट्टी है या मीठी।"

शेखर बचपन की बातें, बचपन के साथ गईं, राधा। अब हम बडे हो गये हैं। अब हम बडप्पन सीखना चाहिए।

राधा (अनसुनी करके) शेखर, कितने सुखमय थे, वे दिन! न किसी बात की चिन्ता थी, न परवाह। बस खेलना, और खाना। याद है—एक दिन मैंने तुम्हारे हाथ से आइसक्रीम छीनकर खा ली थी। तुमने कसकर मेरी कमर मे घूसा जमा दिया था। धक्के से, आइसक्रीम छूटकर, नीचे गिर पडी थी। मेरी आँखो मे आसू देखते ही, तुम ठेले वाले को पुकारते हुए, दूसरी आइसक्रीम लाने के लिए, दौड गए थे।

शेखर अतीत के मोह मे भूले रहना, तुम्हे शोभा नही देता, राधा। तुम पढी लिखी हो, बुद्धिमान हो। तुम्हारे पिता

राधा (रोषपूर्वक) बार बार वही एक बात न कहो। मेरे पिता बड आदमी थे, यशस्वी थे, लाखो के स्वामी थे। अपनी इकलौती कन्या को वे अपने बाल-साथी के सरक्षण मे इसीलिए छोड गए थे कि वे उसका हाथ किसी सुयोग्य राजकुमार के हाथो म सौंप दें। यह सब मैं स्वय जानती हूँ।

शेखर और तुम यह भी जानती हो कि मैं राजकुमार नही हूँ।

राधा (हँसकर) तो क्या तुम समझते हो कि मैं तुमसे अपना

नहीं पहचानता ?

राधा (दृढ स्वर मे) हाँ, नही पहचानते। आज मैं दावे क साथ कह सकती हूँ, शेखर, कि तुम्ह वास्तव म रेखा से प्रेम नही है। उसके प्रति तुम्हारा मोह, तुम्हारे हृदय का नही, केवल तुम्हारी आखो का धोखा है।

शेखर (कुछ रोष से) राधा !

राधा रोष करने से सत्य मिथ्या नही हो जायेगा, शेखर ! तनिक शान्त हृदय से सोचकर देखोगे, तो तुम पाओगे कि केवल उसकी दिखावटी चमक दमक स अन्धी होकर ही, तुम्हारी आँखो ने, तुम्हारे मन पर, मोह का यह जाल बिछा दिया है। बनावटी प्रसाधनो से बना, उसका वह ढलता रूप

[दीनू का भागते हुए प्रवेश]

दीनू सरकार सरकार, मुरारी बाबू आये हैं।

शेखर (अचरज से एकदम उठकर खडे होते हुए) कौन ? मुरारी बाबू ! अलीगढ वाले ?

दीनू जी हा, सरकार !

राधा (घबराकर) मुरारी बाबू ! दीदी के होने वाले श्वसुर ? मैं मा को खबर कर दू।

[राधा शीघ्रतापूवक अन्दर चली जाती है]

शेखर (व्यस्त भाव से) चल, दीनू। उन्हे ड्राइगरूम मे बैठा। म आता हूँ। उनके आने की तो कोई बात नही थी। अचानक आ कैसे गये !

मुरारी (नेपथ्य से पुकारते हैं) शेखर बेटा शेखर

[शेखर घबराकर आगे बढता है। मुरारी बाबू का प्रवेश]

शेखर प्रणाम, वकील साहब।

मुरारी सुखी रहा, बेटा ! जीते रहो। कहो, सब कुशल-मगल तो है ?

शेखर जी, आपकी कृपा से सब आनन्द है। आइये, बठिये। पिताजी तो अभी दफ्तरसे लौटे नही। आते ही होगे।

मुरारी तुम्हारे पिताजी से मुझे कुछ काम नही, बेटा। बात कुछ तुमसे ही कहनी थी। इधर आया था। सोचा, तुम लोगो स ही मिलता चलू।

शेखर जी, बडी कृपा की आपने।

मुरारी शेखर, बटा, बात छोटी सी है, और बडी मामूली सी है। पर तुम्हारी बहन ठहरी, आजकल के फशन की लडकी। तुम उसे अच्छी तरह समझा देना। आपसी सम्बन्धा म ऐसा होता ही रहता है। मैं जो कुछ भी कहूँगा, उसके भले के लिए ही कहूगा।

शेखर आपसे ऐसी ही आशा है, वकील साहब। विश्वास मानिए, मरी बहन आधुनिका होने पर भी, भारतीय परम्परा की प्रेमी है। वह कदापि आपकी मा यताओ का उल्लघन न करेगी।

मुरारी यह क्या मैं जानता नही, बेटा ! तुम्हारे पिताजी भी मेरे समान ही प्राचीन आय सस्कृति के प्रमी है। तभी तो मैंने यह सम्बध जाडा है। हमारे शरीर म अपने पूवजो का रक्त है। एक बार नाता जोड लेने पर, हम सहज मे उस टूटने नही देते। परन्तु यदि

शेखर कि तु वकील साहब, यदि आप विवाह के सम्ब ध म कुछ बातें करना चाहते है, तो आपका पिताजी से बात करना ही ठीक रहेगा। वे अभी आत ही होग। आप बैठिए।

मुरारी (एकदम खडे होकर) नही, बेटा नही ! मुझ अभी

वापस लौट जाना है। ठहरने का समय नहीं। कुमार बाबू से तुम ही समझाकर कह देना।

शेखर अच्छा, तो फिर कहिये।

[राधा ट्रे में शर्बत के गिलास और मिठाई, फल आदि की प्लेट लिए आती है, और रखकर चुपचाप लौट जाती है। बाहर वाले द्वार के पर्दे के पीछे से बिन्दु झाकती है। मुरारी बाबू एक साँस में शर्बत पी जाते है और जल्दी जल्दी एक केला छीलकर खाते है।]

मुरारी सच बात तो यह है बेटा, कि इस अँग्रेजी पढाई ने आजकल के लडको का दिमाग खराब कर दिया है। माँ बाप की बात मान लेने में तो वे जसे अपनी मानहानि समझते है। और किसी को क्या कहूँ! मेरा बेटा ही मेरे हाथ से निकल गया। अभी कल की ही तो बात है। अब तुमसे क्या कहूँ, बेटा

शेखर अच्छा, तो फिर पिताजी से कह दीजियगा।

मुरारी (घबराकर) नही, बेटा! उन्हें कष्ट क्यो दूगा! तुमसे कहा, या उनसे बात तो एक ही है। मेरे लिए तो तुम दोनो एक ही समान हो।

शेखर जी, फिर कहिए।

मुरारी शेखर, बेटा, अब क्या कहूँ तुमसे! इस नालायक चन्द्रन ने मेरा मुह काला कर दिया। दुनिया में मुझे किसी के सामने मुह दिखाने योग्य न रखा।

शेखर आप यह क्या कह रहे हैं, वकील साहब! चन्द्रन एसा कभी नही कर सकता।

मुरारी (क्रोध से) कर कैसे नही सकता! कल ही उसने कचहरी जाकर, चुपके से उस मद्रासी छोकरी से

सिविल मरिज कर ली।

शेखर (घबराकर) जी

मुरारी (शान्तिपूवक) तभी तो मैं कहता हूँ, बटा आजकल के लडको म धम कम कुछ नही रह गया है। पर तुम कुछ चिन्ता मत करना। मेरे रहत तुम्हारी बहन मझधार म नही डूबने पाएगी। जब मैं ही उससे विवाह कर लूगा।

शेखर (घबराकर, एकदम उठकर खडे होत हुए) जी

मुरारी ठीक है, बेटा, ठीक है। मैं पहले ही जानता था कि तुम सब समझ जाओगे। आखिर तुम्हारी वहन के पूरे जीवन का प्रश्न है। दुनिया भी दख ले कि हम अपनी बात निभाना जानते है। हमारे रहते उसके विवाह की लगन नही बीत सकेगी।

गेखर (हतबुद्धि हो) वकील साहब !

मुरारी बस बस अब तुम्ह कुछ कहने की जरूरत नही। बेटा, अपन पिताजी का भी तुम समझा देना। हम अपन धम पर डट रह तो दो चार मनचलो के आवारगी करन स, धरती नही कापगी। धम को रसातल म डूबन से बचाना हमारा तुम्हारा सबका कतव्य है।

गेखर सुनिए, वकील साहब

मुरारी जानता हूँ बटा ! मैं सब समझता हूँ। तुम समझदार हो। अपन पिताजी को भी समझा देना। अच्छा, मैं चला।

[मुरारी बाबू शीघ्रतापूवक चल जाते है।]

शेखर उफ ! य नीच नराधम पापी ! इनक बोझ स धरती रसातल म क्यो नही डूब जाती ! किसके पुण्य से, य खुलो हवा म साँस ल रह है ! बाप सिरडी हो गए

हैं। मुह मे दात नही। विवाह करेंगे, एक अठारह वप की कुमारी कया से ? ये वासना के कीडे

[राधा वतन उठाने आती है। मुरारी बाबू को न देख चौंककर ठिठक जाती है।]

राधा अरे ! क्या मुरारी बाबू चले गए ?

शेखर हाँ।

राधा पिताजी से मिले विना ही ? क्या कहते थे ?

शेखर कह रहे थे कि वि दु का विवाह च द्रन से नही होगा, मुझसे होगा।

[राधा के हाथ से बतनो की ट्रे छूट पडती है। सरला और वि दु भागती हुई आती हैं।]

सरला क्या हुआ, राधा ? क्या है, शेखर ?

शेखर मुरारी बाबू क सुपुत्र न लव मरिज कर ली है मा। कि तु तुम्हे अपनी वटी के भविष्य की चिन्ता करने की ज रूरत नही। मुरारी वावू स्वय उसका उद्धार करने को तयार ह। बि दु का विवाह, अब मुरारी वाबू से करना होगा।

सरला (हतबुद्धि हो) कह क्या रहा है, तू !

शेखर (हसकर) ठीक ही कह रहा हूँ, मा ! धम की ध्वजा तो ऊँची रखनी ही होगी। विवाह की लगन नही बदलेगी। दुलहिन नही बदलेगी। सिफ दूल्हा वदल गया है।

राधा (रोप भरे स्वर मे) शेखर ! यह असम्भव है। ऐसा कदापि नही हो सकेगा।

शेखर (मुसकराकर) क्यो नही हो सकेगा ? इस धरती पर, इससे भी बढकर 'धम के काम' हुए ह। तभी तो यह आज तक रसातल मे डूबने से बची हुई है। इस विवाह

लिए, तुम्हे हमारे पास ही आना होगा। यह न भूलना—हम अधकार म वन्दी बना दोगे, तो तुम्हारा यन्धकूप म गिरना भी निश्चित है। हाथ बढाकर साथी वन जान पर, दोना के भाग्य स्वय ही साथ बध जाते है।

शेखर केवल तक ? बिन्दु का मुरारी बाबू से विवाह कर देने से, मुरारी बाबू की क्या हानि होगी ?

बिन्दु (चीखकर) भया !

[बिन्दु के पर लडखडा जाते है, किन्तु वह धरती पर गिर सके इससे पूर्व ही शेखर दौडकर उसे बाहो म सभाल लेता है।]

शेखर (ममता भरे स्वर म) बावरी ! झूठ मूठ की बहस का सच मान गई तू ! भैया के रहते, तुझे घबराने की ज़रूरत नही, बहन ! वह बुड्ढा तेरी ओर आख उठाकर देख सके, इससे पहले ही, मैं उसकी दोना आखें फोड दूगा। माँ, ज़रा, तुम इधर आओ।

[तेज़ी से बाहर चला जाता है। सरला भी जाती है।]

बिन्दु (गहरी सास भरकर) चलो, अच्छा ही हुआ।

राधा (अचरज से) दीदी !

बिन्दु वह लडका मुझे ज़रा भी पसन्द नही था, राधा। दात निकालकर जब यह हसता था, तो ऐसा लगता था माना काई गिद्ध मुझे खाने को, दाँत खोल आगे बढा आ रहा हो।

राधा दीदी ! फिर भी तुमने

बिन्दु (उसके दोना हाथ पकड, एकदम से फिरकनी खाते हुए) ओह ! आज मैं कितनी खुश हूँ ?

[हाथ छोड अ दर भाग जाती है ।]

राधा (झुककर कांच के टुकड समटते हुए) तुम आज खुश हो। शेखर भी आज खुश है और मैं कांच के इन टुकडो की तरह मरा दिल भी टूट गया है। इनके टूटने की आवाज सबने सुनी। क्या किसीने मेरे दिल की आवाज भी सुनी है ?

शेखर (लौटकर) राधा, आज घडी म चाबी दी थी ? कही यह गलत तो नहीं है !

राधा नही, शेखर ! घडी तो ठीक है। शायद ट्रेन ही कुछ लेट होगी ।

[बिन्दु एकदम भागी-भागी आती है ।]

बिन्दु (राधा का हाथ पकडकर) अरी ! तू यहा बैठी है ? श्रीधर आ गया।

राधा कह दो उनसे—जैसे आए है, वैसे ही लौट जाएँ।

बिन्दु पागल न बन। चल।

राधा दीदी मैं

बिन्दु अब तू मार खाएगी मेरे हाथ से !

[राधा का हाथ पकड उसे घसीटते हुए ले जाती है। शेखर मुस्कराकर, हाथ म पुस्तक उठा, आरामकुर्सी पर लुढक जाता है । दीनू का प्रवेश।]

दीनू (टूटे बर्तन समेटते हुए) आप यही बैठे हैं सरकार ! जमाई बाबू आए हैं।

शेखर उनका स्वागत करने को, वहा बहुत लोग है दीनू ।

दीनू आहा ! क्या चन्दा सा रूप पाया है जमाई बाबू ने ! मानो साक्षात भगवान के अवतार हो। मुखडे से ऐसा तेज बरसता है कि बस आँखें देखती ही रह जाएँ।

शेखर (मुस्कराकर) पसन्द आ गए तुझे जमाई बाबू ?

दीनू उन्हें कौन मूरख पसन्द नहीं करेगा, छोटे सरकार। भाग जाग गए अपनी राधा बिटिया के। सदा सुख-सुहाग के झूलों पर राज करेगी।

शेखर (ईर्ष्या से) शकल सूरत अच्छी हो जाने से ही क्या सब कुछ हो जाता है दीनू ? उसका स्वभाव खोटा भी तो हो सकता है।

दीनू छि ! छोटे सरकार ! हँसी में भी आपको ऐसी बात न बोलनी चाहिए।

शेखर (हँसकर) मैं झूठ तो नहीं कहता, दीनू।

दीनू (मुस्कराकर) अभी जमाई बाबू को देखा नहीं है, न, इसीसे ऐसी बात। मैं कहता हूँ एक बार उन्हें देख लोगे, तो देखते ही रह जाओगे। उनकी बानी से जैसे मधु बरसता है। ऐसे मीठे बोल, ऐसी सरल हँसी, मैंने तो और किसी की सुनी नहीं, सरकार !

[नेपथ्य में हँसी। बोलने की आवाज़ें। राधा, बिन्दु श्रीधर का हँसते खिलखिलाते प्रवेश]

राधा शेखर, देखो, मेरे भैया आ गए। आओ, इनसे तुम्हारा परिचय करा दूँ।

शेखर (अचरज से) तेरे भैया ?

राधा हाँ, मेरे धीरू भैया, याद नहीं ? पारसाल से अपने हर पत्र में, मैं तुम्हें इन्हीं के विषय में तो लिखती रही हूँ।

शेखर (विस्मित हो) धीरू भैया ? यही है, तेरी सहेली हेमा के भाई ? इन्हीं को पारसाल तूने राखी बाँधी थी ?

श्रीधर (हँसकर) इसने नहीं बाँधी थी, भाई साहब। मैंने ज़बरदस्ती इससे बँधवा ली थी।

बिन्दु (हँसकर) सो कैसे ?

राधा बिल्कुल ! मुझे तो तुम्हारी सूरत से भी नफरत हो गइ थी।

श्रीधर (पूण गम्भीरता से) मुझे देखे बिना ही, तुझे मेरी सूरत स नफरत हो गई थी।

[सब हँस पडते हैं।]

राधा चलो भया ! तुम्ह अपनी बगिया दिखाऊँ। दीदी, माँ स कहना, रात को आलू की कचौडी बनेंगी और कटहल के कोफ्ते। बूदी का रायता, मैं खुद बनाऊँगी।

श्रीधर आम की खीर भी बनाना, बहन ! नही तो मैं भूखा ही रह जाऊगा।

शेखर बहनो से यह बात आज ही कह लो, ब धु ! कल से तुम्ह कुछ और ही बात कहना पडेगी।

श्रीधर वह क्या ?

शेखर मेरे सामने तुमने जिन चटपटी चीजा का ढेर लगा दिया है, उनमे से कुछ कम कर दो, बहन ! कही ऐसा न हो, कि अधिक खा लेने से, मेरे शरीर की टकी वस्ट हो जाय।

बिन्दु (नाराज होकर) तुम इनकी बात न सुनो, भया इन्हे तो बस हमारी बुराई करना आता है। तुम चलो हमार साथ।

[दोनो श्रीधर को खीच ले जाती हैं।]

शेखर (अनमने भाव से) दीनू सच कहता था—वास्तव म श्रीधर ने चन्दा का सा रूप पाया है। वसी ही मीठी उसकी बोली है और उसस कही अधिक वह प्रतिभावान है। काई भी लडकी उसे पाकर अपन को धन्य मानती। फिर भी राधा न उससे प्रेम की ज्योति नही मागी, बहन की ममता ही उसे सौंप दी। ऐसा क्यो ?

श्रीधर रक्षाबंधन के दिन, जब मैं होस्टल गया, तो बहनों के साथ यह मिलने के लिए कमरे में तो आई, पर आई खाली हाथ। इसे राखी बांधे जुसी तो मैंने इसकी ओर हाथ बढ़ा दिया। यह घबराकर बोली, 'मैंने तो कभी किसी को राखी बांधी नहीं। मैं तो राखी लाना भूल गई भैया!'

राधा और तब वह हंसकर बोले, 'कोई बात नहीं, तू अपनी चोटी का यह लाल रिबन निकालकर बांध दे।' ऐसी अनुपम राखी आज तक किसी बहन ने अपने भाई को न बांधी होगी।

श्रीधर तो क्या मैंने झूठ कहा था? समीप ही पौधे में महकते, गुलाब के फूलों में से, एक फूल चुनकर, और उसे रिबन के फंदे में फंसाकर तूने मेरे हाथ में जो राखी बांध दी थी, उसे मेरे कितने साथियों ने ईर्ष्या की दृष्टि से देखा था यह भी कुछ मालूम है।

राधा नहीं, जी! हमें क्या मालूम होगा? हमने तो इतनी अनुपम राखी भेंट की श्रीमान को, और आपने हमें क्या दिया?

बिन्दु क्या?

राधा लेमनड्राप्स और चाकलेट का डिब्बा।

श्रीधर बच्चों को और क्या दिया जाता है?

[सब एक साथ हंस पड़ते हैं।]

राधा मेरी आंखों से कितने आंसू तुमने ढुलकाये हैं, भैया! यदि मुझे पता होता कि तुम आ रहे हो, तो पथ में फूल बिछा दोनों हाथ बढ़ा, पलक पांवड़े से मैं तुम्हारा स्वागत करती। दूर भागकर, ऐसा निरादर न करती।

श्रीधर अच्छा, जी! तो आप हमसे दूर भागना चाहती थीं।

राधा बिल्कुल ! मुझे तो तुम्हारी सूरत से भी नफरत हो गई थी।

श्रीधर (पूर्ण गम्भीरता से) मुझे देखे बिना ही, तुझे मेरी सूरत से नफरत हो गई थी।

[सब हँस पडते हैं।]

राधा चलो भैया ! तुम्हे अपनी बगिया दिखाऊँ। दीदी, मा से कहना, रात को आलू की कचौडी बनेंगी, और कटहल के कोफ्ते। बूदी का रायता, मैं खुद बनाऊँगी।

श्रीधर आम की खीर भी बनाना, बहन! नही तो मैं भूखा ही रह जाऊगा।

शेखर बहनो से यह बात आज ही कह लो, बन्धु ! कल से तुम्हे कुछ और ही बात कहनी पडेगी।

श्रीधर वह क्या ?

शेखर मेरे सामने तुमने जिन चटपटी चीजो का ढेर लगा दिया है उनमे से कुछ कम कर दो, बहन ! कही ऐसा न हो, कि अधिक खा लेने से, मेरे शरीर की टकी वस्ट हो जाय।

बिन्दु (नाराज होकर) तुम इनकी बात न सुनो, भैया इन्हे तो बस हमारी बुराई करना आता है। तुम चलो हमारे साथ।

[दोनो श्रीधर को खीच ले जाती है।]

शेखर (अनमने भाव से) दीनू सच कहता था—वास्तव मे श्रीधर ने चन्दा का सा रूप पाया है। वैसी ही मीठी उसकी बोली है और उससे कही अधिक वह प्रतिभावान है। कोई भी लडकी उसे पाकर अपने को धन्य मानती। फिर भी राधा ने उससे प्रेम की ज्योति नही मांगी, बहन की ममता ही उसे सौंप दी। ऐसा क्यो ?

क्या वास्तव में, राधा के अन्तर्मन में, मेरे प्रति कुछ मोह है? ऐसी क्या बात है मुझमें, जो श्रीधर में नहीं है? सभी ओर से तो, वह मुझसे कहीं अधिक योग्य है। फिर भी राधा

[एक हाथ में अटैची तथा दूसरे हाथ में छाता लटकाये रेखा का प्रवेश]

रेखा अकेले बैठे किससे बातें कर रहे हैं, शेखर जी?

शेखर हलो, रेखा, तुम आ गई? मैं कब से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। आओ, आओ, इधर आओ।

रेखा ठहरिये ठहरिये। आपकी आँखें क्यों छलछला रही हैं?

[बैग खोल स्टेथस्कोप निकालती है। साथ ही बोलती जाती है।]

अभी आप अकेले खड़े अपने से ही बातें कर रहे थे। ये सिम्पटम्स अच्छे नहीं। कहीं आपको कोई रोग

शेखर हाँ। रोग तो है ही। और मेरे इस रोग की दवा, बस केवल तुम्हारे ही पास है, रेखा। तुम्हारी प्रेम-परिचर्या पाकर

रेखा घबराइये नहीं। मैं अवश्य आपका इलाज करूँगी। पहले मुझे डिजीज़ के सिम्पटम्स तो देखने दीजिए— आँखें लाल हैं, माथा हलका गर्म है। हथेलियों पर पसीना है। अकेले खड़े बातें करना

[बैग में से एक पुस्तक निकाल, जल्दी-जल्दी पन्ने पलटती है।]

शेखर अरे! यह क्या! तुमने मुझे सच ही रोगी समझ लिया? इतनी भोली हो तुम! (हँसकर) हटाओ

इस मनहूस पुस्तक को। फेंको उधर।

[रेखा के हाथ से पुस्तक छीनकर, दूर कोने में फेंक देता है। रेखा दौड़कर उसे उठा लाती है।]

शेखर रेखा! मैं कहता हूँ हटाओ इस किताब को। इतने दिन बाद मिली हो। दो बात भी नहीं की! आते ही अपनी डाक्टरी के पन्ने पलटने लगी!

रेखा ठहरिये बीच में मत बोलिये। इन्फ्लुएंजा, यलो फीवर डिप्थीरिया हूँ! मिल गया। अवश्य यही है। आई फील क्वाइट श्योर। जरूर यही होना चाहिये। रात आपको नींद ठीक से आई थी?

शेखर नींद कैसे आती रेखा! पलक मूंदते ही तुम्हारे स्वप्न नयनों में घिर घिरकर छा जाते थे। करवट बदल-बदल कर और पानी पी पीकर, मैंने सारी रात काट दी।

रेखा सीरियस, क्वाइट सीरियस! देखिये, आपको भूख तो खूब अच्छी तरह लगती है पर जब आप भोजन करने बैठते हैं, तो आपसे खाया नहीं जाता है न यही बात?

शेखर ठीक कहती हो रेखा! सामने भोजन देखकर, मुझे लगता है कि यदि पास में तुम भी होती

रेखा ओह! मेरा अनुमान ठीक ही निकला। आपको ऐक्यूट मैन्डोराइज हो गया है, शेखर जी। बड़ी भयंकर बीमारी है। शीघ्र ही ट्रीटमेंट न किया गया, तो केस सीरियस हो जाने का भय है। देखूँ तो आपके लंग्स

[स्टेथस्कोप लगाकर देखने का यत्न करती है।

परेशान सा शेखर अपने को बचाने का प्रयास करता है।]

शेखर अरे ! रे ! यह क्या करती हो ! माफ करो तुम। मुझे कोई रोग नही है। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। हटाओ यह स्टेथस्कोप।

रेखा ठहरिये ठहरिय ! ऐसा न कीजिए। यू आर नॉट ए चाइल्ड ! देखिये पशेन्ट यदि ऐसा करने लगे, तो डाक्टर डिजीज का ठीक डायगनॉसिस कैसे कर सकता है !

शेखर पर तुम कुछ मेरी भी तो सुनो। मुझे कोई रोग नहा है। मै सारी रात गहरी नीद सोता हूँ। मैं दिन मे छ बार ठूस ठूसकर भोजन करता हूँ। मैं

[भागता है। पीछे पीछे रेखा जाती है। दूसरी ओर से श्रीधर तथा राधा का प्रवेश]

श्रीधर यहा तो दोनो म से कोई भी नही है।

राधा (मुसकराकर) दानो मिलकर, कही मलेरिया के जम्स मारने की दवा छिडक रहे होगे।

श्रीधर (हँसकर) जब से मैंने सुना है, मै तो एक ही बात सोच रहा हूँ बहन।

राधा वह क्या ?

श्रीधर मधुयामिनी की मधुरिमा मे विभोर हो, जब शेखर भाई चाद और सितारो की बात करेंगे तब रेखा देवी

राधा चाद पर इन्फ्लुएंजा फलने का डर तो नही है इस चिन्ता म व्याकुल होगी।

श्रीधर सीरियस, क्वाइट सीरियस !

[दोनो हँसते हुए अन्दर चले जाते है। बिन्दु

हाथ मे सूटकेस लिए आती है और कोने म पटक देती है।]

बिन्दु ओह! प्रम करेंगे भैया, और मुसीबत आयेगी घर भर की। फमिली डॉक्टर आयेगी घर म फैमिली डाक्टर

[सामने से रेखा जल्दी जल्दी आती है]

रेखा बिन्दु जी, आपने अपने भाई साहब को कही दखा है?

बिन्दु जी नही। आजकल मुझे कुछ कम दिखाई देने लगा है।

रेखा व्हाट!

बिन्दु सुना नही आपने?

रेखा परन्तु यह तो बडी सीरियस बात है, बिन्दु जी। आई टल यू, इट इज क्वाइट सीरियस।

बिन्दु (मुसकराकर) होने लगा आपका हाट फेल?

रेखा सुनिए मिस कुमार—आपकी आइज, आपकी बाडी का मोस्ट ऐसन्शल ऑरगन है—जिन्दगी की सबसे बडी नियामत ह वे। आपको उन्ह हरगिज नैगलैक्ट नही करना चाहिए।

बिन्दु (मुडकर जाते हुए) जी, मशविरे के लिए धन्यवाद।

रेखा ठहरिए ठहरिए! जरा मुझ सिम्पटम्स देखने दीजिए, मिस कुमार हूँ! आपकी आँखो के कोय भी लाल हैं? आपको आज ही किसी आई स्पैशलिस्ट के पास ले चलना पडेगा।

बिन्दु धन्यवाद। मैं स्वय ही चली जाऊगी। आपको कष्ट करने की जरूरत नही।

रेखा वाह! इसमे कष्ट की क्या बात है! ठहरिए, जरा। मैं देखू तो आपको ऐप्रोक्सीमेटली किस नम्बर के चश्मे की जरूरत पडेगी। मैं यह चाट दीवार पर टागती हूँ। आप जरा पढिए तो। यह पहली लाइन

बिंदु (मुसकराकर) मैं तो इसका एक भी अक्षर नही पढ सकती।

रेखा सीरियस, क्वाइट सीरियस! आपको अभी डाक्टर के पास चलना होगा, मिस कुमार।

बिन्दु अभी? इसी समय?

रेखा जी हा। अभी इसी समय।

बिन्दु पर यह कैसे सम्भव है? अभी तो मुझे आपके लिए नमकीन पिस्ते तलने है। भैया ने कहा था

रेखा आपके भैया का केस भी कुछ कम सीरियस नही है, मिस कुमार। पर वे न जाने कहा जा छिपे हैं। उनका ट्रीटमेंट तुरन्त शुरू हो जाना चाहिए। लेकिन आपका केस और अधिक सीरियस है। इसलिए मैं पहले आपको

बिन्दु नही, डॉक्टर! पहले भैया का ट्रीटमेंट करना ही अधिक उचित रहेगा। मुझे तो दूसरे डाक्टर के पास ले जाना होगा, पर भैया का इलाज तो केवल आप ही कर सकती। आप यही ठहरिए। मैं अभी उन्हे खोज लाती हूँ।

[तेजी से अन्दर चली जाती है]

रेखा (परेशान-सी) अजब मुसीबत है! न जाने लोग डॉक्टर से इतना क्या घबराते है! जितना हम उनकी हैल्थ की केयर करने की कोशिश करते हैं उतना ही वे हमसे दूर भागना चाहते हैं। कहा छिपे होगे शेखर जी? उस अलमारी के अन्दर? नही, इस पलग के नीचे देखू

[पलग के नीचे भाकती है। सरला का प्रवेश]

सरला क्या कुछ खो गया है, बेटी?

रेखा (झटपट सीधे खड़े होकर) जी, हाँ। मिस्टर कुमार को खोज रही थी।

सरला (विस्मय से) पलग के नीचे ?

रेखा जी, बात यह है कि अरे! आपके पर म यह पट्टी कसी बँधी है ?

सरला कुछ नही। जरा ठोकर लग गई थी। राधा ने उस पर पट्टी बाध दी।

रेखा सीरियस, क्वाइट सीरियस! देखू ? उफ! पट्टी भी कितनी अनहाईजीनिक बाँधी है!

सरला अच्छा, तू हट। मैं अभी जाकर दूसरी पट्टी बँधवाए लेती हूँ।

रेखा नही मिसेज कुमार। केवल पट्टी बदलने से ही काम नही चलेगा। आप अपने केस को इतनी लाइटली मत ट्रीट कीजिए। आपको अभी ऐंटिटिटनस इजक्शन ल लेना चाहिए नही तो सारे बॉडी म पायजन फैल जाने का खतरा है।

सरला बस बस! रहने द! जहर कभी मेरे दुश्मनो के भी नही फला। मुझे तो क्या फलेगा। हट तू अलग। मुझे जान दे।

रेखा ठहरिये, ठहरिय, मिसेज कुमार। मैं अभी सिरिंज निकालती हूँ। बात की बात म इजक्शन लगा दूगी। आपको पता भी नही चलेगा। सूई चुभने म जितना दद होता है आपको उतना भी फील नही होगा।

सरला मान जा, रेखा। बचपना न कर। मेरा हाथ छोड दे।

रेखा हठ आप कर रही हैं, मिसेज कुमार। आई एम क्वाइट सीरियस। मैं आपके भले के लिए ही कह रही हूँ। आपको इजक्शन लेना ही होगा।

सरला (क्रोधपूर्वक) इजैक्शन देना, अपने मरीजों को। मैं तेरी मरीज नहीं हूँ। हट अलग। मुझे देर हो रही है।

रेखा व्हाट नॉनसैंस! घर में डॉक्टर होते हुए भी, आप लोग उसका फायदा नहीं उठाना चाहते! आपकी जगह मेरी मम्मी होती तो

सरला तेरी मम्मी ने ही तो लाड लडाकर, तेरा दिमाग खराब कर दिया है।

[तेज़ी से आगे चली जाती है]

रेखा चली गई? मेरा क्या बिगड़ता है! जब बीमार पड़ेंगी, तब याद आयेगा, कि हां—डाक्टर रेखा ने कभी कुछ कहा था। लेकिन शेखर जी का इलाज तो मुझे करना ही चाहिए। देखूं कहीं वे छत पर छिपकर तो नहीं बैठे हैं।

[जाती है]

[शेखर का दबे पैरों प्रवेश]

शेखर तीन वर्ष बाद रेखा को देखा है। मैंने तो सोचा था कि डाक्टरी सीख लेने के बाद, नये नये मरीजों का इलाज करने का, उसका यह शौक मिट गया होगा। पर देखता हूँ, उसका यह मर्ज़ तो पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। एक बार घर में आ गई है, तो अब वह जान का नाम नहीं लेगी। उससे छुटकारा पाने का, अब तो बस एक ही उपाय है। मैं कुछ दिन कानपुर घूम आऊँ। मौसी कब से बुला रही हैं। किधर गया मेरा सूटकेस?

[पलंग के नीचे से सूटकेस खींचकर निकालता है]

शेखर शेविंग का सामान रख लूं। आठ कमीज़ें, छः पाजामे,

आठ पतलून

श्रीधर यह क्या, शेखर भाई ? कहाँ जाने की तैयारियाँ होने लगी ?

शेखर मौसी के घर जा रहा हूँ। बहुत दिनो से वे मुझे बुला रही है।

श्रीधर परन्तु क्या दो-चार दिन बाद जाना ठीक नही रहेगा ? आज ही तो रेखा जी आई हैं

शेखर नही। मुझे आज ही जाना होगा। मौसी ने लिखा था कि

[रेखा का प्रवेश। [उसे देखते ही, शेखर सूटकेस झटपट पलग के नीचे खिसका देता है]

रेखा शेखर जी, आप यहा बठे हैं ? मैं सारे घर म आपको खोज आई। देखिए, अब आप इधर उधर मत घूमिए। मैं आपका बैड ठीक किए देती हूँ। आप चादर ओढ-कर, आराम से लेट जाइए।

शेखर तुम अच्छे भले आदमी को रोगी बना रही हो, रेखा। मैं मै सच कहता हूँ—मुझे कोई रोग नही है। मैं बिल्कुल भला चगा हूँ।

रेखा ईच पेशन्ट, एवी डे यही कहा करता है। आइए, लेट जाइए। मैं इजक्शन तैयार करती हूँ। आपको अभी नीद आ जाएगी।

शेखर ओह ! तब से तुम एक अपनी ही बात कहे जा रही हो ! रेखा, तुम्हे मेरी बात पर भी तो कुछ ध्यान देना चाहिए। मैं कहता हूँ

रेखा अवश्य कहिए। पर मैं सुनूगी नही।

शेखर (रोषपूर्वक) रेखा ?

रेखा डाक्टर यदि ऐसे ही मरीजो की बात सुनने लगे, तब

तो वह कर चुका डॉक्टरी ! श्रीधर जी, आप ही मुझे थोड़ा हैल्प कीजिए। इन्हें पकड़कर, यहाँ लिटा दीजिए।

श्रीधर जब वे इतना कह रही हैं, तब थोड़ी देर को लेट जाइए न, शेखर भाई।

शेखर (रोषपूर्वक) यूँ ही लेट जाऊँ? कुछ बात भी! रेखा, तुम

रेखा इस समय मुझे अपनी रेखा नहीं, डाक्टर रेखा समझिए, शेखर जी। विश्वास मानिए, जो कुछ भी मैं कह रही हूँ, आपके भले के लिए ही कह रही हूँ। आपका इस तरह बैठना ठीक नहीं।

शेखर ठीक है। अगर तुम्हें मेरा यहाँ बैठना भी बुरा लग रहा है, तो मैं यहाँ से चला जाता हूँ।

[उठकर जाने लगता है। रेखा लपककर उसका हाथ पकड़ लेती है।]

रेखा मान जाइए, शेखर जी। आई एम क्वाइट सीरियस। इस समय आप पेशेंट हैं। पेशेंट को डाक्टर का कहना मानना ही चाहिए।

श्रीधर अवश्य। विशेषकर जबकि वह फैमिली डाक्टर हो। आइए शेखर भाई। लेट जाइए। कुछ देर आराम किए बिना आपको छुटकारा न मिलेगा।

शेखर (व्यंग से) छुटकारा!

श्रीधर प्लीज़, शेखर भाई!

शेखर अच्छा है, ठीक है मैं लेट ही जाता हूँ। अब कहोगे भी, तो भी नहीं उठूंगा।

रेखा श्रीधर जी, जरा यह सिरिंज पकड़िएगा। अरे! यह क्या! आपके हाथ इतने पीले क्यों हैं? जरा देखूं

आपकी आँखें।

श्रीधर (घबराकर पीछे हटते हुए) नहीं, नहीं, मेरी आखें एक-दम ठीक हैं। राधा अपनी साडी पीले रग म रग रही थी, मेरे हाथा पर उसीका रग चढ गया है।

रेखा (हसकर) बहाने और किसीके सामने बनाइएगा, श्रीधर जी। डॉक्टर ऐसे बहाना पर विश्वास करने लगे, तब तो वह कर चुका डाक्टरी। घबराइए नहीं, मैं कुछ कहूँगी नहीं। सिर्फ आपकी पलकें ज़रा सा ऊपर उठाकर

[बारी-बारी से उसकी दोना आँखो की पलकें उठाकर देखती है।]

रेखा सीरियस, क्वाइट सीरियस! जो सोचती थी, वही हुआ। आपको तो एनीमिया है, श्रीधर जी!

श्रीधर (हसकर) एनीमिया? मुझको? मेरे ये टमाटर जसे लाल लाल गाल नहीं देखे आपने?

रेखा डो ट बी फुलिश। इटस नॉट ए जोक। अभी ता प्रलिमि टरी स्टज है। अभी से प्रीकॉशन लेने से आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएँगे। नैगलैक्ट करने से, केस सीरियस हो सकता है।

श्रीधर मेरा इलाज बाद मे कर लीजिएगा, रेखा जी। आपका पेशे`ट इधर लेटा है। प्रायर्टी उसकी है। पहले आप उसका इलाज तो कर लीजिए।

रेखा डॉक्टर कभी किसीको प्रायर्टी नहीं देता! उसके लिए सब पेशे`ट समान हैं। देखिए, मैं आपके लिए टानिक प्रैस्क्राइब किए दती हूँ। अभी सर्वे`टको बाजार भेजकर मगवा लीजिए। ये इजैक्शन भी मगवा लीजिएगा। हफ्ते मे तीन लगवाने हाग।

श्रीधर धन्यवाद। लाइए, दीजिए प्रैस्क्रिप्शन। मैं सब कुछ अभी मँगवाए लेता हूँ।

रेखा (कागज देते हुए) सच तो यह है, श्रीधर जी, कि यहाँ घर भर मे, बस केवल आप ही एक समझदार व्यक्ति हैं। यू आर द ओनली इंटलीजेंट परसन हियर। आई एम सो ग्लैड टु मीट यू।

श्रीधर जी, मुझे भी आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।

रेखा सुनिए, मुझे यह सिरिंज बायल करनी थी। कोई स्टोव होगा ?

श्रीधर लाइए। मैं रसोई म वायल कराकर ला देता हूँ।

रेखा लीजिए। ज़रा जल्दी लाइएगा। इंजैक्शन देने को बड़ी देर हो रही है।

श्रीधर जी, अभी लाया। बस गया और आया।

[जाता है।]

रेखा तब तक मैं और सामान तयार कर लू।

[बैग म से इंजक्शन आदि निकालती है।]

शेखर रेखा

रेखा शोर न मचाइए, शेखर जी। शोर मचाने स

शेखर बस केवल एक बात पूछना चाहता हू।

रेखा पूछिए, । जल्दी पूछिए।

शेखर तुम्हारा यहाँ से कब तक जाने का प्रोग्राम है ?

रेखा अभी आज ही तो मैं आई हूँ। अभी तो मेरी सारी छुट्टियाँ शेष हैं।

शेखर बड़ी गर्मी पड़ती है, लखनऊ मे। छुट्टिया म तुम्हारा कहीं ननीताल, शिमला, वगरा जाने का प्रोग्राम तो होगा ही।

रेखा नही, शेख˜ सारी (ही पास

बिताने के लिए आई हूँ। डाक्टर के लिए क्या सर्दी और क्या गर्मी! ऐन सर्दी-गर्मी की परवाह करने लगे, तब तो वह कर चुका डाक्टरी!

शेखर समझा! इन छुट्टियों में तुम यहाँ प्रैक्टिस प्रारम्भ कर देना चाहती हो। किधर खोलनी है डिस्पैन्सरी? हजरतगंज, चौक या अमीनाबाद? मैं आज ही जाकर जगह का पता लगाता हूँ।

रेखा ओहो! आप लेटे रहिए। इसी तरह लेटे रहिए। देखती हूँ, आपकी बेचैनी अधिक बढ़ती जा रही है सीरियस, क्वाइट सीरियस। ये सिम्पटम्स साफ बताते हैं कि

शेखर तुम्हें किसी माइन्ड स्पेशलिस्ट के पास जाने की जरूरत है। देना वह टेलीफोन डाइरक्टरी। देखूँ किसी डॉक्टर का नाम।

रेखा अच्छा, अच्छा, देखिएगा। पहले मैं आपको इंजक्शन तो लगा दूँ। वह सिरिंज किसे पुकारूँ राधा जी, राधा जी

[नेपथ्य से जी आई। राधा का प्रवेश।]

रेखा राधा जी, मैंने एक सिरिंज बॉयल करने के लिए

राधा जी, यह रही वह।

शेखर (एकदम उठकर बैठते हुए) रेखा, बहुत हो चुका। बन्द करो अब यह पागलपन।

रेखा पहले आप लेट तो जाइए। जब तक आप शान्ति से नहीं लेटेंगे, तब तक कुछ नहीं होगा।

शेखर मैं कहता हूँ। बन्द करो अपनी यह डाक्टरी, नहीं तो

रेखा राधा जी, आप जरा मुझे हैल्प करेंगी।

राधा जी, कहिए।

रेखा देखिए, इनके दोनो हाथ पकड लीजिए। हाँ, इस तरह! और इन्हे इस तरह सीधा लिटा रखिए। बस, आपको दो मिनट कष्ट करना होगा। मैं अभी इजक्शन तयार कर लाती हूँ।

राधा आप आराम से अपना काम कीजिए, रेखाजी। दो मिनट नही, मैं दो दिन इन्हे ऐसे ही लिटाए रख सकती हूँ। लाइए, दीजिए, इनके दोनो हाथ मेरे हाथो मे।

शेखर (रोषपूवक) राधा!

राधा देखो, शेखर। तुम नन्हे-से शिशु नही हो। क्या तुम इतना भी नही समझते कि रोगी के चीखने चिल्लाने का डाक्टर पर कुछ भी असर नही पडता?

रेखा शाबाश,राधा जी। रियली, आप अच्छी नस बन सक्ती हैं। रोग को वश मे लाना तो आपको खूब आता है।

शेखर राधा, क्यातुम्हे भी विश्वास है कि मुझे कोई रोग है? एक बार मेरे स्वस्थ शरीर की ओर देखो, और तब कहो कि

राधा चुप रहो, शेखर। तुम क्या डाक्टर स भी अधिक जानते हो?

शेखर उफ! मरा तो सिर दुखने लगा।

राधा सिर तो दुखेगा ही। शोर क्या तुमने कुछ कम मचाया है! लो, आखें ब द कर लो अब। मैं तुम्हारा माथा दबा दू।

रेखा बाथरूम म लाइफबॉय सोप होगा, राधाजी?

राधा जी हा है। साफ तौलिया भी है।

रेखा तो ज़रा मैं हाथ धो आऊँ।

[जाती है]

शेखर (एकदम उठकर बैठते हुए) राधा, इस आफत से मुझे किसी तरह बचाओ।

राधा आफत ! (मुसकराकर) अपनी होनेवाली पत्नी से इस तरह नही घबराया करते, शेखर।

शेखर इस तरह हँसी न उडाओ, राधा। मैं कहे देता हूँ—अच्छा न होगा।

राधा क्या ? क्या कर लोगे तुम मेरा ?

शेखर बताऊँ ?

राधा बताना अपनी श्रीमतीजी को। मुझे क्या बताओगे !

शेखर नही मानोगी तुम !

राधा उहूँ !

[शेखर राधा की चोटी पकडकर खीचता है। तभी रेखा लौट आती है।]

रेखा ओह ! बाथरूम कितना गन्दा हो रहा है ! जब तक विम से पालिश न की जाये बेसिन साफ रह ही नही सकते। आज ही विम मँगाना होगा।

राधा मैं अब जा सकती हूँ, रेखाजी ?

रेखा ठहरिये मैं यह इञ्जक्शन लगा दूँ।

शेखर (क्रोध से) मैं इंजैक्शन नही लगवाऊँगा, नही लगवाऊँगा नही

राधा अब चुप भी रहे।। अभी तो एक इंजैक्शन से ही छुटकारा मिल जायगा। यदि नही लगवाया तो

रेखा रियली मिस्टर कुमार, यू आर मोर नौयजी दन ए स्माल चाइल्ड। बच्चे भी इतना परेशान नही करते। लाइए, इधर अपना हाथ।

शेखर उह !

श्रीधर मुझे ऐक्यूट एनीमिया हो गया है। टॉनिक पीने पड़ेंगे। इजैक्शन लगवाने हागे।

शेखर बस, सिफ इजैक्शन ? बड़े सस्ते छूट गए तुम!

[तीनो हँसते हैं।]

राधा भया, इतनी देर से तुम थे कहा ?

श्रीधर बस राधा। यह मत पूछो।

राधा (विस्मय से) क्यो ?

श्रीधर मेरी पीठ इतनी मज़बूत नही कि शेखर भाई के फौलादी घूसो की चाट सह सके।

शेखर (मुसकराकर) रोगी हूँ, भाई। रोगी के हाथा म इतनी शक्ति कहाँ कि किसी को ठोक पीट सकें। तुम्ह कोई भय नहीं। निभय होकर सब कुछ कह दो।

श्रीधर नही। मैं न कहूगा। अपराध क्या मेरा साधारण है! सुनते ही यदि तुम्हारी रगा मे दौडते रक्त मे उबाल आन लगे तो ?

शेखर नही, ऐसा न होगा। तुम मानो तो सही।

श्रीधर या ही मान लू ? नही, भाई। श्रीधर इतना सीधा नही कि बिना प्रमाण पाए किसी बात पर विश्वास कर ले।

शेखर देखो, वता दो चुपके से। वरना ऐसी ठुकाई करूँगा कि सात जनम याद रखोगे।

श्रीधर सुन लिया, राधा ? मिल गया न प्रमाण ? अपनी बात के कितने पक्के हैं, हमारे शेखर भाई!

[तीना हँस पडते हैं।]

शेखर तो तुम नहीं वताओग ?

राधा अजी! ये क्या बतायेंगे! मैं सब समझ गई।

श्रीधर क्या समझी, बोल ?

[जाती है]

शेखर (एकदम उठकर बैठते हुए) राधा, इस आफत से मुझे किसी तरह बचाओ।

राधा आफत ! (मुसकराकर) अपनी होनेवाली पत्नी से इस तरह नही घबराया करते, शेखर।

शेखर इस तरह हँसी न उडाओ, राधा। मैं कहे देता हूँ—अच्छा न होगा।

राधा क्यो ? क्या कर लोगे तुम मेरा ?

शेखर बताऊँ ?

राधा बताना अपनी श्रीमतीजी को। मुझे क्या बताओगे !

शेखर नही मानोगी तुम !

राधा उहूँ !

[शेखर राधा की चोटी पकडकर खीचता है। तभी रेखा लौट आती है।]

रेखा ओह ! बाथरूम कितना गन्दा हो रहा है ! जब तक विम से पालिश न की जाये बेसिन साफ रह ही नही सकता। आज ही विम मँगाना होगा।

राधा मैं अब जा सकती हूँ रेखाजी ?

रेखा ठहरिये मैं यह इञ्जक्शन लगा दूँ।

शेखर (क्रोध से) मैं इजैक्शन नही लगवाऊँगा, नही लगवाऊँगा, नही

राधा अब चुप भी रहो। अभी तो एक इजैक्शन से ही छुटकारा मिल जायगा। यदि नही लगवाया तो

रेखा रियली मिस्टर कुमार, यू आर मोर नौयत्री दन ए स्माल चाइल्ड। बच्चे भी इतना परेशान नही करते। लाइए, इधर अपना हाथ।

शेखर उहूँ !

राधा क्या बच्चों की तरह से ऊँ ऊँ करते हो! चलो, अब पलकें मूँदकर सो जाओ चुपचाप।

रेखा आप इनके पास बैठी रहेंगी, राधाजी? मैं मिसेज कुमार को भी एक इंजक्शन लगा आऊँ।

राधा जाइये, पर जल्दी आइयेगा। आपका पेशेंट मुझसे नहीं सँभलेगा।

रेखा देर नहीं लगेगी। मैं अभी आई।

[जाती है।]

राधा (मुँह बनाकर) सीरियस! क्वाइट सीरियस!

[दोनों हँस पड़ते हैं।]

शेखर राधा?

राधा बात मत करो। सो जाओ चुपचाप।

शेखर अब तुम्हें भी मुझसे बात करना बुरा लगने लगा?

राधा फिर क्या करूँ? तुम्हारी मैडम की आज्ञा नहीं मानूँगी, तो क्या वे मुझे तुम्हारे घर में रहने देंगी?

शेखर देखो, राधा! मैं कह देता हूँ, झूठमूठ बहुत मत चिढ़ाओ।

राधा झूठमूठ! सच बात कहना भी क्या झूठमूठ चिढ़ाना है? सच, शेखर। तुम्हारी श्रीमतीजी हैं मजेदार।

शेखर नहीं मानोगी तुम!

राधा अच्छा! आपको धमकी देना भी आता है! हम तो समझे थे कि

शेखर अभी समझाता हूँ मैं तुमको

राधा अजी, नवाब साहब यह धौंस जमाइएगा अपनी बेगम साहिबा पर। हम पर रोब गांठने वाले आप होते कौन हैं? आपको अधिकार ही क्या है हमें कुछ कहने का?

शेखर भूल गईं क्या? बचपन से मैं तुम्हारे कान खींचता

आया हूँ

राधा आहा ! बडे आए कान खीचने वाले ! कभी देखा भी है, कान कसा होते है ।

शेखर (मुसकराकर) तुम सच कहती थी, राधा। बचपन के वे बीते दिन कितने सुहावने थे, कितने मीठे और मधुमय ! तुम वार बार रूठती थी, मैं बार-बार मनाता था। एक दूसरे के बिना, हम भोजन भी अच्छा न लगता था।

राधा एकदम झूठ ! तुम तो मरा हिस्सा भी छीनकर खा जाते थे।

शेखर याद है, राधा ? उस बार जब मुझे इन्फ्लुएंजा हो गया था, तुमने दिन भर कुछ नही खाया था। मैं तो शेखर के साथ ही खाऊँगी' की धुन लगाकर, और रो रोकर, तुमने घर भर मे सबको परेशान कर डाला था।

राधा सुनो, शेखर ! बचपन की बातें, बचपन के साथ गई । अब हम बडे हो गए हैं। अब हम बचपन की बातें भूल, बडप्पन सीखना चाहिए।

शेखर अच्छा, जी ! यह बात है ?

[दोनो हँस पडते हैं। श्रीधर का प्रवेश]

श्रीधर अरे ! रे ! शेखर भाई, इतनी हँसी ! देखना, जरा सँभलकर। कही पलग से नीचे न लुढक जाना।

राधा तब तो रेखाजी को मरकोक्रोम और रूईलेकर दौडना पडेगा।

शेख ऐन्टी टिटनस इजेक्शन भी।

[तीनो हँस पडते हैं।]

श्रीधर शेखर, तुमको एक बात नही मालूम।

शेखर वह क्या ?

श्रीधर मुझे ऐक्यूट एनीमिया हो गया है। टानिक पी
इंजक्शन लगवाने होंगे।

शेखर *बस, सिर्फ इंजैक्शन ? बड़े सस्ते छूट गए तुम*

[तीनो हँसते हैं।]

राधा भैया, इतनी देर से तुम थे कहाँ ?

श्रीधर बस, राधा। यह मत पूछो।

राधा (विस्मय से) क्यो ?

श्रीधर मेरी पीठ इतनी मजबूत नही कि शेखर
फौलादी घूसो की चोट सह सके।

शेखर (मुसकराकर) रोगी हूँ, भाई। रोगी क हाथ
शक्ति कहा, कि किसी को ठोक-पीट सकें।
भय नही। निर्भय होकर सब कुछ कह दो।

श्रीधर नही। मैं न कहूगा। अपराध क्या मेरा साथ
सुनते ही यदि तुम्हारी रगा मे दौडते रक्त
आने लगे ता ?

शेखर नही, ऐसा न होगा। तुम मानो तो सही।

श्रीधर या ही मान लू ? नही, भाई। श्रीधर इत
नही कि बिना प्रमाण पाए किसी बात पर
कर ले।

शेखर देखो, बता दो चुपके से। वरना एसी ठुक
कि सात जनम याद रखोगे।

श्रीधर सुन लिया, राधा ? मिल गया न प्रमाण ?
के कितने पक्के हैं, हमारे शेखर भाई !

[तीनो हँस पड़ते हैं।]

शेखर तो तुम नही बताओगे ?

राधा *अजी ! ये क्या बतायेंगे ! मैं सब समझ गई*

श्रीधर क्या समझी, बोलो ?

राधा तुमने दीनू से कहा है कि यहा मैंटलपीस पर गुल-दस्ता लाकर रख दे।

श्रीधर रेखा जी को नाराज कर दू ? और वह भी तब, जब कि इस घर मे केवल मैं ही एक इन्टैलिजैंट परसन हूँ ? हरगिज नही।

शेखर (हँसकर) न बताओ। मैं समझ गया।

श्रीधर क्या समझे ?

शेखर तुम चुपके से रेखा का संदूक उठाकर कुएँ मे डाल आए हो।

राधा अजी रहने दो। ऐसा बुद्धू समझ लिया है, मेरे भैया को ! सुनो भैया, तुम मेरे कान मे सब कुछ बता दो। तुम तो मेरे बड़े अच्छे से भैया हो। राजा भैया, अपनी बहन को सदा, सब-कुछ बता देते है।

शेखर नही, श्रीधर, इस म्याऊँ की बातो मे न आना। तुम मुझे सब कुछ बता दो। मेरी बात दूसरी है। हम तुम ठहरे पक्के दोस्त। दोस्त से कभी कोई बात नही छिपाई जाती।

श्रीधर (मुस्कराकर) तुम दोना कितना ही मक्खन क्यो न लगा लो, पर मैं तुम दोनो मे से किसी को भी नही बताऊँगा कि मैं अभी एक टेलिग्राम देकर आया हू।

शेखर, राधा (एक साथ) टेलिग्राम ! कैसा टेलिग्राम ?

[खिडकी पर खटखटाहट]

पोस्टमैन टेलिग्राम। टेलिग्राम है, साब।

श्रीधर अरे ! बाप रे ! यह तो बडी जल्दी आ गया !

शेखर तो क्या तुम्हे मालूम था कि यह आ रहा है ?

श्रीधर सुनो इनकी बात ? मुझे भला कैसे मालूम हो सकता

सा कि यह आएगा ? उठा, राधा। तार ले ला। और देखा दखा स यह आया कि उनकी माताजी को जुकाम हो गया है। गिनराट करन स, बस खतरनाक हो सकता है।

शेखर (विस्मय से) टेलिग्राम अभी पोस्टमन के हाथ में ही है, और तुम्हें यह भी पता लग गया कि उसमें क्या लिखा है !

शेखर (मुस्कराकर) सीरियस ! वराइट सीरियस !

राधा यह बड़े आदमियो की बातें हैं, शेखर। तुम्हारी समझ में नहीं आएँगी। लो भाई पोस्टमन। यह तुम्हारा इनाम।

पोस्टमेन हम सरकारी नौकर हैं बीबीजी। सरकारी काम करने के लिए इनाम नहीं लेते।

शेखर सरकारी काम के लिए तुम्हें इनाम कौन दे रहा है, जी ! आज पहली बार भैया घर आया है, इस खुशी में बहन मिठाई बाँट रही है। तुम भी अपने बाल बच्चों का मुँह मीठा करा देना।

पोस्टमन बहन का प्यार ऐसा ही होता है। मेरी बहन भी मुझे देखकर, चन्दा-तारों-सी खिल उठा करती है, सरकार। आपकी बहन भी सदा सुख-सुहाग भरी रहे। सलाम साब।

[पोस्टमन जाता है। रेखा का छींकते हुए प्रवेश।]

रेखा रियली, शेखर ! तुम्हारा किचिन एबस्लूयट्ली अन हाईजीनिक है। उसमें सब कुछ चेंज कराना पड़ेगा। इस गन्दे मिट्टी के चूल्हे के बदले, एक गैस का स्टोव

[छींकती है।]

श्रीधर आपकी आँखे तो एकदम लाल हो गई हैं, रेखा जी ! नाक से बराबर पानी निकल रहा है। छीकें भी आ रही ह। कही आपको इन्फ्लुएजा का इन्फैक्शन

शेखर (सिर हिलाकर) सीरियस ! क्वाइट सीरियस ! यह तो बडा बुरा हुआ। आपको अपनी पूरी केयर रखनी चाहिए थी, रेखा जी।

रेखा नही। ऐसी कोई बात नही। यह तो धुएँ की वजह से जरा

[छीकती है।]

शेखर नही, नही, नैगलैक्ट करने से काम नही चलेगा, रेखा। तुम्ह अलग कमरे मे रहना चाहिए। मैं अभी सब इन्तजाम

[सरला का तेजी से प्रवेश]

सरला मैं कहती हूँ, शेखर, मेरे घर मे यह सब कुछ नहीं चलेगा। मैं पूछती हूँ। इस घर की मालकिन यह डाक्टरनी है, या मैं ?

शेखर कैसी बात बोलती हो, मा ! तुम्हारे सामने रेखा भला क्या बोलेगी ?

सरला बोले तो यह बहुत कुछ, पर मैं क्या उसकी सुनने वाली हूँ ! जब से जनम लिया है, तब से मैंने इसी मिट्टी के चूल्ह पर खाना बनते देखा है। आज यह चूल्हा अन-हाईजीनिक हो गया ! अनहाईजीनिक ? हुँह !

शेखर भूल से कह दिया होगा, माँ। बचपने की भूल

सरला हूँ ! बच्ची है यह ? मेरी राधा और बिन्दु तो कभी बच्ची थी ही नही ? तू तो जनम लेते ही इतना बडा हो गया था ? यह क्यो नहीं कहता कि इस चतुरा की चक्करदार बातों म फसकर, तू अपना भला-बुरा